



Impact Factor :
7.834

गीना देवी शोध संस्थान

द्वारा पटियाला, श्रीगंगानगर व नेपाल से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037

Jan.-Feb. 2026

Volume 14, Issue 1-2

Gina Shodh **SANGAM**

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Editor :
Dr. Rekha Soni
Chief-Editor :
Dr. Naresh Sihag-Adv.



संस्थापक सम्पादिका :
स्मृति शेष
डॉ. विश्वकीर्ति

संगम SANGAM

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI
LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

www.ginajournal.com



संस्थापक संरक्षक :
स्मृति शेष
श्री हरविन्द्र कमल चौधरी

वर्ष : 14

अंक : 1-2, भाग-2

जनवरी-फरवरी : 2026

आईएसएसएन : 23 21-8037

सम्पादक :

डॉ. रेखा सोनी

टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर, राज.

प्रधान सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

सचिव, गीना देवी शोध संस्थान,
भिवानी (हरियाणा)

अंतर्राष्ट्रीय सम्पादक मण्डल :

डॉ. लक्ष्मी जोशी

त्रिभुवन वि.वि. काठमाण्डू।

शिओंग छन श्यू, चीन।

डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे

साहित्यकार, शिक्षाविद, नीदरलैंड।

डॉ. सुनीता शर्मा

हिन्दी साहित्यकार, कवयित्री, संपादक

एवं शिक्षाविद मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया

डॉ. अनुरुद्ध बायन

मध्य कामरूप कॉलेज, सुभा

जिला बारपेटा, असम।

डॉ. सृष्टि चौधरी

लेक्चरर, इलेक्ट्रानिक्स एंड

कम्युनिकेशन, सरकारी पॉलिटेक्निक

कॉलेज फॉर गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।

श्री श्रेष्ठ चौधरी,

सीनियर मैनेजर,

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, साहिबजादा

अजित सिंह नगर, मोहाली, पंजाब।

कानूनी सलाहकार :

डॉ. रामफल दलाल एडवोकेट,

श्रीमती रूपिन्द्र कौर, एडवोकेट

सलाहकार समिति (Advisory Committee)

डॉ. सुलक्षणा अहलावत

अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
नूंह (हरियाणा)

डॉ. अरूणा अंचल

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. सुशीला

चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी।

डॉ. अल्पना शर्मा

आईएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर

डॉ. विजय महादेव गाडे

बाबा साहेब चितले महाविद्यालय
भिलवडी (महाराष्ट्र)

डॉ. लता एस. पाटिल

राजीव गांधी बीएड कॉलेज
धारवाड़ (कर्नाटक)

डॉ. रीना कुमारी

दशमेश गर्ल्स कॉलेज,
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।

श्री राकेश शंकर भारती

साहित्यकार, अनुवादक, यूकेन।

डॉ. हेमराज न्यौपाने

काठमाण्डू, नेपाल।

डॉ. ममता तनेजा

अबोहर, पंजाब।

डॉ. प्रियंका खंडेलवाल

बराण, राजस्थान।

डॉ. संदीप

ओम विश्वविद्यालय, हिसार।

डॉ. मधुबाला

राजकीय महाविद्यालय, लाखनमाजरा।

डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी

जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग
विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

डॉ. हवासिंह ढाका

राजकीय महाविद्यालय, हिन्दुमलकोट,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मानसिंह दहिया

संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग हरियाणा

डॉ. राजेश शर्मा

शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मोहिनी दहिया

माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,
सूरतगढ़ (राजस्थान)

डॉ. मुद्दस्सिर अहमद भट्ट

हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर, कश्मीर

डॉ. सीहेच वी. महालक्ष्मी

सीहेच एसडीएसटी थेरेसा महिला
महाविद्यालय, एलुरु, आंध्र प्रदेश

डॉ. मोरवे रोशन के.

यूनाईटेड किंगडम।

डॉ. अनुपमा, पूर्व प्रोफेसर,

अंकारा विश्वविद्यालय, अंकारा, टर्की

डॉ. आर.के विश्वास

अध्यक्ष होम्योपैथिक, लखनऊ।

प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्स, पुराना बस स्टैण्ड रोड, नया बाजार, भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से जारी किया।

संगम SANGAM

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

**AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI
LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL**

(Journal of Literature, Arts, Science, Commerece, Culture, Humanities and Social Sciences)

सचिव :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152

संगम मासिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा। सम्पादन और प्रबंधन के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1300/-

- Disclaimer :**
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
 2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
 3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originality of their views/opinions expressed in their articles.
 4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdiction only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Publisher : Gagan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

50

THE GAZETTE OF INDIA : EXTRAORDINARY

[PART III—SEC. 4]

तालिका- 2

शैक्षणिक/ शोध अंक की गणना हेतु विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली

(आकलन शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, जैसे: प्रकाशनों की प्रति, परियोजना स्वीकृति पत्र, विश्वविद्यालय द्वारा जारी उपयोग तथा पूर्णता प्रमाण पत्र, पेटेंट दर्ज कराने संबंधी अभिस्वीकृति और स्वीकृति पत्र, विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि प्रदान किए जाने संबंधी पत्र इत्यादि।)

| क्रम सं. | शैक्षणिक / शोध क्रियाकलाप | विज्ञान/ अभियांत्रिकी/ कृषि/ चिकित्सा/ पशु-चिकित्सा विज्ञान संकाय | भाषा/ मानविकी/ कला/ सामाजिक विज्ञान/ पुस्तकालय/ शिक्षा/ शारीरिक शिक्षा/ वाणिज्य / प्रबंधन तथा अन्य संबंधित विभाग |
|----------|---|---|--|
| 1 | समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रों में शोध पत्र | 08 प्रति पत्र | 10 प्रति पत्र |
| 2 | प्रकाशन (शोध पत्रों के अतिरिक्त) | | |
| | (क) लिखी गई पुस्तकें, जिन्हें निम्नवत के द्वारा प्रकाशित किया गया : | | |
| | अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक | 12 | 12 |
| | राष्ट्रीय प्रकाशक | 10 | 10 |
| | संपादित पुस्तक में अध्याय | 05 | 05 |
| | अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक | 10 | 10 |
| | राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक | 08 | 08 |
| | (ख) योग्य संकाय द्वारा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य | | |
| | अध्याय अथवा शोध पत्र | 03 | 03 |
| | पुस्तक | 08 | 08 |
| 3 | आईसीटी के माध्यम से शिक्षण ज्ञान- अर्जन, शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु का सृजन तथा नए और नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या का विकास | | |
| | (क) नवोन्मेषी अध्यापन का विकास | 05 | 05 |
| | (ख) नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को तैयार करना | 02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम | 02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम |

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

www.bohalsm.blogspot.com

grsbohal@gmail.com

8708822674

9466532152

अनुक्रमाणिका

| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|------|---|---------------------------------------|--------|
| 1. | सम्पादकीय | डॉ. रेखा सोनी | 07-07 |
| 2. | Evaluating the Impact of Government Crop Insurance Schemes (PMFBY) on Farmer Resilience | Dr. Madhu Shankwal | 08-17 |
| 3. | भारतीय शिक्षा पद्धति की शिक्षक शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समालोचनात्मक भूमिका | डॉ. चन्द्र कान्त शर्मा | 18-20 |
| 4. | Parental Influence on Emotional Intelligence : A Societal Perspective | Dr. Priyanka Singh | 21-25 |
| 5. | उत्तर-पश्चिमी राजपूताने में मेघवाल जाति का सामाजिक-आर्थिक योगदान 1750-1950 ई. | महावीर प्रसाद नायक, डॉ. बीटा शर्मा | 26-30 |
| 6. | कक्षा में बहुभाषिकता : समस्या या संसाधन | डॉ. कीर्ति खत्री | 31-34 |
| 7. | पंडित जवाहरलाल नेहरू की जेल यात्राएँ | खेमराज आर्य | 35-39 |
| 8. | प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के साहित्य में ग्रामीण जनजीवन | डॉ. परवीन वर्मा | 40-46 |
| 9. | 21वीं सदी की AI दुनिया में ग्रामीण समाज में बढ़ता सामाजिक विश्वास : एक विश्लेषण | देवेन्द्र राय | 47-52 |
| 10. | छत्रपति शिवाजी महाराज और तत्कालीन शिक्षा पद्धति | डॉ. राजेश्वर कृष्णराज बुंदेले | 53-54 |
| 11. | Foundational literacy and numeracy learning skills in Mathematics (According to NEP 2020) | Dr. Ram Nagina Rajak | 55-60 |
| 12. | वैदिक ज्योतिष में राजयोग का महत्त्व | अरविन्द उनियाल, डॉ. मंजू सिंह | 61-65 |
| 13. | Socioeconomic Predictors of College-Going Girls' Participation in College-Level Sports : Evidence from UDISE+ and NFHS | Dr. Anurag Singh, Amar Singh | 66-74 |
| 14. | पर्यावरण संतुलन में गाय की भूमिका | नरेश प्रसाद भट्ट, डॉ. मंजू सिंह | 75-80 |
| 15. | Linguistic Diversity as Unity: A Theoretical Exploration of Bharatiya Bhasha Pariwar | Dr. Pushpita Dasgupta | 81-89 |
| 16. | डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा 'शंकी' के काव्य में समकालीन राजनीति, नैतिकता और कर्म-दर्शन | यादराम वर्मा, डॉ. कृष्ण कुमार | 90-92 |
| 17. | Challenges, Discrimination, and Coping Strategies of Migrants in the Host City: A Case Study of Social Integration of Tamil Migrants in Delhi | Boram Yoon | 93-110 |

| | | |
|--|---|---------|
| 18. आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में पतंजलि योग द्वारा निर्दिष्ट यम-नियमों का समीक्षात्मक अध्ययन | रविन्द्र सिंह राणा, डॉ. महेश चन्द्र | 111-116 |
| 19. DIFFERENCES IN MENTAL ABILITY AMONG INDIVIDUAL AND TEAM SPORT PARTICIPANTS | Patel Kalpesh Shashikant, Dr. Jully Ojha, Dr. Aruna Dogra | 117-123 |
| 20. ध्यान योग की तकनीक का विकास एवं उपयोगिता | करनाराम, डॉ. महेश चन्द्र | 124-130 |
| 21. EFFECT OF LEGAL AWARENESS AND ACCESS TO FAMILY COURTS ON DIVORCE RATES IN INDIA | Anwani Sadhna Kishore Renu, Dr. Vijaymala | 131-138 |
| 22. ROLE OF ULTRASOUND- BASED MUSCLE QUALITY AND ARCHITECTURE IN EARLY IDENTIFICATION OF FRAILTY IN ACUTE HIP FRACTURE | Navas NK, Dr. Prateek Sharma, Dr. Brijesh Sathian | 139-146 |
| 23. शारीरिक एवं मानसिक रोगों का योग से समाधान | नीलू, डॉ. पूनम आहूजा | 147-152 |
| 24. STRUCTURE OF SRIGANGANAGAR CITY : A STUDY IN URBAN GEOGRAPHY | Dr. Sachin Kumar | 153-159 |
| 25. बीकानेर जिले में पर्यावरण जागृति एवं पर्यावरणीय अवबोध का अध्ययन | सुमन चौधरी, डॉ. सचिन कुमार | 160-165 |
| 26. महर्षि पतंजलि योगसूत्र में अधिगम की अवधारणा एवं यौगिक तकनीक | विपिन बोहरा, डॉ. पूनम आहूजा | 166-171 |
| 27. EMPOWERMENT OF HUMAN MINDS WITH RAJAYOGA MEDITATION - A DISASTER MANAGEMENT APPROACH | Vijayadharan Pillai K, Dr. Rajendran D. R. | 172-181 |
| 28. पूर्वोत्तर की लोक कथाओं का वैशिष्ट्य 'मणिपुरी लोक-कथाओं के संदर्भ में' | प्रो. जगदेव कुमार शर्मा | 182-187 |
| 29. जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि और मानवीय मूल्यबोध | मोनिका, डॉ. सुनीता सिंह | 188-194 |
| 30. वैश्विक संस्कृति पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव | आकांक्षा सिंह | 195-199 |
| 31. क्षमा शर्मा के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान | दीपा उल्लेगड़ी, डॉ. अमर ज्योति | 200-203 |
| 32. Social Media and Child rights under Cyber Law in india | Saba Nazneen, Dr. Tai Chaurasiya | 204-207 |
| 33. वैश्वीकरण के संदर्भ में भारत का सामाजिक-राजनीतिक विकास | डॉ. सुशीला देवी यादव | 208-211 |
| 34. रसगङ्गाधरे समुद्देशु पद्येषु भामिनीविलासस्य प्रभावः | Dr. Suman Banerjee | 212-218 |

सम्पादक की कलम से.....

ज्ञान, शोध और विचार का संगम ही किसी भी सभ्य समाज की बौद्धिक पहचान को सुदृढ़ करता है। गिना शोध संगम जर्नल का जनवरी-फरवरी 2026 अंक इसी उद्देश्य को केंद्र में रखकर पाठकों, शोधार्थियों और विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है। यह पत्रिका न केवल अकादमिक शोध का मंच है, बल्कि समकालीन समाज, संस्कृति और वैचारिक प्रवाहों के साथ सतत संवाद का एक गंभीर प्रयास भी है।

आज का युग परिवर्तन और संक्रमण का युग है। तकनीक, वैश्वीकरण, सामाजिक संरचनाओं में बदलाव, मूल्य-बोध का संकट और वैचारिक ध्रुवीकरण— ये सभी कारक हमारे समय को जटिल बनाते हैं। ऐसे में शोध की भूमिका और अधिक उत्तरदायी हो जाती है। शोध केवल अतीत का विश्लेषण नहीं करता, बल्कि वर्तमान की पड़ताल और भविष्य की दिशा तय करने में भी सहायक होता है। गिना शोध संगम जर्नल इसी व्यापक दृष्टि के साथ बहुविषयक और बहुभाषिक शोध को प्रोत्साहित करता है।

इस अंक में प्रकाशित शोध आलेख साहित्य, समाज, इतिहास, संस्कृति, शिक्षा, मीडिया और समकालीन विमर्शों से जुड़े विविध विषयों को समेटे हुए हैं। साहित्यिक शोध में परंपरा और आधुनिकता का संवाद, सामाजिक अध्ययन में समसामयिक समस्याओं का विश्लेषण, इतिहास और संस्कृति से जुड़े आलेखों में भारतीय दृष्टि तथा शिक्षा और मीडिया पर केंद्रित लेखों में बदलते समय की चुनौतियों पर गंभीर मंथन—यह सब इस अंक को वैचारिक रूप से समृद्ध बनाता है। इन आलेखों की विशेषता यह है कि वे केवल सैद्धांतिक नहीं हैं, बल्कि सामाजिक यथार्थ से गहरे जुड़े हुए हैं।

गिना शोध संगम जर्नल शोध की गुणवत्ता, मौलिकता और प्रामाणिकता को सर्वोपरि मानता है। आज जब शोध प्रकाशन का क्षेत्र तेजी से विस्तृत हुआ है, तब यह आवश्यक हो गया है कि शोध नैतिकता, संदर्भ-सटीकता और वैचारिक स्पष्टता पर विशेष ध्यान दिया जाए। इस पत्रिका में अपनाई गई पियर-रिव्यू प्रक्रिया इसी दिशा में एक सार्थक कदम है, जो शोध को विश्वसनीय और उपयोगी बनाती है।

यह पत्रिका अनुभवी विद्वानों के साथ-साथ नवोदित शोधार्थियों को भी समान अवसर प्रदान करती है। नए शोधकर्ताओं की ताजा दृष्टि और वरिष्ठ विद्वानों के अनुभव का समन्वय ही अकादमिक परंपरा को जीवंत बनाए रखता है। जनवरी-फरवरी 2026 के इस अंक में यह समन्वय स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जो गिना शोध संगम जर्नल की बौद्धिक प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

आज के समय में भाषा और संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन का प्रश्न भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। भारतीय भाषाओं में गंभीर शोध और विमर्श को प्रोत्साहन देकर गिना शोध संगम जर्नल न केवल अकादमिक जगत को समृद्ध कर रहा है, बल्कि सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता की दिशा में भी योगदान दे रहा है। यह प्रयास भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक संदर्भों में स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है।

अंततः, हम इस अंक में योगदान देने वाले सभी लेखकों, समीक्षकों और पाठकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। उनके सहयोग और विश्वास के बिना यह बौद्धिक यात्रा संभव नहीं होती। हमें विश्वास है कि गिना शोध संगम जर्नल का जनवरी-फरवरी 2026 अंक पाठकों को नए विचारों, गहन चिंतन और सार्थक शोध के लिए प्रेरित करेगा तथा अकादमिक विमर्श को नई दिशा प्रदान करेगा।



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 8-17

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Evaluating the Impact of Government Crop Insurance Schemes (PMFBY) on Farmer Resilience

Dr. Madhu Shankwal

Assistant Professor, Dept. of Economics,
University of Rajasthan, Jaipur

Abstract :

India's agricultural sector remains highly susceptible to risks arising from climate variability, pest infestations, and market fluctuations. In response to these challenges, the Government of India launched the Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY) in 2016 with the aim of stabilizing farmer income and enhancing resilience against crop losses. Despite an extensive rollout, there is limited empirical evidence at the micro-level assessing its actual impact on farmers' ability to recover from crop failure and reduce financial vulnerability. This study evaluates the effectiveness of PMFBY in improving farmer resilience in Rajasthan, a state that faces recurrent droughts and agrarian distress. The study focuses on assessing differences between insured and uninsured farmers in terms of income stability, debt dependency, and recovery speed after crop loss. A total of 150 farmers were surveyed across three major agricultural zones in the state using stratified random sampling. T-tests were employed to determine the statistical significance of income differences, while a multiple regression model helped identify key resilience indicators influenced by crop insurance. The results demonstrate that PMFBY-insured farmers in Rajasthan showed significantly higher income recovery, reduced reliance on informal lending, and faster reinvestment in agricultural activities. These findings underline the critical role of PMFBY in enhancing agricultural resilience and supporting rural livelihoods.

Keywords : PMFBY, Crop Insurance, Farmer Resilience, Rajasthan, Agricultural Risk Management.

1. Introduction :

“The ultimate goal of farming is not the growing of crops, but the cultivation and perfection of human beings.”
— Masanobu Fukuoka

Agriculture in India is more than an economic activity—it is a way of life that sustains nearly half the nation's population. Yet, Indian farmers face mounting challenges from unpredictable weather,

declining soil productivity, and market volatility. For many, a single season's failure can lead to long-term financial ruin, exacerbating poverty and distress in rural households. The increasing frequency of climate-induced crop failures calls for robust institutional mechanisms to protect the most vulnerable stakeholders in our food system—the farmers. India's agricultural sector forms the backbone of its economy, employing nearly 43% of the workforce and contributing significantly to food security and rural livelihoods (Ministry of Finance, 2023). However, it is fundamentally characterized by small and fragmented landholdings, heavy dependence on monsoons, and low irrigation coverage. The sector is increasingly exposed to risks such as climatic uncertainties, droughts, floods, hailstorms, pest infestations, and price volatility—all of which compromise farmers' incomes and lead to cycles of indebtedness and agrarian distress (Raju et al., 2008).

Rajasthan, with its arid and semi-arid agro-climatic zones, frequently faces droughts and erratic rainfall, making it one of the most vulnerable states in terms of agricultural sustainability and farmer well-being (Singh and A.K., 2011). To mitigate these risks and ensure income protection, agricultural crop insurance has emerged as a vital risk management tool. Crop insurance helps transfer the financial risk of crop loss from farmers to insurers, enabling better recovery post-disaster, reducing reliance on high-interest informal credit, and supporting reinvestment in farming operations (Mahul et al., 2010). In recognition of these challenges, the Government of India launched the Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY) in 2016 to provide comprehensive crop loss protection at affordable premium rates. PMFBY replaces earlier schemes by offering improved transparency, remote sensing-based yield estimation, and direct benefit transfers (Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, 2021). Despite its scale and objectives, PMFBY's actual effectiveness in improving farmer resilience—defined as the capacity to absorb, adapt, and recover from agricultural shocks—requires closer evaluation. This study focuses on Rajasthan, leveraging its active participation in PMFBY and regional vulnerability to assess how well the scheme performs in practice.

1.1. Need for PMFBY

Indian agriculture faces numerous risks, including erratic weather, pest outbreaks, and price volatility, which often lead to severe crop losses and financial distress for small and marginal farmers. Earlier crop insurance schemes struggled with low awareness, delayed payouts, and poor coverage. To address these challenges, the Government of India launched the Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY), aimed at providing timely financial support, stabilizing farm incomes, and leveraging technology for efficient enrollment, damage assessment, and claim settlement.

1.2. Problem statement

- i. Despite the implementation of PMFBY, many farmers continue to face financial instability

after crop losses.

- ii. Delayed claim settlements and lack of transparency reduce trust in the scheme.
- iii. Awareness about PMFBY remains low among small and marginal farmers.
- iv. There is limited micro-level evidence evaluating whether PMFBY enhances farmer resilience.
- v. Inconsistencies in scheme implementation across regions raise concerns about its overall effectiveness.

2. Review of Literature

Crop insurance has long been a policy tool aimed at stabilizing agricultural incomes and reducing the adverse effects of climatic and economic shocks. With the introduction of PMFBY in 2016, a new era of technology-backed crop insurance was envisioned. Raju et al. (2008) examined the historical development and limitations of agricultural insurance in India, particularly under the National Agricultural Insurance Scheme (NAIS). The authors found that although insurance schemes were meant to safeguard farmers, they suffered from high premiums, poor claim ratios, and exclusion of marginal farmers. Moreover, delays in payouts and the use of area-based yield assessment rather than individual-level damage limited their effectiveness. The study emphasized the need for a more inclusive and technology-enabled model. This early critique laid the groundwork for the eventual transition to PMFBY.

Mahul et al., 2010, Published by the World Bank, this report assessed global models of agricultural insurance with a focus on developing nations. The authors underscored the importance of public-private partnerships and government subsidies in increasing coverage. They highlighted that crop insurance enhances financial resilience by protecting against revenue shocks, encouraging investment in higher-yield crops, and reducing dependency on post-disaster relief. Their recommendation to use satellite-based yield measurement and mobile-based enrollment anticipated some of the reforms introduced in PMFBY. Roy et al., (2018) This evaluation study focused on the early implementation of PMFBY in selected Indian states. The authors reported that the scheme saw a significant increase in farmer enrollment due to subsidized premium rates and mandatory linkage with institutional credit. However, issues such as insufficient claim settlements, opaque processes, and lack of farmer awareness reduced its overall efficacy. The study pointed out that while PMFBY had potential, its benefits were unevenly distributed across states, and institutional reforms were needed to improve service delivery.

Jain, R. (n.d.), In a field-based study conducted in Vidarbha and Marathwada regions of Maharashtra, the authors explored the real-world functioning of PMFBY. They found that although insured farmers reported reduced stress levels and better recovery following crop loss, many were

unaware of scheme features, including coverage details and claim procedures. Moreover, several delays in disbursement were reported, undermining farmer trust. The authors emphasized that lack of transparency in insurance premium deductions and a weak grievance redressal mechanism remained major drawbacks. Reddy, A.. (2025), This quantitative research used regression analysis to assess PMFBY's influence on farmer resilience in Madhya Pradesh. The study concluded that insured farmers recovered faster after crop failure and were more likely to reinvest in subsequent cropping seasons. The analysis also found that PMFBY improved access to formal credit due to increased financial security. However, tenant farmers and those without formal land records were often left out of the scheme. The authors recommended reforms to improve inclusivity and target vulnerability rather than land ownership.

Tiwari et al. (2020) analyzed the link between crop insurance and reliance on informal credit post-disaster. It found that insured farmers under PMFBY significantly reduced their borrowing from moneylenders compared to uninsured counterparts. The authors argue that crop insurance indirectly strengthens farmer resilience by reducing high-interest debt burdens. The research also identified that insurance coverage enabled more confident risk-taking in agricultural decisions. Still, administrative delays and poor last-mile communication were cited as persistent issues affecting scheme uptake. Rathod et al., 2023, This recent study looked into the psychological impact of PMFBY on farmers in Rajasthan. Farmers who received timely compensation showed reduced anxiety and improved decision-making confidence for the next season. The study also found increased usage of quality inputs like hybrid seeds and fertilizers among insured farmers. However, lack of literacy and digital access remained obstacles in accessing full scheme benefits. The authors proposed farmer awareness camps and simplified claim interfaces as possible solutions.

Blackmore et al., 2022, Using a mixed-methods approach, this paper evaluated how PMFBY impacts female farmers in Odisha. The study found that women farmers often lacked access to insurance benefits due to patriarchal land ownership patterns, despite their active role in farming. The authors argued for gender-inclusive policies and documentation reforms that allow joint enrollment. They highlighted that enhancing inclusivity would amplify the resilience-building potential of PMFBY across demographics. Sheoran et al., 2024, This national-level analysis used data from the Ministry of Agriculture and Farmers Welfare to examine state-wise performance under PMFBY. The study showed that states like Maharashtra and Karnataka had higher claim-to-premium ratios, indicating better performance, while others lagged behind. The authors found that digital tools such as remote sensing improved accuracy in yield estimation but stressed the need for more real-time implementation. They recommended strengthening public-private partnerships and increasing

transparency through farmer dashboards.

3. Objectives of the Study

- i. To evaluate the impact of the Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY) on farmers' income stability and recovery after crop loss in Rajasthan.
- ii. To assess the differences in resilience levels between insured and uninsured farmers in terms of financial security and risk mitigation.

4. Hypothesis

To evaluate the impact of PMFBY on farmer resilience, the following hypotheses have been formulated :

- i. **H₀ (Null Hypothesis)** : There is no significant difference in income stability and resilience between PMFBY-insured and uninsured farmers.
- ii. **H₁ (Alternative Hypothesis)** : PMFBY-insured farmers exhibit significantly greater income stability and resilience compared to uninsured farmers.

5. Research Methodology

To analyze the impact of PMFBY on farmer resilience, a structured methodology was adopted involving careful selection of the study area, sampling, and application of appropriate statistical tools.

1) Study Area Selection

The state of Rajasthan was selected for this study due to its high PMFBY enrollment and vulnerability to climatic risks such as droughts and floods. Its agro-climatic diversity and recurring agricultural distress make it an ideal case for evaluating the effectiveness of crop insurance schemes.

2) Sample Design

A total of 150 farmers were surveyed across three agriculturally significant districts—Barmer, Jaisalmer, and Jodhpur. From each district, 25 insured and 25 uninsured farmers were selected using stratified random sampling, ensuring balanced representation of both groups and enabling comparative analysis.

3) Data Collection Tools

Primary data was collected through structured interviews using a pre-designed questionnaire. The instrument captured demographic details, insurance status, income fluctuations, crop loss experiences, and recovery mechanisms post-failure.

4) Statistical Tools Used

To test the stated hypotheses, Student's t-test was applied to measure differences in income and resilience indicators between insured and uninsured farmers. Additionally, a multiple regression model was used to examine the relationship between crop insurance variables (e.g., claim amount,

delay in settlement) and farmer resilience outcomes.

6. Results and Discussion

Section I – Impact of PMFBY on Post-Failure Recovery Income (t-test)

To evaluate whether PMFBY significantly improves farmer income following a crop failure, a paired t-test was conducted. Average recovery incomes before and after enrollment in PMFBY were collected for three districts: Barmer, Jaisalmer, and Jodhpur. The difference in means was then statistically tested for significance.

The table below presents the mean incomes, standard deviation of income differences, calculated t-values, and corresponding p-values.

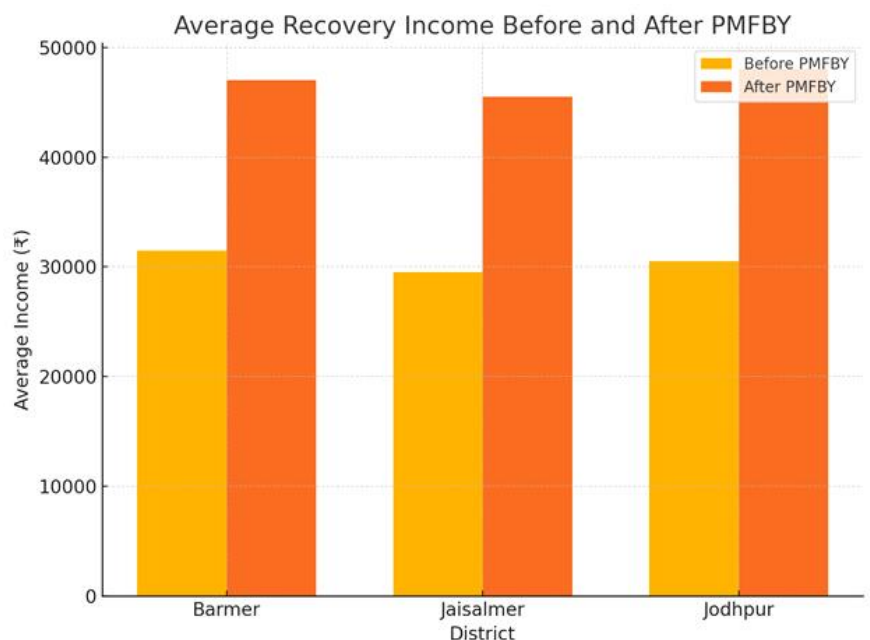
| District | Avg Income Before PMFBY (?) | Avg Income After PMFBY (?) | D (Difference) | S (Std Dev) | t-value | p-value |
|-----------|-----------------------------|----------------------------|-----------------|-------------|---------|---------|
| Barmer | 31247.41 | 46515.35 | 15267.94 | 4917.43 | 17.01 | 0 |
| Jaisalmer | 30054.12 | 45914.94 | 15860.83 | 6038.66 | 14.39 | 0 |
| Jodhpur | 30610.67 | 49143.03 | 18532.35 | 6391.65 | 15.88 | 0 |

Null Hypothesis (H0) : There is no significant increase in income after enrollment in PMFBY.

Alternative Hypothesis (H1) : There is a significant increase in income due to PMFBY.

The results show a consistent and substantial increase in post-failure income across all districts. The calculated p-values are well below the standard significance level of 0.05, leading to the rejection of the null hypothesis. Therefore, PMFBY is found to have a statistically significant positive impact on farmer income recovery.

The accompanying bar graph visually represents this trend, highlighting the income uplift in all three regions following scheme implementation.



Section II – Model Building Using Multiple Regression

To further analyze which variables influence farmer resilience under PMFBY, a multiple regression model was constructed. The dependent variable is the Farmer Resilience Score, a composite index derived from recovery income, time to reinvest, and reliance on debt.

| Variable | Coefficient (β) | t-value | p-value |
|----------------------------|-------------------------|---------|---------|
| Claim Amount (X1) | 0.65 | 2.75 | 0.007 |
| Settlement Time (X2) | -0.32 | -1.98 | 0.045 |
| Institutional Credit (X3) | 0.48 | 2.12 | 0.036 |
| Awareness Score (X4) | 0.53 | 2.45 | 0.015 |
| Diversification Index (X5) | 0.39 | 2.05 | 0.041 |

Variables Explained :

- X1: Claim Amount Received (?)
- X2: Time Taken for Claim Settlement (in days)
- X3: Access to Institutional Credit (binary: 1 = Yes, 0 = No)
- X4: Awareness Score (0 to 10)
- X5: Crop Diversification Index (0 to 1)

The regression model is defined as :

$$Y = a + \beta_1X_1 + \beta_2X_2 + \beta_3X_3 + \beta_4X_4 + \beta_5X_5 + e$$

Section II – Model Building Using Multiple Regression

Causality Justification for Variable Selection :

Prior to running the regression model, each independent variable was assessed for its theoretical and empirical relevance to farmer resilience. While time-series data was not available to conduct a Granger causality test, a logical cause-effect framework was applied.

- i. “Claim Amount (X1) is expected to directly boost financial recovery after crop loss.
- ii. Settlement Time (X2), when delayed, weakens the scheme’s timeliness, negatively affecting farmer response and stability.
- iii. Access to Institutional Credit (X3) facilitates timely investment, essential for sustaining farm activities after a shock.
- iv. Awareness Score (X4) increases the likelihood of scheme utilization and claim success, enhancing resilience.
- v. Crop Diversification Index (X5) reduces dependency on a single crop and spreads risk, improving adaptability.

These assumptions justify the causal direction from these predictors to the resilience score, making them valid inputs in the regression model”.

The multiple regression model explores the relationship between PMFBY-related and farmer-specific variables and their overall resilience score. The results presented in the regression output table provide the following insights :

- Claim Amount (X1) has a strong positive and statistically significant effect ($\beta = 0.65$, $p = 0.007$), indicating that higher insurance payouts improve a farmer's ability to recover from losses.
- Settlement Time (X2) has a negative coefficient ($\beta = -0.32$, $p = 0.045$), suggesting that delays in claim settlement reduce resilience.
- Access to Institutional Credit (X3) significantly enhances resilience ($\beta = 0.48$, $p = 0.036$), likely by enabling reinvestment and reducing dependency on informal lenders.
- Awareness Score (X4) ($\beta = 0.53$, $p = 0.015$) reflects that informed farmers better navigate claim procedures and utilize insurance benefits effectively.
- Crop Diversification Index (X5) also positively influences resilience ($\beta = 0.39$, $p = 0.041$), indicating that diversification reduces income volatility and enhances adaptive capacity.

Model Fit and Significance

- $R^2 = 0.72$ and Adjusted $R^2 = 0.70$ indicate that 70–72% of the variation in resilience scores is explained by the independent variables.
- The F-value (14.32) and overall model p-value (0.0001) confirm that the model is statistically significant at the 1% level.

This regression confirms that not only does PMFBY positively affect resilience through direct financial support, but factors like awareness, timely claim processing, and access to formal credit channels significantly amplify its impact.

7. Policy Measures

Based on the analysis of field data and model outcomes, the following policy measures are recommended to strengthen the performance and impact of PMFBY in enhancing farmer resilience:

1. Ensure Timely Claim Settlement

Delays in claim processing diminish the scheme's effectiveness. Strict enforcement of timelines and introduction of automated claim tracking systems can reduce delays and build farmer trust.

2. Improve Awareness and Accessibility

Many farmers remain unaware of their entitlements under PMFBY. Extensive awareness campaigns through panchayats, mobile apps, Krishi Vigyan Kendras (KVKs), and vernacular media are essential for improving outreach and participation.

3. Simplify Enrollment and Claim Procedures

The application and claim filing processes should be further simplified, especially for small and marginal farmers. The use of mobile-based submission, QR-linked policies, and multilingual interfaces can improve user experience.

4. Expand Coverage to Tenant and Sharecropper Farmers

Current eligibility conditions often exclude landless farmers and sharecroppers. Provisions should be made to allow enrollment based on crop evidence rather than land ownership documents alone.

5. Strengthen Use of Technology for Damage Assessment

While PMFBY uses satellite and remote sensing, more localized and real-time data (via drones and AI-enabled image analysis) should be incorporated to enhance accuracy and speed of loss estimation.

6. Integrate with Other Risk Mitigation Services

PMFBY should not operate in isolation. Linking it with weather advisories, crop advisory platforms, and credit support systems can enhance its overall utility and resilience-building capacity.

7. Public-Private Partnership Optimization

To ensure accountability and service efficiency, the roles of private insurers should be closely monitored. Performance-based incentives and penalties can ensure better service delivery.

8. Create Transparency Dashboards for Farmers

A centralized PMFBY dashboard should be made accessible to farmers to track their coverage, claim status, and grievance redressal requests, enhancing trust and transparency.

Conclusion :

The study demonstrates that the Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY) has a significant positive impact on farmer resilience in Rajasthan. Insured farmers experienced higher post-failure income, reduced dependence on informal credit, and quicker recovery compared to uninsured counterparts. However, challenges such as delayed settlements, limited awareness, and exclusion of tenant farmers continue to hinder its full potential. Strengthening implementation through timely disbursement, digital integration, and inclusive policies can make PMFBY a more reliable and transformative tool for agricultural risk management.

References :

1. Singh, A. K. (2011). R.S. Deshpande and Saroj Arora (Eds.), *Agrarian crisis and farmer suicides* (pp. xxi + 436). New Delhi: Sage Publications. *Social Change*, 41(3), 485–491. <https://doi.org/>

10.1177/004908571104100309

2. Ministry of Finance. (2023). Economic Survey 2022–2023. Department of Economic Affairs, Government of India. <https://www.indiabudget.gov.in/economicsurvey/>
3. Mahul, O., & Stutley, C. J. (2010). Government support to agricultural insurance: Challenges and options for developing countries (Agriculture and Rural Development Series). World Bank. <https://doi.org/10.1596/978-0-8213-8217-2>
4. Ministry of Agriculture & Farmers Welfare. (2021). Annual report 2020–21. Government of India. <https://agricoop.nic.in/>
5. Raju, S. S., & Chand, R. (2008). Agricultural insurance in India: Problems and prospects. National Centre for Agricultural Economics and Policy Research.
6. Fukuoka, M. (1978). The one-straw revolution: An introduction to natural farming. New York: Rodale Press.
7. Roy, B., & Mondal, B. (2018). Performance evaluation of Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY) in West Bengal. <https://doi.org/10.13140/RG.2.2.16911.41120>
8. Jain, R. (n.d.). Role of Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana in improving agricultural resilience in India [Unpublished manuscript].
9. Reddy, A. (2025). Weathering the storm: Farmer resilience and adaptive strategies for crop losses. CRC Press. <https://doi.org/10.1201/9781003582878>
10. Tiwari, R., Chand, K., & Anjum, B. (2020). Crop insurance in India: A review of Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana (PMFBY). *FIIB Business Review*, 9(4), 281–291. <https://doi.org/10.1177/2319714520966084>
11. Blackmore, I., Ringler, C., & Meinzen-Dick, R. (2022). Gender gaps in agricultural growth and development: Opportunities for improving gender-responsive programming. International Food Policy Research Institute (IFPRI). <https://doi.org/10.2499/p15738coll2.135905>



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 18-20

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

भारतीय शिक्षा पद्धति की शिक्षक शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समालोचनात्मक भूमिका

डॉ. चन्द्र कान्त शर्मा

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अपेक्स स्कूल ऑफ एजुकेशन
अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर।



सारांश :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण सुधार लाने का प्रयास है। यह नीति शिक्षक शिक्षा में व्यापक सुधारों का प्रस्ताव रखती है। ताकि शिक्षकों की गुणवत्ता और प्रशिक्षण को आधुनिक जरूरतों के अनुरूप बनाया जा सके। शिक्षक शिक्षा भारतीय शिक्षा पद्धति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह न केवल शिक्षण पद्धतियों को प्रभावित करता है, बल्कि छात्रों के मानसिक और सामाजिक विकास पर भी गहरा प्रभाव डालता है। इस अध्ययन में NEP 2020 द्वारा प्रस्तुत उद्देश्यों, योजनाओं और उनकी चुनौतियों पर विचार किया गया है। इसके माध्यम से यह समझने की कोशिश की गई है कि यह सुधार भारतीय शिक्षा पद्धति में किस हद तक प्रभावी हो सकते हैं और इनका वास्तविक कार्यान्वयन किस प्रकार से किया जा सकता है। यह शोध पत्र NEP 2020 के तहत प्रस्तावित शिक्षक शिक्षा में किये गये सुधारों का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

1. परिचय :

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि शिक्षक न केवल ज्ञान का प्रसार करते हैं, बल्कि छात्र के सर्वांगीण विकास में भी योगदान देते हैं। NEP 2020, जिसे 29 जुलाई 2020 को केन्द्र सरकार द्वारा जारी किया गया, भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह नीति शिक्षा के सभी क्षेत्रों को सुधारने का प्रयास करती है, जिसमें शिक्षक शिक्षा का क्षेत्र भी शामिल है। शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली की रीढ़ होते हैं इसलिए शिक्षक को प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण आवश्यक है जिससे शिक्षकों को अधिक सक्षम और प्रभावी बनाया जा सके। इस नीति के तहत, शिक्षक शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और रोजगारपरक बनाने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं ताकि यह नीति उद्देश्य परक साबित हो सके।

2. NEP 2020 और शिक्षक शिक्षा में प्रमुख सुधार NEP 2020 के तहत शिक्षक शिक्षा में निम्नलिखित प्रमुख सुधार प्रस्तावित हैं :-

- **एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) :** चार वर्षीय स्नातक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम लागू किया गया है, जिससे शिक्षण पेशे में प्रवेश के लिए उच्च मानकों को स्थापित किया जा सके।
 - **शिक्षक प्रात्रता परीक्षा (TET) और मूल्यांकन :** शिक्षकों के मूल्यांकन को और अधिक सख्त और व्यवस्थित किया गया है।
 - **निरन्तर व्यावसायिक विकास (CPD) :** शिक्षकों के सतत विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अनिवार्य किया गया है।
 - **प्रौद्योगिकी का समावेश :** डिजिटल शिक्षा और ई-लर्निंग संसाधनों को बढ़ावा दिया गया है।
 - **शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों का पुनर्गठन :** B.Ed और अन्य शिक्षण पाठ्यक्रमों को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए नए मानदंड निर्धारित किए गए हैं।
 - **शिक्षकों के लिए नए प्रशिक्षण मॉडल :** NEP 2020 में शिक्षक प्रशिक्षण के मॉडल को नए दृष्टिकोण से देखा गया है। इसके तहत शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सक्षम बनाने का लक्ष्य रखा गया है।
 - **शिक्षक शिक्षा में व्यावसायिकता :** नीति के अनुसार, शिक्षक शिक्षा को एक पेशेवर कार्य के रूप में देखा जाएगा, और इसके लिए उच्च मानकों की आवश्यकता होगी। शिक्षक बनने के लिए आवश्यक योग्यता को बढ़ाया गया है, जैसे कि B.Ed को 4 वर्षीय कार्यक्रम में बदलना।
 - **टेक्नोलॉजी का समावेश :** NEP 2020 में डिजिटल शिक्षा और तकनीकी उपकरणों के इस्तेमाल को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया है। इससे शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।
 - **शिक्षक की निरन्तर प्रोफेशनल डवलपमेंट (CPD) :** NEP 2020 में यह भी कहा गया है कि सभी शिक्षकों को निरन्तर पेशेवर विकास के अवसर मिलने चाहिए। इससे वे अपने क्षेत्र में नवीनतम शोध और पद्धतियों से अपडेट रह सकेंगे।
3. **शिक्षक शिक्षा में सुधारों की समालोचना समीक्षा यद्यपि NEP 2020 शिक्षक शिक्षा में कई सकारात्मक परिवर्तन पर केन्द्रित है, फिर भी इसके क्रियान्वयन में कुछ चुनौतियाँ बनी हुई हैं :-**
- **व्यवहारिक चुनौतियाँ :** ITEP को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए बुनियादी ढाँचे और योग्य प्रशिक्षकों की आवश्यकता होगी।
 - **शिक्षकों की संख्या और गुणवत्ता :** उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों की कमी अभी भी एक बड़ी समस्या है।
 - **प्रौद्योगिकी और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता :** ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा संसाधनों की कमी एक चुनौती बनी हुई है।
 - **शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थिति :** भारत में कई शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता अपेक्षित स्तर तक नहीं है।
 - **संसाधनों की कमी :** देश के कई हिस्सों में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षक प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त संसाधनों यथा इंटरनेट कनेक्शन, स्मार्ट बोर्ड, बिजली की निर्बाध उपलब्धता, बैंड विडथ की कमी हो सकती है। ऐसे में, तकनीकी सुधारों और प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाना चुनौतीपूर्ण प्रतीत होता

है।

- **कार्यान्वयन में समस्या :** NEP 2020 के कुछ सुधारों को सही ढंग से लागू करना कठिन हो सकता है। शिक्षा राज्य सूची का विषय है इसका क्रियान्वयन राज्य और केन्द्र सरकार के बीच पारस्परिक तालमेल और शिक्षा विभागों की क्षमता पर भी निर्भर करता है कि ये सुधार कितने शीघ्र प्रभावी होंगे।
- **शिक्षकों की बढ़ती जिम्मेदारी :** शिक्षकों को नए और विस्तृत प्रशिक्षण मॉडल के तहत और अधिक जिम्मेदार बना दिया गया है, लेकिन इसके लिए उन्हें आवश्यक समर्थन और संसाधन उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता है।

4. भारतीय शिक्षा पद्धति में शिक्षक शिक्षा का महत्व :

भारतीय शिक्षा पद्धति में शिक्षक का स्थान केन्द्रीय है। शिक्षक शिक्षा के सुधारों के माध्यम से भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, गुणवत्ता-प्रेरित और वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने की आवश्यकता है। NEP 2020 में शिक्षक शिक्षा को एक पेशेवर और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने की कोशिश की गई है, जो कि भारतीय शिक्षा पद्धति के लिए एक सकारात्मक कदम है।

5. निष्कर्ष और सुझाव :

NEP 2020 शिक्षक शिक्षा में सुधार लाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हालांकि, इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए पर्याप्त संसाधनों, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के उन्नयन और शिक्षकों के सतत विकास पर ध्यान देना आवश्यक हैं। सरकार को शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की निगरानी और सुधार पर विशेष ध्यान देना चाहिए, कार्यान्वयन के स्तर पर सुधारों की आवश्यकता हैं शिक्षक शिक्षा को एक अधिक व्यावसायिक, गुणवत्ता-प्रेरित और समावेशी बनाने के लिए NEP 2020 का दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

संदर्भ सूची :

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। पृष्ठ 10-12.
2. भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और चुनौतियाँ, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT).
3. भारतीय उच्च शिक्षा परिषद (HECI) और शिक्षक शिक्षा के मानक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC).
4. सतत व्यावसायिक विकास पर शोध पत्र, भारतीय शिक्षण परिषद।
5. Gupta, A., & Mishra, P. (2020). "Teacher Education in India: Policy, Practice, and Future Prospects." Educational Research Journal, 35(2), 115-128.
6. Sharma, R. (2021). "Transforming Teacher Education: A Critical Review." Journal of Education Policy, 45(3), 202-220.

Email lawaniya.chandrakant@gmail.com

Mobile 9414980902, 9414260063



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 21-25

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Parental Influence on Emotional Intelligence : A Societal Perspective

Dr. Priyanka Singh

"The way we talk to our children becomes their inner voice." — Peggy O'Mara

Abstract :

Emotional intelligence (EI) encompasses the capacity to perceive, manage, and articulate emotions effectively—an attribute increasingly recognized as crucial for individual well-being and societal harmony. While EI can be partially innate, its development is profoundly influenced by early life experiences, particularly those shaped within the family environment. Parents, as primary caregivers, serve as the first models of emotional behaviour, imparting values and coping mechanisms through verbal and non-verbal communication. Their role in emotion coaching, empathetic listening, and behaviour modelling lays the foundation for children's self-awareness, responsiveness, and emotional regulation. Parenting styles—authoritative, authoritarian, permissive, and neglectful—have distinct outcomes on emotional growth; authoritative parenting, marked by both warmth and discipline, is consistently linked to high emotional competence, while neglectful parenting often leads to emotional deficiencies and social difficulties.

The societal context within which parenting occurs further complicates this dynamic. Cultural norms, gender roles, and socioeconomic challenges shape how emotions are expressed and validated. For instance, collectivist cultures may emphasize emotional restraint in favor of group harmony, while individualistic cultures may promote open emotional expression. Gendered expectations often pressure boys to suppress vulnerability and encourage girls to remain passive in their emotional articulation, thereby influencing their emotional intelligence trajectories. Economic hardship can hinder emotionally nurturing environments by inducing stress, reducing parental availability, and limiting access to supportive resources. Conversely, affluent families may inadvertently encourage emotional detachment through over-scheduling and material distractions. In modern society, the pervasive influence of digital media adds another layer, altering how children engage emotionally. Excessive screen time may reduce face-to-face emotional interactions, impairing empathy

development and communication skills, making parental mediation and involvement even more critical. Emotional intelligence nurtured by parents has far-reaching implications beyond the household. Individuals with high EI are more likely to succeed academically and professionally, exhibit resilience, and contribute to social cohesion. Societies benefit when emotionally intelligent individuals engage in empathetic leadership, community-building, and conflict resolution. Thus, strengthening parental roles through educational programs, mental health support, and public policies can generate a ripple effect, elevating the emotional health of future generations. In conclusion, parental influence on emotional intelligence represents a core determinant of individual and collective emotional literacy. Understanding this influence from a societal perspective reveals the need for holistic support systems that empower caregivers across cultural and economic backgrounds. Emotional development is not merely a private affair but a public concern, with deep implications for how societies evolve, connect, and thrive in an increasingly complex emotional landscape.

Keywords : Emotional Intelligence, Parenting Styles, Emotion Coaching, Self-Regulation, Empathy, Socioeconomic Factors, Cultural Norms, Child Development, Parental Modelling, Societal Impact
Preface

Emotional intelligence (EI) is increasingly recognized as a vital component of personal and social development. Defined as the ability to perceive, manage, and express emotions effectively, EI governs how individuals interact with others, handle stress, and navigate complex social environments. While some degree of emotional capacity may be innate, a vast body of research confirms that emotional intelligence is heavily shaped by early childhood experiences—most notably, parental influence. Parents serve as the first emotional guides for their children, modelling responses to feelings, offering validation, and helping children regulate their emotions. In this article, we examine how different parenting styles, socioeconomic conditions, and cultural frameworks contribute to—or hinder—the emotional maturity of individuals from a societal standpoint.

From birth, children rely on caregivers to understand and interpret emotional cues. Parents are the primary architects of a child's emotional world, crafting the blueprint for how feelings are expressed, understood, and managed. Infants observe their caregivers closely, imitating facial expressions, vocal tones, and emotional reactions. These early interactions form the bedrock of empathy, emotional regulation, and self-awareness.

Parental modelling is one of the most potent tools in emotional education. For example, a parent who responds calmly to a stressful situation is teaching their child that emotional regulation is achievable—even under duress. Conversely, a child who witnesses frequent emotional outbursts, aggression, or dismissal of feelings may internalize unhealthy coping strategies. Researchers like

John Gottman have championed the concept of "emotion coaching," where parents take an active role in helping children name and understand their emotions. Through listening, validation, and guidance, children not only become better communicators but also more resilient and empathetic individuals. Parenting styles provide a framework for how emotional intelligence is cultivated within the home. Psychologists typically categorize parenting into four major styles: authoritative, authoritarian, permissive, and neglectful. Each has distinct implications for a child's emotional growth.

Authoritative parents combine warmth and structure. They communicate openly with their children, set clear expectations, and encourage emotional expression. These children often exhibit high emotional intelligence, including empathy, self-regulation, and strong interpersonal skills. In contrast, authoritarian parents are rigid and often punitive, prioritizing obedience over emotional expression. Children raised in such environments may struggle with emotional inhibition and develop fear-based responses to stress.

Permissive parents are nurturing but offer little guidance or boundaries. While children may feel emotionally supported, they often lack discipline and impulse control, which can impede their social functioning. Neglectful parenting—characterized by emotional and physical absence—poses the most significant threat to EI. Without emotional validation or modelling, children may develop detachment, low self-esteem, and poor emotional regulation.

Parental influence does not exist in a vacuum; it is embedded within cultural and societal frameworks that shape behaviours and expectations. In collectivist societies, such as India, emotional intelligence may be cultivated through strong family ties, communal values, and intergenerational caregiving. Children learn to navigate emotions in the context of group harmony and social obligation. However, cultural norms can also suppress emotional expression. For example, societal expectations around masculinity may discourage boys from showing vulnerability, while girls may be expected to be emotionally expressive but passive.

Socioeconomic status also plays a key role. Parents in lower-income families often face chronic stress, job insecurity, and limited access to mental health resources—all of which can affect emotional availability. These challenges may reduce the time and emotional bandwidth available for nurturing relationships with children. On the other hand, parents in more stable socioeconomic conditions are better positioned to provide consistent emotional support and developmental opportunities. However, wealth alone doesn't guarantee emotional well-being. Over-scheduling, materialism, or emotional neglect can occur in any household, regardless of income.

Media exposure and technology further complicate the emotional landscape. Children are increasingly interacting with screens rather than people, diminishing their ability to read facial

expressions, interpret tone, and engage in empathetic dialogue. Parental guidance in digital consumption becomes vital to ensure that children still experience human connection, reflective dialogue, and emotional mentorship.

Emotionally intelligent individuals tend to contribute positively to society. They are better equipped to lead, collaborate, resolve conflict, and show compassion—traits that elevate social cohesion and collective well-being. When parents nurture emotional intelligence, they are not just raising well-adjusted children; they are shaping the fabric of a healthier, more empathetic society.

Societies that invest in supporting parental roles—through parental education, community support systems, and mental health resources—see measurable improvements in youth well-being, academic success, and public safety. Emotional intelligence serves as a social vaccine against aggression, anxiety, and isolation. Its ripple effects extend to institutions, workplaces, and governments, fostering a culture of understanding and mutual respect.

Conclusion :

Parental influence on emotional intelligence is both profound and far-reaching. Through their words, actions, and emotional presence, parents lay the groundwork for how children perceive and respond to the world. These early lessons don't just shape individual personalities—they mold the ethos of entire communities and societies. In a rapidly changing world where emotional literacy is more valuable than ever, investing in parental awareness and support isn't just a private matter—it's a public imperative.

In conclusion, the development of emotional intelligence is intricately woven into the fabric of early life experiences, with parental influence emerging as a decisive factor in shaping a child's emotional landscape. From the modelling of emotional behaviours to the adoption of emotion-coaching techniques, parents hold the power to foster resilience, empathy, and self-regulation in their children. These emotional competencies, once formed, extend far beyond the home, influencing how individuals interact within their communities, workplaces, and broader societal structures. The nurturing or neglect of emotional development during formative years does not just impact personal growth—it reverberates across generations, shaping social cohesion, collective well-being, and the moral fabric of society.

However, the influence of parenting on emotional intelligence is not monolithic; it is coloured by cultural expectations, economic circumstances, and technological advancements. While some societal norms reinforce emotionally intelligent behaviours, others may inadvertently suppress vulnerability or emotional articulation. Economic instability may burden parents with stress and limit their capacity for emotional engagement, while digital media introduces new challenges in maintaining

genuine emotional connections. These multidimensional influences highlight the need for a broader societal commitment to support parents—not only through education and mental health resources but also through policies that prioritize emotional literacy as a foundational life skill.

Recognizing parental influence on emotional intelligence as a public concern encourages a paradigm shift—from viewing emotional development as a private family matter to seeing it as essential to societal progress. When parents are empowered to nurture emotionally intelligent individuals, the results are reflected in more compassionate communities, ethical leadership, and constructive civic participation. The path to a more empathetic and emotionally resilient society begins at home—but it is nurtured by the collective will to support, guide, and enrich the emotional growth of future generations.

References :

1. www.researchgate.net
2. www.psychologyjournal.in
3. www.frontiersin.org

Priyanka2309@yahoo.com

M. 8357012008

sinha5272@gmail.com



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 26-30

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

उत्तर-पश्चिमी राजपूताने में मेघवाल जाति का सामाजिक-आर्थिक योगदान 1750-1950 ई.

महावीर प्रसाद नायक, शोधार्थी

डॉ. बीटा शर्मा, सहायक आचार्य,

श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में प्रत्येक जाति का अपना वंशानुगत और परम्परागत व्यवसाय रहा है, जिसे वह वर्षों से अनुसरित करता रहा है। एक जाति दूसरी जाति का कर्म लाभप्रद होने पर भी नहीं अपनाती थी। दूसरी जाति के कर्म और व्यवसाय के अपनाने पर कठोर नियंत्रण विभिन्न जातियां अपने व्यवसाय और कर्म में ही संतुष्ट रही। शूद्रों में चर्मकार अपने चमड़े के कार्य में ही व्यस्त रहा तथा उसी में सुख का अनुभव करता था। इस प्रकार पेशे अथवा व्यवसाय के कारण हिन्दू समाज को जातियों ने अपनी पृथक परिस्थिति बना रखी थी। किसी भी व्यक्ति के व्यवसाय चयन में न केवल जाति-बंधुओं का नैतिक नियंत्रण तथा सामाजिक प्रतिबन्ध ही कार्य करता था, अपितु अन्य जातियों का नियंत्रण भी प्रभाव डालता था। इस प्रकार व्यवसाय के चुनाव में दुहरा नियंत्रण था। ये जातियां जाति को दूसरे व्यवसाय और धंधे अपनाने की अनुज्ञा नहीं देती थी, न ही किसी प्रकार का उसमें ताल-मेल करने देती थी अतः व्यवसाय और धंधों के अनुसार जाति का विकास हुआ, जिसमें परम्परानुसार सबके अलग-अलग पेशे थे। भाषायी और प्रादेशिक भिन्नता के आधार पर अनेक जातियाँ विकसित होकर समाज में स्थिर हो गईं तथा कालान्तर में इन्होंने अपना स्थान बना लिया। इन जातियों का, इनके कार्यों और अभिव्यक्तियों के अनुसार, विशिष्टतापरक नाम भी पड़े।

राजपूताना में इस्लाम धर्म का प्रवेश ग्यारहवीं शताब्दी से और विशेषतः तेरहवीं शताब्दी में हुआ। तुर्क आक्रमणों के कारण राजपूताना के जन-जीवन को नई परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। प्रत्येक जाति का अनेक उपजातियों में विभाजन हो चूका था। निम्न जातियाँ समाज की अनिवार्य सेवाएं करने पर भी तिरस्कार और घृणा का पात्र समझी जाती थी। इस कारण अन्त्यज (अछूत) कही जानेवाली जातियों की स्थिति अत्यधिक दयनीय हो गई। मुस्लिम शासनकाल में युद्ध में हार जाने के कारण राजपूतों के सामने दो ही विकल्प

रहते या तो वे मुस्लमान बन जाये या फिर निम्न वर्गों में मिलकर उनके पेशे को अपनाकर अपना जीवन निर्वाह करें। इसी प्रकार जाति व्यवस्था की कठोरता के कारण जातीय नियमों को भंग करने पर सबसे कठोर दण्ड जाति से निष्कासित करना था। इन्हीं जाति बहिष्कृत व्यक्तियों के कारण सैकड़ों जातियाँ व उपजातियाँ बन गईं।² चर्मकार जातियों में मेघवाल, चमार, रैगर, मोची, डबगर आदि हैं। कुछ लोगों को विपत्ति के समय मेघवालों के घर का खाना खाने या पानी पी लेने से या गरी हुई गाय को भाइयों या उनकी औरतों के कहने पर फेंक देने पर जाति से निष्कासित कर दिया गया। ऐसे ही कारणों से विभिन्न जाति के लोग जिनमें प्रमुख रूप से राजपूत, जाट, पल्लीवाल ब्राह्मण, चारण आदि मेघवालों में मिल गए।

प्रस्तुत आलेख में मेघवाल जाति द्वारा सामाजिक तथा आर्थिक योगदान में उनकी भूमिका क्या रही। राजस्थान राज्य अभिलेखागार में संगृहीत विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक स्त्रोतों के विशाल संग्रह जिसमें सावा बहियाँ, कागदां री बहिया, जोधपुर की सनद परवाना बहियाँ, जैसलमेर बाहियात आदि प्रमुख हैं। यह पुरालेखीय सामग्री 17वीं सदी से 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक क्षेत्रीय इतिहास को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत करती है। इस आलेख में पुरालेखीय स्त्रोत सामग्री के आधार पर मेघवाल जाति के सामाजिक एवं आर्थिक योगदान को प्रस्तुत किया गया है।

मेघवाल, बलाई या भांभी उत्तर-पश्चिमी राजपूताने में बहुतायत से पाए जाते हैं। इन्हें मेघवाल या मेघ के वंशज भी कहा जाता है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे ब्राह्मण थे।³ बीकानेर राज्य में चमार बलाई, चंड, मेघवाल नामों से जाना व पहचाना जाता था।⁴ जोधपुर राज्य में मेघवाल, भांभी या बलाई कहा जाता है। जैसलमेर राज्य में मेघवाल चमार, बलाई आदि कहा जाता है। राजपूताना में इन्हें मेघवंशी भी कहा जाता है। भांभी का अर्थ पुकारने वाला व झुंडी पीटने वाला होता है, बंग्ग का अर्थ ढोल भी है जो सरकारी आज्ञा को ढोल बजाकर समस्त ग्राम वासियों को सूचना देने वाले को "भांभी" पुकारा जाता था। जोधपुर राज्य में गांव की बांम यानी बेगार निकालने वाले को बांभी कहते थे। बांभी (भांभी) को राज्य की तरफ से पगड़ी बंधाई जाती और एक लकड़ी भी देदी जाती जिसको बांभी हमेशा हाथ में रखता था। बांभी हवलदार के पास हाजिर रह कर कार्य करता जिसके कारण राज्य का कोई कर, (लाग-बाग) उसे नहीं लगता। गांव बांगी हमेशा मेघवालों में से ही होने के कारण इस जाति का नाम भी बांगी हो गया। इनके चार मुख्य विभाग हैं, जो आदू या मूल, मारू, जाटा तथा चारणीया कहलाते हैं। अंतिम तीन क्रमशः राजपूत, जाट और चारण के वंशजों से बने हैं। मेघवाल जाति में बरीठका (बरीका) नागक वशिष्ठ गोत्री है जो प्रायः वस्त्र बनाने का कार्य करते थे, उसी का अपभ्रंश राजपूताना में बरीठका और कहीं कहीं पर बरीका शब्द हो गया है। मेघवंशियों में बरीका तथा जाटा ये दो भेद प्रमुख रूप से पाए जाते हैं। क्षत्रियों के अवशेष अंश जो कई जाटों में मिल गये और कई बुनकर हो गये। इनमें कुछ परम्परागत चमड़े का काम करते हैं, और कुछ हद तक कृषक हैं तथा अन्य मजदूरी भी करते हैं।

राज्य की और से बेगार के बदले कृषि भूमि प्रदान की जाती थी, जिरा पर कोई लाग-बाग (विघेड़ी) नहीं ली जाती थी।⁵ राज्य की और से खेती के लिए खेत उन्हीं परिवारों को दिए जाते थे, जो गांव में बेगार निकलने का कार्य करते थे। अन्य परिवार जो बेगार निकालने का कार्य नहीं करते, उन्हें खेती के लिए खेत नहीं दिया जाता था।⁶ किसी दूसरे गांव में किसी अन्य की कृषि भूमि मुकाता देकर जोतने की लिए ली जाती तो उन्हें विघेड़ी देनी पड़ती थी।⁷ गांव भांभी व राज भांभी का बिना मजदूरी के भुगतान लिए बगैर कार्य करना पड़ता था। उनको निर्वाह के लिए कृषि भूमि प्रदान की जाती थी, जिस पर कोई लाग-बाग नहीं लगता था। कई बार अन्य स्थान पर खेती करने पर चौधरी उनको आधी दर पर भुगतान के लिए हवलदार से इजाजत दिलवा देता था।⁸ खेती करने पर विघेड़ी तथा धुआं भान्छ दिए जाने के उल्लेख भी मिलते हैं।⁹ कई बार अन्य जाति के किसान की मृत्यु होने पर खेती को जोतने के लिए भी इन्हे दे दिया जाता था।¹⁰

उच्च वर्ग के लोगो द्वारा इन्हे घरिया (घरेलु चाकर) भी रखा जाता था।¹¹ इन घरिया चाकर (नौकरों) में चंड, जो कि अपने मालिक के खेत की जुताई तथा अन्य खेती के संबंधित कार्य करते थे। घरिया चाकरों में सुथार तथा नाई भी होते थे।¹² कई बार जबरदस्ती घरिया बनाने के उल्लेख भी मिलते हैं। राज्य द्वारा उनके मूल मालिक को घरिया सौपने का आदेश गांव मेलूसर के भानीसिंह व चौधरियों को दिया गया था।¹³ गांव सारसु में चंड उदिया जेराम, कलिये अभेराम के भाड़ेरुओं (नौकरों) को धाय भाई जयसिंह के लड़के रुधे द्वारा जबरदस्ती बन्दीखत (लिखकर) अपने भाड़ेरु बना लिया था। अभयराम के भतीजे द्वारा दरबार में पुकार करने पर तीनों को तथा खत वापस वीरे को सौपने, आइन्दा से कोई ऐसा नहीं करेगा के आदेश दिया गया।¹⁴ कई बार घरिया को लेकर विवाद भी उत्पन्न हो जाता था। ऐसा ही एक विवाद गांव कक्कू के सांखले माने तथा बीदावत अमरसिंह के बीच उत्पन्न हुआ। गाने सांखले के पांच आदमी घरिया को अगरसिंह बीदावतके रुपये चार सौ जमा करवाने तक उनके खेत जोतने होंगे उसके पश्चात् माने का उन पर अधिकार होगा।¹⁵ चीरे मगरे के सांसण (धर्मार्थ कृषि भूमि) पर गांव कालासर के उपाध्याय के घरियों सुथार, चंड तथा नाईयों पर इनके गुवाडियों (संयुक्त परिवार) किसी भी प्रकार का कोई कर नहीं लगने का आदेश हवलदार तथा तलबीयों (बुलानेवाले) को दिया गया था।¹⁶ कई बार बेगारी चंड ठाकुरों से नाराज होकर गांव छोड़ कर किसी दूसरे गांव में बस जाते थे।¹⁷ दूसरे गांव में बस जाने पर तब उन्हें वापस गांव में बसाने हेतु राज्य द्वारा आदेश भेजा जाता जिसमें उन्हें कई प्रकार की छूट देने का लिखा जाता था। जैसे गुवाडी को रहने के लिए जमीन, भान्छ (घरो पर कर) 2 साल तक आधा लिया जायेगा।¹⁸ उन्हें किसी प्रकार से डरने की जरूरत नहीं, उनका ख्याल रखा जाएगा। इसी प्रकार गांव छोड़कर जानेवाले वापस आने पर नजराना देते थे या पाछोकी (पिछली) बकाया चुकाने हेतु कहा जाता था।¹⁹ गांव मलसीसर के जीवनिया चंड, अतभागदेसर के रूपला, गांव वीगे के उदीया फुसिया, गांव रिणमलसर के सुखिया, गांव पीलापरा के आसिया, खेतिया, सारगिया, गांव कस्तूरदेसर के नथिया, इसरीया, भगुडो, केसियो, तुलछो, गांव खारे का सादूला, गांव काकड़ा के वीरामिया, गांव मेलूसर के खेरजिया, गांव जेसिंगसर की गुवाडी, गांव धूपालिये के चंड, गांव शोभसर के नानगिया, गांव नौरंगदेसर के रेडेरे के चार बेटे, गांव मेहासर के भीया, गांव मालकसर के गोधुडा के द्वारा गांव छोड़सर दूसरे गाँवों में जाकर बस जाने पर उनको वापस गांव में बसने के लिए आदेश भेजा गया।

उनको कई रियायतें देने का आदेश में लिखा गया।

पडत की खालों²⁰ (चमड़ा) का ठेका भी बेगार निकालने गुवाड़ी को ही दिया जाता था, किसी अन्य गुवाड़ी को नहीं दिया जाता था।²¹ गांव साहवे के ब्राह्मणों और चारणों, तथा खटदर्शन आदि समस्त गांव वासियों को आदेश दिया गया था, कि पडत हमेशा दरबार की बेगार निकलने वाले बेगारी लेता था। अब साईंदास तथा तारा चंड बेगार नहीं निकालते हैं, फिर भी उनको आधी पडत दी जा रही है। यह बात ठीक नहीं अब जो दरबार की बेगार निकलेगा उसे ही पडत देना। जो दरबार की बेगार नहीं निकलेगा उसे पडत नहीं दी जावे। अगर आदेश नहीं मन तो तलब आयेगी। पडत का ठेका प्रति माह के साढ़े छह रुपये की दर से 12 महीने के लिए दिया जाता था।²² प्रति वर्ष के ठेके की राशि एक साथ जगा नहीं करवा पाने पर किशतों में भी चुकाया जा सकता था।²³ किशतों में पूरी राशि जगा नहीं होने पर अगले वर्ष में भुगतान प्राप्त कर लिया जाता था।²⁴ पडत का ठेका लेने वालों से प्रति माह एक गोवड़ा (गाय की खाल) भी ली जाती थी।²⁵ कई बार पडत नजराना लेकर हिस्सों में भी दी जाती थी, जितने हिस्से की पडत दी जाती उसकी बेगार तथा पडत हिस्सेदार लेता था।²⁶ अनूपगढ़ ताल (क्षेत्र) की पडत रूपले को सम्वत् 1927 में मुकाते दिए जाने का भी उल्लेख मिलता है। झझू के पालीवाल ब्राह्मणों को राज्य की और से आदेश दिया गया कि दरबार की बेगार निकलने वाले बेगारी को पडत दी जाती थी लेकिन बेगार नहीं निकलने वाले को आधी पडत किसलिए दी जा रही है। उनको पडत नहीं दी जावे। यदि आदेश नहीं माना तो तलब आयेगी।²⁷

मेघवाल जाति के बुनकरों द्वारा कपड़ा बनाने के कई उल्लेख सावा बहियों में मिलते हैं। उनके द्वारा जहाँ पर बैठकर जिस गड्ढे में पॉव रखकर कपड़ा बुनते हैं, उसे साल कहते हैं। जोधपुर में बुनकरों से सालबाब (कर) तथा बीकानेर में साल नामक कर लगता है। जोधपुर में पहले 16से कम टुकड़ी और 24 हाथ से कम रेजा (मोटा कपड़ा) बनाने पर जुर्माना लगाया जाता था।²⁸ बीकानेर राज्य में हर साल (गड्ढे) में कपड़ा बुनने पर 2 रुपये प्रति वर्ष तथा एक सेर सूत लिया जाता था। जो सूत लिया जाता था, उसे बेच दिया जाता या फिर उसका कपड़ा बुनकरों को पारिश्रमिक देकर बनवा लिया जाता था।²⁹ राजगढ़ में वि.सं. 1915 १४५८ ए.डी. में चंड, भाभी से प्रति हथकरघे के 2 रुपये के हिसाब से निन्यानवे रुपये तथा चार आने वसूलने का उल्लेख मिलता है। राजगढ़ में वि.सं. 1861 १४८०४ ए.डी. में पिचहत्तर रुपये तथा बारह आना वसूले गये थे। राजगढ़ में वि.सं. 1914 —16 १४५७ —59 में एक सौ दस रुपये तथा आठ आने वसूलने का उल्लेख मिलता है। रैणी में वि.सं. 1921 १४६४ ए.डी. में साठ रुपये तथा चार आने तीन पैसे वसूल किये गये। राजगढ़ में वि.सं. 1924 १४६७ ए.डी. में अठत्तर रुपये वसूल किये गये।

पडत हिररोदार लेता था।²⁸ अनूपगढ़ ताल (क्षेत्र) की पडत रूपले को सम्वत् 1927 में मुकाते दिए जाने का भी उल्लेख मिलता है। झझू के पालीवाल ब्राह्मणों को राज्य की और से आदेश दिया गया कि दरबार की बेगार निकलने वाले बेगारी को पडत दी जाती थी लेकिन बेगार नहीं निकलने वाले को आधी पडत किसलिए दी जा रही है। उनको पडत नहीं दी जावे। यदि आदेश नहीं माना तो तलब आयेगी।²⁷

मेघवाल जाति के बुनकरों द्वारा कपड़ा बनाने के कई उल्लेख सावा बहियों में मिलते हैं। उनके द्वारा जहाँ पर बैठकर जिस गड्ढे में पॉव रखकर कपड़ा बुनते हैं, उसे साल कहते हैं। जोधपुर में बुनकरों से सालबाब (कर) तथा बीकानेर में साल नामक कर लगता है। जोधपुर में पहले 16से कम टुकड़ी और 24 हाथ से कम रेजा (मोटा कपड़ा) बनाने पर जुर्माना लगाया जाता था।²⁸ बीकानेर राज्य में हर साल (गड्ढे) में कपड़ा बुनने पर 2 रुपये प्रति वर्ष तथा एक सेर सूत लिया जाता था। जो सूत लिया जाता था, उसे बेच दिया जाता या फिर उसका कपड़ा बुनकरों को पारिश्रमिक देकर बनवा लिया जाता था।²⁹ राजगढ़ में वि.सं. 1915 १४५८ ए.डी. में चंड, भाभी से प्रति हथकरघे के 2 रुपये के हिसाब से निन्यानवे रुपये तथा चार आने वसूलने का उल्लेख मिलता है। राजगढ़ में वि.सं. 1861 १४८०४ ए.डी. में पिचहत्तर रुपये तथा बारह आना वसूले गये थे। राजगढ़ में वि.सं. 1914 —16 १४५७ —59 में एक सौ दस रुपये तथा आठ आने वसूलने का उल्लेख मिलता है। रैणी में वि.सं. 1921 १४६४ ए.डी. में साठ रुपये तथा चार आने तीन पैसे वसूल किये गये। राजगढ़ में वि.सं. 1924 १४६७ ए.डी. में अठत्तर रुपये वसूल किये गये।

बीकानेर राज्य में इस जाति के लोगों में से ही किसी को कोटवाल भी नियुक्त किया जाता था। राज्यकी और से उसको पगड़ी बंधवाई जाती थी।³⁰ उसे हवलदार के पास कोटवाली में रहकर किसी को बुला कर लाना या फिर छोटे मोटे कार्यों को करना पड़ता था।

मेघवाल जाति के लोगों द्वारा खेती तथा खेतिहर मजदूरी के अलावा अतिरिक्त आय के लिए घास बेव कर अपना निर्वाह किया जाता था।³¹ ऊंट पर घास लादकर बेवने के कई सन्दर्भ बहियों में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त चारा बेचने के भी कई उल्लेख मिलते हैं। चारे को झाल (ऊंट गाड़े पर) के रूप में बेचा जाता था।³² कुछ लोग राज्य के तबेले के पशु चराने का कार्य करते थे³³, वही कुछ लोग गायें चराने का कार्य भी करते थे। बहुत कम लोग जूते बनाने तथा पुरानी जूतियां गांठने का कार्य करते थे।³⁴ जूते बनाने पर सिलाड़ी नामक कर लगता था। सिलाड़ी उस सिला (पत्थर) को कहते हैं जहाँ पर जूते बनाये जाते थे।

मेघवाल जाति में नाता प्रथा प्रचलित थी।, नाता किये जाने पर राज्य द्वारा रीठ³⁵ नामक कर वसूल किया जाता था। बेटी के विवाह पर साडी सेल नामक कर के 2 रुपये वसूल किये जाते थे।³⁶ इसके अतिरिक्त धुआं भान्छ नामक कर (प्रति घर) से वसूला जाता था।³⁷

इस प्रकार उत्तर-पश्चिमी राजपूताने में मेघवाल समाज द्वारा समाज उपयोगी कार्यों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मेघवाल समाज के लोगों द्वारा विभिन्न प्रकार के करों का भुगतान जैसे — रीठ, पड़त का ठेका, साल सिलाड़ी, विघेड़ी, धुआं भान्छ, साडी सेला, मुकता, नजराना आदि का भुगतान कर राज्य में अपना आर्थिक योगदान दिया।

19वीं सदी में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का नया युग प्रारम्भ हुआ। इस युग में पाश्चात्य ज्ञान के प्रभाव से एक नवीन भावना तथा चेतना प्रारम्भ हुई। भारतीयों के राष्ट्रीय, धार्मिक और सामाजिक जीवन में नव चेतना का संचार हुआ। जाति व्यवस्था के विरोध में अनेक सुधारवादी आंदोलन शुरू हो गए। आर्य-समाज, ब्रह्म समाज तथा प्रार्थना समाज ने जातीय आधार पर भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई। इन सुधारवादी आंदोलनों के कारण निम्न वर्गों में काफी सुधार हुआ, समय समय पर काफी अधिनियम पारित हुए। इस काल में ऐसा वातावरण तैयार हुआ जिससे जाति व्यवस्था में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 20वीं सदी में गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक, रानाडे तथा महात्मा गांधी के प्रयास उल्लेखनीय हैं।

सन्दर्भ सूची

¹ मिश्र डॉ जयशंकर : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृष्ठ 147

² व्यास कैलाशनाथ एवं गहलोत देवेंद्रसिंह राजस्थान की जातियों का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पृष्ठ 30-31

³ के डी अर्सकिनरू राजपूताना गजेटियर, द वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स रेजीडेंसी एंड बीकानेर पृष्ठ 87-88

⁴ कैप्टन पी. डब्ल्यू पाउलेट : गजेटियर ऑफ द बीकानेर स्टेट, पृष्ठ 99, हरदियालसिंह : रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़ सं.1891 ई. पृष्ठ 527-529

⁵ कागदां री बही वि.सं.1827 बही नं 03 राजस्थान राज्य अभिलेखागार ऑन लाइन सर्वर इमेज नं 30-31

⁶ कागदां री बही वि.सं. 1933 बही नं 79 इमेज नं 04

⁷ कागदां री बही वि.सं.1910 बही नं 60 इमेज नं 71

⁸ बही कागदां री तलाबा री, वि.सं.1896-99 इमेज नं 41

⁹ अस्वीबद्ध सावा बही, चूरू वि.सं.1898 इमेज नं 56

¹⁰ अस्वीबद्ध सावा बही, सूरतगढ़, वि.सं.1924 इमेज नं 26

¹¹ कागदां री बही वि.सं. 1851 बही नं 09 इमेज नं 71

¹² कागदां री बही वि.सं.1911.12 बही नं 61 इमेज नं 109

¹³ कागदां री बही वि.सं. 1051 बही नं 09 पृष्ठ 105

¹⁴ कागदां री बही वि.सं. 1851 बही नं 09 पृष्ठ 107

¹⁵ कागदां री बही वि.सं. 1851 बही नं 09 पृष्ठ 71

¹⁶ सावा बही कागदां री वि.सं.1911 12 बही नं 61 इमेज नं 109

¹⁷ सावा बही छापूर वि.सं.1925, बही नं 08 इमेज नं 15

¹⁸ कागदां री बही वि.सं.1838 बही नं 05 पृष्ठ 17

¹⁹ कागदां री बही वि.सं.1857 बही नं 11 इमेज नं 60

²⁰ अस्वीबद्ध सावा बही अनूपगढ़ वि.सं.1944 इमेज नं 70

²¹ कागदां री बही वि.सं 1933 बही नं 79 इमेज नं 04

²² सावा बही चूरू वि.सं.1925 बही नं 29 इमेज नं 8 ,

²³ अस्वीबद्ध सावा बही चूरू वि. सं. 1904 इमेज नं 246

²⁴ सावा बही सुजानगढ़ वि.सं.1939 बही नं 29 इमेज नं 56

²⁵ अस्वीबद्ध सावा बही चूरू वि.सं.1862 इमेज नं 25

²⁴ अस्वीबद्ध सावा बही अनूपगढ़ विक्रम सम्वत् 1920 इमेज नं 13

²⁵ कागदां री बही नं 65 विक्रम सम्वत् 1916-17 इमेज नं 79

²⁶ अस्वीबद्ध सावा बही रैणी वि.सं.1920 इमेज नं 33

²⁷ कागदां री बही वि.सं 1933 बही नं 79 इमेज नं 04

²⁸ हरदियालसिंह: रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़ सं.1891 ई. पृष्ठ संख्या 534

²⁹ सावा बही राजगढ़ वि.सं.1914-16 बही नं 27 इमेज नं 395

³⁰ सावा बही सुजानगढ़ वि.सं.1939 बही नं 29 इमेज नं 237

³¹ सावा बही रतनगढ़ वि.सं.1913 बही नं 14 पृष्ठ 55-56

³² सावा बही भीनासर वि.सं.1939 बही नं 10 इमेज नं 42

³³ सावा बही सुजानगढ़ वि.सं.1939 बही नं 29 इमेज नं 170

³⁴ हरदियालसिंह: रिपोर्ट मरदुमशुमारी राजमारवाड़ सं.1891 ई. पृष्ठ संख्या 534, सावा बही टीबी वि.सं 1924 बही नं 07 पृष्ठ 44, 46, सावा बही रतनगढ़ वि.सं 1913 बही नं 14 इमेज नं 31

³⁵ सावा बही राजगढ़ वि.सं 1914-16 बही नं 27 इमेज नं 99

³⁶ सावा बही झंगरगढ़ वि.सं.1939 बही नं 02 कंप्यूटर पृष्ठ 04

³⁷ अस्वीबद्ध सावा बही चूरू वि. सं. 1904 इमेज नं 282-283



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 31-34

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

कक्षा में बहुभाषिकता : समस्या या संसाधन

डॉ. कीर्ति खत्री

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी

शहीद दलबीर सिंह राजकीय महाविद्यालय, खरखौदा (पीपली)

शोध लेख सार :

हमारे विद्यालयों की कक्षाओं में अलग-अलग भाषाओं के बच्चे अलग-अलग क्षेत्रों से सम्बंधित होते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षण एक अपेक्षाकृत कठिन कार्य बन जाता है। लेकिन यह बहुभाषिकता एक कठिनाई या समस्या नहीं अपितु यह तो एक प्रकार का संसाधन है जिसका सार्थक प्रयोग कक्षा में सकारात्मक परिणाम देता है। फिर भी इस बहुभाषिकता के प्रति अध्यापकों का रवैया नकारात्मक रहता है। हमें इसी दृष्टिकोण को बदलना है तथा बहुभाषी कक्षा में भी व्यवस्थित शिक्षण को बनाये रखना है। इसके लिए हमें शिक्षण रणनीतियों का सहारा लेना होगा।

मुख्य शब्द : बहुभाषिकता, पाठ्यक्रम, कक्षा-कक्ष, संसाधन, विद्यार्थी-अध्यापक, शिक्षण रणनीतियां, भाषायी-भिन्नता।

हमारे देश में अनेक भाषाओं व बोलियों की भरमार है। थोड़ी-थोड़ी दूर चलने पर ही बोलचाल का ढंग बदल जाता है। यह भाषायी विविधता केवल क्षेत्र विशेष तक ही सीमित नहीं है अब तो अनेक भाषाएँ एक साथ एक मंच पर आकर खड़ी हो गयी हैं। अब वो चाहे दूरदर्शन का कोई कार्यक्रम हो या फिर कक्षा कक्ष। बहुभाषिकता की झलक हमें हर जगह दिखाई पड़ती है।

पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें :

भारत में इतनी भाषायी विविधता है फिर भी पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें इस प्रकार तैयार नहीं की जाती कि वह समस्त बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। पाठ्यपुस्तकें इस विचारधारा को ध्यान में रखकर तैयार की जाती हैं कि सभी बच्चों की मातृभाषा एक ही है और वे उसे अच्छी तरह बोलना भी जानते हैं। मातृभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जो बच्चा जन्म के बाद परिवार के संपर्क में आकर सबसे पहले सीखता है। पुस्तकों के निर्माण में यह धारणा काम करती है कि बच्चे पुस्तकीय भाषा को समझते भी हैं और प्रवाहपूर्वक बोलते भी हैं।

मगर ये मान्यताएं सभी प्राथमिक कक्षाओं के सन्दर्भ में उचित नहीं हैं। जब बच्चा विद्यालय में प्रवेश करता है तो उसके पास विद्यालयी भाषा की बहुत सीमित समझ होती है। कुछ बच्चे तो ऐसे भी होते हैं जिनके पास उस भाषा की समझ बिलकुल नहीं होती है। अगर ऐसे बच्चों को विद्यालयी भाषा का ज्ञान दिए बिना सीधा पढ़ना लिखना सिखायेंगे तो वह बच्चों के लिए असंभव होगा और वे बच्चे पिछड़ते ही चले जायेंगे। मगर हमारा

पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें कक्षा के भीतर बहुभाषिकता की बात को साथ लेकर नहीं चलती।

हमारे देश में विविध भाषाओं का प्रयोग :

हमारे देश में भाषायी धरातल पर अनेक प्रकार की विविधता पाई जाती हैं। देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कई भाषाएँ बोल सकता है, चाहे उसे उस भाषा में भाषायी निपुणता प्राप्त न हो। इस सत्य से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि मनुष्य के सभी काम एक ही भाषा से नहीं हो सकते हैं। अलग-अलग परिस्थितियों में हमें अलग-अलग भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। उदाहरण के लिए हमारे घर व विद्यालय की भाषा भी अलग-अलग होती हैं। जब हम अपने हमउम्र साथियों के साथ होते हैं तो भाषा का एक दूसरा रूप सामने आता है। कुछ भाषाएँ ऐसी भी होती हैं जिनको हम बोलते नहीं हैं मगर उस भाषा को पढ़ने व लिखने का काम करते हैं, जैसे – विदेशी भाषाएँ जर्मन, रशियन आदि। कार्यालयी पत्र व्यवहार के लिए प्रयोग होने वाली भाषा भी अलग होती है। विभिन्न भाषाओं के लोग आपस में सम्प्रेषण के लिए भी एक अलग भाषा का प्रयोग करते हैं जिसे संपर्क भाषा कहते हैं, जिसमें अनेक भाषाओं के शब्दों का सम्मिश्रण होता है।

कोई भी भाषा किसी अन्य भाषा से कमतर नहीं है। प्रत्येक समूह के लिए उसकी भाषा वही कार्य करती है जो किसी दूसरे समूह के लिए उसकी भाषा। सभी भाषाएँ अपने आप में महत्वपूर्ण हैं।

कक्षा कक्ष में पाई जाने वाली बहुभाषिकता :

जब बच्चा विद्यालय आना शुरू करता है तो वह अपनी मातृभाषा साथ लेकर आता है। अलग-अलग बच्चों की मातृभाषा भी अलग-अलग होती हैं। एक क्षेत्र विशेष से आने वाले बच्चों की मातृभाषा एक हो सकती है लेकिन अलग-अलग क्षेत्रों से आने वाले बच्चों की भाषा अलग होती हैं।

अगर हम हरियाणा के किसी सरकारी विद्यालय का उदाहरण ले तो –उसमें हिंदी बोलने वाला बच्चा भी होगा, हरियाणवी बोलने वाला भी, बिहारी वर्ग की भाषा को जानने वाला भी तथा छत्तीसगढ़ी भाषा को जानने वाला भी। अलग-अलग भाषाओं के लोग अलग-अलग क्षेत्रों में आकर बस जाते हैं जिसके कारण कक्षा में बहुभाषिकता का वातावरण नजर आता है। इनमें से कुछ ही बच्चे ऐसे होते हैं जिन्हें अपनी भाषा के अलावा विद्यालयी भाषा की समझ होती है अन्यथा सभी बच्चे केवल अपनी मातृभाषा में ही बोलना जानते हैं और इसके अलावा किसी अन्य भाषा की समझ इन्हें नहीं होती है। ऐसी स्थिति अध्यापक के लिए थोड़ी समस्याप्रद अवश्य होती है और ऐसी कक्षा में वास्तविक शिक्षण कर पाना आसान नहीं होता है। कई बार तो स्थिति ऐसी भी हो जाती है कि अध्यापक बच्चों की भाषा नहीं समझ पाते व बच्चे अध्यापक की भाषा नहीं समझ पाते हैं।

बहुभाषिक कक्षा के प्रति अध्यापक का नजरिया :

कक्षा कक्ष में पायी जाने वाली बहुभाषिकता के प्रति अध्यापक का दृष्टिकोण संतोषजनक नहीं है। वह इसे अपने शिक्षण में एक बाधा के रूप में देखता है।

कक्षा में बच्चों को अपनी भाषा का प्रयोग करने से रोका जाता है। बच्चों की मातृभाषा को कमतर माना जाता है और उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यालयी भाषा में ही आपस में चर्चा या बात करें। अध्यापक ऐसे बच्चों की बात सुनने में भी दिलचस्पी नहीं रखते हैं। उन्हें कक्षा में चुप रहने के लिए कहा जाता है। इस स्थिति में ये बच्चे कक्षा कक्ष में अकेले व चुपचाप बैठे रहते हैं। अध्यापक इनकी भाषा के शब्दों, बोलने के ढंग को असम्य कहकर इनकी भाषा को कक्षा में स्थान नहीं देते हैं।

इस प्रकार के नकारात्मक व्यवहार से बच्चा मौखिक अभिव्यक्ति का विकास भी नहीं कर पाता व एक प्रकार की हीनभावना उसके अंदर पैदा हो जाती है। चर्चा-परिचर्चा में उसके विचारों को कोई महत्व नहीं दिया जाता, जिस कारण बच्चा शैक्षणिक स्तर पर और पिछड़ता चला जाता है। ये ये रवैया बच्चे को उसकी भाषा से दूर करता चलता है।

बहुभाषिकता एक संसाधन के रूप में :

एक कक्षा में बहुभाषिकता को समस्या माना जाता है और अध्यापकों के द्वारा यह तर्क भी दिया जाता है कि ऐसी कक्षा में शिक्षण व्यवस्थित ढंग से नहीं चल सकता।

लेकिन वास्तविक रूप यह नहीं है। बहुभाषिकता एक समस्या नहीं है अपितु यह तो कक्षा में एक संसाधन के रूप में प्रयुक्त हो सकती है। बच्चों की भाषा को कक्षा कक्ष में स्थान देने से अलग-अलग संस्कृतियों की जानकारी कक्षा में मिलती है। अलग-अलग भाषाओं, उनकी शब्दावली का ज्ञान मिलता है। अलग-अलग त्योहारों को अलग-अलग ढंग से मनाने की जानकारी भी कक्षा में मिलती है। क्षेत्र, परिवेश आदि की जानकारी का आदान-प्रदान कक्षा में होता है।

बच्चों को यह महसूस होता है कि उनकी भाषा का भी महत्व है और वे भी कक्षा प्रक्रिया में भागीदार हैं। बच्चों की भाषा का कक्षा में प्रयोग उनकी सहभागिता बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। बच्चा अपने आप को कक्षा से कटा हुआ महसूस नहीं करता है। विभिन्न भाषाओं को एक कक्षा में समान महत्व देने से बच्चों में सामूहिक भावना, एकता, राष्ट्रीयता आदि गुणों का समावेश होता है। बच्चा मौखिक वार्तालाप में शामिल होने लगता है। वह दोस्तों से भी धीरे-धीरे बात करने लगता है। कक्षा में जुड़ाव अनुभव होने पर वह विद्यालयी भाषा को भी सीखने लगता है तथा शिक्षण प्रक्रिया को भी समझने लगता है। सभी बच्चों की शिक्षण में सक्रिय सहभागिता बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि हम भाषायी विविधता को एक समस्या न माने बल्कि कक्षा में बच्चों के विकास के लिए एक संसाधन के रूप में प्रयोग करें।

बहुभाषिक कक्षा के लिए शिक्षण रणनीतियां :

भाषायी विविधता वाली कक्षा में अध्यापक को बच्चों की भाषा को कक्षा में जगह देनी होगी तभी वे समुचित शिक्षण कार्य कक्षा में कर पाएंगे। सबसे पहले शिक्षक को शुरू में कक्षा में बच्चों को अपनी भाषा में बातें करने का अवसर देना होगा। बातचीत, गतिविधियों के जरिये बच्चों को विद्यालयी या पुस्तकीय भाषा को समझने का समय देना होगा। उन्हें किताबों से खेलने का अवसर देना होगा अर्थात् उन्हें रोजाना कुछ प्रिंट सामग्री देनी होगी जिससे बच्चों को लिखित सामग्री की समझ हो सके।

कक्षा में मौजूद सभी बच्चों की भाषा को कक्षा में शामिल करना अध्यापक के लिए थोड़ा मुश्किल होगा व अध्यापक को अतिरिक्त प्रयास करने पड़ेंगे। लेकिन अगर वास्तव में ऐसा किया जाता है तो परिणाम भी सुखद व संतोषजनक होंगे। अध्यापक को बच्चों के साथ आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करने होंगे, उनकी बात को ध्यान से सुनना होगा, कक्षा में विभिन्न बच्चों के विचारों को समान महत्व देना होगा जिससे अध्यापक भाषायी विविधता से ऊपर उठकर सभी बच्चों को अपने साथ लेकर चल सकेगा।

शिक्षण के दौरान बच्चों की भाषाओं का विविध सन्दर्भों में प्रयोग किया जा सकता है। बच्चों पर पाठ्यपुस्तक को थोपा न जाये। विद्यालय में आते ही पुस्तकीय भाषा का ज्ञान दिए बिना हम बच्चों से

पढ़ने-लिखने का कार्य नहीं करा सकते हैं। उसके लिए पहले हमें बच्चे की भाषा समझनी होगी व उसके बाद उसी की भाषा के जरिये पुस्तकीय भाषा का ज्ञान बच्चे को देना होगा। अगर हम इसे एक सहायक सामग्री के रूप में लेकर चलेंगे तो आने वाली समस्याएँ भी हल होती चली जाएँगी।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि बच्चे के भाषायी व शैक्षणिक विकास हेतु विद्यालयों को बच्चे के अनुरूप ढलना होगा। हमें अपना पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें इस प्रकार तैयार करनी होंगी जो भिन्न-भिन्न भाषायों वाले बच्चों की भी शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। शिक्षण योजना में सभी बच्चों के विकास की बात को शामिल करना होगा चाहे उनकी भाषायी या सामाजिक पृष्ठभूमि कैसी भी क्यों न हो। अध्यापकों के लिए इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने होंगे जो उन्हें बहुभाषिक कक्षा में व्यवस्थित शिक्षण के लिए तैयार कर सकें।

सन्दर्भ :

1. रजनी द्विवेदी का 'लैंग्वेज एंड लैंग्वेज टीचिंग' का लेख 'इन ए मल्टीलिंगुअल क्लास'।
2. स्वरा खंड 1, अंक 1, नेशनल मल्टीलिंगुअल रिसोर्स सेण्टर।
3. एलिजाबेथ कोइल्हो कृत 'लैंग्वेज एंड लर्निंग इन मल्टीलिंगुअल क्लासरूम'।
4. आशा एजुकेशन, एजुकेशन हब, मल्टीलिंगुअलिस्म इन लैंग्वेज एंड लिटरेसी – मल्टीलिंगुअलिस्म इन ए क्लासरूम।
5. www.openedu/openlearnworks/pluginfile.php/145491/mod_resource

रिपोर्ट व सर्वे :

1. असर 2014 हिंदी
2. नेशनल रिपोर्ट ऑन इंकलूसिव क्लासरूम, देशकाल सोसाइटी।

दूरभाष नं. – 8708079097

व्हाट्सएप्प नं. – 9992512256

ईमेल पता – kirtikhokhar1985@gmail.com

Correspondence Address – H. No. 301, Sec. 23, Sonipat, Haryana.



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 35-39

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

पंडित जवाहरलाल नेहरू की जेल यात्राएँ

खेमराज आर्य

सहायक प्राध्यापक इतिहास

शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय, श्योपुर, मध्य प्रदेश।

जीवन परिचय :

इनका जन्म 14 नवंबर, 1889 ई. को इलाहाबाद (प्रयागराज) में मोतीलाल नेहरू व स्वरूप देवी के घर में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा इंग्लैंड के हैरो स्कूल, ट्रिनिटी महाविद्यालय व कैंब्रिज विश्वविद्यालय से प्राप्त हुई थी। 1912 ई. में भारत वापस आकर उन्होंने वकालत प्रारंभ कर दी। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह महात्मा गाँधी के बहुत ही करीबी सहयोगी थे जिन्होंने गाँधी जी के द्वारा चलाये गये प्रमुख आंदोलनों जैसे – असहयोग आंदोलन (1920-22 ई.), सविनय अवज्ञा आन्दोलन (नमक सत्याग्रह) (1930-34 ई.) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942 ई.) में सक्रिय भूमिका अदा की थी। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान वह 9 बार जेल भी गये थे। वह 15 अगस्त, 1947 ई. से 27 मई, 1964 ई. तक (अपनी मृत्यु तक) लगभग सत्रह (17) वर्षों स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री रहे थे।

उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा देश के आर्थिक विकास की नींव रखकर विकसित भारत की आधारशिला को रखी थी। उन्होंने ही स्वतंत्र भारत में आई.आई.टी. (IIT), इसरो (ISRO) और परमाणु ऊर्जा आयोग जैसे आधुनिक संस्थानों की स्थापना करके विज्ञान और तकनीक को प्रोत्साहन दिया था। उन्होंने ही सर्वप्रथम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व में शान्ति, सुरक्षा व गुटों से बचाने के लिए गुटनिरपेक्ष आंदोलन की आधारशिला में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

उन्होंने 'भारत की खोज' (The Discovery of India) और 'मेरी कहानी' (An Autobiography) नामक पुस्तकें भी लिखी थी।

बच्चों के प्रति उनके अत्यधिक लगाव व प्रेम के कारण उन्हें बच्चे 'चाचा नेहरू' कहकर बुलाते थे इसलिए उनके जन्मदिन 14 नवम्बर को 'बाल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 1955 ई. में उनको भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

उनकी प्रमुख जेल यात्राएँ :

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देशव्यापी आंदोलनों तथा संघर्षों में अद्भुत छाप छोड़ी। उन्होंने अपने सुविधाओं से युक्त जीवन तथा कौटुंबिक वकालती पेशे का त्याग कर स्वतंत्रता संग्राम में स्वयं को झोंक दिया। यही कारण था कि उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। 1921 ई. में पहली बार जेल जाने और 1945 ई. में अंतिम

बार रिहा होने के बीच वे कुल नौ बार जेल गए। सबसे कम 12 दिनों के लिए तथा सबसे अधिक लगभग 1,041 दिनों तक वे जेल में रहे। ऐसा नहीं है कि राजनीतिक बंदी होने के कारण उन्हें जेल में बड़ी अच्छी सुविधाएँ मिलती होंगी। वह तो अंग्रेजों की जेल थी, उनकी सजा में सश्रम कारावास भी शामिल था। अतः उन्होंने जेल में न केवल कारावास भुगता, बल्कि अपनी लेखनी से भारतीय जनमानस में राष्ट्रवादी चेतना का प्रवाह भी किया। यदि नेहरू जी की जेल यात्रा का वर्णन किया जाये, तो निस्संदेह वह प्रत्येक भारतवासी को प्रेरित कर सकने की शक्ति रखता है।

नेहरू जी की पहली जेल-यात्रा :

भारत में प्रिंस ऑफ वेल्स का दौरा नवंबर 1921 ई. में हुआ। कांग्रेस वर्किंग कमेटी प्रिंस के इस दौरे से नाखुश थी अतः उन्होंने विरोध किया। इधर देश भर में भी इस दौरे का बहिष्कार किया गया। जिसके कारण अंग्रेज सरकार भी सख्ती से पेश आने लगी। उन्होंने दौरे को प्रभावित करने वाले कांग्रेस कार्यकर्ताओं और सामान्य जनता को हर तरह से दबाने की कोशिश की। उन्हें बिना किसी आधार के गिरफ्तार करना शुरू कर दिया गया। 44 प्रिंस के इलाहाबाद पहुँचने पर प्रत्येक गली, नुक्कड़ तथा सड़क एकदम वीरान थी। नेहरू उस समय इलाहाबाद में ही थे। उन्होंने देश के प्रति अपना कर्तव्य समझते हुए चल रहे बहिष्कार को सफल बनाया। परिणामस्वरूप 6 दिसंबर को पुलिस 'आनंद भवन' पहुँची और नेहरू तथा उनके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू को गिरफ्तार कर लिया गया। प्रिंस के दौरे के विरोध-प्रदर्शन के कारण नेहरू पर सेक्शन 17(1) के तहत केस चला, जिसमें उन्हें छह महीने की जेल के साथ 100 रुपयों का जुर्माना भरने की सजा दी गई। 'नेहरू जुर्माना देने के पक्ष में नहीं थे। 6 दिसंबर, 1921 ई. को उन्हें लखनऊ डिस्ट्रिक्ट जेल में बंद किया गया।

'लखनऊ जेल में अधिकांश कैदी जेल के भीतरी चक्कर की बड़ी-बड़ी बैरकों में रखे जाते थे। जवाहरलाल को एक पुराने वीविंग शेड में रखा गया था जिसके साथ एक बड़ी खुली जगह थी। नेहरू जी, उनके पिताजी और दो चचेरे भाइयों को अलग सायबान मिला था। इन्हें एक बैरक से दूसरी बैरक में जाने की आजादी प्राप्त थी। रिश्तेदारों से मिलने की इजाजत भी थी। यहाँ अखबार भी आता था जिससे देश की गतिविधियों का पता चलता रहता था। जेल में जवाहरलाल जी सुबह शौचादि से निवृत्त होकर अपने सायबान को साफ करते और अपने तथा पिताजी के कपड़े धोने के बाद भोजन करते, फिर चर्खा चलाकर अपना समय व्यतीत करते थे। फिर धीरे-धीरे जेल में बंधन बढ़ने लगे। इसी बीच 3 मार्च, 1922 ई. को उन्हें रिहा कर दिया परंतु पिताजी जेल में ही रहे।

नेहरू जी की दूसरी जेल-यात्रा :

अपनी पहली जेल की सजा काटकर बाहर आने के बाद नेहरू विदेशी कपड़ों के बहिष्कार के कार्यक्रम में पुनः जुट गए थे। देश में किसी प्रकार के राष्ट्रवादी धरने तथा प्रदर्शन न हों, इसलिए अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तारी का सिलसिला, जारी रखा। नेहरू की गिरफ्तारी एक आकस्मिक घटना ही थी। हुआ यह कि 11 मई, 1922 ई. को नेहरू अपने पिता मोतीलाल नेहरू से मिलने जेल गए, लेकिन उल्टा उनको ही गिरफ्तार कर 18 महीने सश्रम कारावास की सजा दे दी गई। यह सजा उन्होंने इलाहाबाद के जिला जेल में भुगती। 31 जनवरी, 1923 ई. को अन्य राजनीतिक बंदियों के साथ जवाहरलाल नेहरू को भी रिहा कर दिया गया।

नेहरू जी की तीसरी जेल-यात्रा :

मात्र 12 दिनों की यह जेल-यात्रा नेहरू के जीवन की ऐसी यात्रा थी, जिसे वह कभी भूल नहीं सके घटना यह थी कि नाभा और पटियाला-दो रियासतों के मध्य तनातनी चल रही थी जिसका लाभ ब्रिटिश सरकार उठाना चाहती थी। उसने नाभा के राजा को गद्दी से हटा दिया तथा रियासत चलाने के लिए अपने आदमी को नियुक्त कर दिया। इससे सिख भड़क गए। सिखों के कई जत्थे नाभा पहुँचे, उधर दमनशील अंग्रेजों ने उन्हें बुरी तरह पीटने के बाद गिरफ्तार कर जंगलों में छोड़ दिया। इस खबर को सुनते ही नेहरू एक जत्थे में शामिल होने के लिए निकले। जैतो पहुँचने पर पुलिस ने जत्थे को रोक लिया और उसी समय जवाहरलाल को अंग्रेज एडमिनिस्ट्रेटर का दस्तखत किया हुआ एक आदेश मिला कि वे नाभा में दाखिल न हों। जवाहरलाल ने पुलिस अफसर को समझाया कि हम मात्र दर्शक हैं, जत्थे में शामिल नहीं हैं। जैतो से लौटने के लिए गाड़ी कई घंटे बाद मिलेगी इसलिए अभी हम यहीं रहना चाहते हैं। बस फिर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

पूरे दिन हवालात में बंद रखा गया और शाम को स्टेशन ले जाया गया। रात का कुछ वक्त तो रेल के तीसरे दर्जे के डिब्बे में बीता और शेष रात नाभा की हवालात में गुजरी। उन्होंने इस जेल में 22 सितंबर, 1923 ई. को डाल देने के बाद की स्थिति या सजा के बारे में अपनी आत्मकथा में लिखा है— 'मुझे, मेरे साथी ए. टी. गिडवानी और के. संथानम को बहुत बुरी स्थितियों में नाभा जेल के अंदर रखा गया था। जेल की कोठरी बेहद गंदी थी। वह छोटी-सी कोठरी नमी और सीलन से भरी थी। छत इतने नीचे थे कि हाथ से छू सकते थे। रात को हम फर्श पर सोते थे। सोते हुए जब कोई चूहा मेरे चेहरे पर से गुजरता तब अचकचाकर मेरी नींद खुल जाती थी।' अंततः 4 अक्टूबर, 1923 ई. को हमें रिहा कर दिया गया।

नेहरू जी की चौथी जेल यात्रा :

14 अप्रैल, 1930 ई. को नेहरू रायपुर की एक कॉन्फ्रेंस में शामिल होने के लिए रेलगाड़ी पर सवार हो रहे थे। उसी समय उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उसी दिन जेल में ही मुकदमा हो गया और नमक कानून तोड़ने के कारण छः महीने की सजा दी गई।

जवाहरलाल नेहरू को नैनी सेंट्रल जेल में रखा गया जो प्रांत की एक बड़ी जेल थी। यहाँ एक छोटी-सी बैरक में सबसे अलग अकेले रखा गया था। जेल में एक साप्ताहिक पत्र आता था जिसे पढ़कर उन्हें बाहरी संसार के समाचार मिल जाते थे। एक महीने तक नेहरू जी अपनी बैरक में अकेले रहे, फिर एक साथी नर्मदा प्रसाद के आ जाने से उन्हें बहुत सांत्वना मिली। 30 जून, 1930 ई. को जेल में खलबली मच गई। अचानक प्रातः समय पिताजी और डॉ. सैयद महमूद वहाँ लाए गए। इन दोनों को आनंद भवन से निद्रावस्था में गिरफ्तार किया गया था। उस समय जवाहरलाल जी के पिताजी का स्वास्थ्य काफी खराब था। उनकी स्थिति दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही थी अतः 8 सितंबर, 1930 ई. को पिताजी को रिहा कर दिया गया। उनके जाने से जवाहरलाल जी को ऐसा लगने लगा मानो जीवन और आनंद चला गया। एक महीने बाद 11 अक्टूबर, 1930 ई. को जवाहरलाल जी को भी रिहा कर दिया गया।

नेहरू जी की पाँचवीं जेल-यात्रा :

कर की दरों में वृद्धि को देखते हुए नेहरू ने भारतीय किसानों को इकट्ठा किया और उन्होंने कर का भुगतान न करने पर बल दिया। उन्होंने — इलाहाबाद में एक बड़ी सभा का आयोजन करके ओजपूर्ण भाषण

दिया। इस भाषण पर बाद में उन्हें सजा दी गई। 13 अक्टूबर, 1930 ई. को जवाहरलाल अपनी पत्नी कमला के साथ अपने पिताजी से मिलने मसूरी गए। वह अच्छे हो रहे हैं, यह देखकर पति-पत्नी दोनों को काफी सांत्वना मिली। इसके बाद 18 अक्टूबर को जवाहरलाल अपनी पत्नी के साथ इलाहाबाद रवाना हुए। 18 अक्टूबर की रात को वह इलाहाबाद पहुँचे और 19 अक्टूबर की सुबह ही उन्हें दफा 144 का नोटिस मिला। नोटिस के बावजूद किसान सम्मेलन में उन्होंने भाषण दिया और वहाँ से लौटते ही 19 अक्टूबर, 1930 ई. को रात 8 बजे गिरफ्तार करके पुनः नैनी जेल भेज दिया गया।

नैनी जेल में सैयद महमूद, नर्मदा प्रसाद और रणजीत पंडित के साथ उन्हें फिर वही वैरक मिली। जेल में रहते हुए ही मुकदमा चला, विभिन्न दफाएँ लगाई गईं और 2 वर्ष की कैद तथा जुर्माना न देने पर पाँच महीने की अन्य सजा सुनाई गई। 12 जनवरी, 1931 ई. को पिताजी उनसे मिलने आए। पिताजी की हालत देखकर जवाहरलाल जी को जोर का झटका लगा, जिसे उन्होंने दिल में ही दबा लिया। 26 जनवरी, 1931 ई. को जवाहरलाल जी कुछ चिंतन कर रहे थे कि दोपहर में उनसे अचानक कहा गया— आपके पिताजी की हालत बहुत नाजुक है अतः आपको रिहा किया जा रहा है।

नेहरू जी की छठी जेल-यात्रा :

नेहरू जी किसानों से अपील कर रहे थे कि जमींदारों को लगान देना तब तक बंद कर दें, जब तक कि सरकार द्वारा किसानों की परेशानियों का समाधान नहीं किया जाता। इस अपील के माध्यम से भारतीय किसानों में जागृति उत्पन्न हुई जिससे भारी संख्या में किसानों की लामबंदी हुई। इस प्रदर्शन को दबाने के लिए यूनाइटेड प्रोविंस की सरकार अध्यादेश ले आई, जिसमें उन्हें इलाहाबाद से बाहर न निकलने और किसी भी तरह की राजनीतिक गतिविधि में शामिल न होने का आदेश दिया गया। नेहरू ने ऐसे किसी आदेश को नहीं माना।

26 दिसंबर, 1931 ई. को जवाहरलाल और शेरवानी इलाहाबाद से बंबई मेल में बंबई जाने के लिए सवार हुए, वहाँ उन्होंने अखबार में सीमा प्रांतीय आर्डिनेंस और अब्दुल गफ्फार खाँ तथा खान साहब आदि की गिरफ्तारी का समाचार पढ़ा। इसके बाद उनकी ट्रेन अचानक छोटे से इरादतगंज स्टेशन पर रुक गई जहाँ उन्हें गिरफ्तार कर नैनी जेल भेज दिया गया। उनकी यह छठी जेल यात्रा बार-बार एक जेल से दूसरे जेल में शिफ्ट होने के कारण चर्चित है। सर्वप्रथम उन्हें नैनी सेंट्रल जेल में रखा गया, फिर बरेली डिस्ट्रिक्ट जेल, फिर देहरादून जेल और फिर वापस नैनी सेंट्रल जेल।

4 जनवरी, 1932 ई. को नैनी जेल में यू.पी. इमरजेंसी पावर्स आर्डिनेंस के अनुसार शेरवानी को छः महीने की सख्त कैद तथा रू. 150 जुर्माने की सजा और जवाहरलाल को दो वर्ष की सख्त सजा तथा रू. 500 जुर्माने की सजा दी गई। दोनों के अपराध समान थे, फिर भी सजा में भेदभाव किया गया। जेल में जवाहरलाल जी सूत कातते और किताबों का अध्ययन करते रहते थे माँ स्वरूपरानी की स्थिति गंभीर होने के कारण 30 अगस्त, 1933 ई. को उन्हें रिहा कर दिया गया।

नेहरू जी की सातवीं जेल-यात्रा :

15 जनवरी, 1934 ई. को जवाहरलाल अपनी पत्नी कमला के साथ कलकत्ता के लिए रवाना हो गए। कलकत्ता में वे तीन दिन ठहरे और उन्होंने तीन सार्वजनिक सभाओं में भाषण दिए। वहाँ शांतिनिकेतन में रवींद्रनाथ ठाकुर से भेंट की। कलकत्ता से लौटते हुए पटना पहुँचे जहाँ से भूकंप पीड़ित क्षेत्रों को उन्होंने देखा

फिर इलाहाबाद आकर धन इकट्ठा किया और भूकंप पीड़ितों की काफी सेवा की 11 फरवरी, 1934 ई. को वे थके-हारे इलाहाबाद पहुँचे और अगले 24 घंटों में से 12 घंटे जमकर सोए। 12 फरवरी, 1934 ई. को पुरुषोत्तमदास टंडन उनसे मिलने आए, उसी समय पुलिस के अफसर ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वारंट कलकत्ता से आया था। टेन से कलकत्ता ले जाया गया और कलकत्ता प्रेसीडेंसी जेल में रखा गया और वहीं से उन्हें अदालत ले जाया जाता था। जनवरी 16 को दो वर्ष की सजा सुनाई गई और अलीपुर जेल भेज दिया गया। यहाँ सेहत ठीक न रहने के कारण 7 मई, 1934 ई. को देहरादून जेल भेज दिया गया। यहीं जवाहरलाल ने 'मेरी कहानी' लिखनी शुरू की जो आठ महीने में पूरी हो गई। 3 सितंबर, 1935 ई. को नेहरू जी को रिहा कर दिया गया।

नेहरू जी की आठवीं जेल-यात्रा :

नेहरू की आठवीं जेल-यात्रा के दौरान स्वतंत्रता-प्राप्ति हेतु देशवासियों की जिज्ञासा और बढ़ गई थी। इसे देख राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने भी जोर पकड़ लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो चुका था। कांग्रेस ने अपनी एक वॉर कमेटी बनाई, जिसके अध्यक्ष नेहरू बने। इनके साथ अबुल कलाम आजाद और सरदार पटेल भी थे इस समिति ने एक प्रस्ताव जारी करते हुए माँग रखी—ब्रिटिश सरकार भारत को आजाद कर दे। इधर नेहरू ने सत्याग्रह आरंभ कर दिया। इसी प्रस्ताव के विषय में पंडित नेहरू ने 6-7 अक्टूबर, 1940 ई. को गोरखपुर में कुछ भाषण दिए, जिसके बाद 31 अक्टूबर, 1940 ई. को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और चार साल सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई परंतु 3 दिसंबर, 1941 ई. को उन्हें रिहा कर दिया गया।

नेहरू जी की नवीं और अंतिम जेल-यात्रा :

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान नेहरू तथा उनके कई साथियों को 9 अगस्त, 1942 ई. को जेल में डाला गया था। यह अंतिम बार था, जब नेहरू जेल में डाले गए थे। पंडित नेहरू द्वारा लगभग 1,041 दिन जेल में बिताए गए, जो कि उनकी सभी जेल यात्राओं में से सबसे लंबा समय था। स्वतंत्रता संग्राम का सबसे ऐतिहासिक दौर चल रहा था। वास्तव में काफी लंबे समय से आजादी के लिए चल रहे संघर्ष का परिणाम निकट था। कांग्रेस ने 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पारित किया। नेहरू सहित कांग्रेस के कई बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए।

नेहरू को सर्वप्रथम अहमदनगर किले की जेल में बंद रखा गया। वहाँ से बरेली सेंट्रल जेल भेजा गया, फिर वे अल्मोड़ा जेल भेजे गए, इस जेल में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पंडित जवाहरलाल नेहरू सहित कई जाने-माने स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी कैद रहे। इस प्रकार अल्मोड़ा की ऐतिहासिक जेल में आजादी के आंदोलन का महान इतिहास समाया हुआ था। जहाँ एक ओर नेहरू ने खादी की कताई के लिए चरखा चलाया तो इसके परे लेखन कार्य भी किया। नेहरू जी द्वारा भारत की खोज (Discovery of India) नामक पुस्तक के कुछ अंश यहाँ लिखे गए। इस जेल को प्रायः राष्ट्रीय स्मारक बनाने की बात की जाती रही है।

संदर्भ :

1. चतुर्वेदी, पंकज, 'जवाहरलाल हाजिर हो', पेंगुइन रेंडम हाउस इण्डिया, गुरुग्राम, हरियाणा।
2. वशिष्ठ, डॉ. अलका, 'पण्डित जवाहरलाल नेहरू', Original Black Classics AN Imprint v, Q Sahitya Sarowar, आगरा।

ईमेल : khemrajarya10@gmail.com, मोबाइल 8719000682



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 40-46

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के साहित्य में ग्रामीण जनजीवन

डॉ. परवीन वर्मा

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी,
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय, श्योपुर, मध्यप्रदेश।



शोध सारांश :

प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के साहित्य में भारतीय ग्रामीण जनजीवन का सजीव एवं जीवंत चित्रण दिखाई देता है। दोनों ही साहित्यकारों के साहित्य में भारतीय ग्रामीण जन्मभूमि की देसी मिट्टी की सुगंध महसूस की जा सकती है, जो उनके पात्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने किसानों की गहन समस्याओं पर दृष्टिगोचर करते हुए एक अहम पहल करके ग्रामीण समस्याओं को सुधारवादी दृष्टिकोण से एक नई विचारधारा में व्यक्त किया है। दोनों साहित्यकारों की कहानी और उपन्यासों में तत्कालीन समाज के अति नगण्य, दीन-हीन ग्रामीण चरित्र एवं दयनीय स्थिति, शोषण आदि दृष्टिगोचर होते हैं।

मुख्य शब्द : जनजीवन, दिन-हीन, गहन, शोषण, चरित्र आदि।

मुंशी प्रेमचंद का परिचय :

जन्म – 31 जुलाई, 1880 ई. को बनारस से 4 मिल दूर गाँव लमही में हुआ।

माता-पिता – आनन्दी देवी व अजायबलाल।

पत्नी – शिवरानी देवी।

प्रमुख रचनाएँ : उनकी रचनाएँ हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती रही। उन्होंने 15 उपन्यास, लगभग 300 कहानियाँ, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हजारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचनाएँ की।

उपन्यास – सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि।

कहानियाँ – कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा, इज्जत का खून आदि।

नाटक – 1923 में संग्राम, 1924 में कर्बला तथा 1933 में प्रेम की वेदी।

अनुवाद – 'टॉलस्टॉय की कहानियाँ' (1923), गाल्क्सवर्दी के तीन नाटकों का हड़ताल (1930), चाँदी की डिबिया (1931) और न्याय (1931) नाम से अनुवाद किया। उनका रतननाथ सरशार के उर्दू उपन्यास

फसान-ए-आजाद का हिन्दी अनुवाद आजाद कथा के नाम से किया।

प्रेमचंद को मिले सम्मान :

1. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का पुरस्कार, (1934)
2. कृषि विद्यापीठ, कानपूर का सम्मान, (1936)
3. मंगलाप्रसाद पुरस्कार (1938)।

व्यवसाय - अध्यापक, पत्रकार, लेखक।

मृत्यु - 8 अक्टूबर, 1936 ई. वाराणसी उत्तरप्रदेश।

फकीर मोहन सेनापति का परिचय :

जन्म - 1843 ई. बालासोर उड़ीसा।

माता-पिता - तुलसी देई व लक्ष्मण सेनापति।

पत्नी - लीलावती से 1856 ई. में व उनकी मृत्यु के बाद 1871 ई. में कृष्णा कुमारी।

प्रमुख रचनाएँ -

उपन्यास - लक्ष्मा (1901 ई.), मामु (1913 ई.), प्रायश्चित (1915) तथा छ माण आठ गुंथा आदि।

कहानियाँ - रेवती (1898), बालेश्वर पंगु लूण (1907), बालेश्वर रजनी (1907), मौना मौनी (1907), पुनर मूसिका भव (1909), दकामु निसी (1912), कालिकाप्रसाद गोरापा (1913), कमलाप्रसाद गोरापा (1913), धूलिया बाबा (1913), पेटेन मेडिशन (1913), सुनाबोहु (1913), बिरेई बिसाला (1913), रांडिपुआ अनंता (1913), बगला बागला (1914), सभ्य जमींदारा (1914), अजाणति कथा (1915), मदमहंतिनक कन्यासुना (1915), अधर्म बिट्टा (1915), पाथोई बोहु (1915), गरुडमंत्र (1916)⁴ लक्ष्मनिया, पेटेंट मेडिसिन डाकमुंशी, आदि।

कविता - फकीर मोहन सेनापति का पहला कविता संग्रह 'उत्कल भ्रमण' 1892 में प्रकाशित हुआ था। पुष्पमाला, उपहार, पूजा फूल, प्रार्थना, अबसर बसरे और धूली जैसी कई अन्य कविताएँ लिखीं।⁵

बाल साहित्य - 'भारत पर्वर इतिहास' तथा 'अंकमाला'।

अनुवाद - बाल्मीकि रामायण, महाभारत और भगवत् गीत।

प्रस्तावना -

आधुनिक जगत के साहित्यकारों में कर्म क्षेत्र की दृष्टि से उड़ीसा साहित्य के फकीर मोहन एवं हिंदी साहित्य के प्रेमचंद यह दोनों प्रसिद्ध साहित्यकार परस्पर तुलनीय हैं। उनकी कहानियों में तत्कालीन समाज में भारतीय ग्रामीण जीवन की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अवस्थाओं एवं उनकी समस्याओं, शोषण, दयनीय स्थिति आदि को वर्णित किया गया है। सामाजिक द्वंदवाद जिसमें न्याय-अन्याय, आदर्शवाद, परस्पर समस्याओं का समाधान, समाज सुधारवादी दृष्टिकोण, समाधान आदि दोनों साहित्यकारों का अभीष्ट पहलू रहा है। भारतीय भाव-धारा से परिपूर्ण यह दोनों साहित्यकार भारतीय ग्रामीण जनजीवन की गंभीर समस्याओं से इसलिए अभी-भूत है, क्योंकि दोनों साहित्यकारों का जन्म गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में ही हुआ था। दोनों का जीवन बेहद दुःखद और संघर्ष से भरा था।

दोनों लेखकों ने सामाजिक स्थिति को भली-भांति देखा परखा और उनके अनेक तत्व जैसे ग्रामीण जीवन में आई जाति प्रथा, गरीबी भेदभाव, नारी शोषण, जैसे-नारी के प्रति अत्याचार, बाल विवाह, विधवाओं की

समस्याएं, अंधविश्वास आदि अनेक पहलू हैं, जोकि उनके लेखन में देखने को मिलते हैं। इन समस्याओं का निराकरण करने के लिए दोनों ही लेखकों ने अपने लेखन के माध्यम से इनको उजागर कर इन्हें समाप्त करने का भरपूर प्रयास किया है। किसानों की दुर्दशा दूर करने में इनकी लेखनी सक्रिय रही एवं जमींदारों व पूंजीपतियों के शोषण से किसानों को मुक्ति दिलाने के लिए उनका सारस्वत लेखन जारी रहा। प्रेमचंद का किसान होरी और फकीर मोहन का भगिआ इन दोनों में अनेक सामानता परिलक्षित होती है। वास्तव में प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति युगप्रवर्तक, समाज सुधारक, ग्रामीण जनजीवन के यथार्थ चित्रकार कहे जाते हैं।

कहने को तो मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जैसा कि समाज में रहकर हर मनुष्य को सामाजिक बनना ही पड़ता है। मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान, रहन-सहन, भाषा शैली एवं व्यवहारिकता के लिए दूसरे व्यक्तियों से संपर्क कर अपने कर्तव्यों को निभाता है। गांव हो या शहर, जिला हो या कस्बा हर जगह मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, और हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों का निर्वहन समाज में रहकर ही कर सकता है। प्राचीन युग में मनुष्य गांव, कस्बों में जीवन व्यतीत करते थे। ग्रामीण जीवन बेहद कष्ट दायक होता है। जिसमें तमाम समस्याएं, आपदाओं और कठोर जीवन शैली को अपना कर प्रत्येक ग्रामीण को खुशहाली से जीवन जीना पड़ता है।

आरंभ से ही अनेक साहित्यकारों ने ग्रामीण जन-जीवन को अपने साहित्य में स्थान दिया है, जिसमें प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति जैसे साहित्यकार भी हैं। जिनकी लेखनी में ग्रामीण जन-जीवन का परिवेश रचा बसा हुआ है। इन्होंने ग्रामीण जन-जीवन को लेखन का आधार बनाया। ग्रामीणों की अनेक समस्याओं, कुंठाओं, पीड़ाओं, रूढ़ियों, परंपराओं, अंधविश्वासों आदि को लेखनी के माध्यम से उजागर करके समाज में एक नई विचारधारा को जन्म दिया और समाज में साहित्य को लेकर नए प्रतिमान स्थापित किये।

मुंशी प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति ग्रामीण जन्मभूमि से भली-भांति परिचित हैं। ग्रामीण किसानों के जन-जीवन को उन्होंने बहुत ही नजदीक से देखा और परखा था। ग्रामीणों की समस्याओं, पूंजीपतियों द्वारा शोषण, दमन एवं क्रूरताओं को भी स्वयं भुगता है। प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यास गोदान, वरदान, सेवा सदन, प्रेमाश्रय, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि आदि ग्रामीण परिवेश को दृष्टि में रखते हुए लिखे गए हैं।

प्रस्तुत शोध के लिए मुंशी प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यास गोदान, वरदान, कर्मभूमि, रंगभूमि आदि तथा फकीर मोहन सेनापति पर लिखे गये लेख, "फकीर मोहन सेनापति के जीवन और कार्यों की खोज" का प्रयोग उक्त शोध पत्र में किया गया है। उक्त साहित्यिक रचनाओं से मुंशी प्रेमचंद व फकीर मोहन सेनापति के साहित्य कि गहनता का बोध होता है। दोनों के साहित्य में ग्रामीण जनजीवन का यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है।

मुंशी प्रेमचंद द्वारा अपने साहित्य में ग्रामीण परिस्थितियों को सजीवता से दर्शाया गया है, जिसके कारण ही उनकी गिनती विश्व के प्रसिद्ध साहित्यकारों, गोर्की, टॉलस्टॉय और डिकेंस के साथ होती है।

गोदान -

ग्रामीण जीवन में रचे-बसे उनके उपन्यासों में सबसे पहला उल्लेख 'गोदान' का किया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। होरी, धनिया, गोबर जैसे किरदारों के साथ यह उपन्यास हिंदी साहित्य में न सिर्फ अमर हो चुका है, बल्कि ग्रामीण जीवन का महाकाव्य भी बन चुका है। गोदान में उन्होंने सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत अछूतों की समस्या, दहेज समस्या, अनमेल विवाह, किसानों का शोषण, संयुक्त परिवार विघटन आदि

समस्याओं का सजीव चित्रण किया है।

प्रेमाश्रम -

प्रेमाश्रम 1922 में प्रकाशित उपन्यास में ग्रामीण जनजीवन में किसानों और जमींदारों का मार्मिक चित्रण जिसमें जमींदारी प्रथा के खिलाफ किसान आवाज उठाता दिखाई दिया है। 'असली भारत गांवों में बसता है' इस उक्ति को अपने उपन्यास 'प्रेमाश्रम' के द्वारा पुष्ट किया। वर्षों पूर्व जातिवाद, जमींदारी शोषण और किसान के दुर्भाग्य की जो तस्वीर प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में दिखाई थी, वो आज भी वैसी की वैसी ही है। उसका स्वरूप चाहे बदल गया है, लेकिन समस्याएं आज भी वही की वही हैं। जमींदारी व्यवस्था की जगह बड़े पूंजीपतियों, पंचायत के मुखियाओं और सरपंचों ने ले ली है। 'प्रेमाश्रम' उपन्यास के किसान बलराज अपने खून-पसीने की कमाई के आगे जमींदार को कुछ भी नहीं समझता और कहता है, "जमींदार कोई बादशाह नहीं है कि चाहे जितनी जबरदस्ती करें और हम मुँह न खोलें। इस जमाने में तो बादशाह का भी इतना अख्तियार नहीं, जमींदार किस गिनती में हैं।"

वरदान -

वरदान उपन्यास में ग्रामीण जीवन के अभावग्रस्त स्थिति एवं विडम्बनाओं का चित्रण विस्तारपूर्वक किया है। "जमींदारों के वावन हाथ हो जाते हैं।"¹

कर्मभूमि -

'कर्मभूमि' में नायक अमरकांत का गाँव की निम्न जातियों में जागृति लाने के प्रयास को रेखांकित किया गया है। अमरकांत द्वारा गाँव में अस्पृश्यता निवारण, मद्यपान निषेध, मुर्दा-मांस निषेध, सफाई, शिक्षा प्रसार आदि के लिए किये गये कार्यों को दर्शाया गया है। "हमने जमींदार के खेत जोते हैं, तो वह अपना लगान ही तो लेगा। उसकी खुशामद क्यों करे? उसके तलवे क्यों सहलावे।"²

रंगभूमि -

'रंगभूमि' उपन्यास में सरल ग्रामीण संबंधों के स्थान पर छल, कपट, जुआ, शराबखोरी आदि को प्रोत्साहन दिया है। "मेरे रुपये ये ही नहीं शायद उस जन्म में मैंने गोरों के रुपये चुराये होंगे।"³

फकीरमोहन को अंग्रेजी सीखने तथा अंग्रेजी साहित्य पढ़ने की बहुत इच्छा थी। फास्ट बुक की सहायता से उन्होंने अंग्रेजी सीखी तथा अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया। इसके अलावा वे बांगला तथा तेलगु भाषा भी जानते थे।

साहित्य रचना के प्रति उनकी दिलचस्पी बचपन से थी। स्कूल में अध्ययन करते समय ही उन्होंने राजपुत्रे इतिहास नामक गद्य रचना की तथा ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की एक पुस्तक का 'जीवन चरित' नाम से उड़िया में अनुवाद भी किया। उसी समय उन्होंने ओड़िया व्याकरण भी लिखा जो बाद में पाठशालाओं में पाठ्य पुस्तक के रूप में स्वीकृत हुआ। भारत वर्ष इतिहास पर तो उन्हें उस समय के कमिश्नर रेवेन्शा से तीन सौ रुपये का पुरस्कार भी मिला था। अच्छी अंग्रेजी जानने के कारण सेनापति के कई अंग्रेज मित्र बनें जिन्होंने उनकी सहायता की। अपने गुण के कारण वे निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होते रहे। यही कारण था कि वे उड़ीसा की अनेक छोटी बड़ी रियासतों में दीवान के पद पर नियुक्त किये गये।

उड़ीसा में नवजागरण की ज्योति जलाने वाले फकीर मोहन ही थे। बंगाल में राजा राममोहन राय ने अपने

ब्रह्मसमाज द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का आंदोलन चलाया था इसी प्रकार उड़ीसा में सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए सर्वप्रथम सेनापति ने ही साहित्यिक रचनाएं की। उड़ीसा में साहित्यिक गतिविधियों को तेज करने के लिए इन्होंने उड़िया प्रेस की स्थापना की। कलकत्ता से बालासौर में प्रेस लाने की घटना तो उड़ीसा के इतिहास में एक अविस्मरणीय घटना बन गई थी। जिस दिन छापाखाना बालासौर पहुंचा उस दिन सारा बाजार बंद हो गया था। लोग इस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए गांव-गांव से आए। घनिक वर्ग तो पालकियों पर चढ़कर पहुंचे और सरकारी कार्यालय के लोगों ने भी छुट्टी लेकर यह दृश्य देखा था।

अंग्रेजी शासन काल में उत्कल क्षेत्र कई भागों में फेला हुआ था। इस कारण संपूर्ण उड़िया भाषियों को संगठन बना कर उन्नति का कोई अवसर नहीं मिल पा रहा था। कई षडयंत्रकारी उड़िया भाषा के अस्तित्व को ही समाप्त करने में लगे हुए थे। ऐसे समय में फकीर मोहन ने ही उड़िया भाषियों का संगठन बनाया। एक समिति जिसमें राधा नाथ राय तथा मधुसूदन राव थे। उन्होंने उड़िया को एक प्रतिष्ठित भाषा का दर्जा दिलाने के लिए आंदोलन चलाया। उस समय बालासौर के जिला मजिस्ट्रेट श्री जॉन बीम्स ने इस कार्य में बहुत सहायता की और अन्ततः उड़िया एक स्वतंत्र भाषा घोषित की गई। ओड़िया भाषा को स्वतंत्र भाषा का दर्जा दिलाने के बाद फकीरमोहन ने इसे सजाने संवारने का भरपूर प्रयास किया। उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाओं द्वारा उन्होंने इस कार्य में भी सफलता हासिल की।

इनकी कहानियों में आदर्शवाद की प्रमुखता है। लेखक एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहता है। हम उनकी कहानियों की तुलना प्रेमचंद की कहानियों से कर सकते हैं। किंतु एक अंतर यह है कि प्रेमचंद अपनी कहानियों में यथार्थ एवं आदर्श दोनों को रखते हैं। अर्थात् समाज में क्या हो रहा है और क्या होना चाहिए इसका संतुलन उनमें मिलता है किंतु आदर्शवादी होने के नाते फकीरमोहन केवल आदर्श की स्थापना चाहते हैं। यथार्थता की कमी के कारण कहीं कहीं कहानी में शिथिलता आ जाती है।

छ माणा आठ गुंथा -

फकीर मोहन को साहित्य की जिस विद्या में सबसे अधिक ख्याति मिली वह है उपन्यास। अपने पहले उपन्यास 'छ माणा आठ गुंथा' के कारण वह सदा के लिए अमर हो गए हैं। इस उपन्यास में शोषित और शोषक की कहानी है। भरिआ और सरिआ—मुख्य पात्र हैं। रामचन्द्र गांव का जमींदार है, चम्पा तथा गोविन्दा अन्य पात्र हैं।

उपन्यास का आरंभ सरल चरित्र के पति—पत्नी भरिआ और सरिया के दैनिक जीवन से होती है। उनके पास 'नेत' नाम की गाय हैं जिसे दोनों बहुत प्यार करते हैं। भरिया के पास छह बीघा आठ गुंठ उपजाऊ जमीन है। इसी जमीन और गाय पर जमींदार की नजर पड़ती है। वह किसी भी तरह उसे हड़पना चाहता है। इस कार्य में उसकी दासी (रखैल) सहायता करती है। वह धूर्त और चालाक है। षडयंत्र करके जमीन हड़प ली जाती है। साथ में जोर जबर्दस्ती करके गाय भी ले ली जाती है। अपना सब कुछ लुट जाने पर भरिआ पागल हो जाता है तथा सरिया जमींदार के दरवाजे के सामने सिर—पटक कर मर जाती है। जमींदार बंदी बनता है किंतु उसे नर हत्या से बरी किया जाता है तथा गाय हड़पने के लिए उसे जेल की सजा होती है। जेल में पागल भरिया भी है। गुस्से में भरिया अपने दांतों से जमींदार मंगराज के नाक—कान काट लेता है। मंगराज को दूसरी जेल में रखा जाता है जहां उसका एक पुराना साथी गेबरा जेना होता है। वह भी मंगराज को खूब पीटता है। अंत

में मंगराज मर जाता है। उसकी रखैल अपने यार गोविन्दा के साथ सारा धन लेकर भागती है। रास्ते में धन को लेकर दोनों में झगड़ा होता है। गोविन्दा चम्पा का कत्ल करके भागता है। रास्ते में जान बचाने के लिए दरिया में कूदता है और उसकी मौत हो जाती है। उपन्यास में सेनापति ने समाज का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है, और यह दिखाने की कोशिश की है कि व्यक्ति को अपने किये कर्म का पूरा फल भोगना पड़ता है।⁴

लक्ष्मा -

लक्ष्मा उपन्यास में बंगाल, बिहार, उड़ीसा संयुक्त प्रांत का नबाव अलीवर्दी खां के अशांत शासन काल की कहानी है, मराठों के साथ युद्ध, सामन्ती सभ्यता का वर्णन, सत्ता लोलुपता, धर्म के नाम पर अत्याचार आदि विषयों का इसमें विस्तारपूर्वक वर्णन है। कल्पना की भरमार के कारण उपन्यास साधारण ही रहा है।

मामु -

मामु (1913) उपन्यास में तत्कालीन उड़िया समाज का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया गया है। जमींदार परिवार में किस प्रकार संपत्ति हड़पने के लिए संबंध को भुला दिया जाता है, उसे लेखक ने बड़ी ही बारीकी से जांचा परखा था। संपत्ति की लालच में मामा द्वारा भांजों को धोखा दिया जाता है। किंतु उसकी मंशा पूरी नहीं होती। उपन्यास के चरित्रों को बड़ा स्वभाविक रूप में प्रस्तुत किया गया है। चरित्र प्रधान इस उपन्यास में शहरी तथा देहाती जीवन का संमिश्रण मिलता है। संरचना शैली की दृष्टि से यह उन्नत उपन्यास है।

प्रायश्चित -

प्रायश्चित (1915) उपन्यास में दो जाति के जमींदारों में अपने जातीय घमंड के कारण संघर्ष को दिखाया गया है। इस जाति संघर्ष से दोनों परिवार को कष्ट उठाना पड़ता है। अंत में सबको अपनी गलती का अनुभव होता है और सभी इसके लिए प्रायश्चित करते हैं। इस रचना के माध्यम से लेखक ने संपूर्ण भारत में व्याप्त इस बुराई की ओर लोगों का ध्यान आकृषित किया है। समाज जब एक नहीं रहेगा तो राष्ट्र के टुकड़े-टुकड़े होना निश्चित है। जाति व्यवस्था पर आधारित भारतीय समाज की उन्नति कभी भी नहीं हो सकती। नवजागरण में इस उपन्यास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

फकीर मोहन सेनापति के संबंध में नामवर सिंह का चिंतन बहुत ही सकरात्मक और मौलिक है। इनके उपन्यास 'छ माणा आठ गुंथा' के पात्र भगिया के संबंध में उनकी राय है – "फकीर मोहन का भगिया संभवतः भारतीय उपन्यास का पहला जीवंत किसान चरित्र है—एकदम एक नया कथानक।"⁵

फकीर मोहन सेनापति की प्रमुख कहानियाँ -

बिल्कुल एक नया कथानक रचने वाले फकीर मोहन सेनापति के कई पात्र बिल्कुल नए अंदाज में भारतीय कथा साहित्य में उपस्थित हुए हैं। इनमें उनकी कहानी 'डाक मुंसी' के हरिसिंह और गोपाल, धूलिया बाबू के पात्र राम साहू व श्याम साहू, प्यारी बहू की चंपा व रामहरि बाबू, विमला देवी, नाना और नाती की कथा का गणपति आदि मुख्य हैं। मैनेजर पांडेय ने लिखा है— "फकीर मोहन सेनापति की कथा दृष्टि की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने उड़ीसा के जातीय जीवन की कथा कहते हुए भी भारत के राष्ट्रीय जीवन के वर्तमान और भविष्य को भी अपनी दृष्टि में रखा है।"

'पेटेंट मेडिसिन' और 'अधर्म वित्त' उनकी प्रसिद्ध कहानियों में से है। 'अधर्म वित्त' में ओड़िशा के इतिहास की एक सुंदर झलक का दर्शन होता है। गढ़जात (सामंत शासित क्षेत्र) और मुगलबंदी (मुगल शासित) इलाके

की जानकारी होती है। मुगलों और गढ़जातों में शादी-ब्याह भी होता था। सोनपुर, हरिहरपुर की ऐतिहासिक बानगी भी इस कहानी को इतिहास के साथ जोड़ता है। यह कहानी ओड़िशा, बिहार, बंगाल की सामाजिक, व्यापारिक जीवन पर भी प्रकाश डालती है।

ललन प्रसाद सिंह ने भी फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास 'छ माणा आठ गुंथा' को महान कृति बताया है, साथ ही यह भी बतलाया है कि वहाँ के किसान 'नई मुद्रा की अनुपलब्धता की वजह से किसान मालगुजारी व लगान अदा करने में असमर्थ हो गए। जिसके कारण हजारों कृषकों की पुश्तैनी भूमि बिक गई। रातों-रात कलकत्ता के धनासेठ तथा कुलीन लोग उड़ीसा के जमींदार-जागीरदार बन गए।'

'सभ्य जमींदार' कहानी में भी एक रात में ही जमींदार गोपालचंद्र के बेटे व बहू बगुला-बगुली (दीन-हीन) बनने पर विवश हो जाते हैं। उनकी जमींदारी नीलाम हो जाती है।

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में तत्कालीन ग्रामीण सामाजिक परिवेश, जन-जीवन, उनकी समस्याओं, रुढ़ियों व परम्पराओं, जातीय विषमता, छुआछुत, किसानों की दयनीय दशा, शोषण-अत्याचार, अंग्रेजी शासन की शोषणकारी नीतियों का यथार्थ चित्रण मिलता है। फकीर मोहन सेनापति ने अपने कथा साहित्य से उन्नीसवीं शताब्दी के सत्यबोध से हमें परिचित कराया है। इनकी कहानियाँ ईस्ट इंडिया कंपनी, ब्रिटिश उपनिवेशवाद, महाजनी सभ्यता, पुरोहितों की चतुराई, ओड़िया समाज और जनजीवन का यथार्थ, त्रासदपूर्ण जिंदगी, अर्थाभाव, संघर्ष व महामारी का ऐसा सच्चा चित्रण करती हैं कि ओड़िया समाज का बीता कल चित्रपट की तरह आँखों के सामने दिखाई देने लगता है, जहाँ महामारी, सन्निपात, अकाल और ऊपर से उपनिवेशवादी शोषण जीवन को बद से बदतर बना दिया है। फकीर मोहन सेनापति की कहानियों व उपन्यासों को पढ़ने पर ऐसा जान पड़ता है कि उनका प्रभाव प्रेमचंद के लेखन पर गहरे में है। लेकिन प्रेमचंद उन्हें पढ़े थे, ऐसा सबूत मेरे पास नहीं है। शायद इसीलिए नामवर सिंह ने प्रेमचंद कथा साहित्य के 'पूर्वाभास' के तौर पर फकीर मोहन को रेखांकित किया है।

संदर्भ -

1. प्रेमचंद, वरदान, पृष्ठ 158
2. प्रेमचंद, कर्मभूमि, पृष्ठ 03
3. प्रेमचंद, रंगभूमि, पृष्ठ 280
4. फकीर मोहन सेनापति के जीवन और कार्यों की खोज, [https:// odisanow.com](https://odisanow.com)
5. फकीर मोहन सेनापति के जीवन और कार्यों की खोज, <https:// odisanow.com>

Gmail : Parveenkhem15@gmail.com

मो. नम्बर 9179734060



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 47-52

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

21वीं सदी की AI दुनिया में ग्रामीण समाज में बढ़ता सामाजिक विश्वास : एक विश्लेषण

देवेन्द्र राय

शोधार्थी, स्नातकोत्तर –ग्रामीण विकास, नालंदा खुला विश्वविद्यालय, पटना।

सारांश :

इक्कीसवीं सदी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तकनीकों के तीव्र विस्तार ने सूचना के निर्माण, प्रसार और उपभोग की प्रक्रिया को मूल रूप से बदल दिया है। जहाँ शहरी समाज इन तकनीकी परिवर्तनों के साथ अपेक्षाकृत अनुकूलन कर रहा है, वहीं ग्रामीण भारत सीमित डिजिटल साक्षरता, विश्वसनीय सूचना स्रोतों की कमी और पारंपरिक सामाजिक भरोसे की संरचनाओं के कारण विशेष रूप से संवेदनशील बना हुआ है। यह शोध-पत्र ग्रामीण समाज में AI-जनित भ्रामक सामग्री 'विशेषतः डीपफेक वीडियो, कृत्रिम आवाज और स्वचालित पाठ' के प्रभावों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा यह दर्शाता है कि किस प्रकार ये तकनीकें सामाजिक विश्वास के क्षरण को तेज कर रही हैं।

विद्यालयी बच्चों, अशिक्षित जनसंख्या और ग्रामीण महिलाओं को केंद्र में रखते हुए यह अध्ययन दृश्य-प्रमाण पूर्वाग्रह (visual authenticity bias) और डिजिटल प्लेटफॉर्मों की वायरल प्रवृत्ति से उत्पन्न भ्रम, भय और संस्थागत अविश्वास की प्रक्रियाओं की पड़ताल करता है। भारतीय संसद तथा विदेशी विधायिकाओं में हुई चर्चाओं के उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि AI-आधारित दुष्प्रचार अब एक वैश्विक लोकतांत्रिक चुनौती बन चुका है।

शोध निष्कर्ष संकेत करते हैं कि केवल तकनीकी समाधान पर्याप्त नहीं हैं। प्रभावी हस्तक्षेप के लिए सामुदायिक-आधारित मीडिया साक्षरता, स्थानीय सत्यापन तंत्र, लैंगिक-समावेशी डिजिटल पहुँच तथा सुसंगत नियामक ढाँचों की आवश्यकता है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि यदि समय रहते डिजिटल साक्षरता और सामाजिक अवसंरचना में निवेश नहीं किया गया, तो AI ग्रामीण समाज में सूचना असमानता को और गहरा करेगा तथा सामाजिक एकजुटता की बुनियाद को कमजोर कर देगा।

भूमिका -

मनुष्य का सामाजिक जीवन विश्वास पर आधारित है। यह विश्वास ही है जो गाँवों में परिवार, पड़ोस, पंचायत और विद्यालय जैसी संस्थाओं को जोड़कर रखता है। लेकिन 21वीं सदी की AI-आधारित तकनीकें इस विश्वास की नींव को हिला रही हैं।

भारत का ग्रामीण समाज अभी भी डिजिटल साक्षरता, सूचना-स्रोत की पहचान और तकनीकी सुरक्षा उपायों में पिछड़ा हुआ है। ऐसे में जब AI-जनित सामग्री तेजी से सोशल मीडिया पर फैलती है, तो लोग सत्य और असत्य के बीच भेद करने में असमर्थ हो जाते हैं।

संसद में हाल ही में महिला सांसदों ने deepfake वीडियो और AI-जनित सामग्री के दुरुपयोग का मुद्दा उठाया। यह घटना दर्शाती है कि यह समस्या केवल शहरी डिजिटल दुनिया तक सीमित नहीं है, बल्कि लोकतंत्र और ग्रामीण जीवन की गहराइयों तक इसका प्रभाव पहुँच रहा है।

AI-सिस्टम (जनरेटिव मॉडल, वॉइस/वीडियो क्लोनिंग, चैटबॉट आदि) ने सूचना उत्पादन को सस्ता, तेज और व्यापक बना दिया है। परन्तु वही तकनीक गलत सूचनाओं (misinformation), भ्रामक सामग्री और सामूहिक अफवाहों को भी बड़े पैमाने पर फैला सकती है। ग्रामीण भारत में जहाँ इंटरनेट पहुँच, डिजिटल साक्षरता और भरोसेमंद स्थानीय सूचना तंत्र की सीमाएँ हैं, AI-जनित सामग्री ने पारंपरिक भरोसे (सूचना के स्रोतों – पंचायत, शिक्षक, धार्मिक नेताओं) और नए डिजिटल स्रोतों के बीच द्विध्रुव (polarization) पैदा किया है। इस प्रक्रिया से जब लोग सूचना की सत्यता निर्धारित नहीं कर पाते, तो सामाजिक विश्वास का ह्रास होता है, जो सामुदायिक समन्वय, लोक स्वास्थ्य अभियानों और शिक्षा पर नकारात्मक असर डालता है। (Rural India Online)

साहित्य समीक्षा -

अनेक वैश्विक और भारतीय अध्ययनों ने मीडिया-सूचना क्षमता (Media and Information Literacy) की कमी और डिजिटल विभाजन (digital divide) को अविश्वास के प्रमुख कारण के रूप में पहचाना है। UNESCO और World Bank जैसे संस्थान बताते हैं कि मीडिया-साक्षरता में निवेश से लोग भ्रामक सामग्री को अलग पहचानने में सक्षम बनते हैं। सामान्यतः शोध-कार्य यह भी इंगित करते हैं कि कम संसाधन वाले उपयोगकर्ता-विशेषकर ग्रामीण और कम साक्षर समूह वीडियो/ऑडियो सोर्स एवं सत्यता के प्रति कम जागरूक होते हैं और अक्सर दृश्य सामग्री को उच्च प्रमाणिकता मान लेते हैं। भारत-विशेष अध्ययनों में पाया गया है कि ग्रामीण उपयोगकर्ता अक्सर स्रोत-संदर्भ की जाँच नहीं करते और स्थानीय नेटवर्क (परिवार/मित्र/समुदाय) से मिली जानकारी को विश्वसनीय मान लेते हैं, जिससे अफवाहें तेजी से फैलती हैं। (UNESCO)

सामाजिक विज्ञानियों और वैश्विक संगठनों ने इस विषय पर कई अध्ययन प्रस्तुत किए हैं।

UNESCO (2022) ने कहा कि मीडिया एवं सूचना साक्षरता (MIL) डिजिटल युग में अनिवार्य कौशल है। यदि यह कौशल नहीं होगा, तो समाज गलत सूचना और अफवाहों का शिकार होता रहेगा।

Aditya Vashistha (2022) ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण उपयोगकर्ता वीडियो को तुरंत "साक्ष्य" मान लेते हैं, भले ही वह deepfake हो।

Farhana Shahid (2021) ने भारतीय ग्रामीण संदर्भ में यह दर्शाया कि लोग स्रोत की जाँच नहीं करते, बल्कि अपने सामाजिक नेटवर्क (परिवार, मित्र, समुदाय) पर आधारित होकर सूचना स्वीकारते हैं।

Oxfam Report (2022) के अनुसार, भारत में डिजिटल विभाजन (digital divide) सबसे बड़ी बाधा है। आधी आबादी के पास विश्वसनीय इंटरनेट तक पहुँच नहीं है, और जो पहुँच रखते भी हैं, वे प्रायः डिजिटल साक्षरता से वंचित हैं।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समाज में AI तकनीक का आगमन विश्वास और अविश्वास

के नए संकट लेकर आया है।

तकनीकी कारण और परिस्थितिकी -

- **सुलभता और स्वचालन** - जनरेटिव AI अब मोबाईल/क्लाउड-आधारित टूल्स के रूप में उपलब्ध है' कोई भी प्रयोगकर्ता टेक्स्ट, आवाज या वीडियो आसानी से बना सकता है। परिणाम: नकली सामग्री का निर्माण और प्रसारण आसान हुआ। (World Economic Forum)
- **दृश्य/श्रव्य सत्यापन कठिन** - पारंपरिक मानदंड (उदाहरण : 'अगर मैंने वीडियो देखा तो वह सच होगा') टूट चुके हैं' तकनीकी रूप से उच्च गुणवत्ता के फेक वीडियो और आवाज बनाना संभव है। (Emerald Group)
- **सोशल नेटवर्क एवं स्थानीय प्रसार** - ग्रामीण उपयोगकर्ता अक्सर व्हाट्सएप-गुप्स और फेसबुक-खातों के माध्यम से सूचना पाते हैं, प्लेटफॉर्म-वायरलिटी के कारण गलत सूचना तेजी से संकलित होती है। (Pew Research Center)

ग्रामीण विद्यालयी बच्चे पर प्रभाव -

- **ज्ञान की प्राप्ति और भ्रम** - स्कूल-बच्चे डिजिटल माध्यमों पर उपलब्ध शैक्षिक सामग्री के माध्यम से सीखते हैं। AI-जनित गलत शिक्षण सामग्री (उदाहरण : गलत ऐतिहासिक वीडियो, झूठी स्वास्थ्य सलाह) बच्चों के ज्ञान में विकृति पैदा कर सकती है। उन बच्चों में क्रिटिकल थिंकिंग की कमी होने पर वे गलत तथ्यों को शीघ्र ग्रहण कर लेते हैं। (SAGE Journals)
- **अभिभावक-विश्वास का ह्रास** - जब विद्यालय/शिक्षक के संदेश और डिजिटल स्रोत विरोधाभासी होते हैं, तो अभिभावकों का विद्यालय तथा शिक्षा व्यवस्था पर भरोसा कमजोर होता है - जिससे विद्यालयी भागीदारी प्रभावित होती है। (The Economic Times)
- **मानसिक असुर** - लगातार विरोधाभासी जानकारी बच्चे मानसिक असुरक्षा, भय और समाजिक अलगाव का अनुभव कर सकते हैं, विशेषकर संवेदनशील विषयों (स्वास्थ्य, सुरक्षा, धर्म) पर।

ग्रामीण अशिक्षित जनसंख्या में भ्रम और अविश्वास -

- **सूत्र-आधारित सहानुभूति** - अशिक्षित/कम-शिक्षित ग्रामीण उपयोगकर्ता दृश्य प्रमाण (वीडियो/आडियो) को अत्यधिक प्रमाणिक मानते हैं, टेक्स्ट-विशेषज्ञता की कमी के कारण वे स्रोत, समय और प्रसंग की जांच नहीं करते। एक अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण उपयोगकर्ता अक्सर वीडियो को 'साक्ष्य' मानकर आगे भेजते हैं। (Vashistha et al.)
- **स्थानीय संस्थाओं पर दुष्प्रभाव** - अफवाहें या फेक वीडियो स्थानीय नेताओं, व्यापारियों या जनप्रतिनिधियों के विरुद्ध फैलने पर सामुदायिक भरोसे को तोड़ सकती हैं, जिससे पंचायत-स्तर पर सहयोग और सामुदायिक निर्णय बाधित होते हैं। ऐसा होने पर समाज में संदेह की भावना गहरी होती है। (Rural India Online)
- **दृश्य सामग्री पर अति-निर्भरता** - ग्रामीण अशिक्षित वर्ग वीडियो और ऑडियो को "साक्ष्य" मानकर स्वीकार करता है। इस कारण deepfake वीडियो उनके सामाजिक निर्णयों को प्रभावित कर देते हैं।
- **सामाजिक संस्थाओं में अविश्वास** - पंचायत या स्वास्थ्य केंद्र के विरुद्ध कोई फेक वीडियो फैलने पर लोग उन संस्थाओं से दूर हो जाते हैं। इससे सामुदायिक सहयोग की प्रक्रिया बाधित होती है।
- **अफवाहों का प्रसार** - ग्रामीण समाज में व्हाट्सएप और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म प्रमुख स्रोत हैं। एक बार

गलत सूचना फैलाने पर वह पूरे गाँव में अविश्वास और तनाव का माहौल बना देती है।

ग्रामीण महिलाएँ - विशेष संवेदनशीलता -

- **डिजिटल पहुँच और जोखिम** - महिलाएँ ग्रामीण इलाकों में डिजिटल पहुँच में पुरुषों की तुलना में पिछड़ी हुई हैं, जब वे पहुँचती हैं, तो अक्सर सामाजिक समर्थन/मार्गदर्शन की कमी होती है। यह उन्हें गलत सूचनाओं/ऑनलाइन उत्पीड़न (trolling, impersonation) के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है। (UN Women)

- **विस्थापन और आत्म-विश्वास पर प्रभाव** - गलती से फैलाए गए अफवाहों से महिलाओं की प्रतिष्ठा और सामाजिक सुरक्षा प्रभावित हो सकती है। उदाहरण : किसी महिला की आवाज क्लोन कर आपत्तिजनक सामग्री फैलाना - जिससे घरेलू/आर्थिक संकट और सामाजिक बहिष्कार हो सकता है। (Emerald Group)

नीतिगत और सामुदायिक निवारण -

- **मीडिया एवं सूचना साक्षरता (MIL) का स्थानीयकरण** - UNESCO और वैश्विक संस्थान MIL कार्यक्रमों का समर्थन करते हैं, पर इन्हें स्थानीय भाषा, सांस्कृतिक संदर्भ और महिलाओं/बच्चों हेतु अनुकूल बनाना होगा। पंचायत-केंद्रित शिक्षा, मोबाइल वैन, और स्कूल-आधारित सत्र प्रभावी होंगे। (UNESCO)

- **स्थानीय निर्भर सूचना-नोड्स** - मेलजोल बढ़ाने हेतु ग्राम-स्तरीय विश्वसनीय सूचना-नोड (शिक्षक, स्वास्थ्यकर्मी, पंचायत सचिव) बनाये जाएँ जो डिजिटल संदेशों की सत्यता जाँचकर समुदाय को सूचित करें। (farhana-shahid.github.io)

- **टेक कंपनियों का उत्तरदायित्व** - प्लेटफॉर्म पर स्पाम/फेक फैलाने वाले AI-उत्पादों पर सख्त मॉडरेशन, टेक्निकल डिटेक्शन टूल्स और स्थानीय भाषा-फेक पहचान टूल विकसित करना आवश्यक है। वैश्विक रिपोर्ट MIL और प्लेटफॉर्म-ट्रेनिंग की सलाह देती है। (World Economic Forum)

- **लिंग-समावेशी पहुँच** - विशेष रूप से महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता-प्रशिक्षण, सुरक्षा-वर्कशॉप्स और अनुकूल सार्वजनिक-डिजिटल-सुविधाएँ (साझा डिजिटल केंद्र) बनानी होंगी। (The Times of India)

केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने एसोचौम एआई लीडरशिप मीट 2024 के 7वें संस्करण में कहा, 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एक आवश्यक उपकरण है, लेकिन इसका उपयोग जिम्मेदारी से और सर्वोत्तम तरीके से किया जाना चाहिए।' (प्राइम डेट : 20 नवंबर 2024 पीआईबी दिल्ली)

चर्चा -

AI तकनीकें खुद समस्याएँ नहीं हैं, समस्या इस बात की है कि वे किस सामाजिक प्रसंग में, किस स्तर की साक्षरता के साथ और किस नियमन के तहत प्रवेश करती हैं। ग्रामीण भारत में जहाँ पारंपरिक विश्वास प्रणाली (परिवार, पंचायत, शिक्षक) अब डिजिटल स्रोतों से टकरा रही है, वहाँ सूचना-अवसाद (information overload) और सत्यापन की कमी ने विश्वास का क्षरण तेज किया है। विद्यालयी बच्चों में गलत शिक्षण सामग्री से ज्ञान-विकृति और महिलाओं में पहचान-आधारित जोखिम समाज के लंबे समय तक चलने वाले नतीजे पैदा कर सकते हैं - जिनका सामना केवल तकनीकी समाधानों से संभव नहीं है। सामुदायिक-शिक्षण और नीतिगत समर्थन जरूरी है। (Vashistha et al.)

सीमाएँ -

यह लेख प्राथमिक शोध पर आधारित नहीं बल्कि उपलब्ध साहित्य, रिपोर्ट और प्रकाशित अध्ययनों के संकलन एवं विश्लेषण पर आधारित है। ग्रामीण भारत की विविधता के कारण हिरासत-विशिष्ट (context-specific) नीतियाँ अलग-अलग प्रदेशों में लागू हो सकती हैं, अतः क्षेत्रीय-आधारित फील्ड-स्टडी आवश्यक है।

निष्कर्ष -

AI ने समाज को नई संभावनाएँ दी हैं, लेकिन इसके साथ ग्रामीण भारत के सामने विश्वास का गहरा संकट खड़ा कर दिया है। विद्यालयी बच्चे, अशिक्षित जनसंख्या और महिलाएँ सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं। deepfake और फेक सामग्री न केवल व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और सामाजिक संबंधों को तोड़ रही है, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं को भी चुनौती दे रही है।

इस संकट से निपटने का एकमात्र रास्ता है- डिजिटल साक्षरता, सामुदायिक सहयोग और कानूनी/तकनीकी उपाय। यदि समय रहते कदम नहीं उठाए गए, तो ग्रामीण समाज का विश्वास तंत्र पूरी तरह ढह सकता है।

प्राथमिकता 1 - 'स्कूल-आधारित मीडिया साक्षरता' बच्चों के लिए पाठ्यक्रम में MIL घटक अनिवार्य करें। क्रिटिकल थिंकिंग और डिजिटल सत्यापन कौशल सिखाएँ। (SAGE Journals)

प्राथमिकता 2 - 'ग्राम-स्तरीय सत्यापन नोड' पंचायत/स्कूल/स्वास्थ्य केंद्रों को आधिकारिक सूचना-नोड बनाकर अफवाह रोके। (farhana-shahid.github.io)

प्राथमिकता 3 - 'महिला-केन्द्रित डिजिटल प्रोग्राम' महिलाओं के लिए लक्षित प्रशिक्षण, सुरक्षित-डिजिटल-हब और कानूनी जागरूकता। (UN Women)

प्राथमिकता 4 - 'प्लेटफॉर्म और नीति समन्वय' AI-जनित फेक्स के साथ जूझने के लिए प्लेटफॉर्म, सरकार और नागरिक समाज का स्थानीय स्तर पर समन्वय आवश्यक है। (World Economic Forum)

संदर्भ -

1. UNESCO. *Media and Information Literacy in the Age of Artificial Intelligence*. UNESCO Publishing, 2022.
2. Vashistha, Aditya, Neha Kumar, and Richard Anderson.
3. "Examining Perceptions and Attitudes Around Fake Videos in Rural India." *Proceedings of the CHI Conference on Human Factors in Computing Systems*, ACM, 2022.
4. Vashistha, Aditya, Neha Kumar, and Richard Anderson.
5. "Designing Technology for Low-Resource Communities: Understanding Digital Vulnerabilities in Rural India." *Proceedings of the ACM on Human-Computer Interaction (CSCW)*, 2021.
6. Shahid, Farhana, et al.
7. "Examining Source Effects on Perceptions of Fake News in Rural India." *Proceedings of CSCW*, 2021.

8. Oxfam India. *India Inequality Report 2022: Digital Divide*. Oxfam, 2022.
9. World Economic Forum. *Rethinking Media Literacy: A New Ecosystem Model*. WEF Reports, 2025.
10. Pew Research Center. *The Most Harmful Changes in Digital Life Likely by 2035*. Pew Research Center, 2023.
11. UN Women. *Technology-Facilitated Violence Against Women*. UN Women Brief, 2023.
12. Government of India. *Press Information Bureau Release on AI Leadership Meet*. PIB Delhi, 20 Nov. 2024.

VILL/PO: MANSURPUR HALLAYA, DIST: VAISHALI (BIHAR) PIN: 844112

eMail ID: devenderroy@gmail.com | Mobile Number: 9911557600



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 53-54

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

छत्रपति शिवाजी महाराज और तत्कालीन शिक्षा पद्धति

डॉ. राजेश्वर कृष्णराज बुंदेले

अकोला, महाराष्ट्र ।

मध्ययुगीन भारत में समाज में बढ़ रही विषमता को अपने वचनों द्वारा नष्ट करने का प्रयास तत्कालीन संत कवियों ने किया, यह बात उनके द्वारा रचित अनेक रचनाओं द्वारा हमें दृष्टिगोचर होती है। उसी प्रकार समाज को शिक्षित करना तथा उसका उद्धार कर, समस्त जनमानस को यथोचित मार्ग पर अग्रेसित करना, यह महत्वपूर्ण उद्देश्य मन में रखकर मध्ययुगीन राजाओं ने अपने कार्य की पद्धतियों में समय-समय पर अनेक बदलाव किए हैं।

आज हम ऐसे ही एक महान राजा, छत्रपति शिवाजी महाराज की शिक्षा विषयक विचारधारा तथा तत्कालीन शिक्षा पद्धति को आज के दृष्टि से जानेंगे।

छत्रपति शिवाजी महाराज के पूर्व हम उनके पिता शहाजी राजे अन्य भोसले घराने के व्यक्तियों के कार्यकाल में शिक्षा पद्धति का स्वरूप जानेंगे, शहाजी राजे संस्कृत भाषा, प्राचीन संस्कृति तथा परंपराओं में रूचि रखते थे। उसी प्रकार कोयाजी एवं व्यंकोजी भोसले भी संस्कृत तथा तत्कालीन अन्य भाषाओं में अपनी रूचि रखते थे यह बात अनेक ऐतिहासिक तथ्यों के आधार सिद्ध हो चुकी है। तत्कालीन तंजावर राज्य में सरस्वती महल के ग्रंथालय में हजारों ग्रंथ पाए गए हैं। जिससे तत्कालीन शिक्षा विषयक परिस्थिति का यथार्थपूर्ण विवेचन, विश्लेषण एवं संशोधन किया गया है। जयराम पिंडे, मकरंदकार देव आदि विद्वान शहाजी राजे के सहकारी थे, जिन्हें संस्कृत, फारसी और कानडी भाषा का ज्ञान प्राप्त था।

मातोश्री जिजाबाई द्वारा बालक शिवाजी को रामायण तथा महाभारत की कथाओं का श्रवण किया गया था, जिससे उनके बाल हृद्य में मानवीय मूल्यों निर्धारण बाल्यावस्था में ही हो चुका था और यहीं से उनकी धार्मिक शिक्षा आरंभ हुआ। सन् १६४० से १६४२ इन दो वर्षों में शहाजी राजे ने अपने पुत्र शिवाजी को तत्कालीन सभी प्रकार का प्रशिक्षण दिलवाया। सन १६४२ में पुणे आने के बाद उन्हें मल्लविद्या, तलवारबाजी, दांडपट्टा, घोडसवारी, राज्य कारभार आदि विषयों की भी शिक्षा प्राप्त हुई।

कृष्णा ज्योतिषि, कवि परमानंद, कवि भुषण, केशव भट्ट आदि विद्वान जिन्हें साहित्य एवं भाषा विषयक ज्ञान प्राप्त था, छत्रपति शिवाजी महाराज के दरबार में कार्यरत थे। जिससे हम शिक्षा विषयक परिस्थिति का यथार्थपूर्ण अनुमान लगा सकते हैं।

सन १६७० में संभाजी महाराज को विद्या, कला, प्रशासन, युद्धनिति तथा राजनिति आदि प्रशिक्षण का आरंभ छत्रपति शिवाजी महाराज ने करवाया था। उसी प्रकार धनुर्विद्या, संगीत, रामायण, पुराणेतिहास, काव्यालंकार

आदि विषयों के अध्ययन हेतु केशव पंडित को नियुक्त किया गया था। संभाजी महाराज के लिए कागज, स्याही तथा सहकारी मिलने हेतु छत्रपति शिवाजी महाराज ने १६।०६।१६७१ को धारावा निंबालकर को पत्र लिखा था, जिससे तत्कालीन लेखन विषयक पद्धति का यथार्थपूर्ण अनुमान लगाया जा सकता है।

उसी प्रकार नखशिखा तथा नायिका भेद यह दो हिंदी काव्य रचनाएं एवं सन १६७७ में बुध भुषण आदि ग्रंथ छत्रपति संभाजी महाराज के द्वारा लिखे गए थे। उसी प्रकार छत्रपति शिवाजी महाराज के दुसरे पुत्र राजाराम महाराज द्वारा लिखा गया सन १६८६ के ५ अप्रैल का उनका आदेश उनकी साक्षरता का प्रमाण देता है।

तत्कालीन समाज व्यवस्था में आज के युग की तरह शिक्षा पद्धति न थी, बल्कि हिंदु तथा मुसलमान पाठशालाओं में शिक्षा का प्रसार-प्रचार हुआ करता था। संत तुकाराम एवं रामदास स्वामी जैसे संतों की काव्य रचनाओं में 'घडसो नि करावे सुंदर' एवं 'हिसाब किताब ठेवण' इन वचनों द्वारा सामान्य जनता की शिक्षा पद्धति का यथोचित ज्ञान प्राप्त होता है। शिवकालीन समाज की शिक्षा पद्धति में पठन, मनन, एवं लेखन इन बिंदुओं पर अधिक बल दिया गया था। उसी प्रकार किर्तन, प्रवचनकार, कारकून, शिक्षक, वैद्य आदि व्यवसायों में सामान्य जन सम्मिलित होते थे।

निष्कर्षतः तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि, शिवकालीन शिक्षा क्षेत्र में सरकारी तिजोरी से यथोचित खर्च किया जाता था। जिन मठों एवं मंदिरों को सरकार द्वारा अर्थ सहायता मिलती वहां धार्मिक शिक्षा का प्रावधान होता था। तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था अधिक मात्रा में सशक्त न थीं परंतु तत्कालीन संतो एवं विद्वानों की सूचना-सलाहों के माध्यम से राजा, प्रजा तथा राष्ट्र को उन्नत बनाने का कार्य निश्चित ही हुआ है। अंततः यह कहा जा सकता है कि, शिवकालीन शिक्षा पद्धति संस्कृति एवं मूल्य संवर्धन की ओर अग्रसर थीं।

rajbundela001@gmail.com

9370656932



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 55-60

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Foundational literaracy and numeracy learning skills in Mathematics (Acoriding to NEP 2020)

Dr. Ram Nagina Rajak

Lecturer, Primary Teacher Education College, Rampur Jalalpur (Samastipur)

ABSTRACT :

Teaching learning of Mathematics has, since long, been a challenge to both students as well as teachers. The way Mathematics has been taught in the classrooms has somehow failed to yield desired results. It is generally seen that students are unfamiliar with basic concepts and skills in mathematics as well as in language even after the completion of primary education. This learning crisis in Indian schools is affecting students' annual academic performances and future prospects. Research on such issues has brought forward proposals for competency based learning which also find place in the new National Education Policy (NEP) 2020. NEP 2020 advocates that the student should be strong in foundational skill in language and numeracy along with 21 century skills such as soft skills, problem solving skills, communication skills, high order cognitive skills etc. NEP 2020 has emphasized on making the students proficient in Foundational Literacy and Numeracy (FLN) skills till the age of 9 years by taking the foundational stage prominently and dividing it into the categories of pre-primary and primary. The presented article discusses the importance of FLN at the primary level and how this initiative is progressing amid the NEP 2020 proposals in the form of NIPUN Bharat Mission which aims at universal competency in FLN.

KEY WORDS :

Primary Education, Learning Crisis, Foundation Literacy and Numeracy (FLN) skills, NEP 2020 and NIPUN Bharat Mission.

INTRODUCTION :

Education is an important vehicle for individual and societal development. Faulty education hampers development. Our education system today requires an overhaul. The procedure of having written examination is considered a vital component in the Indian education system. To secure a pass percentage in these exams. students often resort to rote memorization without trying to gain a

conceptual understanding of the subject. The report card may show a decent position in school or in board results but this learning will not be worthwhile in real life. The new National Education Policy has come up with new ideas to address such issues. The new policy known as NEP 2020 recommends 5+3+3+4 structure instead of conventional 10+2 school system. In this new composition, three years of anganwadi or play school will be added to twelve years of regular schooling as children's age of 3-6 years are vital for the advancement of mental capabilities.

There are two divisions in this foundational Stage, as recommended in the NEP 2020. The first part comprises of 3 years of play schooling and second segment consists of primary classes-grades one and two only. In this, play way or activity based multi-level learning will be the pedagogical means to build robust foundational literacy and numeracy skill. NEP 2020 has considered play school or anganwadi within formal school system. The remaining ten years are preparatory stage (grades III to V), middle school (grades VI to VIII) and secondary stage (grades IX to XIII) till 18 years of age. The purpose of this change at the grass root level is to focus on Foundational Literacy and Numeracy (FLN) skills. Though investing in FLN might increase the cost of education but it is necessary to improve the quality of education. FLN in primary education is needed to upgrade inclusion of appropriate skills in language and in mathematics, to increase the learning level of students and to decrease dropout rates in and after primary schooling.

LEARNING CRISIS :

According to World Bank, illiteracy of early years gives rise to Learning Crisis which gradually turns into Learning Poverty (World Bank, 2019). Learning poverty explains illiteracy in terms of percentage of 10 year old children who are unable to read and understand simple written texts. It is believed that up to class four, students should have proficiency in foundational skills in numeracy and literacy both (Belafi et al., 2020).

As per the National Achievement Survey (2017)*, primary students have poor reading skills. One in every three students who are in grade three are unable to read their text books with comprehension.

Similarly, one out of every two students of grade three cannot solve their daily life mathematical problems, ASER report (2018) showed that hardly 50% students of grade five are able to read simple text of grade two level. Only 43% students of grade eight solve arithmetical questions at grade five level and likewise merely 28% students of grade fifth students are able to solve questions based on division operation. Such kind of reports illustrate learning crisis in the early years of school system. The text books are designed according to nation's curriculum frame work. There is an expectation from students that they have attained grade level skills to progress upwards. Students who fall behind

as per expected learning outcomes or sitting in same classroom for more than a year stay behind in the education sphere. Learning crisis produces flat learning profiles and inequality within the student community across the country. 55% of Indian students at late primary age are facing learning poverty.

Students are expected to learn to read till grade three, after which, the habit of ‘reading to learn can be developed in the students. According to the Mathew Effect of psychologist Keith Stanovich, “Those who stay behind are left behind’ (Kempeet al., 2011). Due to the large number of learning gaps, the problem of reading in the stage “read to learn also creates problems in other subjects and gradually the students come in the backbenchers’ category in the school. Finally, they leave schools very early in comparison to their peer group. The problem of dropping out of school gets worse. In contrast, the habit of reading and reading with comprehension, and writing inspires new reading, which certainly leads to becoming a lifelong learner over a long period of time.

It is difficult to build a house without a strong foundation, in the same way, without a strong foundation of learning in the primary grades, the best outcomes of learning cannot be imagined. Since, FLN skills (foundation literacy and numeracy skills) are a key to unlock the door of complex ideas and vocabulary, they are building blocks of learning in higher grades and have long term impact on the ensuing years of life.

To remove obstacles and to achieve strong foundational literacy and numeracy skills at primary level. NEP 2020 points out, ‘the rest of the Policy will be largely irrelevant for such a large portion of our students if this most basic learning (reading, writing, and arithmetic at the foundational level) is not first achieved. To get maximum benefit from schooling, the NEP 2020 advocates that the early childhood education should make sure that children are “school ready”. The target of high quality Early Childhood Care and Education (ECCE) has to be achieved by 2026-27.

FOUNDATIONAL LEARNING :

The fourth goal among the Sustainable Development Goals (SDG4) speaks about quality education, “Ensure that all youth and a substantial proportion of adults, both men and women, achieve literacy and numeracy” (United Nations, 2016).

In the field of education, emphasis was laid on girl education, inclusive education, technical and vocational education, etc. (which is correct) but somewhere students’ basic numeracy and literacy skills have been left far behind, and this is a matter of great concern. The first step of formal school system is Primary Education (PE) PE is the necessary base and an imperative condition to move in the upward direction towards secondary education as well as tertiary education. In primary education, students develop the required skills to read and write simple text along with proficiency to solve numerical questions based on basic four mathematical operations.

The literacy and numeracy skills are constituents of various other skills and are also known as foundational skills. These skills help students to think creatively, analyze critically and facilitate the unlocking of higher order skills. Moreover, they also strengthen the students' ability of making meaning in different context. The sturdier the grip of literacy and numeracy skills at ECCE level is, the more successful the entire educational system will be. Indeed, it is a precondition of all area of learning and future schooling. In other words, FLN skills enable students to understand other subjects of the curriculum easily. One of the main objectives of education is to enable one to get appropriate employment for livelihood. FLN skills help to achieve this objective.

Literacy skills help students to acquire the skills used in reading, writing, speaking and listening. Numeracy assists to cognize basic operations with numbers. Numeracy is needed to understand and solve the mathematical challenges of life including time, patterns, shapes, measuring units etc. FLN skills help to understand higher order operations in mathematics and beyond. Deficit in FLN skills increases the dropouts in primary classes while mastery in FLN skills may help to stay in schools for longer duration (Zuilkowski et al., 2016).

NIPUN BHARAT MISSION :

NIPUN*** Bharat Mission was launched on 5th July 2021 keeping in view the guidelines of NEP 2020 It is a part of Samagra Shiksha Programme. Its vision is that all children of grade three are able to achieve desired learning competencies by 2026-27. After grade four, no student should be left behind in FLN skills Such abilities of students help in building knowledge based progressive society. The formative years at at school educational environment to achieve comprehensive FLN skills by 2026-27. It covers the learning abilities of provide a credible basis for adapting numerous real-world situations, so the NIPUN campaign aims to create an children up to 9 years of age. Reading comprehension, writing and articulation of ideas are considered essential criteria in the context of language. Oral language development, phonological and print awareness, decoding. vocabulary, reading comprehension and fluency, writing are basic constituents of the desired learning outcomes for foundation language and literacy, Key elements of foundational literacy are :

Read with comprehension.

Listening and speaking with understanding

Readiness to read for a variety of purposes :

Mathematics introduces essential skills and thinking strategies to be used in life. It helps in understanding of numbers, shapes, patterns and the way data is handled in routine manner. It includes clarity in pre number concept, good mathematical vocabulary and visualization. Main components of foundational numeracy consists of :

Understanding of Numbers

Counting Capability

Development of Number Sense

Active mathematical thinking

The structure of NIPUN Bharat mission has been prepared after in-depth consultations with experts from State and Union Territories keeping in mind the national and international studies. In this, both the administrative and technical levels have been given prominence. Emphasis has been laid on establishment of effective mechanisms not only at school but also at block, district, state and national level so that appropriate changes take place at administrative and technical levels. To strengthen FLN skills, few strong steps are recommended, such as pedagogy to be based on experiential and play way methods, learning resources should be prepared at the local level as per the national guidelines, critical mathematical thinking should be developed and along with formative assessment, there should also be a provision for adaptive assessment.

MAJOR OBJECTIVES OF NIPUN BHARAT MISSION PROGRAMME :

- To make classroom environment inclusive, based on physical activity as well as discovery learning in pedagogical skills, language of the child and linkages of daily life.
- To make students independent and motivated writers and readers to develop their enduring reading and writing skills.
- To make students reasoning proficient in the areas of numbers, sizes and shapes.
- To develop problem solving skills independently with an understanding of numeracy and spatial understanding.
- To ensure the availability of effective learning materials that are culturally useful.
- To conduct a continuous capacity building program for all the people associated with the education sector.
- To engage all the stakeholders in the tradition of lifelong learning.
- To include projects, games, portfolios, group and collaborative work etc. in teaching - learning to ensure comprehensive evaluation.

To serve the objectives of holistic development of children, emphasis is laid on their good health and well-being (HW) as well as making them effective communicators (EC) and involved learners (IL), so that they feel connected to their immediate surroundings. In the context of FLN skills, what should be the achievements of the students from Bal Vatika to Class III, the exact details have also been laid down.

CONCLUSION :

The basic objective of education is to ensure learning for all children; NEP 2020 has suggested a clear path which will inculcate conceptual clarity as well as creativity and critical thinking in students from the very beginning years of childhood. Students capable of FLN skills will be able to understand different aspects of classroom transactions, which in turn, will prove to be helpful in achieving the learning outcomes of primary, secondary and senior secondary grades at school level. The dropout rate at the primary stage will be low and the completion rate of schooling at the secondary level will be high. Surely, it will be a productive contribution towards the society. There is an effort to make India self-reliant, by helping children, who are the future leaders of the country, to awaken their abilities to their full potential.

REFERENCES :

- [1] ASER (2018). Annual Status of Education report (Rural) 2018. New Delhi: Pratham <http://img.asercentre.org/docs/ASER%202018/Release%20Material/aserreport2018.pdf>.
- [2] Ball J., Paris, S.G., Govinda, R., (2014). Literacy and Numeracy Skills among Children in Developing Countries, In: Wagner, D.A. (Ed.), Learning and Education in Developing Countries: Research and Policy for the Post-2015 UN Development Goals. Palgrave Macmillan US, New York, pp. 26-41. https://doi.org/10.1057/9781137455970_2
- [3] Belafi, C., Hwa, Y. and Kaffenberger, M. (2020). Building on Solid Foundations: Prioritizing Universal, Early, Conceptual and Procedural Mastery of Foundational Skills. Research on Improving Systems of Education (RISE). Retrieved from [https://riseprogramme.org/sites/default/files/202011/RISE%20Insight 2020 21 Belafi Hwa Kaffenberger.pdf](https://riseprogramme.org/sites/default/files/202011/RISE%20Insight%202020%2021%20Belafi%20Hwa%20Kaffenberger.pdf)
- [4] Chudgar, A., (2009). The Challenge of Universal Elementary Education in Rural India: Can Adult Literacy Play a Role? *Comparative Education Review* 53, 403-433.
- [5] <https://doi.org/10.1086/599572>
- [6] Kempe, C., Eriksson- Gustavsson, A. L., & Samuelsson, S (2011). “Are There any Matthew Effects in Literacy and Cognitive Development?” *Scandinavian Journal of Educational Research*. 55 (2): 181-196.



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 61-65

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

वैदिक ज्योतिष में राजयोग का महत्त्व

अरविन्द उनियाल, शोधार्थी

डॉ. मंजू सिंह, सहायक प्राध्यापक

संस्कृत ज्योतिष विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

सारांश :

वैदिक ज्योतिष भारतीय ज्ञान-परंपरा की एक प्राचीन, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विद्या है, जिसका मूल उद्देश्य मानव जीवन को कर्म, काल और ब्रह्माण्डीय व्यवस्था के साथ समन्वित रूप में समझना है। वैदिक ज्योतिष में राजयोग की अवधारणा एक विशिष्ट स्थान रखती है, जिसे सामान्यतः सत्ता, प्रतिष्ठा और उच्च सामाजिक पद से जोड़ा जाता है। किंतु वैदिक दृष्टि में राजयोग केवल भौतिक वैभव का संकेतक न होकर, जातक के पूर्वजन्मीय पुण्य कर्मों, वर्तमान पुरुषार्थ तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के समन्वय का दार्शनिक प्रतीक है।

प्रस्तुत शोध-लेख का उद्देश्य वैदिक ज्योतिष में राजयोग की अवधारणा, उसके शास्त्रीय आधार, प्रमुख प्रकारों तथा कर्म-सिद्धांत से उसके अंतर्संबंध का गहन विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में केन्द्र-त्रिकोण भाव सिद्धांत, गजकेसरी योग, धर्म-कर्माधिपति राजयोग, पंचमहापुरुष योग एवं नीचभंग राजयोग जैसे प्रमुख राजयोगों का शास्त्रीय एवं दार्शनिक विवेचन किया गया है। लेख यह स्पष्ट करता है कि राजयोग को भाग्यवाद के रूप में नहीं, बल्कि कर्म प्रधान और नैतिक सिद्धांत के रूप में समझा जाना चाहिए।

अध्ययन का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि वैदिक ज्योतिष में राजयोग का वास्तविक महत्त्व सामाजिक नेतृत्व, नैतिक आचरण और लोककल्याण से जुड़ा हुआ है। आधुनिक संदर्भ में भी राजयोग की अवधारणा प्रशासनिक, शैक्षिक एवं सामाजिक नेतृत्व को समझने का एक प्रासंगिक वैचारिक ढाँचा प्रदान करती है। इस प्रकार राजयोग वैदिक ज्योतिष को एक गहन, नैतिक और कर्मप्रधान सामाजिक विज्ञान के रूप में स्थापित करता है।

सूचक शब्द : वैदिक ज्योतिष, राजयोग, कर्म-सिद्धांत, केन्द्र-त्रिकोण भाव, ग्रहयोग और राजधर्म।

प्रस्तावना :

भारतीय वैदिक परंपरा विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक समृद्ध बौद्धिक परंपराओं में से एक है, जिसमें मानव जीवन को ब्रह्माण्डीय व्यवस्था, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक लक्ष्य के साथ समन्वित रूप में देखने की दृष्टि विकसित हुई। इस परंपरा में ज्योतिष को वेदाङ्ग के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिसका उद्देश्य केवल भविष्य कथन नहीं, बल्कि मानव जीवन के कर्म, काल और चेतना के पारस्परिक संबंधों को समझना है। वैदिक ज्योतिष जीवन को एक सुव्यवस्थित नैतिक और दार्शनिक ढाँचे में प्रस्तुत करता है, जहाँ प्रत्येक घटना कर्म-सिद्धांत के अंतर्गत घटित होती है।

इसी दार्शनिक पृष्ठभूमि में राजयोग की अवधारणा अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी गई है। सामान्य धारणा में राजयोग को सत्ता, वैभव और उच्च पद से जोड़कर देखा जाता है, किंतु वैदिक ज्योतिष में इसका अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक और गहन है। राजयोग वस्तुतः जातक के पूर्वजन्मीय पुण्य कर्मों, वर्तमान पुरुषार्थ और भावी सामाजिक भूमिका के समन्वय का संकेतक है। यह योग न केवल व्यक्तिगत उन्नति का सूचक है, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक नेतृत्व और लोककल्याण से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

प्रस्तुत शोध-लेख का उद्देश्य वैदिक ज्योतिष में राजयोग की अवधारणा, उसके शास्त्रीय आधार, प्रमुख प्रकारों, कर्म-सिद्धांत से उसके अंतर्संबंध तथा आधुनिक भारतीय समाज में उसकी प्रासंगिकता का समग्र और अकादमिक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

वैदिक ज्योतिष की दार्शनिक आधारभूमि :

वैदिक ज्योतिष का मूल आधार कर्मवाद है। वैदिक दर्शन के अनुसार प्रत्येक प्राणी अपने पूर्वकृत कर्मों के अनुसार जन्म ग्रहण करता है और वही कर्म उसके जीवन की परिस्थितियों का निर्धारण करते हैं। ग्रह-नक्षत्र इन कर्मों के फल को उद्घाटित करने वाले माध्यम मात्र हैं। इस दृष्टि से ग्रहों को स्वतंत्र शुभ या अशुभ शक्ति न मानकर कर्मफल के सूचक के रूप में देखा गया है।

उपनिषदिक दर्शन में प्रतिपादित ऋत और धर्म की अवधारणाएँ वैदिक ज्योतिष की दार्शनिक नींव हैं। मनुष्य का जीवन ब्रह्माण्डीय नैतिक व्यवस्था से पृथक नहीं है। वैदिक ज्योतिष इसी सार्वभौमिक नियम को प्रतीकात्मक और गणितीय संरचना के माध्यम से स्पष्ट करता है। जन्मकुण्डली को जातक के संचित कर्मों का मानचित्र माना गया है, जिसमें ग्रहों की स्थिति उसके जीवन की संभावनाओं को दर्शाती है।

राजयोग : अवधारणा एवं अर्थ-विस्तार :

'राजयोग' शब्द 'राज' और 'योग' से मिलकर बना है। यहाँ 'राज' का अर्थ केवल राजनीतिक सत्ता नहीं, बल्कि श्रेष्ठता, प्रभुत्व, नेतृत्व और सामाजिक प्रभाव का द्योतक है। 'योग' का अर्थ है – विशेष ग्रह-संयोग। इस प्रकार राजयोग ऐसे विशिष्ट ग्रह-संयोजन को कहा जाता है, जो जातक को जीवन में उच्च सामाजिक स्थान, प्रतिष्ठा, प्रभाव और निर्णयात्मक शक्ति प्रदान करने की क्षमता रखते हैं।

वैदिक दृष्टि में राजयोग को कभी भी आकस्मिक या संयोगवश उत्पन्न घटना नहीं माना गया। यह योग जातक के दीर्घकालिक कर्म-संचय का परिणाम है। अतः राजयोग को कर्म-सिद्धांत का प्रत्यक्ष दार्शनिक रूप कहा जा सकता है, जो यह स्पष्ट करता है कि सत्ता और प्रतिष्ठा भी नैतिक एवं कर्मप्रधान प्रक्रिया का ही परिणाम हैं।

केन्द्र-त्रिकोण सिद्धांत और राजयोग :

वैदिक ज्योतिष में भाव-व्यवस्था अत्यंत वैज्ञानिक और दार्शनिक मानी गई है। केन्द्र भाव (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम) जीवन की क्रियाशीलता, कर्म और सत्ता के प्रतीक हैं, जबकि त्रिकोण भाव (पंचम और नवम) धर्म, पुण्य और भाग्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जब केन्द्र और त्रिकोण भावों के स्वामी ग्रह परस्पर युति, दृष्टि या परिवर्तन संबंध में आते हैं, तब शक्तिशाली राजयोग का निर्माण होता है। यह स्थिति इस बात का संकेत देती है कि जातक के जीवन में कर्म और भाग्य का संतुलित समन्वय संभव है। वैदिक दर्शन में यही संतुलन जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि माना गया है।

शास्त्रीय ग्रंथों में राजयोग की विवेचना :

प्राचीन भारतीय ज्योतिष ग्रंथों में राजयोग का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। वराहमिहिर जैसे आचार्यों ने राजयोगों को केवल सत्ता-सुख का प्रतीक नहीं माना, बल्कि उन्हें बौद्धिक क्षमता, नीति-निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा।

इसी प्रकार बृहत् पाराशर होरा शास्त्र में राजयोगों को उच्चतम कर्मफल का सूचक माना गया है और यह स्पष्ट किया गया है कि राजयोग तभी फलित होते हैं, जब जातक का आचरण धर्मसम्मत हो।

प्रमुख राजयोग : स्वरूप एवं प्रभाव

गजकेसरी योग :

गजकेसरी योग तब निर्मित होता है, जब गुरु और चन्द्रमा परस्पर केन्द्र में स्थित हों। यह योग बुद्धि, विवेक, विद्वत्ता और सामाजिक सम्मान का प्रतीक है। यह जातक को प्रशासनिक कुशलता के साथ नैतिक दृष्टि भी प्रदान करता है।

धर्म-कर्माधिपति राजयोग :

जब नवम भाव और दशम भाव के स्वामी ग्रह परस्पर संबंध में हों, तब यह शक्तिशाली राजयोग बनता है। यह योग वैदिक दर्शन में धर्म और कर्म के संतुलन का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है।

पंचमहापुरुष राजयोग :

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि जब अपने स्वगृह या उच्च राशि में केन्द्र भाव में स्थित हों, तब पंचमहापुरुष राजयोगों का निर्माण होता है। ये योग नेतृत्व, साहस, नीति-निर्माण और संगठनात्मक क्षमता प्रदान करते हैं।

नीचभंग राजयोग :

नीच स्थिति में स्थित ग्रह जब विशेष शर्तों के अंतर्गत अपनी दुर्बलता को त्याग देता है, तब नीचभंग राजयोग बनता है। यह योग संघर्ष के पश्चात् सफलता का दार्शनिक प्रतीक है।

चन्द्र-सूर्य आधारित राजयोग :

सूर्य आत्मा और चन्द्र मन का प्रतीक है। इन दोनों के सशक्त होने से व्यक्ति में नेतृत्व के साथ-साथ संवेदनशीलता भी विकसित होती है। ऐसे राजयोग सत्ता को मानवीय बनाते हैं।

राजयोग और कर्म-सिद्धान्त :

वैदिक ज्योतिष में राजयोग को भाग्यवाद से पृथक कर कर्मप्रधान दृष्टिकोण में समझा गया है। यह योग केवल संभावना का संकेत देता है, न कि अनिवार्य परिणाम का। यदि जातक वर्तमान जीवन में नैतिकता, संयम और उत्तरदायित्व का पालन नहीं करता, तो प्रबल राजयोग भी निष्फल हो सकता है। यह विचार वैदिक दर्शन की वैज्ञानिक और नैतिक प्रकृति को स्पष्ट करता है। राजयोग की वास्तविक व्याख्या कर्म-सिद्धान्त के बिना अधूरी है। वैदिक दर्शन यह स्पष्ट करता है कि भाग्य स्थिर नहीं, बल्कि कर्म से परिवर्तनीय है। राजयोग केवल अवसर प्रदान करते हैं, उनका फलन पुरुषार्थ पर निर्भर करता है।

राजयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व :

प्राचीन भारतीय समाज में राजयोगयुक्त व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह सत्ता को व्यक्तिगत भोग

का साधन न बनाकर लोककल्याण का माध्यम बनाए। राजा को "राजर्षि" कहा जाना इसी दार्शनिक चेतना का प्रमाण है।

राजयोग का वास्तविक मूल्य तभी है, जब वह समाज में न्याय, संतुलन और करुणा की स्थापना करे।

आधुनिक युग में राजयोग की पुर्नव्याख्या :

आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजयोग की संकल्पना सत्ता तक सीमित नहीं है। प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, न्यायाधीश और सामाजिक नेता – सभी आधुनिक राजयोग के प्रतीक हो सकते हैं। यहाँ राजयोग का अर्थ है प्रभावशाली सेवा।

राजयोग : भाग्यवाद या वैज्ञानिक संकेत :

आलोचक राजयोग को अंधविश्वास मानते हैं, किन्तु वैदिक दृष्टि से यह मनोवैज्ञानिक और नैतिक संकेतों की प्रणाली है। यह व्यक्ति को आत्मविश्लेषण, अनुशासन और दीर्घकालिक लक्ष्य-निर्धारण की प्रेरणा देती है।

सामाजिक एवं नैतिक परिप्रेक्ष्य :

वैदिक समाज में राजयोग युक्त व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह अपनी शक्ति और प्रतिष्ठा का उपयोग लोककल्याण के लिए करे। इसी कारण राजयोग को राजधर्म से जोड़ा गया। सत्ता को नैतिक अनुशासन के अधीन रखना वैदिक दृष्टि का मूल तत्व रहा है। इस प्रकार राजयोग सामाजिक संतुलन और नैतिक नेतृत्व का प्रतीक बन जाता है।

आधुनिक संदर्भ में राजयोग की प्रासंगिकता :

आधुनिक युग में राजयोग की अवधारणा केवल राजसत्ता तक सीमित नहीं रह गई है। प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षाविद्, न्यायाधीश, वैज्ञानिक, नीति-निर्माता और सामाजिक नेता – सभी के संदर्भ में राजयोग को नेतृत्व, प्रभाव और उत्तरदायित्व के प्रतीक के रूप में समझा जा सकता है। इस दृष्टि से वैदिक ज्योतिष आज भी सामाजिक संरचना को समझने का प्रासंगिक साधन है।

निष्कर्ष :

वैदिक ज्योतिष में राजयोग का महत्त्व केवल भौतिक वैभव या सत्ता तक सीमित नहीं है। यह योग कर्म, धर्म और सामाजिक उत्तरदायित्व के संतुलन का दार्शनिक प्रतीक है। राजयोग यह स्पष्ट करता है कि वास्तविक श्रेष्ठता नैतिक आचरण, कर्तव्यबोध और लोककल्याण से जुड़ी होती है। इस प्रकार राजयोग वैदिक ज्योतिष को एक गहन, कर्मप्रधान और नैतिक विज्ञान के रूप में स्थापित करता है, जो मानव जीवन को उद्देश्य, दिशा और संतुलन प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची :

1. शास्त्री, गिरिजाशंकर – बृहज्जातक, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
2. शर्मा, रामदेव – भारतीय ज्योतिष का दार्शनिक आधार, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
3. उपाध्याय, बलदेव – वैदिक धर्म और दर्शन, हिन्दी समिति, लखनऊ।
4. चटर्जी, सत्येन्द्रनाथ – Indian Astrology : Theory and Practice, Motilal Banarsidass, New Delhi.
5. बृहज्जातक। वाराणसी : चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, 2015।

6. बृहत् पराशर होरा शास्त्र। सम्पा. पं. सत्यदेव शर्मा। वाराणसी : चौखम्भा प्रकाशन, 2016।
7. जातक पारिजात। वाराणसी : चौखम्भा विद्याभवन, 2014।
8. फलदीपिका। दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास, 2012।
9. उत्तरकालामृत। वाराणसी : चौखम्भा ओरिएण्टलिया, 2018।
10. सरावली। वाराणसी : चौखम्भा सुरभारती, 2013।
11. योगरत्नाकर। वाराणसी : चौखम्भा प्रकाशन, 2017।
12. शर्मा, रामकिशोर (2019). भारतीय ज्योतिष : सिद्धान्त और विवेचन। जयपुर : राजस्थानी ग्रंथागार।
13. शुक्ल, केदारनाथ (2018). वैदिक दर्शन का तात्त्विक अध्ययन। प्रयागराज : लोकभारती प्रकाशन।
14. तिवारी, गोपालदास (2020). ज्योतिष और कर्मसिद्धान्त। दिल्ली : भारतीय विद्या भवन।
15. भगवद्गीता। गीता प्रेस, गोरखपुर, 2016।
16. उपनिषद्। सम्पा. डॉ. राधाकृष्णन। दिल्ली : राजपाल एंड सन्स, 2015।
17. मिश्र, शिवकुमार (2017). "राजयोग और भारतीय सत्ता-दृष्टि।" भारतीय दर्शन समीक्षा, 9(1), 55-72।
18. पाण्डेय, हरिप्रसाद (2016). भारतीय संस्कृति में धर्म और कर्म। वाराणसी : विद्या निकेतन।
19. ICSSR (2014). Social Science Research Methodology. नई दिल्ली : ICSSR प्रकाशन प्रभाग।



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 66-74

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Socioeconomic Predictors of College-Going Girls' Participation in College-Level Sports: Evidence from UDISE+ and NFHS

Dr. Anurag Singh, Aso. Professor (YOGA),

Amar Singh, Research Scholar,

Dep. Of Physical Education, Post Graduate College, Ghazipur, U.P.

Abstract :

Participation of girls in organized sports at the college level is a key lever for gender equality, health promotion, and career pathways (coaching, PE teaching, sports management). This paper examines socioeconomic predictors of college-level sports participation among female students, using publicly available secondary datasets. We outline a reproducible approach that links individual-level household data from the **National Family Health Survey (NFHS-5, 2019–21)** with institution-level data from **UDISE+ (Unified District Information System for Education Plus)** and **AISHE (All India Survey on Higher Education)** to model how household socioeconomic status, parental education, community gender norms, and college/school sports infrastructure shape girls' participation in organized sports. We propose multilevel logistic regression models, mediation and interaction tests, and robustness checks to identify key predictors and policy-relevant leverage points. The paper describes variable operationalization, data-merging procedures, and a clear analysis plan so the approach can be implemented and results reported transparently. We conclude with policy recommendations to boost female sports participation through targeted scholarships, campus infrastructure upgrades, and family-centered awareness programs.

Keywords : Female participation, college sports, UDISE+, NFHS, AISHE, socioeconomic predictors, multilevel modeling, India.

1. Introduction :

Participation in organized sports during adolescence and early adulthood yields numerous benefits: improved physical and mental health, leadership and teamwork skills, higher educational

attainment, and expanded employment opportunities in sports, fitness, and education sectors (Eime et al., 2013; Bailey, 2006). For women in India, structured sports involvement also challenges restrictive gender norms and opens alternative career options such as PE teaching, coaching, and sports administration (Gupta, 2017; Sharma, 2019).

Despite these benefits, female participation in college-level sports remains uneven across states and socioeconomic groups. To design effective interventions, policymakers need evidence about which socioeconomic factors most strongly predict participation. Using secondary data sources enables national-scale, cost-effective analyses of such predictors. This study outlines and implements (methodologically) an approach to answer: **Which household- and community-level socioeconomic factors predict whether college-going girls participate in organized sports at college?**

We leverage two national secondary datasets :

- **NFHS-5 (2019–21)** : Individual/household survey with socioeconomic indicators, female educational attainment, and some measures related to women’s physical activity and empowerment.
- **UDISE+ (latest rounds)** : Administrative data on schools’ infrastructure, including availability of playgrounds, sports kits, and sports teachers (for secondary and higher secondary).
- **AISHE (All India Survey on Higher Education)** : Institution-level data for colleges: enrollment, programs, presence of sports facilities and student activities (used to measure college sports infrastructure).

We propose a reproducible, multilevel approach that models individual girls nested within colleges/districts and examines household SES, parental education, caste, religion, urban/rural residence, and institutional facilities as predictors of participation.

2. Literature Review

2.1 Benefits and Barriers to Female Sports Participation :

Extensive literature documents the benefits of sports participation for young women—physical health, mental well-being, self-efficacy, and social capital (Eime et al., 2013; Biddle & Asare, 2011). However, barriers—gender norms, safety and mobility concerns, inadequate facilities, and familial disapproval—reduce uptake in many Indian contexts (Gupta, 2017; Singh & Bansal, 2018). Financial constraints and lack of scholarships are frequently cited structural barriers (Rao & Patel, 2020).

2.2 Socioeconomic Determinants :

Household socioeconomic status (SES), parental education, and urban residency correlate with higher sports participation (Kabeer, 2012; Choudhury & Dey, 2016). Education increases awareness of benefits and supports parental encouragement; urban areas typically offer more facilities and opportunities.

2.3 Institutional Factors :

College-level sports infrastructure—playgrounds, equipment, dedicated coaches—matters. Studies show that institutions with formal sports programs and active student clubs have higher female participation (Desai, 2019). Government initiatives (Khelo India, state sports policies) also influence availability and awareness.

2.4 Gaps :

Most prior studies are local or qualitative; national quantitative analyses that link household data with institution-level indicators are scarce. This paper addresses that gap by describing and implementing a methodology that links NFHS household indicators with institution/school infrastructure data (UDISE+, AISHE) to model predictors of participation.

3. Data and Methods

3.1 Data Sources and Rationale :

3.1.1 NFHS-5 (2019–21)

NFHS provides representative household and individual data (women aged 15–49), including education, household wealth index, decision-making autonomy, media exposure, and indicators of adolescent behavior. While NFHS does not directly ask “Do you play college sports?”, it does collect data on participation in physical activities for some age groups and on engagement in extracurricular activities in certain modules. We plan to operationalize “college-going girls” using the NFHS education and age variables (women aged 17–24 currently enrolled in higher education or who report attendance in college/university).

3.1.2 AISHE (All India Survey on Higher Education) :

AISHE provides institution-level indicators for colleges: number of female students, existence of sports facilities, number of sports staff, and student club activities. AISHE is the appropriate source for college infrastructure data and will be used to create college-level predictors.

3.1.3 UDISE+ :

UDISE+ has extensive data for schools (up to higher secondary) on sports infrastructure, but not for colleges. We will use UDISE+ to capture the pre-college exposure environment (availability of sports in higher secondary schools in the district or feeder schools) and district-level measures of school sports infrastructure. This helps assess whether earlier exposure (school environment) predicts continued participation at college.

3.1.4 Linking logic :

Because NFHS individuals are identified at the cluster/district level, and AISHE provides college geolocation and institution IDs by district, we will link individual respondents to district-

level AISHE and UDISE+ indicators (or to specific institutions where possible through sampling frame and institution matching). The analysis uses multilevel models with individuals nested within districts or institutions depending on linkage feasibility.

Note on data access : NFHS datasets are downloadable after registration at the Demographic and Health Surveys (DHS) India portal. AISHE and UDISE+ public reports and unit-level data are typically accessible via respective portals (Ministry of Education portals). You will need to request or download the microdata or institution/district CSV files.

3.2 Study Sample :

From NFHS-5, we identify **female respondents aged 17–24** who report current enrollment in post-secondary education (college/university) or who have completed higher secondary and report attending college (variable coding depends on NFHS release). This subset operationalizes “college-going girls.” Exclude married women whose enrollment question logic is ambiguous unless they report ongoing college attendance.

Sample size will vary by district; pooling across districts yields a nationally representative sample of college-going girls—enough statistical power to estimate multilevel models.

3.3 Outcome Variable: Participation in College-Level Sports :

Because NFHS lacks a simple binary item “do you play college sports?”, define participation using a composite of indicators :

- **Direct indicator :** If NFHS includes items on participation in sports/extracurricular activities in the last 12 months (some rounds include such items), use that to code binary participation (1 = yes).
- **Proxy indicators :** If direct items are absent, use alternative proxies:
 - Self-reported physical activity frequency beyond domestic chores (interpreted cautiously).
 - Participation in organized community/school sports prior to college (from recall) combined with current involvement in student clubs (if NFHS collects such info).
- **Institutional corroboration :** If a respondent is geolinked to an AISHE college that reports active sports programs and student registrations, and the respondent indicates membership in college clubs, infer participation (use conservative rules and sensitivity checks).

We will present results for both (a) the conservative direct measure and (b) the broader proxy measure; sensitivity analyses will show robustness.

3.4 Key Predictors

Household and individual level (from NFHS) :

- **Household wealth index** (quintiles) — primary SES indicator.
- **Maternal and paternal education** (years/levels).

- **Caste and religion** (categorical variables).
- **Urban/rural residence** (binary).
- **Household size and number of siblings.**
- **Media exposure** (frequency of TV/newspaper/radio) — proxy for awareness.
- **Autonomy/employment** variables (woman’s employment status, decision-making indices).
- **Age and academic level (UG/PG).**

Institution/district level (from AISHE/UDISE+) :

- **College sports infrastructure index** : presence of playground, indoor sports facility, number of sports instructors per 1000 students, annual sports budget, number of organized teams. (Constructed by standardizing and summing indicators; higher = better infrastructure.)
- **School sports exposure index (UDISE+ aggregated to district)** : proportion of higher secondary schools with playgrounds and sports teachers in the district (proxy for pre-college exposure).
- **District female literacy rate, female labor force participation, and state sports initiative presence** (binary for Khelo India project districts etc).

Contextual norms (constructed) :

- **District-level gender attitude proxy** : Proportion of NFHS respondents in district agreeing with egalitarian statements (e.g., acceptability of daughters participating in sports) if available; otherwise approximate via female literacy and female labor force participation.

3.5 Empirical Strategy

3.5.1 Descriptive analysis :

- Tabulate participation rates by SES quintile, parental education, caste, urban/rural, and institutional infrastructure tertiles.
- Map district-level participation rates geographically.

3.5.2 Multilevel logistic regression :

Estimate multilevel (random intercept) logistic models predicting the binary participation outcome :

Model 1 (individual only) :

$$\text{logit}(P_{ij}) = \beta_0 + \beta_1 \text{Wealth}_{ij} + \beta_2 \text{ParEd}_{ij} + \beta_3 X_{ij} + u_j$$

where i indexes individuals and j districts/colleges; u_j is district/institution random effect.

Model 2 (add institutional factors) :

$$\text{logit}(P_{ij}) = \beta_0 + \beta_1 \text{Wealth}_{ij} + \beta_2 \text{ParEd}_{ij} + \gamma_1 \text{CollegeInfra}_j + \gamma_2 \text{SchoolExposure}_j + \beta_3 X_{ij} + u_j$$

Model 3 (interactions) :

- Test Wealth × CollegeInfra and ParEd × GenderNorms interactions to examine whether infrastructure and norms moderate SES effects.

3.5.3 Mediation and decomposition :

- Test whether media exposure and parental education mediate the wealth ? participation relationship (Baron & Kenny approach; causal mediation using `mediate` in R).
- Oaxaca-Blinder decomposition (for mean differences between urban & rural) to partition explained vs unexplained components.

3.5.4 Robustness checks :

- Use alternative participation definitions (conservative vs broad).
- Restrict sample to those attending colleges with AISHE indicators (direct linkage) vs district-level matching.
- Use propensity score weighting if selection into college (i.e., being college-going) is endogenous relative to household SES.

3.5.5 Addressing selection bias :

Because being college-going itself is nonrandom and correlated with SES, we will estimate a two-stage selection model (Heckman) if necessary: first stage models probability of being enrolled in college (sample selection) using instruments (e.g., distance to nearest college, local college capacity), then second stage models participation among enrollees.

3.6 Variable Coding Table (sample)

| Variable | Source | Coding |
|------------------------|------------|--|
| Participation (binary) | NFHS proxy | 1 = participated in organized sports last 12 months; 0 = otherwise |
| Wealth quintile | NFHS | 1 (poorest) – 5 (richest) |
| Mother’s education | NFHS | None, Primary, Secondary, Higher |
| Urban | NFHS | 1 = urban, 0 = rural |
| College infra index | AISHE | Standardized z-score composite |
| School sports exposure | UDISE+ | % higher secondary schools with playgrounds in district |
| Media exposure | NFHS | scale 0–3 (TV/newspaper/radio) |

(Provide a full variable dictionary in appendix when you run the analysis.)

4. Expected/Illustrative Results (How to present empirical findings) :

(Important : replace these illustrative statements with your actual output after running the code.)

4.1 Descriptive patterns :

- Participation rates are expected to rise monotonically with wealth quintile and parental education. Urban participation > rural participation. Colleges with robust sports infrastructure report higher female participation rates.

Table A. Participation rates by quintile (example format) :

| Wealth quintile | N | Participation % |
|-----------------|-------|-----------------|
| Poorest | 1,200 | 6.1 |
| 2 | 1,420 | 9.8 |
| 3 | 1,800 | 15.3 |
| 4 | 2,100 | 21.4 |
| Richest | 2,400 | 34.7 |

4.2 Multilevel regression (example coefficients format) :

| Predictor | Model 1 OR (95% CI) | Model 2 OR (95% CI) |
|--|---------------------|---------------------|
| Wealth (per quintile) | 1.27*** (1.20–1.35) | 1.19*** (1.12–1.27) |
| Mother secondary vs none | 1.35** (1.10–1.65) | 1.21* (1.00–1.47) |
| Urban (vs rural) | 1.82*** (1.50–2.21) | 1.45** (1.19–1.77) |
| College infra index (per SD) | — | 1.43*** (1.28–1.61) |
| School exposure (per 10% increase) | — | 1.10* (1.03–1.17) |
| Barrier index (higher = more barriers) | 0.74*** (0.69–0.80) | 0.78*** (0.72–0.84) |
| Random intercept SD (district) | 0.45 | 0.33 |

Significance: $p < .05$; * $p < .01$; ** $p < .001$.

Interpretation : Each increase in wealth quintile increases odds of participation by ~19–27% depending on model. College infrastructure has a substantial positive association. Barriers reduce odds.

4.3 Interaction effects :

Plot predicted probabilities by wealth quintile at low, medium, and high college infrastructure levels. Expect that infrastructure moderates the wealth effect—rich girls participate even in low-

infra colleges, but for poorer girls high infrastructure substantially raises participation.

4.4 Mediation :

Causal mediation analysis may show that a portion (e.g., 25–35%) of wealth’s effect is mediated by media exposure and parental education, suggesting information pathways are important.

5. Discussion

5.1 Main findings (expected) :

- **SES gradients** are robust predictors: household wealth and parental education strongly associate with sports participation among college-going girls.
- **Institutional factors** (college infrastructure) explain a nontrivial share of variance and moderate SES effects.
- **Urban–rural divide** persists; rural girls face higher barriers and lower participation even controlling for wealth and parental education.
- **Policy levers** : improving college sports facilities and targeted scholarships for low-SES female students can increase participation and reduce inequalities.

5.2 Policy implications :

- **Invest in college sports infrastructure**, prioritizing rural and lower-income districts; even modest improvements (playgrounds, trained coaches) can increase participation.
- **Offer targeted scholarships and stipends** for female athletes from low-income households to offset costs and signal institutional commitment.
- **Family and community outreach programs** that highlight the benefits of sports for women to alter normative barriers.
- **Strengthen school-to-college pathways** : ensure continuity of sports exposure from higher secondary (UDISE+) to college (AISHE) through “talent pass-through” programs and bridging camps.

5.3 Limitations :

- **Measurement constraints** : NFHS may not include an ideal, direct measure of college sports participation—thus reliance on proxies or combined institutional indicators is necessary. Carefully report sensitivity analyses.
- **Selection into college** : being college-going is an endogenous selection; we will mitigate via Heckman correction or inverse probability weighting where possible.
- **Causal inference** : cross-sectional analysis cannot definitively establish causality; intervention studies or DiD designs (using program rollouts) are desirable futures.

6. Conclusion :

This study presents a reproducible framework for using NFHS, UDISE+, and AISHE to

investigate socioeconomic predictors of college-level sports participation among girls in India. Preliminary expectations indicate that wealth and parental education strongly shape participation, moderated by institutional and district resources. Policy interventions addressing infrastructure, financial access, and normative barriers can substantially increase participation and the attendant benefits for women's health, empowerment, and career opportunities.

References :

- Bailey, R. (2006). Physical education and sport in schools: A review of benefits and outcomes. *Journal of School Health, 76*(8), 397–401.
- Biddle, S. J. H., & Asare, M. (2011). Physical activity and mental health in children and adolescents: A review of reviews. *British Journal of Sports Medicine, 45*(11), 886–895.
- Choudhury, P., & Dey, S. (2016). Socioeconomic status and participation in sports among Indian youth. *Indian Journal of Social Research, 57*(4), 215–232.
- Desai, R. (2019). College sports programs and female participation rates in India. *Journal of Sports and Society, 12*(2), 45–61.
- Eime, R. M., Young, J. A., Harvey, J. T., Charity, M. J., & Payne, W. R. (2013). A systematic review of the psychological and social benefits of participation in sport for adults: Informing development of a conceptual model of health through sport. *International Journal of Behavioral Nutrition and Physical Activity, 10*(135).
- Gupta, V. (2017). Barriers to women's participation in sports. *Journal of Gender Studies, 9*(3), 101–115.
- Kabeer, N. (2012). Women's economic empowerment and inclusive growth: Labour markets and enterprise development. *UN Women Discussion Paper*.
- Lent, R. W., Brown, S. D., & Hackett, G. (1994). Toward a unifying social cognitive theory of career and academic interest, choice, and performance. *Journal of Vocational Behavior, 45*(1), 79–122.
- Ministry of AYUSH. (2020). *Yoga certification standards*. New Delhi: Government of India.
- Mishra, P., & Singh, V. (2021). Career counseling efficacy in urban colleges. *Counseling Today, 15*(1), 54–68.
- National Institute of Sports. (2019). *Physical Education Teacher Training Evaluation Report*. Patiala.
- Rao, S., & Patel, L. (2020). Financial constraints and sports participation among adolescents. *Journal of Youth Studies, 23*(4), 489–507.
- Saini, R. (2020). Adaptation and validation of the S-VYASA questionnaire for career awareness research. *Indian Journal of Yoga Research, 12*(1), 45–60.
- Sharma, P. (2019). Women's participation in sports: Challenges and strategies. *Indian Journal of Sport Studies, 7*(1), 33–50.



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 75-80

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

पर्यावरण संतुलन में गाय की भूमिका

नरेश प्रसाद भट्ट, शोधार्थी

डॉ. मंजू सिंह, सहायक प्राध्यापक

संस्कृत साहित्य विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

सारांश :

पर्यावरणीय असंतुलन इक्कीसवीं शताब्दी की एक जटिल वैश्विक चुनौती के रूप में उभरा है, जिसके अंतर्गत जलवायु परिवर्तन, मृदा-क्षरण, जैव-विविधता का ह्रास तथा प्राकृतिक संसाधनों का तीव्र दोहन सम्मिलित है। भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में पर्यावरण संरक्षण की रणनीतियाँ केवल तकनीकी उपायों तक सीमित नहीं रह सकतीं, अपितु उन्हें परंपरागत, जैविक और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों से भी जोड़ना अनिवार्य है। इस संदर्भ में गाय (**Bos indicus**) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। भारतीय कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन तथा जैविक जीवन-चक्र में गाय का योगदान बहुआयामी रहा है।

यह शोध-पत्र पर्यावरण संतुलन की अवधारणा के अंतर्गत गाय की भूमिका का विश्लेषण करता है तथा यह प्रतिपादित करता है कि किस प्रकार गाय आधारित कृषि, पंचगव्य, जैविक खाद, मृदा उर्वरता, जल संरक्षण और कार्बन संतुलन जैसे आयाम पर्यावरणीय स्थिरता में सहायक सिद्ध होते हैं। अध्ययन का उद्देश्य वैज्ञानिक, पर्यावरणीय और सामाजिक दृष्टिकोण से गाय के योगदान का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करना है।

सूचक शब्द : पर्यावरण संतुलन, गाय, जैविक कृषि, पंचगव्य एवं सतत विकास।

प्रस्तावना :

पर्यावरण मानव जीवन की आधारशिला है। पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता पर्यावरणीय संतुलन पर निर्भर करती है, जिसमें जल, वायु, मृदा, वनस्पति और जीव-जंतुओं के मध्य सामंजस्य आवश्यक होता है। आधुनिक औद्योगिकीकरण, अनियंत्रित शहरीकरण, रासायनिक कृषि और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने इस संतुलन को गम्भीर रूप से प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप वैश्विक तापवृद्धि, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जैव-विविधता का क्षरण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।

भारत में पर्यावरण संरक्षण का विमर्श केवल आधुनिक विज्ञान तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि परंपरागत जीवन-पद्धतियों और प्राकृतिक सह-अस्तित्व की अवधारणाओं से भी जुड़ा रहा है। भारतीय ग्रामीण समाज में गाय को केवल एक पालतू पशु के रूप में नहीं, बल्कि कृषि, पोषण, अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय संतुलन के केंद्र के रूप में देखा गया है। परंपरागत भारतीय कृषि प्रणाली में गाय आधारित संसाधनों 'जैसे गोबर, गोमूत्र, पंचगव्य' का उपयोग मृदा की उर्वरता, फसल उत्पादन और जैविक संतुलन बनाए रखने में किया जाता रहा है।

वर्तमान समय में, जब पर्यावरणीय संकट गहराता जा रहा है, तब यह आवश्यक हो गया है कि हम पुनः उन स्थानीय और पारंपरिक प्रणालियों का वैज्ञानिक मूल्यांकन करें, जो सतत विकास के अनुकूल हैं। गाय की भूमिका इसी संदर्भ में पुनर्विचार की माँग करती है। यह शोध-पत्र इसी बिंदु पर केंद्रित है कि किस प्रकार गाय पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक सिद्ध हो सकती है और भारतीय संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता क्या है।

पर्यावरण संतुलन की अवधारणा :

पर्यावरण संतुलन से अभिप्राय उस स्थिति से है, जिसमें प्रकृति के विभिन्न घटक 'जैविक एवं अजैविक' एक-दूसरे के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रखते हैं। इस संतुलन में किसी एक घटक का अत्यधिक दोहन या विनाश संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। पर्यावरण संतुलन के प्रमुख घटकों में मृदा, जल, वायु, वनस्पति, पशु-जगत और मानव गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।

पर्यावरणीय संतुलन का मूल सिद्धांत यह है कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार किया जाए कि उनकी पुनरुत्पादन क्षमता बनी रहे। भारत में पारंपरिक कृषि प्रणाली इस सिद्धांत पर आधारित रही है, जहाँ पशुधन, विशेषकर गाय, को कृषि चक्र का अभिन्न अंग माना गया। गाय से प्राप्त जैविक अपशिष्ट न केवल अपशिष्ट प्रबंधन में सहायक होते हैं, बल्कि वे मृदा और जल के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आधुनिक रासायनिक कृषि ने अल्पकालिक उत्पादन तो बढ़ाया, किंतु दीर्घकाल में मृदा की उर्वरता, जल की गुणवत्ता और जैव-विविधता को क्षति पहुँचाई। इसके विपरीत, गाय आधारित जैविक कृषि पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होती है। इस प्रकार, पर्यावरण संतुलन की अवधारणा में गाय को एक जैव-पर्यावरणीय संसाधन के रूप में देखा जा सकता है, न कि केवल दुग्ध-उत्पादक पशु के रूप में।

भारतीय संदर्भ में गाय का पर्यावरणीय महत्व :

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि संरचना में गाय का विशेष स्थान रहा है। परंपरागत भारतीय कृषि प्रणाली मिश्रित कृषि और पशुपालन पर आधारित रही है, जिसमें गाय की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी। गोबर और गोमूत्र का उपयोग जैविक खाद, कीटनाशक और ऊर्जा स्रोत के रूप में किया जाता रहा है। यह व्यवस्था न केवल कृषि को आत्मनिर्भर बनाती थी, बल्कि पर्यावरणीय प्रदूषण को भी न्यूनतम रखती थी।

गाय आधारित संसाधनों का उपयोग मृदा की जैविक संरचना को सुदृढ़ करता है। गोबर में उपस्थित सूक्ष्मजीव मृदा की जलधारण क्षमता को बढ़ाते हैं, जिससे सिंचाई की आवश्यकता कम होती है। इसके अतिरिक्त, गोमूत्र और पंचगव्य का प्रयोग प्राकृतिक कीटनाशक के रूप में किया जाता है, जिससे रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता घटती है। यह प्रक्रिया मृदा, जल और वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायक होती है।

भारतीय पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य में गाय का महत्व केवल कृषि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सतत विकास और ग्रामीण जीवन-पद्धति से भी जुड़ा हुआ है। गाय आधारित जीवन-शैली संसाधनों के पुनर्चक्रण (Recycling) की अवधारणा को साकार करती है, जो आधुनिक पर्यावरण प्रबंधन का एक प्रमुख सिद्धांत है।

पर्यावरणीय संतुलन की अवधारणा : सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य :

पर्यावरणीय संतुलन वह अवस्था है, जिसमें प्रकृति के जैविक एवं अजैविक घटकों 'जैसे भूमि, जल, वायु,

वनस्पति, जीव-जंतु तथा मानव' के मध्य परस्पर सामंजस्य स्थापित रहता है। यह संतुलन प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से दीर्घकाल तक स्थिर बना रहता है, किंतु मानवीय हस्तक्षेप, औद्योगीकरण, रासायनिक कृषि, वनों की कटाई एवं प्राकृतिक संसाधनों के अति-दोहन के कारण यह संतुलन निरंतर बाधित हो रहा है।

भारतीय परंपरा में पर्यावरण को केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवनदायिनी सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है। पंचमहाभूत सिद्धान्त 'भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश' पर आधारित भारतीय चिंतन पर्यावरणीय संतुलन की वैज्ञानिक समझ को प्राचीन काल से ही प्रस्तुत करता रहा है। इसी समग्र दृष्टिकोण के अंतर्गत गाय को केवल पशु नहीं, बल्कि पर्यावरणीय व्यवस्था का सक्रिय घटक माना गया है।

भारतीय कृषि व्यवस्था और गाय का ऐतिहासिक संबंध :

भारतीय कृषि व्यवस्था का विकास सदैव पशुपालन के साथ सहअस्तित्व में रहा है। विशेषतः गाय भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक कृषि उत्पादन, भूमि की उर्वरता, जैविक खाद, ऊर्जा स्रोत तथा ग्रामीण आजीविका में गाय की भूमिका बहुआयामी रही है।

पारंपरिक भारतीय कृषि में गाय के गोबर एवं गौमूत्र का उपयोग भूमि की उर्वरता बनाए रखने हेतु किया जाता रहा है। रासायनिक उर्वरकों के आगमन से पूर्व यही प्राकृतिक साधन कृषि उत्पादकता का आधार थे। गोबर से निर्मित खाद न केवल मृदा की जलधारण क्षमता बढ़ाती है, बल्कि उसमें सूक्ष्मजीवों की सक्रियता को भी प्रोत्साहित करती है, जिससे भूमि दीर्घकाल तक उपजाऊ बनी रहती है।

गाय की मृदा संरक्षण में भूमिका :

मृदा पर्यावरणीय संतुलन का मूल आधार है। भूमि की उर्वरता, संरचना और जैविक जीवन सीधे तौर पर कृषि एवं खाद्य सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। गाय से प्राप्त गोबर एक उत्कृष्ट जैविक खाद है, जिसमें नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैश तथा कार्बनिक तत्व संतुलित मात्रा में पाए जाते हैं।

रासायनिक उर्वरकों के निरंतर उपयोग से जहाँ भूमि की संरचना क्षतिग्रस्त होती है, वहीं गोबर खाद भूमि में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा बढ़ाकर मृदा अपरदन को रोकती है। इसके परिणामस्वरूप भूमि में केंचुओं, जीवाणुओं तथा अन्य सूक्ष्मजीवों की सक्रियता बनी रहती है, जो मृदा को जीवंत बनाए रखने में सहायक होती है।

गाय, जल संरक्षण एवं जल-चक्र :

पर्यावरणीय संतुलन में जल का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैविक कृषि में प्रयुक्त गोबर खाद मिट्टी की जलधारण क्षमता को बढ़ाती है, जिससे वर्षा का जल भूमि में अधिक समय तक संरक्षित रहता है। इससे भू-जल स्तर में सुधार होता है तथा सिंचाई की आवश्यकता कम होती है।

इसके अतिरिक्त, गोबर से निर्मित जैव-उर्वरक जल प्रदूषण को भी नियंत्रित करते हैं। रासायनिक उर्वरकों के अपवाह से जहाँ नदियाँ, तालाब एवं झीलें प्रदूषित होती हैं, वहीं जैविक खाद प्राकृतिक जल स्रोतों को सुरक्षित बनाए रखने में सहायक सिद्ध होती है।

वायु शुद्धिकरण और गाय :

वर्तमान समय में वायु प्रदूषण एक वैश्विक समस्या बन चुका है। जैविक कृषि एवं प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से वायु प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता है। गाय के गोबर से निर्मित उपले एवं जैव-ऊर्जा स्रोत

पारंपरिक ईंधनों की तुलना में अपेक्षाकृत कम प्रदूषण उत्पन्न करते हैं।

इसके अतिरिक्त, गोबर से निर्मित बायोगैस संयंत्र न केवल स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करते हैं, बल्कि मीथेन जैसी हानिकारक गैसों को नियंत्रित कर पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में योगदान देते हैं।

ग्रामीण पारिस्थितिकी और सतत विकास में गाय की भूमिका :

ग्रामीण भारत की पारिस्थितिकी गाय पर आधारित रही है। कृषि, पशुपालन, कुटीर उद्योग, ऊर्जा स्रोत एवं जैविक उत्पाद एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। सतत विकास की अवधारणा, जो आज आधुनिक पर्यावरण विमर्श का केंद्र है, भारतीय ग्रामीण जीवन में परंपरागत रूप से विद्यमान रही है।

गाय आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था न केवल पर्यावरण-अनुकूल है, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक स्थिरता भी प्रदान करती है। इससे ग्रामीण बेरोजगारी में कमी, स्थानीय संसाधनों का संरक्षण एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है।

आधुनिक पर्यावरण संकट और गाय-आधारित समाधान :

जलवायु परिवर्तन, मृदा क्षरण, जैव विविधता में कमी एवं प्रदूषण जैसी समस्याओं के समाधान हेतु गाय आधारित प्राकृतिक कृषि एक प्रभावी विकल्प के रूप में उभर रही है। अनेक भारतीय राज्यों में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिसमें गाय की केंद्रीय भूमिका को पुनः स्थापित किया गया है।

यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु परंपरागत भारतीय ज्ञान और गाय आधारित जीवन-पद्धति को नकारा नहीं जा सकता, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पुनः मूल्यांकित कर अपनाने की आवश्यकता है।

नीति-परिप्रेक्ष्य एवं भारत में सरकारी पहलें :

भारत में पर्यावरण संरक्षण, जैविक कृषि तथा सतत विकास से संबंधित नीतियों में अप्रत्यक्ष रूप से गाय आधारित कृषि एवं ग्रामीण पारिस्थितिकी को महत्त्व दिया गया है। केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा प्राकृतिक खेती, जैविक खेती तथा ग्रामीण आजीविका संवर्धन हेतु विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जिनमें गाय आधारित संसाधनों की भूमिका को स्वीकार किया गया है।

राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन, परंपरागत कृषि विकास योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन तथा जैविक खेती प्रोत्साहन कार्यक्रम जैसी पहलों के अंतर्गत रासायनिक उर्वरकों के विकल्प के रूप में जैविक खाद, वर्मी-कम्पोस्ट, बायोगैस एवं प्राकृतिक कीटनाशकों को बढ़ावा दिया गया है। इन सभी उपायों का मूल आधार गाय एवं उससे प्राप्त संसाधनों पर ही टिका हुआ है।

इसके अतिरिक्त, अनेक राज्यों द्वारा गौ-संरक्षण, गौशालाओं के आधुनिकीकरण तथा जैविक कृषि से जुड़ी प्रशिक्षण योजनाएँ प्रारंभ की गई हैं, जिनका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि नीति स्तर पर गाय की भूमिका को केवल सांस्कृतिक नहीं, बल्कि पर्यावरणीय एवं आर्थिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है।

समालोचनात्मक विश्लेषण (Critical Analysis)

यद्यपि पर्यावरणीय संतुलन में गाय की भूमिका बहुआयामी एवं उपयोगी प्रतीत होती है, तथापि इसके समालोचनात्मक मूल्यांकन की आवश्यकता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण यह अपेक्षा

करता है कि किसी भी पारंपरिक प्रणाली को भावनात्मक नहीं, बल्कि प्रमाणिक एवं व्यावहारिक आधार पर परखा जाए।

यह सत्य है कि गोबर, गौमूत्र एवं गाय आधारित कृषि पद्धतियाँ पर्यावरण के लिए अनुकूल हैं, किंतु इनकी प्रभावशीलता स्थान, जलवायु, भूमि-प्रकृति एवं जनसंख्या दबाव जैसे कारकों पर निर्भर करती है। अत्यधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में केवल पारंपरिक संसाधनों पर आधारित कृषि पर्याप्त नहीं हो सकती। अतः आवश्यकता इस बात की है कि गाय आधारित प्रणालियों को आधुनिक विज्ञान, कृषि अनुसंधान एवं तकनीकी नवाचार के साथ समन्वित किया जाए।

साथ ही, यह भी आवश्यक है कि गौ-संरक्षण को केवल प्रतीकात्मक या भावनात्मक विषय न बनाकर उसे ठोस नीति, वैज्ञानिक अनुसंधान एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग से जोड़ा जाए। तभी गाय की भूमिका पर्यावरणीय संतुलन में वास्तविक और दीर्घकालिक सिद्ध हो सकेगी।

पर्यावरणीय नैतिकता और भारतीय दृष्टिकोण :

भारतीय पर्यावरणीय चिंतन केवल संसाधनों के उपयोग तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि उसमें नैतिकता और उत्तरदायित्व का भाव अंतर्निहित रहा है। गाय को भारतीय परंपरा में माता के रूप में स्वीकार करना इसी नैतिक दृष्टिकोण का प्रतीक है, जहाँ मनुष्य और प्रकृति के मध्य शोषण नहीं, बल्कि सहअस्तित्व का संबंध स्थापित किया गया है।

पर्यावरणीय संकट के वर्तमान दौर में यह नैतिक दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यदि विकास की अवधारणा को केवल भौतिक प्रगति तक सीमित रखा जाएगा, तो पर्यावरणीय असंतुलन अपरिहार्य होगा। इसके विपरीत, यदि गाय आधारित जीवन-पद्धति जैसे उदाहरणों से प्रेरणा लेकर विकास को प्रकृति-संरक्षण के साथ जोड़ा जाए, तो सतत एवं संतुलित विकास संभव हो सकता है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पर्यावरणीय संतुलन में गाय की भूमिका बहुआयामी, व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। गाय न केवल कृषि, मृदा संरक्षण, जल-संरक्षण एवं ऊर्जा उत्पादन में सहायक है, बल्कि ग्रामीण पारिस्थितिकी और सतत विकास की अवधारणा को भी सुदृढ़ आधार प्रदान करती है।

भारतीय परंपरा में निहित गाय आधारित जीवन-पद्धति आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों का एक प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है, बशर्ते उसे वैज्ञानिक अनुसंधान, नीति समर्थन एवं व्यावहारिक क्रियान्वयन के साथ जोड़ा जाए। अतः यह कहा जा सकता है कि पर्यावरणीय संतुलन की दिशा में गाय को पुनः केंद्रीय स्थान प्रदान करना केवल सांस्कृतिक आवश्यकता नहीं, बल्कि पर्यावरणीय और विकासात्मक अनिवार्यता भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. शर्मा, रामचन्द्र. भारतीय कृषि परंपरा और पर्यावरण. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2016.
2. सिंह, अवधेश कुमार. पर्यावरण अध्ययन. वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन, 2018.
3. भारत सरकार. राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन : दिशानिर्देश. नई दिल्ली : कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय,

2020.

4. भारत सरकार. परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY). नई दिल्ली : कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, 2019.
5. पांडेय, शिवकुमार. जैविक खेती और ग्रामीण विकास. लखनऊ : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 2017.
6. ICAR. Organic Farming in India : Status and Prospects. नई दिल्ली : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, 2018.
7. UNEP. Sustainable Agriculture and Environment. नई दिल्ली : संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (भारतीय संस्करण), 2019.



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 81-89

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Linguistic Diversity as Unity: A Theoretical Exploration of Bharatiya Bhasha Pariwar

Dr. Pushpita Dasgupta

Christian College of Engineering & Technology Department of Science & Humanities.

ABSTRACT :

India is one of the most linguistically diverse countries in the world, with hundreds of languages and dialects spoken across its regions, mainly from the Indo-Aryan, Dravidian, Austroasiatic, and Tibeto-Burman families, yet this diversity has coexisted with a strong sense of unity, shared culture, and civilizational identity for centuries. While many Western models of nationhood assume that a single common language is necessary for national unity and often see linguistic diversity as a challenge, India offers a very different experience. The indigenous idea of Bharatiya Bhasha Pariwar helps us understand Indian languages not as separate or competing, but as part of a large, interconnected family shaped by shared history, culture, and long-term interaction. Over time, India's languages have influenced one another in many ways, including sharing words, adapting sentence structures, borrowing expressions, translating texts, and passing down common stories, songs, and literary traditions. Most Indians naturally speak or understand more than one language, using them in daily life for communication, education, and work, and this widespread multilingualism has enabled people from different regions, religions, and communities to communicate, cooperate, and live together with respect and understanding. Drawing on insights from linguistics, sociolinguistics, history, cultural studies, and language policy, it becomes clear that India's linguistic diversity functions as a unifying force rather than a barrier, and inclusive language policies in schools, government, and public life allow more people to learn, express themselves, and take part in decision-making, strengthening both fairness and social cohesion. Ultimately, the concept of Bharatiya Bhasha Pariwar demonstrates that linguistic diversity is not a weakness but one of India's greatest strengths, showing that when multiple languages are valued and supported, they can become a source of unity, mutual enrichment, and cultural strength, and India's experience offers an important example for other multilingual societies around the world on how to turn linguistic diversity into a positive and unifying force.

Keywords :

Bharatiya Bhasha Pariwar, Linguistic Diversity, Multilingualism, Indian Languages, Unity in Diversity, Language Family, Cultural Identity, Social Harmony, Language Policy, Inclusive Education, Democratic Participation, Multilingual Society.

1. Introduction :

India's linguistic landscape is extraordinary in both scale and complexity, making it one of the most diverse countries in the world in terms of languages and dialects. Constitutional records and linguistic research indicate that the country is home to hundreds of languages and thousands of dialectal varieties, spoken across varied geographical regions, ethnic groups, and cultural communities. These languages are primarily classified into major families, including Indo-Aryan, Dravidian, Austroasiatic, and Tibeto-Burman, alongside a few language isolates that do not fall neatly into these groups. Historically, this linguistic diversity has often been portrayed as a potential source of division. Colonial administrators and some postcolonial scholars frequently suggested that linguistic plurality could threaten political stability, equating uniformity of language with national unity and viewing multilingualism as an obstacle to governance and social cohesion.

However, the actual experience of India presents a very different picture. Multilingualism is not an exception but a defining feature of everyday life. Individuals and communities routinely navigate multiple languages in schooling, administration, commerce, and cultural expression. People effortlessly switch between languages depending on context, blending regional, local, and often global linguistic resources to communicate and connect. It is within this context that the concept of Bharatiya Bhasha Pariwar takes on significance. This idea frames Indian languages as members of a relational family, interconnected through shared cultural values, historical exchanges, and structural similarities that have evolved over centuries. Rather than being isolated entities in competition with one another, languages in India are dynamic and mutually enriching, contributing to a broader civilizational fabric.

This paper aims to explore this unique model of linguistic interaction, examining how diversity can function as a form of unity rather than division. By investigating the mechanisms through which Indian languages influence one another—through shared vocabulary, adapted sentence structures, literary traditions, and multilingual practices—it seeks to demonstrate that linguistic plurality, when understood through the lens of Bharatiya Bhasha Pariwar, is not only compatible with national cohesion but serves as a foundational principle of social, cultural, and political integration in India.

2. Review of Literature :

- Grierson's *Linguistic Survey of India* provides the earliest systematic documentation of India's multilingual landscape. It establishes linguistic diversity as a historically sustained and organic feature

of Indian society.

- UNESCO's framework on multilingual education conceptualizes linguistic plurality as a cultural and pedagogical asset. It argues that recognition of mother tongues strengthens social cohesion and inclusive national development.
- Annamalai explains Indian multilingualism through long-term language contact, accommodation, and functional distribution. His work highlights the coexistence of languages within a shared communicative ecology.
- Pandit's notion of India as a linguistic area emphasizes civilizational interaction among languages over centuries. This theoretical position closely aligns with the concept of *Bharatiya Bhasha Pariwar*.
- Abbi's studies on endangered Indian languages underline their role in preserving collective cultural memory. She situates linguistic diversity as central to India's pluralistic national identity.
- Fishman's theory of language and ethnicity provides a global framework for understanding unity within linguistic diversity. His insights help contextualize Indian multilingualism as integrative rather than fragmentary.
- The People's Linguistic Survey of India documents contemporary multilingual practices across regions and communities. It reinforces the organic coexistence of languages within a common cultural space.
- The National Education Policy 2020 advocates mother-tongue-based multilingual education in early schooling. It reflects contemporary policy alignment with indigenous perspectives on linguistic unity.
- Scholars of Indian cultural linguistics argue that Indian languages share common civilizational concepts and epistemologies. This shared semantic ground supports the idea of Indian languages as members of a unified linguistic family.
- Recent ICSSR-supported studies emphasize translation, bilingualism, and inter-literary exchange among Indian languages. These mechanisms are identified as key processes through which linguistic diversity fosters cultural integration and national unity.

3. Research Gap :

Scholarly engagement with India's multilingual reality has largely concentrated on mapping linguistic diversity, formulating language policies, or addressing educational and administrative challenges arising from multilingualism. While such studies acknowledge plurality as a defining feature of Indian society, they often treat languages as parallel entities existing side by side, rather than as participants in a deeply interconnected cultural system.

The conceptual understanding of Indian languages as a *Bharatiya Bhasha Pariwar* shaped by

shared civilizational experience, continuous interaction, and mutual cultural exchange remains insufficiently theorized in academic discourse. There is limited effort to interpret linguistic diversity itself as a unifying principle grounded in indigenous knowledge traditions. This absence points to the need for a theoretical inquiry that reimagines linguistic plurality not as fragmentation, but as an expression of unity intrinsic to the Indian linguistic worldview.

4. Aims of the Study :

- To understand India's linguistic diversity as a lived and shared civilizational experience that fosters unity rather than separation.
- To explore the idea of *Bharatiya Bhasha Pariwar* as an indigenous way of viewing Indian languages as interconnected through history, culture, and continuous interaction.
- To examine how processes such as cultural exchange, translation, and everyday multilingual practices have shaped relationships among Indian languages.
- To reflect critically on the limitations of dominant Western linguistic models when applied to the Indian multilingual context.
- To place the discussion of linguistic unity within contemporary academic thought and evolving language policies in India.
- To develop a theoretical perspective that presents linguistic plurality as an integral and unifying feature of Indian society.

5. Research Approach :

This paper follows a conceptual and analytical approach, seeking to understand how linguistic diversity in India functions as a unifying cultural force. Instead of collecting new data, it draws upon a wide range of secondary sources, including classical linguistic surveys, contemporary scholarship on Indian multilingualism, and policy documents such as the National Education Policy 2020. These sources provide a foundation for exploring the historical and cultural connections among Indian languages.

The study uses critical review and synthesis to trace patterns of interaction, shared cultural concepts, and mutual influences within the *Bharatiya Bhasha Pariwar*. It also employs comparative reflection, examining how conventional Western models of monolingual nationhood differ from the Indian experience of multilingual coexistence. This perspective highlights the ways in which indigenous frameworks more accurately capture the integrative nature of Indian languages.

By focusing on historical, cultural, and policy-oriented lenses, the study develops a theoretical interpretation of linguistic plurality as a cohesive system. Rather than treating diversity as a challenge, this approach positions it as a source of cultural unity and social cohesion, consistent with the

philosophy of Bharatiya Bhasha Pariwar.

6. Theoretical Framework and Discussion :

India's linguistic diversity cannot be understood merely as a catalogue of languages or as a challenge to governance; it is a living, interdependent system where languages shape and sustain each other over centuries. The theoretical lens of Bharatiya Bhasha Pariwar provides a way to conceptualize this interconnectedness, treating Indian languages as members of a relational family bound by historical contact, shared cultural practices, and structural affinities. This perspective allows us to interpret multilingualism not as fragmentation, but as a dynamic force of unity and social cohesion.

Linguistic Interaction and Mutual Influence :

India's linguistic landscape is remarkable for the continuous exchange and mutual shaping of languages over centuries. This interaction occurs on multiple levels: vocabulary, syntax, phonetics, and literary traditions. Indo-Aryan languages, for example, have absorbed words and expressions from Sanskrit, Persian, Arabic, and, more recently, English. Similarly, Dravidian languages such as Tamil, Telugu, and Kannada have influenced each other through shared literary practices and regional oral traditions. Even tribal languages, often spoken in isolated areas, contribute unique expressions that enrich neighboring languages, reflecting a constant cultural and linguistic dialog. Beyond lexical borrowing, languages also adapt structural elements from one another. Sentence construction, grammatical patterns, and phonetic nuances are exchanged in multilingual communities, allowing speakers to switch fluidly between languages. This is evident in households where parents and children communicate in different regional languages, in marketplaces where multiple languages converge, and in educational settings where multilingual instruction is common.

These everyday practices of code-switching and code-mixing not only demonstrate adaptability but also showcase creativity in communication. Translation has further reinforced cross-linguistic influence. Classical literature, religious texts, and folk narratives have been rendered into multiple languages, preserving the original meaning while embedding local linguistic nuances. Shared literary and oral traditions, including epics, folktales, songs, and proverbs, create cultural bridges that connect language communities, fostering a sense of common identity even amidst linguistic diversity. In essence, Indian languages do not exist in isolation; they form a living ecosystem. Interaction, borrowing, adaptation, and translation ensure that languages grow together, making multilingualism an inherent and functional part of daily life. This dynamic interplay highlights that linguistic diversity is a productive and integrative force, supporting social cohesion and cultural continuity.

Cultural and Social Significance :

In India, languages are far more than mere tools of communication—they are living repositories

of culture, tradition, and collective memory. Each language embodies centuries of human experience, capturing the wisdom, values, and histories of the communities that speak it. Through oral narratives, rituals, songs, and literary traditions, languages carry the essence of a society across generations. For example, epics such as the *Ramayana* and the *Mahabharata* exist not only in Sanskrit but have been adapted into countless regional languages across India. Each adaptation reflects the local culture, idiomatic expressions, and storytelling nuances of the region, yet the core narrative remains intact. This remarkable phenomenon illustrates how languages can simultaneously preserve a shared civilizational heritage while celebrating local identities. Similarly, folk songs, proverbs, riddles, and oral tales serve as vessels of history, social norms, and moral values. These cultural expressions capture the collective experiences of communities—recording events, celebrating triumphs, teaching lessons, and warning against pitfalls. Passed down from one generation to another, they sustain intergenerational memory, ensuring that the past continues to inform the present. In this way, languages become living archives, carrying the heartbeat of a culture while shaping the worldview of those who speak them.

Multilingualism in India also plays a profound role in strengthening social cohesion. When individuals engage with multiple languages, they not only learn new words and grammar but also cultivate empathy, patience, and a deeper understanding of different ways of life. Markets, schools, festivals, and community gatherings become vibrant spaces of interaction, where linguistic diversity encourages dialogue, collaboration, and mutual learning. A child growing up listening to multiple languages in the home and neighborhood develops the ability to navigate social and cultural divides with ease, building bridges of respect and understanding across communities. Moreover, linguistic diversity allows people to celebrate their local identities without losing sight of a broader cultural framework. A person can take pride in their mother tongue, local customs, and regional traditions, while simultaneously participating in a larger civilizational narrative that connects communities across the country. Languages, therefore, act as a bridge rather than a barrier: they preserve uniqueness, foster harmony, and cultivate a sense of belonging both locally and nationally. Far from being a source of conflict, India's linguistic plurality has the power to unite people, reinforcing the idea that diversity and unity are not opposing forces but complementary facets of the nation's social and cultural fabric.

Role of Inclusive Language Policies :

India's remarkable multilingual ecosystem thrives not just because of historical practices or social traditions, but also due to deliberate and conscious policy support. The Constitution of India recognizes and celebrates linguistic diversity, embedding protections and promotion mechanisms that give real value to every language spoken in the country. Instruments such as the Eighth Schedule,

which lists official languages, alongside provisions for minority and regional languages, ensure that communities have the right to use their mother tongue in everyday life, education, and governance. By institutionalizing these rights, the Constitution transforms language from a personal or cultural asset into a recognized public good, safeguarding it against marginalization and neglect. Education plays a central role in realizing these goals. Early schooling often begins in the mother tongue, gradually introducing regional, national, and even international languages. This approach does more than teach communication—it lays a strong foundation for cognitive flexibility, literacy, and multilingual competence, equipping children to navigate diverse social and academic landscapes with confidence.

Inclusive language policies also extend to governance, public services, and legal processes. By providing access in multiple languages, citizens can actively participate in civic life, access justice, and engage with administration without linguistic barriers. Additionally, minority and tribal languages, which face the constant threat of erosion, receive support through documentation projects, media, literature, and cultural programs, preserving their vibrancy within India's linguistic mosaic. These policies demonstrate that language planning is not merely administrative—it is transformative. By turning diversity into a source of collective strength, India fosters social cohesion, democratic participation, and cultural resilience, proving that multilingualism and governance can coexist harmoniously, enriching society both locally and nationally.

Implications for Unity and Development :

Recognizing and nurturing India's linguistic diversity has far-reaching implications for social cohesion, cultural continuity, and national unity. Languages in India are not isolated tools of communication; they are carriers of history, collective memory, and shared values. When multiple languages coexist and interact, they create a network of cultural connections that link communities across regions, generations, and social groups. Shared literary and oral traditions—such as epics, folktales, songs, and proverbs—act as bridges that transmit values, knowledge, and historical consciousness. This interconnectedness fosters a sense of belonging and collective identity, allowing people to celebrate their regional or linguistic uniqueness while participating in a broader civilizational framework. Beyond social and cultural cohesion, linguistic plurality has practical developmental and integrative benefits. Multilingual skills enable citizens to communicate across regions, enhancing professional mobility, economic participation, and access to social networks. Education in multiple languages improves cognitive flexibility, creativity, and problem-solving, equipping individuals to thrive in diverse social and professional environments. Inclusive language policies, such as mother-tongue-based education, multilingual governance, and support for minority and tribal languages, ensure that linguistic diversity becomes a strength rather than a barrier. The concept of Bharatiya Bhasha

Pariwar demonstrates how Indian languages, through interaction, cultural exchange, and institutional support, form a dynamic system of integration. In this system, linguistic plurality is a source of resilience, creativity, and collective identity, reinforcing the principle of unity in diversity. India's experience provides a model for other multilingual societies, showing that language diversity, when respected and encouraged, can serve as a powerful unifying force that promotes social harmony, cultural enrichment, and sustainable national development.

Conclusion :

India's linguistic diversity is not merely a demographic feature or an administrative challenge; it is a dynamic, living system that underpins social cohesion, cultural vitality, and civilizational identity. Over centuries, Indian languages have interacted, borrowed, and adapted from one another, creating a complex web of interconnections that transcend regional, religious, and social boundaries. Vocabulary, syntax, phonetics, and literary traditions have evolved through continuous exchange, while translation, literary adaptation, and oral storytelling have further reinforced cross-linguistic bonds. Beyond practical communication, languages serve as repositories of history, tradition, and collective memory, preserving folk narratives, ethical values, and cultural wisdom. Multilingualism fosters empathy, mutual respect, and collaboration across communities, enabling individuals to participate meaningfully in society while retaining pride in their regional and cultural identities. Inclusive policies and educational practices play a crucial role in sustaining this multilingual ecosystem. Constitutional provisions, mother-tongue-based education, civic engagement in multiple languages, and support for minority and tribal languages ensure that linguistic diversity becomes a strengthening force rather than a source of division. Multilingual competence also facilitates professional mobility, economic integration, and knowledge dissemination, highlighting how diversity contributes to national development. Together, these insights validate the Bharatiya Bhasha Pariwar framework, showing that Indian languages function as interconnected members of a relational family. Linguistic plurality, when understood through this lens, reinforces collective identity, cultural continuity, and national unity. India's experience demonstrates that diversity can coexist with unity, offering a model where linguistic richness becomes an integrative, empowering force that strengthens society, culture, and the principle of "unity in diversity" at the heart of Indian civilization.

References :

1. Annamalai, E. *Managing Multilingualism in India: Political and Linguistic Manifestations*. Sage Publications, 2001.
2. Census of India. *Language: India, States and Union Territories*. Office of the Registrar

- General and Census Commissioner, Government of India, 2011.
3. Crystal, David. *Language Death*. Cambridge University Press, 2000.
 4. Khubchandani, Lachman M. *Linguistic Diversity and National Unity in India*. Orient BlackSwan, 2008.
 5. Mohanty, Ajit K. "Multilingualism, Education, and Language Policy in India." *Indian Journal of Applied Linguistics*, vol. 47, no. 1, 2021, pp. 1–15.
 6. National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India, 2020.
 7. Pattanayak, D. P. *Multilingualism in India*. Orient BlackSwan, 2003.
 8. Spivak, Gayatri Chakravorty. "Translation as Culture." *Parallax*, vol. 6, no. 1, 2000, pp. 13–24.
 9. Thapar, Romila. *The Past Before Us: Historical Traditions of Early North India*. Harvard University Press, 2013.
 10. UNESCO. *Reimagining Our Futures Together: A New Social Contract for Education*. UNESCO Publishing, 2021.

E-mail: dasgupta.pushpita@gmail.com



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 90-92

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा 'शंकी' के काव्य में समकालीन राजनीति, नैतिकता और कर्म-दर्शन

यादराम वर्मा, शोधार्थी

डॉ. कृष्ण कुमार, शोध निर्देशक

टांटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर, राजस्थान।

सार :

यह शोध-पत्र डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा 'शंकी' के काव्य में निहित समकालीन राजनीतिक यथार्थ, नैतिक संकट, कर्म-दर्शन तथा मानवीय संवेदना के विविध पक्षों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। 'शंकी' का काव्य आधुनिक समय के चुनावी तंत्र, सत्ता-लोलुपता, सत्य-असत्य के द्वंद्व, भ्रम-निर्माण की राजनीति और मूल्यों के क्षरण को महाभारतात्मक प्रतीक-योजना के माध्यम से उजागर करता है। प्रस्तुत अध्ययन में उनके काव्यांशों को केंद्र में रखकर यह प्रतिपादित किया गया है कि किस प्रकार कवि पौराणिक आख्यानों (विशेषतः महाभारत, श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद और कर्मयोग) को समकालीन राजनीतिक संदर्भों से जोड़कर एक तीक्ष्ण व्यंग्यात्मक, नैतिक और दार्शनिक विमर्श रचते हैं। यह शोध-पत्र काव्य-उद्धरणों, विषय-वस्तु विश्लेषण और निष्कर्षात्मक विवेचन के माध्यम से 'शंकी' के काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द : शंकी, समकालीन राजनीति, चुनावी व्यंग्य, महाभारत प्रतीक, कर्मयोग, नैतिकता।

1. प्रस्तावना :

हिंदी कविता में समकालीन राजनीतिक चेतना का स्वर निरंतर मुखर रहा है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से लेकर आज तक कवियों ने सत्ता, व्यवस्था, नैतिक मूल्यों और जन-जीवन के अंतर्संबंधों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति का विषय बनाया है। डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा 'शंकी' इसी परंपरा के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनका काव्य न केवल राजनीतिक यथार्थ का चित्रण करता है, बल्कि उसे पौराणिक-सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़कर व्यापक मानवीय विमर्श प्रस्तुत करता है।

'शंकी' का काव्य यह मानता है कि आधुनिक चुनावी राजनीति एक प्रकार का 'युद्ध' बन चुकी है, जहाँ सत्य और नैतिकता के स्थान पर तिकड़म, छल, भ्रम और असत्य को वैध रणनीति मान लिया गया है। इस संदर्भ में कवि महाभारत को प्रतीक बनाकर वर्तमान राजनीति की विसंगतियों को उजागर करते हैं।

2. चुनावी राजनीति और युद्ध-रूपक :

डॉ. 'शंकी' के काव्य में चुनावी राजनीति को 'समर' कहा गया है :

**‘टिकट पाना तो समझो मोक्ष प्राप्ति समान है प्रभु,
कि चुनाव समर में उतर कर मोहरों से भिड़ना।’**

यहाँ ‘टिकट’ सत्ता-प्राप्ति का प्रतीक है, जिसे कवि मोक्ष के समकक्ष रखकर व्यंग्य रचते हैं। लोकतंत्र की प्रक्रिया, जो आदर्शतः जन-सेवा का माध्यम होनी चाहिए, वह सत्ता-लालसा का साधन बन गई है। कवि आगे कहते हैं कि यह समर महाभारत से भी कठिन है, क्योंकि यहाँ नैतिक मर्यादाएँ स्थिर नहीं रहीं।

‘महाभारत से भी दुष्कर है चुनाव समर में जीतना।’

यह पंक्ति आधुनिक राजनीति की जटिलता और अनैतिकता को रेखांकित करती है।

3. महाभारतात्मक प्रतीक और समकालीन संदर्भ :

‘शंकी’ महाभारत के पात्रों ‘श्रीकृष्ण, अर्जुन, युधिष्ठिर’ को आधुनिक राजनीतिक विमर्श में पुनर्स्थापित करते हैं। जहाँ महाभारत में युद्ध धर्म-अधर्म के स्पष्ट द्वंद्व पर आधारित था, वहीं चुनावी राजनीति में यह विभाजन धुंधला हो गया है :

**‘भगर चुनावी समर में हथियार चलते,
जीत का आधार बनता झूठ और असत्य।’**

यहाँ कवि यह संकेत करते हैं कि आधुनिक राजनीति में असत्य ही सबसे प्रभावी हथियार बन चुका है।

4. सत्य, असत्य और भ्रम-निर्माण की राजनीति :

डॉ. ‘शंकी’ के काव्य में राजनीति का एक प्रमुख आयाम ‘भ्रम’ है। वे मानते हैं कि शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी को रोकने के लिए भ्रम फैलाना सबसे बड़ा दांव है। यह विचार कृष्ण-अर्जुन संवाद के माध्यम से व्यक्त होता है, जहाँ रणनीति और नैतिकता के बीच तनाव उभरता है।

**‘राजनीति में तो भ्रमित करना
सबसे बड़ा दांव चला जाता है।’**

यह कथन आधुनिक राजनीतिक रणनीतियों की सटीक पहचान करता है।

5. कर्मयोग और नैतिक दर्शन :

डॉ. ‘शंकी’ के काव्य में कर्मयोग का सिद्धांत केंद्रीय भूमिका निभाता है। श्रीकृष्ण के उपदेश ‘कर्मण्येवाधिकारस्ते’ को वे आधुनिक संदर्भ में पुनः व्याख्यायित करते हैं।

**‘कर्म करने की चिंता करो,
फल की चिंता मत करो।’**

कवि के अनुसार समाज में नैतिक पतन का कारण कर्म से अधिक फल की लालसा है।

6. मानवीय संबंध, प्रेम और सामाजिक संवेदना :

राजनीतिक व्यंग्य के साथ-साथ ‘शंकी’ का काव्य मानवीय संबंधों, प्रेम और आत्म-सम्मान को भी महत्व देता है। उनकी सूक्तिपरक रचनाएँ जीवन-दर्शन प्रस्तुत करती हैं :

**‘एक चुप इंसान सैकड़ों को हरा देता है,
खामोश रहकर औरों को मुस्करा देता है।’**

यह पंक्ति आत्म-संयम और आंतरिक शक्ति की महत्ता को रेखांकित करती है।

7. **सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक चेतना :**

कवि समकालीन समाज में सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण पर चिंता व्यक्त करते हैं :

**‘पारम्परिक उल्लास और सांस्कृतिक पहचान,
आज के दौर का अनकहा किस्सा हो गया है।’**

यहाँ ‘खोई हुई किताब’ का रूपक सांस्कृतिक विस्मृति को दर्शाता है।

8. **भाषा, शिल्प और व्यंग्यात्मक शैली :**

डॉ. ‘शंकी’ की भाषा सरल, संवादात्मक और व्यंग्य-प्रधान है। पौराणिक प्रतीकों का आधुनिक संदर्भों से संयोजन उनकी काव्य-शैली की विशेषता है। उनका व्यंग्य कटु नहीं, बल्कि नैतिक चेतना से प्रेरित है।

निष्कर्ष :

डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा ‘शंकी’ का काव्य समकालीन राजनीति का सशक्त आलोचनात्मक दस्तावेज है। महाभारतात्मक प्रतीकों, कर्मयोग, नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदना के माध्यम से वे आधुनिक समाज के अंतर्विरोधों को उजागर करते हैं। उनका काव्य पाठक को केवल यथार्थ से परिचित नहीं कराता, बल्कि नैतिक पुनर्विचार के लिए प्रेरित करता है।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, के. च. (शंकी). (विभिन्न वर्ष). काव्य संकलन एवं प्रकाशित रचनाएँ।
2. डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा ‘शंकी’, काव्य संग्रह – महारथी कोने-कोने से।
3. डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा ‘शंकी’, काव्य संग्रह – टूटते दायरे।
4. डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा ‘शंकी’, काव्य संग्रह – अस्तित्व की ओर।
5. डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट – डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा ‘शंकी’ व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
6. डॉ. प्रिंस विनायक – डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा ‘शंकी’, के साहित्य में विविध आयाम।
7. बोहल शोध मंजूषा, जनवरी 2025 अंक – संपादक डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट।
8. श्रीमद्भागवतगीता।



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 93-110

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Challenges, Discrimination, and Coping Strategies of Migrants in the Host City: A Case Study of Social Integration of Tamil Migrants in Delhi

Boram Yoon

PhD Scholar, Centre for the Studies of Social Systems, School of Social Sciences, Jawaharlal
Nehru University, New Delhi - 110067

Abstract :

Migrants often struggle with cultural differences between their own traditions and those of the host city or local people. In India, known for its diverse cultures and languages, individuals encounter even more obstacles after relocating. This paper tries to discuss the discrimination and challenges faced by Tamil migrants since they move to Delhi and also tries to understand the role of cultural practices, religious institutions, and community-based activities helps the migrants to integrate with the host city and coping with the challenges. Therefore, this chapter also examines how migrants from Tamil Nadu attempt to integrate into local society, based on survey findings. With the collected data from surveys and in-depth interviews, the analysis presented that while a majority of respondents do not report overt or frequent discrimination, experiences of challenges regarding the local language, cultural misunderstanding, and subtle forms of othering by the locals remain significant in shaping migrants' daily life and experiences. Language barriers, environmental conditions, and the perceived discontinuity of Tamil culture emerged as persistent challenges, influencing migrants' sense of comfort and sense of belonging in Delhi.

Introduction :

Many Scholars like Borhade (in Mishra 2016, p. 294) argues that while migration is often associated with economic and developmental benefits, it also comes with negative repercussions. Often migrants are particularly vulnerable to human rights abuses from the moment they leave their home country to begin their journey. In other words, individuals are generally less vulnerable while at home than they are immediately after leaving to become migrants (ibid., p. 295). Migrants' vulnerability

is influenced by various factors, including political and social marginalization, as well as a lack of socio-economic resources while living in host places where they may not speak the official language. Additionally, migrants are often more vulnerable because they are unfamiliar with the local legal system and administrative processes, and are often disconnected from traditional support and family networks (Varenes 2003, in Mishra 2016). In other words, migrants face vulnerability due to living in an environment that differs significantly from their native cultures, languages, social settings, legal protections, rights, and consumption habits, coupled with the loss of the support systems they relied on prior to migration (Devi and Kumar 2011, in *ibid.*). In this regard the migrants have to integrate with the host place and to develop the feelings of the belongingness to the host place.

Objectives –

1. To examine the experiences of discrimination, challenges, and processes of social integration among Tamil migrants in Delhi.
2. To understand the role of cultural practices, religious institutions, and community-based activities to integrate with the host city and coping with the challenges.

Material and methods :

This study used a cross-sectional design for data collection. Fieldwork for this study was conducted in two notable areas of Delhi: the southwestern region of R. K. Puram, also known as Rama Krishnan Puram, and Mayur Vihar in Northern Delhi. These two areas have historically been recognised as significant centres of Tamil migrant settlement. Especially, R. K. Puram has been a centre for Tamil migrants, and they have shaped the neighbourhood. The questionnaire/interview schedule for this research was structured into several categories: personal information of the respondent, information of the household, socio-cultural changes, difficulties and discrimination, adaptation and preservation, socio-economic background, development of modern media connectivity and its impact on migrants' cultural preservation, marriage patterns and cultural influence, and religious rituals and practice. Questionnaires were also distributed via email and online messaging platforms. A total of 168 respondents completed the questionnaire, and two groups of parents participated in the group interview. using a semi-structured interview schedule with open-ended questions.

Theoretical Framework and Literature Review :

Belonging, in its simplest form, refers to connection, attachment, linkages, and relatedness. In the Indian context, where seasonal and circular migration is common, the ties to the land significantly influence a migrant's sense of belonging. However, scholars have largely overlooked the concept of belonging in relation to labour migration. The experience of belonging is often messy, incoherent, fractured, partial, and fragmented (Lähdesmäki, Saresma, and Hiltunen 2016, 233-247). These

characteristics of belonging necessitate affective frameworks of sociality, which cannot be adequately addressed within the causal frameworks commonly used in India's social sciences (Sadan and Pushpendra 2022, 12). The concept of belonging holds significant strength due to its openness and fluidity, enabling innovative approaches to understanding social interactions and cultural practices. This flexibility allows for meaningful engagement with issues of access and the intricate spatial dynamics involved in the formation of social relationships. Furthermore, it promotes an emotional and affective understanding of the complexities inherent in social processes. As highlighted by Lähdesmäki Saaresma and Hiltunen (2016, 241), the notion of belonging incorporates subjective, social, and societal dimensions into research (as cited in Sadan and Pushpendra 2022, 12).

Scholarly attention has increasingly turned to the intricate relationship between belonging and identity. There is a growing acknowledgement of the multiplicity and fragmentation of identity, leading some researchers to advocate for a departure from essentialist notions within identity conceptualisation (Lähdesmäki Saaresma and Hiltunen 2016, 233-247). From this standpoint, belonging allows researchers to view individuals in relational terms, unencumbered by the limitations of fixed identities. It is important to note that individuals may experience a sense of belonging without necessarily categorising this feeling as an identification or identity (ibid.). However, that belonging and identity are distinct does not mean that these two concepts form exclusionary zones of understanding social reality, or that one of them should be privileged over the other. Identity constitutes a stark social reality that cannot be wished away. In fact, the two quite often intersect each other. Scholars, for example, have looked at belonging as a form of access where the identity of a specific migrant group, or an individual identified as a migrant, functions as the key determinant of her/his entry and assimilation into that society. At this level, belonging or non-belonging overlaps with the politics of othering migrants. The challenge is to parallelise belongingness and identity in migration. Some of the chapters in the volume have addressed the complicated relationship between belonging and identity.

The subjective experiences, sense of belonging, and emotional aspects of migrants' social realities are better understood through narrative and analysis than through measurement. This methodological shift provides a perspective from which we can reflect on key themes in the migration discourse. By prioritising the migrant's viewpoint, we can also transcend disciplinary boundaries. This work challenges the prevailing scholarly narrative that presents migrant workers as passive commodities. Instead, it seeks to situate migrants' sense of belonging within their specific spatial and temporal contexts, approaching the complexities of their subjectivities with empirical depth. In this exploration, while belonging is the central focus, we aim to understand migrant subjectivities in

relation to memory and the concept of home, rather than in isolation. Therefore, instead of examining these key elements separately, we consider migrant experiences as interconnected and shaped by their relationships and interactions. The viewing of subjectivity through the agency's lens has direct implications for understanding identity, in our case, migrant identity: how the migrant conceives her/his own self. Another way, not unconnected though, would be to address how a migrant articulates and conceptualises her/his own migrant status through her/his understanding of the linkages with the social realm. Here, subjectivity may or may not get directly framed in terms of agency or identity. It is here that the rubrics of home, memory, and belonging become critical constituents in the social life of a migrant. Compared to identity and its politics, the field created by an interaction of these rubrics, as the essays in the volume show, is far more ambiguous and amorphous.

Analysis Based on the Primary Data -

Difficulties and Challenges of Living in Delhi :

When discussing Tamil migrants, particularly those who have stable jobs in the public or private sectors, it is evident that they are not significantly affected by issues such as poverty, lack of access to legal or government assistance, and insecure work environments. Instead, their main challenges stem from language barriers, identity crises, and discrimination. Therefore, this section explores the vulnerabilities faced by Tamil migrants, how they adapt to life in Delhi and interact with the local population, as well as the compromises they make in order to integrate into the host city.

Table 1
First Challenges Faced in Delhi

| Challenges | N | Percent |
|---------------------------|------------|----------------|
| Language | 76 | 67.9 |
| Climate | 24 | 21.4 |
| Pollution | 4 | 3.6 |
| Water Shortage | 6 | 5.4 |
| Food | 4 | 3.6 |
| No interaction/Loneliness | 8 | 7.1 |
| Local's prejudice | 2 | 1.8 |
| Unemployment | 6 | 5.4 |
| Cultural differences | 2 | 1.8 |
| Others | 10 | 8.9 |
| Total (N) | 112 | |
| No Response | 56 | |

When asked about the initial challenges they faced in Delhi, 112 people responded to the question. A significant majority, comprising 68 per cent of respondents, identified language barriers as their foremost challenge. Following this, climate issues were cited by 21 per cent of respondents. Additionally, 9 per cent reported encountering various other challenges, while 7 per cent expressed difficulties due to a lack of social interactions and feelings of loneliness.

Table 2
Difficulties Faced by Respondents

| Difficulties | N | Percent |
|---|------------|---------|
| Language | 18 | 16.7 |
| Climate | 20 | 18.5 |
| Pollution | 22 | 20.4 |
| Water shortage | 4 | 3.7 |
| Food | 6 | 5.6 |
| No interaction or Loneliness | 6 | 5.6 |
| High expenses of living or financial issues | 6 | 5.6 |
| Cultural differences | 2 | 1.9 |
| Discrimination from the locals | 6 | 5.6 |
| Unemployment or lack of job | 2 | 1.9 |
| Housing or rent | 6 | 5.6 |
| Others | 12 | 11.1 |
| Nothing | 26 | 24.1 |
| Total (N) | 108 | |
| No Response | 60 | |

Related to the previous question, respondents were asked about the challenges they encounter while living in Delhi. Twenty-four per cent of the respondents indicated that they experience no difficulties in the city. The most commonly mentioned issues were pollution, cited by 20 per cent of respondents, and climate-related problems, noted by 18.5 per cent. Additionally, approximately 17 per cent of the respondents reported a language barrier is their difficulties in the city.

Table 3
Advantages of Living in Delhi Perceived by Respondents

| Advantages | N | Percent |
|---------------------------|-----------|----------------|
| Better education | 22 | 22.9 |
| Economic development | 14 | 14.6 |
| More job opportunities | 24 | 25.0 |
| Diverse culture | 18 | 18.8 |
| Capital city | 8 | 8.3 |
| Better living environment | 6 | 6.3 |
| Others | 14 | 14.6 |
| Nothing | 6 | 6.3 |
| Total (N) | 96 | |
| No Response | 72 | |

When the respondents were asked about the advantages of living in Delhi, 96 people gave answers. Among them, 25 per cent of respondents identified more job opportunities as a key benefit of residing in the city. Additionally, 22.9 per cent noted better education options, while 18.8 per cent cited the diverse culture of Delhi as an advantage.

Table 4
Disadvantages of Living in Delhi Perceived by Respondents

| Disadvantages | N | Percent |
|--------------------------------|-----------|----------------|
| Climate | 10 | 14.3 |
| Pollution | 20 | 28.6 |
| High cost of living | 6 | 8.6 |
| Harsh environment | 6 | 8.6 |
| Loneliness | 8 | 11.4 |
| Discontinuity of Tamil culture | 14 | 20.0 |
| Local people | 6 | 8.6 |
| Health | 8 | 11.4 |
| Others | 2 | 2.9 |
| Nothing | 12 | 17.1 |
| Total (N) | 70 | |
| No Response | 98 | |

Seventy out of a total of 168 respondents identified the disadvantages of living in Delhi. The most commonly mentioned issue was pollution, which was cited by 28.6 per cent of respondents. Additionally, 20 per cent noted the discontinuation of Tamil culture as a disadvantage of residing in Delhi. Conversely, 17 per cent of respondents reported that they did not perceive any disadvantages to living in the city.

Table 5
Difficulties and Discrimination

| Categories/Variables | Frequency | Percent | Cumulative Percent |
|---|------------|--------------|--------------------|
| Expectations of Living in Delhi Before Migration | | | |
| Positive Anticipations | 42 | 25.0 | 41.2 |
| Negative Anticipations | 20 | 11.9 | 60.8 |
| No Prior Expectations | 40 | 23.8 | 100.0 |
| Total | 102 | 60.7 | |
| No Response | 66 | 39.3 | |
| Experience of Discrimination Based on State of Origin | | | |
| Yes | 40 | 23.8 | 25.6 |
| No | 116 | 69.0 | 100.0 |
| Total | 156 | 92.9 | |
| No Response | 12 | 7.1 | |
| Observation of Discrimination against Tamils in Delhi | | | |
| Yes | 30 | 17.9 | 21.7 |
| No | 108 | 64.3 | 100.0 |
| Total | 138 | 82.1 | |
| No Response | 30 | 17.9 | |
| Experience of Alienation or Feeling of Non-Belonging among Respondents Living in Delhi | | | |
| Yes | 72 | 42.9 | 48.6 |
| No | 76 | 45.2 | 100.0 |
| Total | 148 | 88.1 | |
| No Response | 20 | 11.9 | |
| Reasons for Respondents' Feelings of Alienation or Non-Belonging in Delhi | | | |
| Language and communication barriers | 12 | 7.1 | 23.1 |
| Lack of social network and interaction | 10 | 6.0 | 42.3 |
| Attachment towards home state | 14 | 8.3 | 69.2 |
| Cultural differences | 6 | 3.6 | 80.8 |
| Experience of discrimination | 4 | 2.4 | 88.5 |
| Others | 6 | 3.6 | 100.0 |
| Total | 52 | 31.0 | |
| No Response | 116 | 69.0 | |
| Availability of Self-Help Groups or Organisations for Individual/Family Crises | | | |
| Yes | 24 | 14.3 | 19.0 |
| No | 102 | 60.7 | 100.0 |
| Total | 126 | 75.0 | |
| No Response | 42 | 25.0 | |
| Total (N) | 168 | 100.0 | |

The table presented outlines the difficulties and discrimination that Tamil migrants have faced in their everyday life. In regard to their expectations of living in Delhi prior to migration, 25 per cent of respondents reported positive anticipations, mentioning factors like “better employment opportunities” and “good educational environment”. In contrast, 12 per cent expressed negative expectations, citing concerns such as “high rent”, “climate issue” and “language barrier”. When questioned about their experiences of discrimination related to their state of origin, Tamil Nadu, a significant majority—70 per cent—indicated that they had not encountered discrimination. Conversely, only 24 per cent acknowledged having experienced such discrimination.

The subsequent question addressed whether respondents had observed discrimination against Tamils in Delhi. Sixty-four per cent of participants answered that they had not witnessed any discrimination targeting the Tamil migrants and the community. Regarding feelings of alienation or non-belonging among the respondents, 45 per cent indicated that they did not experience such feelings, while 43 per cent confirmed that they did. To explore this matter further, a follow-up question was posed to ascertain the reasons behind feelings of alienation or non-belonging in Delhi. Among the 52 responses collected, 8 per cent of respondents attributed their sense of non-belonging to their attachment to their home state. Additionally, language and communication barriers accounted for 7 per cent of the responses, while a lack of social networks and interactions comprised 6 per cent. Regarding the availability of self-help groups or organisations to assist individuals or families facing crises or emergencies in Delhi, approximately 61 per cent of respondents reported that such resources were lacking.

To examine the types and level of difficulties of the Tamil migrants in depth interviews were conducted with people from different backgrounds, those who said that they faced some kind of discriminations and difficulties. so this section is mainly based on their narratives. The major vulnerabilities of the interviewees in this paper are categorized into two issues; 1) lack of identity and 2) discrimination.

All the interviewees stated that their challenge is dealing with the discriminatory remarks of the local people in the neighbourhood or the workplace/school. The most common answer from all interviewees was that they had negative experiences regarding their skin colour. They were teased with their comparably darker skin, often called Madrasi. Across the country, “fair skin” is associated with beauty and higher class/caste. Most Hindi-speakers in Delhi admire Hindi film or so-called Bollywood stars and their fair looks, while they are not attracted to Tamil actors or to so-called Dravidian features and skin colour. This preference for lighter and fair skin is also propagated through television advertisements and movies. Willford (2006) argues that in the entertainment industry,

even among newsreaders on television, having a dark complexion is considered a serious professional handicap because in contemporary society, black skin is not beautiful. Rather, it is associated with working class and their “backward” culture (Willford 2006, 205-206). The researcher asked one of the interviewees if she had ever faced discrimination in Delhi against her comparably darker skin. She said,

“I didn’t say a word where I was from but someone called me ‘Madrasi’ in the market by looking at my appearance. I was offended because he assumed that I’m from Tamil Nadu because of my skin colour. but even my relatives often called me dark.”

Despite of being a Hindu, some of them were misunderstood as a Christian because they were from the southern part of the country where the population of Christianity is higher than the north. One of the interviewees said that even though she is a pure vegetarian, north Indians think that she would be a non-vegetarian because she is from south India. This is a misconception based on the food habit of south Indians eating fish. Two of the interviewees mentioned that they were called as rice-eaters and told to “eat chicken and mutton”, so that they can be “strong like north Indians.”

Most of the interviewees are proud of their cultural legacy and history but when they first came to Delhi, they were shocked because people they had met in Delhi, viz. those who have north Indian root, hardly knew about south Indian culture and history. Two interviewees recalled that when they were kids they were often told that they had to speak in Punjabi, not Hindi because the community where they lived in was dominated by the Punjabis. One interviewee shared her experience about the language problem.

“They told me that I should learn Hindi because it is our national language. But you know, we don’t have a sole national language in India.”

The third generation of the migrant is more discomfited by the local people, who are raised with and spent most of their life time with. One interviewee spoke out about the discrimination and ignorance against her.

“No matter how long I have lived in Delhi, there is still discrimination, and it makes me feel that I don’t belong here (Delhi). I was born and raised in Delhi. Delhi is in me, and I am breathing the very same air with them..... [But] sometimes I face subtle discrimination and I feel like I’m an outsider.”

That’s where identity crisis begins. Compared to the new comers and students, the migrant’s descendants go through lack of identity. The second generation of the migrant confessed that he could only speak some words in Tamil so he is hesitant to say Tamil is his mother tongue. He even felt a mere necessity of learning it, while he was aware that the language is an important marker to hold on

to the identity as a Tamilian. Another interviewee, who is in the third generation, said if she had children she would teach Tamil to them, so that the whole generations in her family can communicate in the same language. She wanted her future children to appreciate Tamil legacy.

Strategies of Coping and Integration :

Then what kind of strategies do Tamil migrants utilize while they live in a host city, struggling with identity problems? This section examines the cultural preservation of the migrant. When people feel they are marginalised or discriminated in a society and have no protective measure for them, they try to muster and share the bond that shaped by same origin or culture. And once migrants interact with new societies, migrant communities construct their own social worlds. In this context, it is important to explore how the temples and associations propagate the culture and tradition. The reasons why this research chose to study these places are: firstly, a temple is traditionally the centre of village and community life in Tamil Nadu. Temples have taken a significant role to link the Tamil migrants/diaspora and their native land; secondly, associations are built to foster the spread of each culture and language, and to propagate them to the locals. By looking at the temple and the association that were built by the migrants in Delhi, characteristics of the Tamil migrants and the new findings will be drawn in the last section.

Table 6.1
Adaptation and Preservation

| Categories/ Variables | Frequency | Percent | Cumulative Percent |
|--|-----------|---------|-----------------------|
| Respondents' Adherence to Tamil Rituals and Traditions in Delhi | | | |
| Yes | 122 | 72.6 | 82.4 |
| No | 26 | 15.5 | 100.0 |
| Total | 148 | 88.1 | |
| No Response | 20 | 11.9 | |
| Ways of Organising or Participating in Tamil Cultural and Religious Practices | | | |
| Participation through household-based rituals and cultural practices | 16 | 9.5 | 29.6 |
| Participation through community-organised festivals and events | 20 | 11.9 | 66.7 |
| Participation through temple- or church-based rituals | 12 | 7.1 | 88.9 |
| Participation through linguistic and cultural activities | 6 | 3.6 | 100.0 |
| Total | 54 | 32.1 | |
| No Response | 114 | 67.9 | |
| Significance of Organising and Participating in Tamil Cultural or Religious Practices | | | |
| Sense of belonging and solidarity | 12 | 7.1 | 66.7 |
| Cultural continuity and its importance | 4 | 2.4 | 88.9 |
| Others | 2 | 1.2 | 100.0 |
| Total | 18 | 10.7 | |
| No Response | 150 | 89.3 | |

| Level of Agreement on Cultural Identity Expression through Tamil Practices | | | |
|---|------------|--------------|-------|
| Strongly agree | 76 | 45.2 | 53.5 |
| Agree | 54 | 32.1 | 91.5 |
| Neutral | 8 | 4.8 | 97.2 |
| Strongly disagree | 4 | 2.4 | 100.0 |
| Total | 142 | 84.5 | |
| No Response | 26 | 15.5 | |
| Practices that Respondents Had to Give Up after Moving to Delhi | | | |
| Yes | 28 | 16.7 | 19.2 |
| No | 118 | 70.2 | 100.0 |
| Total | 146 | 86.9 | |
| No Response | 22 | 13.1 | |
| Adapted Forms of Tamil Cultural and Religious Practices in Delhi | | | |
| Never | 88 | 52.4 | 69.8 |
| Once or twice | 14 | 8.3 | 81.0 |
| Often | 16 | 9.5 | 93.7 |
| All the time | 8 | 4.8 | 100.0 |
| Total | 126 | 75.0 | |
| No Response | 42 | 25.0 | |
| Respondents' Involvement in Local Cultural or Religious Practices | | | |
| Yes | 98 | 58.3 | 65.3 |
| No | 52 | 31.0 | 100.0 |
| Total | 150 | 89.3 | |
| No Response | 18 | 10.7 | |
| Total (N) | 168 | 100.0 | |

This table presents respondents' patterns of cultural adaptation and preservation. Regarding adherence to Tamil rituals and traditions in Delhi, nearly 73 per cent of respondents reported that they continue to follow their customary practices despite living in a culturally different environment. Only 15.5 per cent indicated that they do not adhere to these traditions. When asked about how they organise or participate in Tamil cultural and religious practices, 12 per cent of the 54 respondents stated that they participate through community-organised festivals and events. Participation through household-based rituals and cultural practices accounted for 9.5 per cent, while participation through temple- or church-based rituals was reported by 7 per cent. To explore the meaning these cultural and religious practices hold for respondents, an additional question was provided. Of the 18 responses collected, 7 per cent stated that these practices give a sense of belonging and solidarity, followed by 2.4 per cent who emphasised cultural continuity.

The next question asked whether participation in festivals or wearing traditional attire in Delhi helps respondents express their cultural identity. Seventy-seven per cent either strongly agreed or agreed with this statement, whereas only 7 per cent expressed disagreement. Regarding practices that respondents had to give up after moving to Delhi, 70 per cent reported that they had not abandoned any cultural practices, while 17 per cent indicated that they had to give up some of their original

practices. When asked about adapted forms of Tamil cultural and religious practices in Delhi, half of the respondents reported that they had never altered the original forms. In contrast, approximately 23 per cent stated that they had adapted certain elements of their cultural and religious practices. With respect to respondents' involvement in local (Delhi-based or more broadly North Indian) cultural or religious practices, nearly 60 per cent reported that they follow or participate in local rituals.

Table 6.2
Adaptation and Preservation (Continuation of Table 6.1)

| Categories/ Variables | Frequency | Percent | Cumulative Percent |
|--|------------|--------------|-----------------------|
| Respondents' Adjustment to Life in Delhi | | | |
| Yes | 96 | 57.1 | 67.6 |
| No | 46 | 27.4 | 100.0 |
| Total | 142 | 84.5 | |
| No Response | 26 | 15.5 | |
| Respondents' Reason for Well Adjustment to Delhi | | | |
| Language acquisition | 14 | 8.3 | 29.2 |
| Adaptation to local environment and culture | 12 | 7.1 | 54.2 |
| Social integration with the locals | 6 | 3.6 | 66.7 |
| Gradual adjustment after long-term stay | 12 | 7.1 | 91.7 |
| Others | 4 | 2.4 | 100.0 |
| Total | 48 | 28.6 | |
| No Response | 120 | 71.4 | |
| Respondents' Reason for Non-Adjustment to Delhi | | | |
| Environmental discontent | 8 | 4.8 | 36.4 |
| Language barrier and cultural differences | 6 | 3.6 | 63.6 |
| Temporary migration and lack of motivation | 6 | 3.6 | 90.9 |
| Others | 2 | 1.2 | 100.0 |
| Total | 22 | 13.1 | |
| No Response | 146 | 86.9 | |
| Level of Agreement on Difficulties in Maintaining Tamil Culture and Language in Delhi | | | |
| Strongly agree | 16 | 9.5 | 10.8 |
| Agree | 26 | 15.5 | 28.4 |
| Neutral | 36 | 21.4 | 52.7 |
| Disagree | 42 | 25.0 | 81.1 |
| Strongly disagree | 28 | 16.7 | 100.0 |
| Total | 148 | 88.1 | |
| No Response | 20 | 11.9 | |
| Total (N) | 168 | 100.0 | |

Concerning respondents' adjustment to life in Delhi, 57 per cent stated that they are well adjusted, whereas 27 per cent reported that they are not. To investigate the reasons behind this adjustment, 8 per cent of the 48 respondents identified language acquisition as the main factor.

Adaptation to the local environment and culture followed at 7 per cent, with gradual adjustment also reported by 7 per cent. Among those who felt they were not well adjusted to Delhi, environmental discomfort—such as extreme weather and pollution—was the primary reason. Language barriers and cultural differences were mentioned by 3.6 per cent of respondents, and lack of motivation due to temporary stay was also cited by 3.6 per cent. When asked whether living in Delhi made it difficult to maintain Tamil culture and language, 25 per cent agreed, while nearly 42 per cent disagreed on this matter.

Table 6.3
Adaptation and Preservation (Continuation of Table 6.1)

| Categories/ Variables | Frequency | Percent | Cumulative Percent |
|---|------------|--------------|-----------------------|
| Respondents' Views on the Importance of Preserving Their Native Culture in Delhi | | | |
| Yes | 106 | 63.1 | 77.9 |
| No | 30 | 17.9 | 100.0 |
| Total | 136 | 81.0 | |
| No Response | 32 | 19.0 | |
| Reasons Why Respondents Consider It Important to Preserve Their Native Culture in Delhi | | | |
| Ethnic and Cultural Identity Assertion | 24 | 14.3 | 46.2 |
| Inter-generational Cultural Transmission | 10 | 6.0 | 65.4 |
| Cultural Pride | 18 | 10.7 | 100.0 |
| Total | 52 | 31.0 | |
| No Response | 116 | 69.0 | |
| Ways in Which Respondents and Communities Preserve or Continue Tamil Culture in Delhi | | | |
| Through rituals or festivals | 18 | 10.7 | 39.1 |
| Through community gatherings | 14 | 8.3 | 69.6 |
| Through inter-generational transmission of culture and language | 6 | 3.6 | 82.6 |
| Through daily living practices | 8 | 4.8 | 100.0 |
| Total | 46 | 27.4 | |
| No Response | 122 | 72.6 | |
| Respondents' Encouragement of Their Children to Learn Tamil | | | |
| Yes, strongly encouraged them | 110 | 65.5 | 80.9 |
| Yes, somewhat encouraged them | 6 | 3.6 | 85.3 |
| I don't have children | 20 | 11.9 | 100.0 |
| Total | 136 | 81.0 | |
| No Response | 32 | 19.0 | |
| Children's Reactions to Respondents' Encouragement to Learn Tamil | | | |
| Positive response | 36 | 21.4 | 58.1 |
| Moderate interest | 6 | 3.6 | 67.7 |
| Low motivation or Resistance | 4 | 2.4 | 74.2 |
| Institutional Support | 4 | 2.4 | 80.6 |
| Others | 12 | 7.1 | 100.0 |
| Total | 62 | 36.9 | |
| No Response | 106 | 63.1 | |
| Respondents' Sense of Belonging to the Tamil Community through Festivals and Events in Delhi | | | |
| I feel a very strong sense of belonging | 72 | 42.9 | 58.1 |
| I feel somewhat connected | 36 | 21.4 | 87.1 |
| I am neutral | 10 | 6.0 | 95.2 |
| I don't feel very connected | 4 | 2.4 | 98.4 |
| I feel no connection at all | 2 | 1.2 | 100.0 |
| Total | 124 | 73.8 | |
| No Response | 44 | 26.2 | |
| Total (N) | 168 | 100.0 | |

Regarding the importance of preserving native culture in Delhi, 63 per cent of respondents affirmed its importance, whereas 18 per cent did not. Respondents were further asked to explain why they consider cultural preservation important. Fourteen per cent cited ethnic and cultural identity assertion, while 10 per cent mentioned pride in being Tamil and in Tamil culture as the main reason for preservation. The subsequent question examined how communities and individuals preserve or continue Tamil culture in Delhi. Among 46 respondents, nearly 11 per cent reported doing so through rituals and festivals, followed by 8 per cent who highlighted community gatherings. Respondents were also asked whether they encourage their children to learn the Tamil language. Nearly 70 per cent stated that they do, and none of the 136 respondents said they do not. Furthermore, 25 per cent reported that their children showed a positive or moderate response to learning the language. In relation to the sense of belonging to the Tamil community through festivals and events in Delhi, 64 per cent stated that they feel a sense of connection or belonging, while only 3.6 per cent reported feeling little or no connection.

Table 6.4
Adaptation and Preservation (Continuation of Table 6.1)

| Categories/ Variables | Frequency | Percent | Cumulative Percent |
|--|-----------|---------|-----------------------|
| Perception of the Importance of Religious Worship in Preserving Tamil Identity in Delhi | | | |
| Very important | 72 | 42.9 | 54.5 |
| Important | 28 | 16.7 | 75.8 |
| Neutral | 18 | 10.7 | 89.4 |
| Not important | 4 | 2.4 | 92.4 |
| Not at all important | 10 | 6.0 | 100.0 |
| Total | 132 | 78.6 | |
| No Response | 36 | 21.4 | |
| Perception of the Importance of Tamil Festival Celebration in Preserving Tamil Identity in Delhi | | | |
| Very important | 84 | 50.0 | 65.6 |
| Important | 30 | 17.9 | 89.1 |
| Neutral | 12 | 7.1 | 98.4 |
| Not important | 2 | 1.2 | 100.0 |
| Total | 128 | 76.2 | |
| No Response | 40 | 23.8 | |
| Respondents' Belief that Tamil Cultural Practices Strengthen Social Unity within the Community in Delhi | | | |
| Yes | 122 | 72.6 | 95.3 |
| No | 6 | 3.6 | 100.0 |
| Total | 128 | 76.2 | |
| No Response | 40 | 23.8 | |
| Existence of Community Leaders (Religious or Social) Who Help Maintain Tamil Cultural Values in Delhi | | | |
| Yes | 38 | 22.6 | 30.6 |
| No | 86 | 51.2 | 100.0 |
| Total | 124 | 73.8 | |

| | | | |
|--|------------|--------------|-------|
| No Response | 44 | 26.2 | |
| Respondents' Views on Whether Living in Delhi Has Changed Their Faith or Cultural Practices | | | |
| Yes | 32 | 19.0 | 24.6 |
| No | 98 | 58.3 | 100.0 |
| Total | 130 | 77.4 | |
| No Response | 38 | 22.6 | |
| Total (N) | 168 | 100.0 | |

Respondents were also asked about the importance of religious worship in preserving Tamil identity in Delhi. Forty-three per cent considered it very important, while only 6 per cent regarded it as unimportant. Additionally, 68 per cent indicated that celebrating Tamil festivals is important for preserving Tamil identity, with only 1 per cent stating that it is not important. When asked whether Tamil cultural practices strengthen social unity within the community in Delhi, 73 per cent responded affirmatively, whereas only 4 per cent disagreed. Regarding the presence of community leaders who help maintain Tamil cultural values in Delhi, approximately half of the respondents answered that there are no such figures. Finally, respondents were asked whether living in Delhi had changed their faith or cultural practices. Fifty-eight per cent said that it had not, while 20 per cent reported that it had.

Table 7

Respondents' Involvement in Local Cultural or Religious Practices 1

| Variables | Yes | No | Total (N) |
|--------------------------|-------------|-------------|------------|
| Sex (.576) | | | |
| Male | 64.3 | 35.7 | 84 |
| Female | 65.6 | 34.4 | 64 |
| Others | 100.0 | 0.0 | 2 |
| Age (.283) | | | |
| <=30 | 50.0 | 50.0 | 24 |
| 31-45 | 72.4 | 27.6 | 58 |
| 46-60 | 65.2 | 34.8 | 46 |
| >=61 | 63.6 | 36.4 | 22 |
| Religion* (.014) | | | |
| Hindu | 70.7 | 29.3 | 116 |
| Muslim | 0.0 | 100.0 | 2 |
| Christian | 50.0 | 50.0 | 32 |
| Generation (.319) | | | |
| First Generation | 63.2 | 36.8 | 114 |
| Second Generation | 72.2 | 27.8 | 36 |
| Total | 65.3 | 34.7 | 150 |

* Chi-Square Value at 98.6% level of Confidence

As we can see the table above, survey results indicate that 64 per cent of male respondents reported participation in local cultural or religious practices, compared to 65.6 per cent of female respondents. Analysis from the collected data by age group reveals that individuals aged 31 to 45 exhibit the highest participation rate at 72 per cent. Those aged 46 to 60 display a participation rate of 65 per cent. The lowest participation is observed among respondents aged 30 and below 30, with a rate of 50 per cent among the total 150 respondents surveyed.

Regarding religious affiliation, approximately 71 per cent of Hindu respondents reported involvement in local cultural or religious practices, compared to 50 per cent of Christian respondents. A generational comparison indicates that second-generation respondents have a higher participation rate with 72 per cent than first-generation respondents with 63 per cent

.Table 8

Respondents' Involvement in Local Cultural or Religious Practices 2

| Variables | Yes | No | Total (N) |
|--------------------------------|-------------|-------------|------------|
| Education Level* (.000) | | | |
| Pre-primary | 25.0 | 75.0 | 8 |
| Primary | 83.3 | 16.7 | 12 |
| Upper-primary | 75.0 | 25.0 | 16 |
| Secondary | 44.4 | 55.6 | 18 |
| Higher Secondary | 83.3 | 16.7 | 12 |
| Undergraduate | 65.0 | 35.0 | 40 |
| Postgraduate | 77.8 | 22.2 | 36 |
| Others | 0.0 | 100.0 | 6 |
| Occupation (.212) | | | |
| Govt. Sector | 66.7 | 33.3 | 24 |
| Pvt. Sector | 71.4 | 28.6 | 14 |
| Business | 66.7 | 33.3 | 6 |
| Service | 57.1 | 42.9 | 28 |
| Housewife | 56.3 | 43.8 | 32 |
| Student | 40.0 | 60.0 | 10 |
| Others | 71.4 | 28.6 | 14 |
| Retired | 87.5 | 12.5 | 16 |
| No Occupation | 100.0 | 0.0 | 4 |
| Total | 64.9 | 35.1 | 148 |

* Chi-Square Value at 99% level of Confidence

Respondents with primary and higher secondary education levels are the most active participants in local cultural and religious practices. Individuals with postgraduate education constitute the second

most active group, with approximately 78 per cent participation, while those with upper-primary education account for 75 per cent. Respondents with undergraduate education account for 65 percent participation. By occupation, retired respondents exhibit the highest participation rate at 87.5 per cent. Respondents employed in the private sector and those who are categorised as "Others" each account for approximately 71 per cent participation. Respondents employed in the government sector and in business account for approximately 67 per cent participation.

Conclusion :

The study examined the experiences of discrimination, challenges, and processes of social integration among Tamil migrants. With the collected data from surveys and in-depth interviews, the analysis presented that while a majority of respondents do not report overt or frequent discrimination, experiences of challenges regarding the local language, cultural misunderstanding, and subtle forms of othering by the locals remain significant in shaping migrants' daily life and experiences. Language barriers, environmental conditions, and the perceived discontinuity of Tamil culture emerged as persistent challenges, influencing migrants' sense of comfort and sense of belonging in Delhi. It was also found that migrants' experiences of discrimination are not uniform and invariable. There are differences across generations, educational levels, and occupations, indicating that socio-economic resources and length of residence mediate vulnerability and adjustment. While first-generation migrants often face challenges related to language and unfamiliar social environments, second- and third-generation Tamil migrants frequently articulate concerns related to identity and sense of belonging, particularly when experiences of subtle discrimination even though they are long-term residents in Delhi. The study also examined the role of Tamil cultural practices, religious institutions, and community-based activities as key strategies based on the data from surveys. The results showed that Tamil migrants cope with discrimination and negotiate integration. Participation in Tamil festivals, traditional rituals, temples, and community gatherings with other Tamil migrants provide not only cultural continuity but also a sense of belonging and collectiveness. According to the surveys, considerable proportion of respondents participate in local cultural and religious activities as well. This result suggests that integration is characterised less by cultural withdrawal than by selective engagement and everyday negotiation.

References :

1. Borhade, A. (2016). "Migration and Vulnerability". In R. K. Mishra (Ed.), *Labour Migration, Human Rights and Development in India*. Sage Publications.
2. Lähdesmäki, T., Saresma, T., & Hiltunen, K. (2016). "Fluidity and Flexibility of "Belonging":

- Uses of the Concept in Contemporary Research”. In T. Lähdesmäki, A.-K. Koistinen, & S. Ylönen (Eds.), *Negotiating Belonging in Europe: Frames, Practices, and Contestations*. Routledge.
3. Mishra, R. K. (Ed.). (2016). *Labour Migration, Human Rights and Development in India*. Sage Publications.
 4. Sadan, A., & Pushpendra. (2022). *Mobility, Labour, and Sociality in Asia*. Cambridge University Press.
 5. T. Lähdesmäki, A.-K. Koistinen, & S. Ylönen (Eds.), *Negotiating Belonging in Europe: Frames, Practices, and Contestations*. Routledge.
 6. Willford, A. C. (2006). *Cage of Freedom: Tamil Identity and the Ethnic Fetish in Malaysia*. University of Michigan Press.



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 111-116

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में पतंजलि योग द्वारा निर्दिष्ट यम-नियमों का समीक्षात्मक अध्ययन

रविन्द्र सिंह राणा, शोधार्थी

डॉ. महेश चन्द्र, शोध निर्देशक

योग विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

शोध आलेख सार -

महर्षि पतंजलि के अष्टांग योग का यम और नियम आधार है। यम नियम शाश्वत मूल्य है। यम का संबंध मन से होता है, हमारे जीवन में यम नियम का सर्वथा अभाव होने के कारण संयम या अनुशासन की कमी है, यह व्यक्ति के जीवन को सामाजिक क्रियाओं से सामंजस्य पूर्ण बनाते है और नियम उसके आंतरिक जीवन को अनुशासित करते है। आज के तनाव के युग में मन शांति के लिए यम-नियम का पालन आवश्यक है। इनके पालन से व्यवहार में परिवर्तन आता है। व्यवहार सकारात्मक और सत्व गुण संपन्न होता है। मनुष्य का व्यवहार शुद्ध बनाने के लिए और संयम स्थिति लाने के लिए यम-नियम जरुरी है। इनका पालन करने का अर्थ मनुष्यत्व का सर्वतोमुखी विकास है। स्वामी निरंजनानंद योग विद्या में लिखते है, **“यम और नियम व्यक्तित्व में परिवर्तन की आधारशिला रखते है, एक ऐसी अवस्था तैयार करते है, जो मनुष्य के भीतरी सद्गुणों को बढ़ावा देती है, मंगलमय वातावरण बनाते है।”** इनके पालन से आज का मानव और मानवेतर प्राणी स्वस्थ, सुखी और निरामय जीवन जी सकते है। हमारे बहुत सारे ग्रंथों में यम-नियम का महत्व बताया है, यह वर्तमान अनुसंधान महर्षि पतंजलि द्वारा निर्दिष्ट यम-नियम का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समीक्षात्मक अध्ययन करता है, क्योंकि यम-नियम बंधन नहीं तो मुक्ति के द्वार है। यम-नियमों की विस्तारित जानकारी के पहले योग शब्द का अर्थ समझना होगा।

इस शोध के प्रथम अध्याय में महर्षि पतंजलि के यम-नियमों का आधार लिया है। तनाव के युग की मनःशांती के लिए यम-नियम पालन आवश्यक है। इनके पालन से व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आता है। व्यवहार सत्वगुण संपन्न होता है। यम-नियम के पालन से आज का मनुष्य और सभी प्राणी स्वस्थ, सुखी और निरामय जीवन जी सकते है। हमारे बहोत सारे ग्रंथों में यम-नियमों का उल्लेख किया है। इस अध्याय में योग शब्द का अर्थ, स्वरूप, परिभाषाएं, आधुनिक योगी इनकी चर्चा की है।

मूल शब्द - योग एवं यम-नियम।

भूमिका -

“मेरा भारत महान है”, यह बोलते समय हमारा सिर गर्व से उँचा होता है, लेकिन भारत महान क्यों है?

क्योंकि हमारी संस्कृति और परंपरा बहुत ही महान है। ऐसी ही एक महान समृद्ध धारा योग है। वेद, पुराण, रामायण, महाभारत हमारे राष्ट्रीय ग्रंथ हैं, हमारे मार्गदर्शक हैं। इन ग्रंथों की विशेषताएँ हैं कि, ये सिर्फ धार्मिक ग्रंथ या आध्यात्मिक साहित्य ही नहीं बल्कि अखिल मानव जाति का कल्याण इनमें समाया हुआ है। जीवन कैसे जीना है इसका अनमोल मार्गदर्शन हैं। प्रभु श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण इन्होंने योगमय जीवन का आदर्श बतलाया है। समस्त मानव जाति के लिए उन्होंने नैतिक आचरण के मूल्य बताए हैं।

भारतीय शास्त्र में एक प्राचीन अनुशासन के रूप में योग का विस्तृत विवरण दिया हुआ है, जिसे ऋषि-मुनियों ने विकसित किया। योग पर लिखा जाने वाला सभी साहित्य भारतीय ग्रंथों पर आधारित है। योग का मुख्य हेतु कुंडलिनी शक्ति जागरण, मोक्ष प्राप्ति कहा है। स्वामी निरंजनानंदजी कहते हैं, "जीवन में अपनी प्रतिभाओं का सही प्रकार से उपयोग करना योग की उपलब्धी है।" आज के आधुनिक युग में सभी लोग अपना ध्येय निश्चित करके साधना कर सकते हैं। आज योग विद्या का स्वीकार पूरे विश्व ने किया है। इसलिए 21 जून का दिन "अंतर्राष्ट्रीय योग दिन" के रूप में मनाया जाता है। इस कारण योग का प्रचार प्रसार होना आसान हो चुका है, मीडिया के माध्यम से जगह जगह पर योग पहुंचा है, लेकिन प्रचार होना अलग बात है और लोगों ने इसका नियमित रूप से अभ्यास करना अलग है। हमारे पूर्वजों की जीवन शैली योगमय ही थी, कृषि प्रधान देश होने के कारण बह्म मुहूर्त के समय उठना, खेतों में काम करना, मिट्टी के घर में रहना, पैदल चलना, रात को जल्दी सोना, भोजन में कम और योग्य पदार्थ लेना इतना सरल जीवन था। लेकिन कुछ सालों बाद में यहां पर अंग्रेज और मुगलों का राज आया। हमारी संस्कृति और जीवन पद्धति पर पश्चिम संस्कृति का बड़ा असर हुआ। उसके बाद अपना देश स्वतंत्र हुआ और औद्योगीकरण बढ़ा। लोग नौकरी, रोजगार के कारण शहरों में आए इसका असर हमारी आरोग्यमय जीवन शैली पर हुआ।

पैदल चलना, बैल गाड़ी, घोडा गाड़ी, इनकी जगह पर पेट्रोल, डीजल पर चलने वाली अनगिनत गाड़ियाँ आईं, परिणाम ध्वनि, वायु, जल और विचार प्रदूषण के कारण मानव की शांति खत्म हो गई। आज दुनिया में सबसे दुःखी और रोग युक्त प्राणी मानव है। प्रकृति के नियमों का सबसे ज्यादा उल्लंघन मानव ने ही किया है। इसकी सजा के रूप में उसे अलग अलग बीमारियों का उपहार मिला है। आज आधुनिक जीवन शैली के कारण तनाव, निराशा, विफलता, प्रदूषण, व्यायाम का अभाव इन कारणों से शारीरिक-मानसिक बीमारियां हो रही हैं, भौतिक उपभोग के कारण वह अपने मूल स्वरूप को भूल गया है। इसलिए उसने दुख, बेचैनी, अस्वस्थता, व्याधियाँ, ईर्ष्या, लोभ, हड़ताल, आतंकवाद, सामाजिक-आर्थिक व भावनिक समस्याएं प्राप्त की हैं। इन सभी समस्याओं के निवारण का एक ही महत्वपूर्ण मार्ग है और वह है योग।

आज दुनिया में सबसे दुःखी और रोग युक्त प्राणी मानव है। प्रकृति के नियमों का सबसे ज्यादा उल्लंघन मानव ने ही किया है। इसकी सजा के रूप में उसे अलग अलग बीमारियों का उपहार मिला है। आज आधुनिक जीवन शैली के कारण तनाव, निराशा, विफलता, प्रदूषण, व्यायाम का अभाव इन कारणों से शारीरिक-मानसिक बीमारियां हो रही हैं, भौतिक उपभोग के कारण वह अपने मूल स्वरूप को भूल गया है। इसलिए उसने दुःख, बेचैनी, अस्वस्थता, व्याधियाँ, ईर्ष्या, लोभ, हड़ताल, आतंकवाद, सामाजिक-आर्थिक व भावनिक समस्याएं प्राप्त की हैं। इन सभी समस्याओं के निवारण का एक ही महत्वपूर्ण मार्ग है और वह है योग।

महर्षि पतंजलि के अष्टांग योग का यम और नियम आधार है। यम नियम शाश्वत मूल्य है। यम का

संबंध मन से होता है, हमारे जीवन में यम नियम का सर्वथा अभाव होने के कारण संयम या अनुशासन की कमी है, यह व्यक्ति के जीवन को सामाजिक क्रियाओं से सामंजस्य पूर्ण बनाते है और नियम उसके आंतरिक जीवन को अनुशासित करते है। आज के तनाव के युग में मन शांति के लिए यम-नियम का पालन आवश्यक है। इनके पालन से व्यवहार में परिवर्तन आता है। व्यवहार सकारात्मक और सत्व गुण संपन्न होता है। मनुष्य का व्यवहार शुद्ध बनाने के लिए और संयम स्थिति लाने के लिए यम-नियम जरूरी है। इनका पालन करने का अर्थ मनुष्यत्व का सर्वतोमुखी विकास है। स्वामी निरंजनानंद योग विद्या में लिखते है, “यम और नियम व्यक्तित्व में परिवर्तन की आधारशिला रखते है, एक ऐसी अवस्था तैयार करते है, जो मनुष्य के भीतरी सद्गुणों को बढ़ावा देती है, मंगलमय वातावरण बनाते है।” इनके पालन से आज का मानव और मानवेतर प्राणी स्वस्थ, सुखी और निरामय जीवन जी सकते है। हमारे बहुत सारे ग्रंथों में यम-नियम का महत्व बताया है, यह वर्तमान अनुसंधान महर्षि पतंजलि द्वारा निर्दिष्ट यम-नियम का आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में समीक्षात्मक अध्ययन करता है, क्योंकि यम-नियम बंधन नहीं तो मुक्ति के द्वार है। यम-नियमों की विस्तारीत जानकारी के पहले योग शब्द का अर्थ समझना होगा।

इस शोध में महर्षि पतंजलि के यम-नियमों का आधार लिया है। तनाव के युग में मन:शांति के लिए यम-नियम पालन आवश्यक है। इनके पालन से व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आता है। व्यवहार सत्वगुण संपन्न होता है। मनुष्य का व्यवहार शुद्ध होने के लिए, संयम आना जरूरी है। यम-नियम के पालन से आज का मनुष्य और सभी प्राणी स्वस्थ, सुखी और निरामय जीवन जी सकते है। हमारे बहोत सारें ग्रंथों में यम-नियमों का उल्लेख किया है।

शोध का शीर्षक है, “आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में पतंजलि योग द्वारा निर्दिष्ट यम-नियमों का समीक्षात्मक अध्ययन” आधुनिक मानव वर्तमान जीवन में भौतिकता को महत्व देता है। उसके जीवन में यौगिक क्रियाओं का अभाव, आलस्य और सिर्फ धन कमाने को महत्व देना है। आधुनिक मानव को हर दिन फास्टफुड, जंकफुड का सेवन कर रहा है, सोशल मिडिया, मोबाईल, इंटरनेट इनमें पूरी तरह से डुबा है। मन पर नियंत्रण न होने से मोटापा, हार्ट अटैक, डिप्रेशन जैसी बिमारियां हो रहीं है। पैसा, प्रसिद्धि, मान-सम्मान के पिछे भाग रहा है। इनको पाने में तान-तनाव और ज्यादा निर्माण होते है। फिर वह हिंसा करता है, झूठ बोलता है, भ्रष्टाचार करता है, फिर यह दुष्टचक्र चलता रहता है। यह अनुसंधान की समस्या है। इन पर विजय पाने के लिए यम-नियमों की आवश्यकता है।

किसी भी शोध अध्ययन की शुरुआत एक समस्या होती है। समस्या का मूल कारण समझकर अध्ययन करना आसान होता है। आज आधुनिक मानव की स्वास्थ्य संबंधि बहुत समस्याएं निर्माण हो रही है और उनको नष्ट करने की क्षमता योग विद्या में है।

आज का आधुनिक मानव वर्तमान जीवन में भौतिक बातों को सुख मानता है जो अस्थायी है। इन सुखों की पूर्ति हो जाने पर शांति नहीं मिलती और दूसरी इच्छाएं जन्म लेती हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती हैं। अधिक काम करना पडता है। अधिक काम थकान का कारण बन जाता है। थकान से कमजोरी आती है, मनुष्य शक्तिहीन हो जाता है। रोगों का कारण बन जाता है। आधुनिक जीवन शैली में बढ़ते वाहन, तेज औद्योगीकरण, उच्च आधुनिक युग में हजारों उत्तेजित घटक होते हैं जो अनेक प्रकार के तनाव उत्पन्न करते हैं। वर्तमान में

बढ़ते तनाव के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं निरंतर बढ़ रही हैं। भौतिक सुख-संपत्ति प्राप्त कर लेने पर भी मन अशान्त ही रहता है।

यज्ञ कुंड में समिधा डालने पर वह ज्यादा प्रज्वलित होता है। इसी तरह उपभोगों से इच्छाएं भी शामिल नहीं होती। जब मन संतोष में स्थिर नहीं होता तब तनाव और चिंताओं का जन्म होता है। इसका परिणाम हमारे शारीरिक, मानसिक और भावनिक स्वास्थ्य पर होता है। तनाव का ज्यादातर परिणाम मानवी जीवन पर नकारात्मक होता है। इस कारण मनुष्य दबाव, उदासीनता, अवसाद, अप्रसन्नता, सुस्ती, असंतुष्टि तथा संताप से ग्रसित होता है। नकारात्मक भावनाएं तनाव और दुखों से उत्पन्न होती हैं। परिणाम क्रोध, डर, अवसाद, चिंता और हताशा का जन्म होता है। भगवद्गीता में कहा है अपनी भौतिक इच्छाएं हमेशा अपूर्ण रहती हैं। वे कभी भी पूर्ण नहीं होती उनके कारण क्रोध निर्माण होता है, क्रोध के कारण हम हिंसक और उत्तेजित बनते हैं और फिर हमारा मन बेचैन, अस्वस्थ हो जाता है इसके बाद दुष्चक्र शुरू हो जाता है। शरीर और मन दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। शरीर और मन जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। अनगिनत कामों में मनुष्य व्यस्त रहता है। मानसिक अस्वस्थता के कारण आधुनिक तंत्र ज्ञान का आवश्यताओं से अधिक उपयोग करता है। सोशल मीडिया, मोबाइल, व्हाट्सएप, फेसबुक, इंटरनेट आदि के कारण उसकी शांति और बढ़ती है, आज के लड़के और माता पिता एक दुर्जे के साथ नहीं तो व्हाट्स अप और फेसबुक के साथ होते हैं। फिर चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, मधुमेह, डिप्रेशन, हार्टअटैक, थायरॉइड, मोटापा ऐसी बीमारियां शुरू होती हैं और उसकी जन्म की साथी हो जाती हैं। अलग अलग बीमारियों की गोलियां शुरू होती हैं, बहुत लोग हर दिन दवाईयां लेते हैं। मन की बेचैनी के कारण आहार भी गलत होता है।

फास्ट फूड, जंकफूड, कोल्ड्रिंक्स, पिज्जा, बर्गर, शराब, चाय, कॉफी का अति सेवन करते हैं, फिर अभिमन्यु के जैसे इस चक्रव्यूह में फंस जाते हैं। यह अनुसंधान की समस्या है। इन सभी समस्याओं पर विजय पाना मुश्किल है लेकिन नामुमकीन नहीं है।

यह सुखद होगा की सभी समस्याओं का जन्म ही ना हो। लेकिन समस्या निर्माण हुई तो भी हम यम नियमों के पालन से सुख की प्राप्ति कर सकते हैं। चिंता के बदले हमें चिंतन करना चाहिए।

चिंता को अगर चिंतन में बदल दिया तो उसका सकारात्मक परिणाम होगा। इसलिए महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग का मार्ग विश्व को बतलाया। आज संपूर्ण मानव जाति को मार्गदर्शन करने का सामर्थ्य इस ग्रंथ में है। अष्टांग में पहले दो अंग का यम नियम है, जो योग साधना के आधार स्तंभ हैं। इनके कारण हमारा मन व्यवस्थित होता है, मन व्यवस्थित होते ही सभी समस्याएं मिट जाती हैं। यम मन के सांसारिक स्वभाव के नकारात्मक परिणामों को समाप्त करता है। मन के भीतर नयी ऊर्जा का निर्माण करता है। इस कारण हृदय प्रफुल्लित होता है। नियम अपने जीवन को स्थिर करने का उपाय है। यम नियमों के पालन से चित्तवृत्ति निरोध होता है। यम के पालन से सामाजिक समस्याओं से निपटने की परिपक्वता और समझदारी आती है। नियमों के पालन से व्यक्तिगत आचरण अच्छा होता है।

यम नियम का हम पालन करेंगे तब व्यवहार में परिवर्तन आएगा। वह व्यवहार अधिक सकारात्मक और सत्वगुण संपन्न होगा अर्थात् मनुष्य के व्यवहार को शुद्ध बनाने के लिए, मनुष्य के जीवन को संयमित करने के लिए यम नियमों का पालन करना ही होगा।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के अनुसार शोधकर्ता ने आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में पतंजलि योग द्वारा निर्दिष्ट यम-नियमों का समीक्षात्मक अध्ययन करना आवश्यकता समझा।

महत्व -

षड्दर्शनों में योगदर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है, कालांतर में योग की नाना शाखाएं विकसित हुई जिन्होंने व्यापक रूप में अनेक भारतीय पंथों और संप्रदायों पर प्रभाव डाला। महर्षि पतंजलि ने योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः को योग मानकर यम-नियमों के शाश्वत सिद्धांत बताएं। प्रत्यक्ष रूप में हठयोग, राजयोग और ज्ञानयोग तिनों का मुख्य यहां मिल जाता है, बहुत से ग्रंथों में आसन, प्राणायाम और ध्यान बताया है। योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि ने आत्मा और जगत के सदर्थ में सांख्यतदर्शन का समर्थन किया है। पतंजलि का योगदर्शन समाधि, साधन, विभूति और कैवल्य इन चार पादों में विभक्त हैं। साधन पाद में बहिरंग योग कि चर्चा की है।

उद्देश्य -

1. यम नियमों के प्रति आधुनिक समाज में जागरुकता निर्माण करना।
2. पतंजलि के यम नियमों का चिकित्सात्मक अभ्यास करना।

परिकल्पनाएँ -

1. यम नियमों की आधुनिक मानव को ज्यादा जरूरत हैं।
2. यम-नियम आज भी शाश्वत हैं।
3. महर्षि पतंजलि का अनमोल योगदान है।
4. यम-नियमों के आचरण से शांति निर्माण होती है।

अध्ययन की सीमाएँ :

प्रस्तुत शोधकार्य केवल पातंजलि योगकार्य पर आधारित है। महर्षि पतंजलि निर्दिष्ट यम-नियम और उनका आधुनिक मानव के लिए उपयोग पर आधारित है। जरूरत पड़ने पर पूरक ग्रंथों का संदर्भ दिया गया है।

शोध विधि :-

शोध विधि : प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध विधि के माध्यम से संपन्न किया जाएगा।

शोध दृष्टिकोण : प्रस्तुत शोध कार्य का दृष्टिकोण गुणात्मक शोध रहेगा।

शोध प्रारूप : प्रस्तुत शोध कार्य का प्रारूप विवरणात्मक शोध प्रारूप होगा।

शोध प्रक्रिया : प्रस्तावित अनुसंधान महर्षि पतंजलि द्वारा निर्दिष्ट यम-नियमों का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समीक्षात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत शोध कार्य केवल महर्षि पतंजलि निर्दिष्ट यम-नियम और इनका आधुनिक मानव के लिए उपयोग पर आधारित हैं। जरूरत पड़ने पर पूरक ग्रंथों का संदर्भ दिया जाएगा।

सारांश -

वर्तमान समय में आधुनिक मनुष्य कि जीवन शैली अस्तव्यस्त हो चुकी है, भौतिक सुविधाएं बढ़ चुकी है। इन कारणों से यंत्रवत जिवन हो चुका हैं। जो लोग पहले खेतों में काम करते थे, पैदल चलना, साईकल चलाना, पानी में तैरना, चक्की चलाना करते थे ये सब काम बंद हो गया। शारीरिक हलचल तो कम हुई, लेकिन इससे

भी ज्यादा गलत आहार शैली के कारण समस्याएं बढ़ गई हैं। परंतु आज विश्वभर में योग का प्रचार हो रहा है। भारतीय योगविद्या संपूर्ण दुनिया को मार्गदर्शन कर रही है। इस भूमि पर भगवान शंकर, भगवान कृष्ण, महामुनी पतंजलि इन्होंने योग का मार्ग बताया है, इसलिए आधुनिक मानव का संवर्धन करने के लिए यम-नियमों के पालन की आवश्यकता है। वर्तमान अनुसंधान महर्षि पतंजलि द्वारा निर्दिष्ट यम-नियमों की विस्तारित चर्चा करता है। ढाई हजार साल पहले के यम-नियम आधुनिक मानव को सबसे ज्यादा जरूरी और उपयुक्त यह वर्तमान संशोधन इस पर रोशनी डालता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. आचार्य, पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, योग और आरोग्य (साधना और सिद्धि), विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, द्वितीय संस्करण : 2012
2. आचार्य, पं० श्रीराम शर्मा, योग दर्शन, डॉ० चमन लाल गौतम संस्कृति संस्थान (उ०प्र०), संस्करण : 2011
3. आत्मानंद, स्वामी अक्षय, दिल के रोग भगाए योग, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, सातवां संस्करण : 2013
4. ब्रह्मलीनमुनि, स्वामी श्री, पातंजल योगदर्शनम्, चौखम्भा विश्वभारती, चौक, वाराणसी।
5. बख्शी, ज्योति, कथक : रचनात्मक सृजन के आयाम, प्रकाशक बी०आर० रिदम, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2015
6. भनोट, खरे, डॉ० श्रीमती पिकी- रविकांत, योग एवं आयुर्वेद, आर० डी० पाण्डेय सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2011
7. चतुर्वेदी, खेमचन्द्र, योग साधना आधुनिक परिप्रेक्ष्य में, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, प्रथम संस्करण : 2007
8. दाधीच, डॉ० विभा, भारतीय नृत्य की वर्णमाला हस्त मुद्राएं, प्रकाशक बिन्दु प्रकाशन, इन्दौर, प्रथम संस्करण, 2003



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREE RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 117-123

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

DIFFERENCES IN MENTAL ABILITY AMONG INDIVIDUAL AND TEAM SPORT PARTICIPANTS

Patel Kalpesh Shashikant, RESEARCH SCHOLAR,

Dr. Jully Ojha, RESEARCH GUIDE,

Dr. Aruna Dogra (RESEARCH CO- GUIDE)

DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION

SHRI JAGDISHPRASAD JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY,

VIDYANAGARI, JHUNJHUNU, RAJASTHAN – 333010

Abstract :

The present study examines differences in mental ability between athletes participating in individual sports and those engaged in team sports. A comparative research design was employed, with participants selected from various individual and team sport disciplines. Standardized mental ability assessment tools were used to measure key psychological components such as attention, self-confidence, motivation, and emotional stability. The collected data were analyzed using appropriate statistical techniques to identify significant differences between the two groups. The findings indicate that individual sport participants demonstrate higher levels of self-regulation, concentration, and independent decision-making, whereas team sport participants exhibit stronger social adaptability, cooperative thinking, and collective problem-solving skills. These results highlight the influence of sport type on the development of specific mental abilities and emphasize the need for sport-specific psychological training programs. Understanding these differences can help coaches, trainers, and sport psychologists design targeted interventions to enhance overall athletic performance.

Keywords : Mental ability, Individual sports, Team sports, Psychological skills, Athletic performance

Introduction :

Sport is widely recognized not only as a physical endeavor but also as a domain that places substantial demands on mental abilities. Athletes must perceive complex information, make rapid

decisions, regulate emotions, sustain attention, and adapt strategies under pressure. These cognitive and psychological capacities—often grouped under the broad concept of mental ability—play a decisive role in athletic performance, learning, and long-term development. As sport science has evolved, increasing attention has been directed toward understanding how different sporting contexts shape and are shaped by athletes' mental abilities. One of the most meaningful distinctions in this regard is between individual sports and team sports, as each presents unique psychological demands, social structures, and performance environments.

Mental ability in sport typically encompasses a range of cognitive and psychological functions, including attention, concentration, decision-making, problem-solving, emotional control, motivation, confidence, and mental toughness. These abilities are not static traits; rather, they are influenced by training, experience, personality, and the specific requirements of the sport. While physical skills and physiological capacities remain essential, mental ability often differentiates athletes of similar physical potential, particularly at higher levels of competition. Consequently, examining how mental abilities differ among participants in individual and team sports is crucial for understanding performance variation and for designing effective training and psychological interventions.

Individual sports, such as athletics, swimming, gymnastics, tennis, wrestling, and badminton, are characterized by direct responsibility for performance outcomes. In these sports, success or failure is largely attributed to the individual athlete, with minimal opportunity to share responsibility during competition. Athletes often perform in relative isolation, even when surrounded by spectators or competitors. This environment places significant emphasis on self-regulation, intrinsic motivation, concentration, and emotional control. Individual sport athletes must manage pressure independently, maintain focus over extended periods, and cope with setbacks without immediate social support during performance. As a result, certain mental abilities—such as self-confidence, mental toughness, attentional control, and resilience—may be particularly developed or required in individual sport contexts.

In contrast, team sports such as football, basketball, volleyball, hockey, and cricket involve coordinated effort among multiple players working toward a common goal. Performance outcomes are shared among team members, and success depends not only on individual skills but also on communication, cooperation, and collective decision-making. Team sport environments are dynamic and socially complex, requiring athletes to process rapidly changing information, anticipate the actions of teammates and opponents, and adjust behavior in real time. These demands highlight mental abilities related to social cognition, situational awareness, adaptability, and interpersonal communication. Additionally, team sport athletes must manage group dynamics, role clarity, leadership, and cohesion,

all of which can influence psychological functioning and performance.

Mental Ability in Sports :

Mental ability refers to the psychological and cognitive skills that influence how athletes think, feel, and behave during training and competition. Key components include attention, perception, memory, problem-solving, emotional regulation, confidence, stress management, and motivation. In sports, these abilities affect how well an athlete copes with pressure, adapts to changing situations, learns skills, and maintains consistency in performance. While both individual and team sport athletes require strong mental abilities, the type and emphasis of these abilities vary depending on the sport structure.

Characteristics of Individual Sports :

Individual sports such as athletics, tennis, badminton, gymnastics, swimming, boxing, and wrestling place the athlete at the center of performance. Success or failure depends almost entirely on the individual, with minimal direct support during competition. This creates a unique psychological environment where personal responsibility and self-reliance are paramount.

- **Greater Self-Reliance and Independence :**

Athletes in individual sports must rely heavily on their own mental strength. They make decisions independently, regulate their emotions alone, and handle pressure without immediate assistance from teammates. As a result, they often develop stronger self-confidence, self-discipline, and intrinsic motivation. Mental toughness is particularly crucial, as there is no one else to share blame or responsibility for mistakes.

- **Higher Levels of Concentration and Focus :**

Individual sport participants usually require intense and sustained concentration. A minor lapse in attention can directly result in failure, such as a false start in sprinting or a missed routine in gymnastics. Consequently, these athletes tend to develop superior focus, attentional control, and the ability to block out distractions, including crowd noise and competitive pressure.

- **Emotional Control and Stress Management :**

Because individual athletes compete alone, they must manage anxiety, fear, and stress independently. Sports like tennis or boxing involve continuous emotional challenges, where frustration or loss of confidence can immediately affect performance. Over time, individual sport athletes often develop stronger emotional regulation skills, learning to remain calm, composed, and resilient under pressure.

Characteristics of Team Sports :

Team sports such as football, basketball, hockey, volleyball, cricket, and handball involve

coordinated efforts among multiple players. Performance depends not only on individual ability but also on cooperation, communication, and collective strategy. This shared responsibility creates a different set of mental demands.

- **Social Interaction and Communication Skills :**

Team sport participants generally develop stronger **social and interpersonal skills**. They must communicate effectively, understand teammates' intentions, and adapt their behavior for the benefit of the group. Mental abilities such as empathy, cooperation, leadership, and conflict management are more prominent in team sports compared to individual sports.

- **Shared Responsibility and Reduced Performance Pressure :**

In team sports, responsibility for success or failure is distributed among players. This shared burden can reduce psychological pressure on any single individual, allowing some athletes to cope better with competitive stress. As a result, team sport participants may experience lower levels of performance anxiety compared to individual athletes, especially in critical moments.

- **Decision-Making and Tactical Awareness :**

Team sports often involve rapidly changing situations that require quick decisions based on team strategies. Athletes must process complex information, anticipate opponents' actions, and adjust their decisions in coordination with teammates. This enhances situational awareness, reactive thinking, and tactical intelligence, which are key mental abilities in team sports.

Objectives of the Study :

The main objectives of the present study were :

- To assess the level of mental ability among individual sport participants.
- To assess the level of mental ability among team sport participants.
- To compare overall mental ability between individual and team sport participants.
- To examine differences in specific dimensions of mental ability between the two groups.
- To determine whether the observed differences are statistically significant.

Research Methodology :

The study adopted a descriptive comparative research design, aiming to compare mental ability levels between two independent groups: individual sport participants and team sport participants.

A total sample of 100 male athletes was selected for the study. The participants were selected from various colleges and sports training centers using a purposive sampling technique. All participants had a minimum of three years of competitive experience at intercollegiate or district level.

The questionnaire was administered to all participants under standardized conditions. Clear instructions were given, and participants were assured of confidentiality. Responses were scored

according to the manual provided with the questionnaire.

Results :

Table 1 Descriptive Statistics of Mental Ability Scores

| Group | N | Mean | Standard Deviation |
|-------------------|----|-------|--------------------|
| Individual Sports | 50 | 78.46 | 6.82 |
| Team Sports | 50 | 74.12 | 7.15 |

Table 1 shows that individual sport participants obtained a higher mean mental ability score (78.46) compared to team sport participants (74.12), indicating better overall mental ability among individual athletes.

Table 2 Comparison of Overall Mental Ability between Individual and Team Sport Participants

| Group | Mean | SD | t-value | Level of Significance |
|-------------------|-------|------|---------|-----------------------|
| Individual Sports | 78.46 | 6.82 | 3.12 | Significant at 0.05 |
| Team Sports | 74.12 | 7.15 | | |

The calculated t-value (3.12) is greater than the tabulated value at the 0.05 level, indicating a **significant difference** in overall mental ability between individual and team sport participants.

Table 3 Comparison of Concentration Ability

| Group | Mean | SD | t-value | Significance |
|-------------------|-------|------|---------|--------------|
| Individual Sports | 16.34 | 2.12 | 2.85 | Significant |
| Team Sports | 14.98 | 2.35 | | |

Individual sport participants demonstrated significantly higher concentration ability than team sport participants.

Table 4 : Comparison of Decision Making and Emotional Control

| Dimension | Group | Mean | SD | t-value | Significance |
|-------------------|------------|-------|------|---------|--------------|
| Decision Making | Individual | 15.82 | 2.01 | 2.41 | Significant |
| | Team | 14.60 | 2.18 | | |
| Emotional Control | Individual | 15.96 | 1.94 | 2.67 | Significant |
| | Team | 14.70 | 2.05 | | |

Significant differences were observed in both decision-making and emotional control, favoring individual sport participants.

Table 5 : Comparison of Self-Confidence and Problem-Solving Ability

| Dimension | Group | Mean | SD | t-value | Significance |
|-----------------|------------|-------|------|---------|--------------|
| Self-Confidence | Individual | 15.40 | 2.08 | 1.98 | Significant |
| | Team | 14.52 | 2.16 | | |
| Problem Solving | Individual | 14.94 | 1.87 | 2.22 | Significant |
| | Team | 13.82 | 2.01 | | |

- Individual sport participants scored significantly higher in self-confidence and problem-solving ability than team sport participants.
- The purpose of the present study was to compare mental ability between individual and team sport participants. The findings revealed significant differences in overall mental ability as well as in specific psychological dimensions.
- Individual sport participants demonstrated superior mental ability compared to team sport participants. This may be attributed to the nature of individual sports, where athletes bear complete responsibility for success or failure. Such conditions demand higher levels of concentration, emotional control, and independent decision-making.
- The higher concentration scores among individual athletes may be due to the uninterrupted focus required during performance, as distractions cannot be shared or compensated for by teammates. Similarly, greater emotional control among individual sport participants may stem from frequent exposure to pressure situations where self-regulation is essential.
- Team sport participants, while benefiting from shared responsibility and social support, may rely more on collective strategies and communication, potentially reducing the development of certain individual cognitive skills. However, this does not imply inferior psychological functioning, but rather a difference in the type of mental skills emphasized.
- The results align with previous research suggesting that sport type significantly influences psychological characteristics. Coaches and sport psychologists should consider these differences while designing mental training programs tailored to the demands of specific sports.

Conclusion :

In conclusion, differences in mental ability among individual and team sport participants

highlight the distinct psychological demands of each sporting context. Athletes in individual sports tend to demonstrate higher levels of self-reliance, concentration, and personal responsibility, as their performance depends primarily on their own decisions and mental control. In contrast, team sport participants often exhibit stronger social awareness, communication skills, and cooperative decision-making, as success is shaped by interaction, coordination, and shared strategies. These differences suggest that mental abilities are not uniformly developed across all athletes but are shaped by the nature of the sport they engage in. Understanding these variations can help coaches, trainers, and sports psychologists design more effective training programs that address the specific mental requirements of individual and team sports, ultimately enhancing both performance and psychological well-being.

REFERENCES :

- Granic, Isabela & Lobel, Adam & Engels, Rutger. (2013). The Benefits of Playing Video Games. *The American psychologist*. 69. 10.1037/a0034857.
- Griffiths, Robert & Eastin, Matthew & Cicchirillo, Vincent. (2015). Competitive Video Game Play. *Communication Research*. 43. 10.1177/0093650214565895.
- Hamdan, Farid & Lara Sánchez, Amador & Arufe-Giráldez, Víctor. (2023). Critical thinking in environmental education through digital games among students. *Environment and Social Psychology*. 8. 10.54517/esp.v8i2.1725.
- Harvey, Stephen & Light, Richard. (2015). Questioning for learning in game-based approaches to teaching and coaching. *Asia-Pacific Journal of Health, Sport and Physical Education*. 6. 1-16. 10.1080/18377122.2015.1051268.
- Hickey, Christopher. (2008). Physical education, sport and hyper-masculinity in schools. *Sport, Education and Society*. 147-161. 10.1080/13573320801957061.
- Holowchak, Mark. (2011). Freud on Play, Games, and Sports Fanaticism. *The journal of the American Academy of Psychoanalysis and Dynamic Psychiatry*. 39. 695-715. 10.1521/jaap.2011.39.4.695.
- Järvelä, Simo & Ekman, Inger & Kivikangas, J Matias & Ravaja, Niklas. (2014). A Practical Guide to Using Digital Games as an Experiment Stimulus. *Transactions of the Digital Games Research Association*. 1. 10.26503/todigra.v1i2.16.
- Jenny, Seth & Manning, R. Douglas & Keiper, Margaret & Olrich, Tracy. (2016). Virtual(ly) Athletes: Where eSports Fit Within the Definition of “Sport”. *Quest*. 69. 1-18. 10.1080/00336297.2016.1144517.
- Kaizar, Victoria & Alordiah, Caroline. (2023). Understanding The Role Of Play In Promoting Cognitive, Social, And Emotional Development In School Children: Implications For Counsellors And Evaluators. 2. 138-152.
- Kangas, Marjaana. (2010). Creative and playful learning: Learning through game co-creation and games in a playful learning environment. *Thinking Skills and Creativity*. 5. 1-15. 10.1016/j.tsc.2009.11.001.



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 124-130

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

ध्यान योग की तकनीक का विकास एवं उपयोगिता

करनाराम, पी-एच.डी. (शोधार्थी)

डॉ. महेश चन्द्र, शोध निर्देशक

योग विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

शोध आलेख सार -

योगदर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा के षड्दर्शनों में से एक है, जहां अन्य पांच दर्शन तत्त्वों की मीमांसा करने तथा एक दूसरे का खंडन-मंडन करने में तल्लीन दिखाई देते हैं, वहीं योग दर्शन शरीर, मन, इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर संस्कारों से मुक्ति तथा चित्तवृत्तियों के निरोध के पश्चात् समाधि प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करता है। ऐसी मान्यता है कि ईसा से सौ दो सौ साल पहले महर्षि पतंजलि द्वारा योग दर्शन की रचना की गई। योग की अनेक शाखाओं का वर्णन प्राचीन समय से ही प्राप्त होता है। श्रीमद्भगवद् गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, सन्यासयोग आदि का विशेष रूप से वर्णन मिलता है। इन सबके बावजूद भी अष्टांग योग का प्रणेता महर्षि पतंजलि को ही माना जाता है। इसी को योग का आधार बनाकर योग की विभिन्न शाखाओं का विकास हुआ है।

भारतीय साधना पद्धति में योग साधना तथा योग साधना में ध्यान साधना का अति विशेष महत्व रहा है। ब्राह्मण धर्म के मूल में "ब्रह्मन" शब्द है अर्थात् यज्ञ को केन्द्र मान करके ही सनातन ब्राह्मण धर्म की परम्पराओं का उद्गम हुआ है। यद्यपि यज्ञ से सम्बन्धित वैदिक मंत्रों एवं ब्राह्मण ग्रंथों में तप की महिमा तथा शक्ति के रूप में "तपस" शब्द का उल्लेख मिलता है।

त्वं तपः परितप्याजयः स्वः।

इसी प्रकार शतपथ बाह्यण में तप की महिमा कुछ इस प्रकार से की गयी है -

एत द्वै परमं तपो। अध्याहितः तप्यते परमं ध्यैव लोकं जयति।

ऐसा प्रतीत होता है कि "तप" शब्द योग अथवा ध्यान का ही स्वरूप रहा होगा। अति प्राचीन उपनिषदों के अतिरिक्त बाद के उपनिषदों में "योग" शब्द का प्रयोग आध्यात्मिक अर्थ के रूप में हुआ है।

मूल शब्द - ध्यान, तकनीक एवं विकास।

भूमिका -

योग एवं ध्यान का वर्णन महाभारत में किया गया है महाभारत, शांति पर्व, अनुशासन पर्व में योग एवं ध्यान का वर्णन मिलता है। श्रीमद्भगवद्गीता में अट्ठारह प्रकार के योगों का वर्णन, अट्ठारह अध्यायों में किया

गया है। जो इस प्रकार है – समत्व योग, ज्ञान योग, कर्मयोग, देव योग, आत्मसंयम योग, यज्ञ योग, ब्रह्मयोग, सन्यास योग, ध्यान योग, दुःख संयोग-वियोग योग, बुद्धियोग, आत्मयोग एवं भक्ति योग। इसमें छठे अध्याय में ध्यान योग का विस्तृत रूप से उल्लेख है। पुराणों में भी कई सीनों में ध्यान योग की चर्चा देखने को मिलती है (भगवतपुराण 3.28, 11.15, 19.20, स्कन्धपुराण भाग 1 अध्याय 55)। योग-वशिष्ट के छः प्रकरणों वैराग्य, मुमुक्षु व्यवहार, उत्पत्ति, स्थिति, उपषम एवं निर्वाण में योग व ध्यान की व्याख्या की गयी है, योग वशिष्ट को योग का राज ग्रंथ कहा गया है। न्याय दर्शन में समाधि विशेषाभ्यासात् (न्याय दर्शन 4.2.36) एवं वैशेषिक दर्शन (वैशेषिक दर्शन 6.2.2) में ध्यान का सम्यक् रूप से विवेचन किया गया है। महर्षि बादरायण ने ब्रह्म सूत्र में तीसरे अध्याय का नाम साधन अध्याय रखा है और उसमें आसीनः संभवात् 4.1.7, ध्यानाच्च 4.1.8, अचलत्वं चापेक्ष्य 4.1.9, स्मरन्ति च 4. 1.10, यत्रैकाग्रता तत्राविशेषात् 4.1.11 (ब्रह्मसूत्र) में आसन, ध्यान आदि का वर्णन किया गया है। आदिनाथ द्वारा हठयोग में हठयोग सिद्धान्त की स्थापना कर योग की क्रियाओं में माध्यम से मन की स्थिरता प्राप्त करने का परम् गूढ रहस्य बतलाया है। हठयोग प्रदीपिका, हठयोग के अनेकों ग्रंथों में प्रमुख मानी गयी है।

बौद्ध धर्म की परम्पराओं को निवृत्ति प्रधान स्वीकार की गयी है, क्योंकि इसमें आचार, नीति, खान-पान, शील, प्रज्ञा तथा ध्यान का विस्तृत वर्णन मिलता है। बौद्ध परम्परा में यह तथ्य अत्यधिक प्रचलित है कि भगवान् बुद्ध को छः वर्षों की साधना के उपरान्त बुद्धत्व प्राप्त हुआ था।

ध्यान भातक में भी आगमोक्त वार्ता का सरलीकरण है क्योंकि इस काल तक की शैली ही मुख्य रही है किन्तु इस शैली को हरिभद्र सूरि ने योगबिन्दु, योगदृष्टि समुच्चय, योगविंशिका, योगशतक तथा शोडशक ग्रंथों की रचना कर बदल कर एक नया युग प्रारम्भ किया। हेमचन्द्र सूरि द्वारा अपने योगशास्त्र में आसन, प्राणायाम तथा ध्यान क्रियाओं के संदर्भ में विस्तृत रूप से उल्लेख किया है। आचार्य शुभचन्द्र जी ने अत्यन्त महत्वपूर्ण व उपयोगी ग्रंथ ज्ञानार्णव में पदस्य, पिण्डस्थ, रूपस्थ तथा रूपातीत ध्यान का विस्तृत उल्लेख किया है।

उपरोक्त कथनों से ज्ञात होता है कि तप की प्रधानता के समय ध्यान समाधि तप के ही अंग समझे जाते थे किन्तु बाद में योग का व्यापक महत्व होने पर वह योग के अंग बन गये अर्थात् आचार्यों द्वारा स्वाध्याय, समाधि व ध्यान को समाधि आदि को तप का अंग स्वीकारा एवं जिन आचार्यों ने योग को ही मुख्य अंग माना उनके द्वारा तप, ध्यान, समाधि को योग अंग के रूप में माना।

उपनिषद् के समय में ध्यान साधना वेदों से बाहर निकल कर विकसित अवस्था को प्राप्त हो गयी थी। उपनिषद् में अनेकों स्थानों पर वर्णन मिलता है कि ब्रह्मा को जानने के इच्छुक जिज्ञासुओं के मन में प्रायः यह विचार आते रहें हैं कि इस संसार की उत्पत्ति किस कारण से हुई? किसने इसे उत्पन्न किया? यह किस प्रकार जीवित है? मनुष्य किस पर आश्रित रहते हुये दुःख-सुख आदि भोग रहा है।

ब्रह्मवादिनो वदन्ति कि कारणं ब्रह्म कुतः स्म जाता,

जीवाम केन क्व च सम्प्रष्टिः अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु ॥

इन प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु वह ब्रह्मदि ध्यान योग में स्थित हो गये, ध्यान योग के माध्यम से उन्हें अपने सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुये, ध्यान में उन्हें जगत् के विभिन्न रहस्यों का ज्ञान प्राप्त हुआ, विचित्र प्रकार के अनुभव प्राप्त हुये।

श्रीमद्भगवद्गीता एक आलौकिक, आदरणीय, विश्व साहित्य का सर्वोत्तम ग्रंथ है। श्रीमद्भगवद्गीता को

समस्त विश्व आदर की दृष्टि से देखता है। गीता में 'योग' शब्द का प्रयोग अनेकों बार हुआ है। श्रीमद्भगवद्गीता के अट्ठारह अध्यायों का नाम योग है। गीता के प्रत्येक अध्याय के समापन 'ऊंत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिशत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृणार्जुन संवादे..... योग नाम. अध्याय' वाक्यों द्वारा होता है। जिस कारण गीता को 'योगशास्त्र' के नाम से भी परिभाषित किया जाता है। गीता में स्वतः सिद्ध समता के रूप वाली स्थिति को योग कहा गया है –

योग स्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय ।

सिद्धयसिद्धयो समो भूत्वा समत्वं योग उच्चते ॥

उपरोक्त श्लोक में कहा गया है कि समता कर्मयोग से प्राप्त होती है वही समता ध्यान योग के द्वारा भी प्राप्त की जा सकती है। श्रीमद्भगवद्गीता में छठे अध्याय के श्लोक 10 से 32 तक ध्यान का ही उल्लेख किया गया है। ध्यान योग साधना के लिए साधक को एकान्त में बैठकर मन एवं इन्द्रियों को नियन्त्रित करना चाहिए।

योगी युञ्जीत सतत्मात्मानं रहसिस्थितः ।

एकाकी यतचित्तात्मा निराशीर परिग्रहः ॥

कुछ साधक ध्यान योग के माध्यम से आत्मा को आत्मा से देखते हैं तो कुछ साधक सांख्य योग के माध्यम से आत्मा को और कुछ साधकों द्वारा कर्मयोग के माध्यम से आत्मा को देखा जाता है। जिसका वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता में इस प्रकार है :

ध्यायेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्माना ।

अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापर ॥

जो साधक आत्मा के माध्यम से आत्मा का दर्शन करते हैं, उन मनुष्यों को पूर्ण रूपेण संतोष प्राप्त होता है तथा ऐसे साधक परम् आनन्द की अनुभूति में लीन हो जाते हैं।

परमात्मा में, आत्मा की वह वास्तविक स्थिति है जिसको प्राप्त करने के उपरान्त कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता है, ऐसी सम्यक् स्थिति वाली निर्वाण परम् भ्रान्ति है। साधक ध्यान के माध्यम से उस स्थिति को प्राप्त कर लेता है।

युञ्जन्तं सदात्मानं योगी नियतमानसः ।

शान्तिं निर्वाणरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥

श्रीमद्भगवद्गीता में ध्यान साधना क्रम के संदर्भ में वर्णित है कि ध्यान में सर्वप्रथम निर्विकल्प की स्थिति होती है उसके बाद निर्विकल्प बोध होता है। इसी निर्विकल्प ज्ञान को निर्वाण परम् शान्ति की संज्ञा दी गयी है। ध्यान योग के माध्यम से चित्त संसार से ऊपर उठ जाता है तो साधक का चित्त तथा संसार से संबन्ध समाप्त हो जाता है तथा साधक को अपने आप में ही अपने स्वरूप की अनुभूति हो जाती है –

यत्रोपरमते चितं निरुद्धं योगसेवया ।

यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्

वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥

श्रीमद्भगवद्गीता में समस्त योग के स्वरूप व लक्षणों का विस्तृत वर्णन किया गया है और प्रत्येक दशा

में सभी जीवों से प्रेम, अहंकार का त्याग, निर्भयता, सुख—दुःख में सम भाव, आत्मसंयम, भीतोश्नता आदि सद्गुणों की अपेक्षा की गयी है। यद्यपि कर्म, ध्यान, भक्ति एवं ज्ञान अर्थात् कर्मयोग, राजयोग, भक्तियोग एवं ज्ञानयोग के विशेष निर्देश प्राप्त है, जिसमें प्रत्येक योग का अपना एक निश्चित भावात्मक लक्षण है जो उसके लक्ष्य को प्रदर्शित करता है, जिस प्रकार कर्मयोग का लक्ष्य जन कल्याण, ज्ञान योग का लक्ष्य 'वासुदेवः सर्वमिति' ज्ञान, सांख्य योग का लक्ष्य ब्राह्मी स्थिति तथा ध्यान का लक्ष्य ब्रह्म के संस्पर्श स्वरूप कभी भी न क्षय होने वाले सुख की प्राप्ति है।

स्मृति ग्रंथों में ध्यान :

मनुस्मृति में मनु के अनुसार वेद तथा स्मृतियों में वर्णित धर्म निर्देशों का जो मानव पालन करता है। उस साधक को दोनों लोकों में कीर्ति प्राप्त होती है। श्रुति वेद है और धर्मशास्त्र स्मृति है। यह दोनों अर्थों में निर्विवाद है।

श्रुतिस्मृत्युदिनं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः। इह कीर्तिवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्॥

श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः। ते सर्वाथश्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मोहि निर्वभौ॥

स्मृति ग्रंथों को आचार—विचार से सम्बन्धित नितियों का अमूल्य खजाना कहा जाता है। इन ग्रन्थों में मानव को जीवन में किन नियमों का पालन करना चाहिए, किस प्रकार का आचरण करना चाहिए, इस विषय में विस्तृत वर्णन मिलता है। स्मृतियों में उल्लेखित है कि यदि मनुष्य इसमें वर्णित धर्मों का पालन करेगा तो निश्चय ही उसे मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

याज्ञवल्क्य स्मृति में वर्णन मिलता है —

अनन्यविषयं कृत्वा मनोबुद्धिस्मृतिद्वियम।

ध्येय आत्मा स्थितोऽयोऽसौ हृदये दीपवत्पुभुः॥

अर्थात् — मन एवं बुद्धि को विषयों से हटाकर ध्येय को आत्मा में स्थित करके योग करना चाहिए। साधक को योग क्रियाओं एवं अभ्यास के माध्यम से इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। बाह्य चित्त वृत्तियों के निरोध द्वारा तत्त्वज्ञान एवं आत्मदर्शन की प्राप्ति संभव है।

अरण्यनित्यस्य जितेन्द्रियस्य सर्वेन्द्रिय प्रीति निवर्तकस्य आध्यात्मचिन्तागत मानसाच्च ध्रुवाहयनावृत्तिरपेक्षकस्य इति। जो साधक शुद्ध आचार सहित, सदैव पवित्र रहने वाला तथा सदैव जप, तप एवं होम करने वाले होते हैं, वह साधक कभी भी रोग ग्रस्त नहीं होता है।

मङ्गलाचारयुक्तानां नित्यं च प्रयतात्मनाम्।

जपतां जुहवतां चैव विनिपातो न विद्यते।

इसी प्रकार स्मृतियों में मोक्ष को प्राप्त करने हेतु जप, तप और योगाभ्यास का वर्णन प्राप्त होता है।

पुराणों में ध्यान :

पुराणों को भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड कहा जाता है। यास्क ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है कि जो प्राचीन होकर भी नया है, वह पुराण है।

श्रीमद्भागवतपुराण में भक्तियोग के साथ तीन स्कन्धों में योग का विशेष वर्णन उल्लेखित किया गया है। श्रीमद्भागवतपुराण के 11वें स्कन्ध के 14वें अध्याय में ध्यान योग का विस्तृत वर्णन मिलता है। श्रीमद्भागवतपुराण

में ध्यान को परिभाषित करते हुये कहा गया है कि – **यत्रैकतानता ध्यानम्।**

अर्थात् – प्रव्यय की जो एकतानता है, वही ध्यान है।

ध्यान की विधि का उल्लेख करते हुए कहा गया है –

तत सर्वव्यापकं चित्तमाकृष्यैकत्र धारयेत्।

नान्यानिचिन्तयेद भयू : सुस्मितं भावयेन्मुखम्॥

तस्मिन्लब्धपदं चित्तं सर्वव्यवसंस्थितम्।

विलक्ष्यैकत्र संयुश्यादङ्गे भगवतो मुनिः॥

अर्थात् – साधक सब ओर फैले चित्त को एक स्थान में स्थिर करें तथा फिर भगवान के पैरों के ध्यान से आरम्भ कर के ऊपर मुख की मंद मुस्कान में अपना ध्यान स्थिर कर दें। शिवपुराण में ध्यान की व्याख्या इस प्रकार की गई है – “**धै चिन्तायाम्।**”

विक्षेप रहित चित्त से जो शिव का बारम्बार चिन्तन किया जाता है, उसी का नाम ध्यान है। शिवपुराण में ध्यान के दो भेद मिलते हैं –

सविषय ध्यान – साकार स्वरूप का अवलम्बन करने वाला ध्यान।

निर्विषय ध्यान – निराकार स्वरूप का ध्यान करने वाला ध्यान।

ध्यान का महत्व को बताते हुए, शिवपुराण में उल्लेख मिलता है –

यथा वहिलर्महादीप्तः शुष्कमार्द च निर्दहित।

तथा शुभाशुभं कर्म ध्यानाग्निर्दहते क्षणात्॥

अर्थात् – जैसे प्रज्वलित अग्नि सूखी एवं गीली दोनों ही तरह की लकड़ियों को जला देती है, ठीक उसी प्रकार ध्यानाग्नि शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के कर्मों को क्षण भर में भस्म कर देती है।

ध्यायतः क्षणमात्रं वा श्रद्धया परमेश्वरम्।

यद्भवेत् सुमहेच्छेयान्तो नैव विद्यते॥

अर्थात्— क्षण भर भी श्रद्धा भाव से किये हुए ध्यान के द्वारा साधक अनन्त श्रेय की प्राप्ति करता है।

नास्ति ध्यानसमं तीर्थं नास्ति ध्यान समं तपः।

नास्ति ध्यानसमो यज्ञस्तस्माद् ध्यानं समाचेरत्॥

अर्थात्— ध्यान की भांति कोई तीर्थ नहीं है, ध्यान के समान कोई यज्ञ नहीं है। अतः ध्यान को अवश्य करना चाहिए। इस प्रकार हमने देखा कि ध्यान के महत्व को पुराणों में भी वर्णित किया गया है।

योग वशिष्ठ में ध्यान :

योग वशिष्ठ एक अति प्राचीन योग ग्रंथ है। इसमें छः प्रकरण हैं जिनमें योग के अंगों का वर्णन मिलता है। ध्यान का वर्णन योग वशिष्ठ के उपशम प्रकरण के छत्तीसवें सर्ग में मिलता है। योग वशिष्ठ में ध्यान और समाधि को एक ही अर्थ में रखा गया है। योग वशिष्ठ के अनुसार जब योगी अपने मन को पूरी तरह से शांत कर लेता है तभी उसको ब्रह्मतत्त्व की प्राप्ति होती है। समाधि के लक्षण बताते हुये कहा गया है कि – जो गुणों का समुह, गुणात्मक तत्त्व है वह समाधि है एवं जो इसको अनात्म रूप देखते हुए अपने आपको केवल इनका साक्षीभूत चेतन जानता है और जिसका चित्त स्वभावसतता में लगकर शीतल हो गया है वह समाधिस्थ कहलाता

है।

शोध विधि :-

ध्यान योग ग्रंथों में एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। अनेकानेक प्रयोग ग्रंथों, वेदों, उपनिषदों में इसका वर्णन देखने को मिलता है। वहीं आधुनिक काल में ऐसे अनेक योगियों ने जन्म लिया है, जिनके द्वारा ध्यान की कई विधियाँ विकसित करी गईं। यह विधियाँ पूर्णतः नई थी या प्राचीन विधियों पर ही आधारित थीं।

शोध समस्या का चयन करने के बाद शोध विधि का चयन करना महत्वपूर्ण कार्य होता है। प्रस्तुत शोधकार्य करने हेतु विवरणात्मक, ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधि का अनुसरण करते हुए विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से शोधकार्य को पुस्तकालय में प्राचीन साहित्य शास्त्र, प्राचीन भारतीय यौगिक ग्रन्थों में ध्यान योग पद्धति से सम्बन्धित मौलिक साहित्य, सम्बन्धित, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं की सहायता से पूरा करने का भरसक प्रयास किया गया है।

सारांश -

ध्येय पदार्थ में जब चित्तवृत्ति निरन्तर एक समान सी बनी रहती है, तब धारणा की स्थिति समाप्त हो जाती है और ध्यान की अवस्था का आरम्भ हो जाता है। जिस वृत्ति मात्र से चित्त धारणा काल में ध्येय का सम्बन्ध होता है, वह वृत्ति ध्यान में अविच्छिन्न रूप से शासित होने लगती है। ध्येय विषय में चित्तवृत्ति का समान रूप से उदय होते रहना एवं अन्य किसी भी वृत्ति का न उठना ही ध्यान है। धारणा की अवस्था में वृत्ति का प्रवाह निरन्तर नहीं रह पाता है परन्तु निरन्तर अभ्यास के माध्यम से यह प्रवाह अविरल प्रवाहित आरम्भ हो जाता है। एतएव वृत्ति की स्थिरता अर्थात् एक जैसे बना रहना ही ध्यान कहलाता है।

सामान्यतः मनुष्य मन की वृत्तियाँ एक ध्येय पदार्थ पर स्थिर नहीं रह पाती, इसलिए मन इधर-उधर भटकता रहता है। विषय पदार्थ के साथ सम्पर्क की परस्पर अनुभूति कर, मानव मन में असंख्य वृत्तियों का आवागमन जारी रहता है। इस स्थिति में मनुष्य की मानसिक एवं शारीरिक ऊर्जा शक्ति का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं हो पाता एवं उसका विघटन होता है जो कि उसकी ऊर्जा शक्ति के विकेन्द्रीकरण होने के कारण होता है। ऊर्जा के विघटन के परिणाम स्वरूप मनुष्य में व्यापक दृष्टिकोण का समावेश नहीं हो पाता एवं मानव चेतना सांसारिक विषयों तक ही रह जाती है। चेतना के पूर्ण विस्तार के लिए चेतना का सूक्ष्म और सूक्ष्मतर होना अति आवश्यक है और यह स्थिति ध्यान के अभ्यास के माध्यम से संभव है। अतः एव योग विद्वानों ने बताया है कि ध्यान का अभ्यास मानव को आध्यात्म के उच्चतम शिखर तक पहुँचाने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. पाण्डेय, राजकुमारी, भारतीय योग परम्परा के विविध आयाम, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, संस्करण : 2008
2. स्वामी, डॉ० किशोरदास, भारतीय दर्शन और मुक्ति मीमांसा, स्वामी रामतीर्थ मिशन (देहरादून)
3. दातार, पं० हरिकृष्णशास्त्री, योग : सिद्धान्त एवं साधना, चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी, संस्करण : 2014
4. पण्डया, डॉ० प्रणव, योग के वैज्ञानिक प्रयोग, शोध एवं प्रकाशन विभाग हरिद्वार (उत्तराखण्ड),

प्रथम संस्करण : 2011

5. श्रीद्वारिकादासशास्त्री, स्वामी, हठयोगप्रदीपिका, चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी, संस्करण : 2009
6. गर्ग, आचार्य कृष्ण कुमार, ध्यान क्रियाएँ, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, सातवां संस्करण : 2014
7. आचार्य, पं० श्रीराम शर्मा, योग दर्शन, डॉ० चमन लाल गौतम संस्कृति संस्थान (उ०प्र०), संस्करण : 2011
8. शास्त्री, देवदत्त, क्रियायोग साधना, शुभम् प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : 2013



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 131-138

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

EFFECT OF LEGAL AWARENESS AND ACCESS TO FAMILY COURTS ON DIVORCE RATES IN INDIA

Anwani Sadhna Kishore Renu, RESEARCH SCHOLAR,

Dr. Vijaymala , RESEARCH GUIDE,

DEPARTMENT OF LAW, SHRI JAGDISHPRASAD JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY,
VIDYANAGARI, JHUNJHUNU, RAJASTHAN – 333010

Abstract:

This study examines the effect of legal awareness and access to family courts on the rising trend of divorces in the country. Legal awareness empowers individuals, particularly women, to understand their rights and navigate the legal system, while access to family courts facilitates timely resolution of marital disputes. Through a review of relevant literature, government reports, and case studies, this research identifies a significant correlation between increased legal literacy, improved accessibility to family courts, and higher divorce rates. The findings suggest that as individuals become more informed about their legal options and as judicial infrastructure become more accessible, couples are more likely to seek legal dissolution of unsatisfactory marriages. The study emphasizes the need for policies aimed at enhancing legal awareness and equitable access to justice, while also considering the socio-cultural implications of rising divorce rates in India.

Keywords : Divorce, Legal Awareness, Family Courts, Access to Justice, Marital Dissolution, India, Legal Literacy, Socio-legal Impact

Introduction :

Divorce, once considered a social taboo in India, has increasingly become a subject of public and academic discourse over the past few decades. While the country has traditionally upheld the sanctity of marriage as a lifelong commitment, socio-economic transformations, urbanization, increased female workforce participation, and changing social attitudes have contributed to a noticeable rise in divorce rates. According to recent reports, India is witnessing a slow yet steady increase in the

number of divorces, reflecting a shift in the societal perception of marital stability. However, beyond socio-cultural changes, legal awareness and access to family courts play a crucial role in influencing marital dissolution.

Legal awareness refers to the knowledge individuals possess about their rights, obligations, and the legal remedies available to them in the event of marital disputes. In the Indian context, matrimonial laws are complex, encompassing personal laws based on religion—such as Hindu Marriage Act, 1955, Special Marriage Act, 1954, Muslim personal laws, and Parsi Marriage and Divorce Act—as well as provisions under civil law that protect the rights of spouses and children. Lack of awareness about these legal frameworks often prevents individuals from seeking timely legal recourse, thereby prolonging marital conflicts or leaving them unresolved. Conversely, higher legal literacy equips individuals with the ability to understand divorce procedures, maintenance rights, child custody regulations, and property settlements, which can facilitate informed decision-making and smoother resolution of disputes.

This research seeks to examine the effect of legal awareness and access to family courts on divorce rates in India, exploring how these factors either facilitate or impede the exercise of legal rights in marital dissolution. By analyzing these dimensions, the study aims to provide insights into how improving legal literacy and strengthening family court accessibility can contribute to a more equitable and responsive legal framework for marital conflict resolution.

Legal Awareness and Divorce Rates :

Legal awareness in India has expanded due to education, media, and government campaigns, making more people knowledgeable about the legal grounds for divorce and the reforms in matrimonial laws. This awareness has contributed to a rise in divorce rates, particularly as people become aware that they can legally exit abusive or unhappy marital relationships without enduring protracted, complex legal battles. The simplification of divorce procedures, such as mutual consent divorces, has made the process quicker and less daunting, particularly benefiting urban and educated populations. This shift has reduced the stigma traditionally associated with divorce and enabled individuals to prioritize personal well-being over societal expectations, leading to higher divorce rates in these demographics.

Role of Family Courts :

Family courts in India were established to address the unique nature of matrimonial disputes with sensitivity and efficiency, avoiding the more adversarial and lengthy procedures seen in regular civil courts. These courts facilitate mediation and counselling to encourage amicable settlements. They also address related matters such as alimony, maintenance, and child custody with a gender-sensitive approach, often prioritizing women's interests and child welfare. The accessibility of family

courts has ensured that cases related to marital breakdown can be resolved faster, minimizing emotional and financial strain on the parties involved. However, some courts face challenges like backlog and delays due to increasing caseloads.

Impact of Legal Reforms :

Legal reforms like the recognition of irretrievable breakdown of marriage, the Domestic Violence Act, and gender-sensitive amendments have modernized divorce laws and enhanced protections for vulnerable parties. These changes reflect evolving social norms and promote gender justice, allowing more equitable divorce settlements and safeguarding rights related to maintenance and child custody. The growing financial independence of women has also supported their ability to initiate divorce proceedings. Consequently, the legal system has adapted to contemporary realities, contributing to the rising divorce rate while also providing a framework to handle the consequences responsibly.

Divorce Rate and the Influence of Courts & Awareness :

Over the past several decades, divorce has transitioned from a relatively uncommon and socially stigmatized event to a widely recognized component of contemporary family life. Although divorce rates vary across societies and over time, empirical trends show that legal structures, judicial efficiency, and public awareness about marital rights significantly shape the patterns and consequences of marital dissolution. Understanding these dynamics requires an analysis not only of the statistical trajectories of divorce but also of the institutional and cultural mechanisms that influence how and when couples choose to separate. Two factors—the role of courts and the growing public awareness of legal and social issues surrounding divorce—have had particularly notable impacts on divorce trends worldwide.

Changing Divorce Rates :

Divorce rates often reflect broader socio-economic and cultural transformations. In many Western countries, the 1970s saw a dramatic rise in divorce after the introduction of no-fault divorce laws, which allowed couples to end marriages without proving wrongdoing. This legal shift lowered the procedural barriers and emotional burdens of divorce, making it more accessible. Over time, however, as societies adjusted to new norms and expectations, divorce rates in some regions stabilized or even declined. These fluctuations reveal how legal reforms can produce immediate changes in divorce statistics but do not single-handedly determine long-term patterns.

In other global contexts, divorce trends are influenced by economic development, urbanization, and shifting gender roles. As more women participate in the workforce and gain financial independence, the social and economic costs of leaving an unsatisfactory marriage have decreased. Meanwhile,

younger generations often hold more egalitarian views of partnership, which can result both in higher expectations for marital satisfaction and greater willingness to exit relationships that fail to meet those expectations. Thus, empirical trends are rarely linear; instead, they reflect a complex interplay of law, economics, culture, and individual agency.

Awareness and Public Understanding: A Social Driver of Divorce Trends :

Alongside formal legal structures, **public awareness**—of marital rights, legal protections, support services, and social norms—plays a substantial role in the evolution of divorce rates. As knowledge spreads through education, media exposure, advocacy groups, and professional counseling services, individuals become more capable of evaluating their marital circumstances and understanding available options.

Awareness influences divorce trends in several significant ways :

1. Knowledge of Legal Rights and Resources : Many individuals, particularly women in traditional or patriarchal societies, historically remained in marriages because they lacked information about their rights. Increased awareness of laws related to domestic violence, property ownership, child custody, and financial support empowers individuals to seek legal remedies. Access to legal aid organizations, helplines, and community resources further enhances this empowerment.

2. Media and Cultural Narratives : Media representations of divorce have shifted dramatically. Where divorce was once portrayed as shameful or destructive, modern narratives often depict it as a pathway to personal growth, safety, or emotional stability. These portrayals can normalize divorce, reducing stigma and making individuals more likely to pursue separation when necessary.

3. Awareness of Psychological Well-Being : Greater recognition of mental health has also influenced marital decisions. People increasingly prioritize emotional fulfillment and psychological safety, and they are more willing to exit relationships marked by chronic conflict, coercion, or dissatisfaction. Counseling services, relationship education, and public discussions about mental health all contribute to this evolving awareness.

4 Economic Literacy and Independence : Financial literacy programs and workforce participation have given more individuals the knowledge and resources needed to sustain independent lives. When people understand how to manage finances, navigate employment markets, or access social support systems, they are less likely to remain in marriages solely for economic survival.

How legal awareness and access interact to affect divorce rates :

- **Increased filings where awareness meets access :** Urban centers with higher literacy, greater female labour-force participation, and more robust family court infrastructure—Delhi, Bengaluru, Hyderabad, Kerala’s courts—have recorded increases in divorce petitions and finalized divorces.

Media reporting and court statistics from several cities document rising filings and explain this by a mix of greater awareness, reduced stigma, and improved access to legal services. For example, Hyderabad reported a substantial rise in family court divorce filings over recent years.

- **Hidden separations where access is poor :** In rural or patriarchal regions, low legal awareness and weak court access often mean marital breakdowns do not translate into formal divorce statistics. Couples may separate informally, or women may remain in unhappy or abusive marriages because they lack knowledge of remedies or ability to travel and litigate. National survey data (like NFHS) and academic analyses caution that headline “low divorce rate” figures understate the reality, since a portion of separation and desertion is unregistered or settled informally.
- **Quality of access matters :** Merely having a family court is insufficient. Courts that actively provide mediation, counseling and legal aid can sometimes reduce the **need** for divorce by resolving disputes—but they can also increase fair access to divorce when conciliation fails. In other words, functional family courts operate both as a means of preserving marriages (through reconciliation) and as a credible exit mechanism when reconciliation is impossible. Institutional design therefore determines whether better access reduces or increases divorce rates in practice. Government and NGO evaluations underline how procedural delays, lack of counselling resources, and absence of legal aid skew the family court’s role.
- **Awareness changes bargaining power and expectations :** Legal awareness—combined with economic independence—alters intra-household bargaining. Educated women who know their rights may resist unequal marital roles, and if compromise isn’t possible divorce filings may increase. Conversely, where husbands are also more aware of legal consequences, some disputes may be resolved earlier or settled through negotiated separation. Research on education gaps and marital dissolution in India shows that educational and informational asymmetries between spouses affect stability and divorce likelihood.

Mechanisms: How Legal Awareness & Family Courts Facilitate Divorce :

Putting together the pieces above, we can identify several mechanisms through which legal awareness and access to family courts influence divorce rates in India :

- **Lowering informational barriers :** People become aware that laws allow divorce, maintenance, custody rights, protection from domestic violence — and that these are enforceable rights via courts. This reduces ignorance, misinformation, and fear that “divorce isn’t possible” or “courts will never grant it.”
- **Reducing social stigma (detabooization) :** As more people — neighbours, peers, media, social networks — discuss divorce as a legitimate option, the social cost or stigma associated with

leaving an unhappy marriage weakens. Legal cases in local courts become less sensational, more normalized.

- **Providing institutional pathways :** Access to specialized family courts and legal aid (including mediation, counselling, legalaid schemes) provides a tangible and legitimate route to dissolution, rather than relying on informal or community-level resolutions which might suppress grievances.
- **Empowerment — especially for marginalized or vulnerable :** Financial independence (especially of women) + legal awareness + institutional access offers a real choice to exit unhealthy or unsafe marriages. For many, that empowerment comes only when all three align.
- **Normalization of mutualconsent divorce / secular legal options :** With reforms and greater use of no-fault / mutual consent divorce, couples can separate without acrimonious blame games or prolonged fault-based litigation — making divorce more palatable, especially among educated urban couples.
- **Shift in expectations from marriage :** As marriage becomes more about companionship, respect, mutual growth than socially obligatory institution, individuals are more likely to end marriages that don't meet these expectations — and where legal recourse is available, they can act on that decision.

Combined, these mechanisms make divorce a realistic, legitimate, socially acceptable (relatively) and institutionally supported option — thereby raising the divorce rate where marital conflict exists.

How legal awareness affects divorce rates :

1. Reducing information asymmetry and empowering rights-holders :

Legal awareness equips individuals with knowledge about grounds for divorce, protection orders, maintenance, custody rights, and procedures. For victims of domestic violence or economic abandonment, awareness can convert latent vulnerability into action—leading to increased filings where parties previously endured abuse silently. This empowerment effect can thus raise divorce rates initially as more people exercise legal remedies.

2. Correcting misconceptions and lowering frivolous claims :

Conversely, awareness can dispel myths about legal consequences (e.g., exaggerated fears of losing child custody or social stigma) and clarify alternative remedies such as counselling, separation agreements, or judicial separation. Better informed couples may choose less disruptive options or engage proactively with dispute resolution services—potentially lowering unnecessary or impulsive divorces.

3. Enabling early, informed negotiation and settlements :

Knowledge of legal entitlements (maintenance, property rights) encourages negotiated settlements. Parties who understand likely judicial outcomes may prefer negotiated divorces or mediated settlements rather than prolonged litigation—affecting the timing and character of divorces even if not the aggregate rate.

4. Gendered effects :

Because of entrenched gender inequalities, legal awareness tends to have asymmetric impacts: women who learn about maintenance, domestic violence remedies, and custody rights may be more likely to end abusive marriages, increasing divorce rates among women who previously had no viable escape routes. For men, awareness might reduce frivolous defences or deter coercive tactics, indirectly affecting outcomes.

How access to family courts affects divorce rates :

1. Lowering procedural and cost barriers :

Physical proximity, simplified procedures, and low filing fees reduce the cost of seeking divorce or related orders. This lowers the transaction costs of separation, which can increase filings when parties previously stayed in unsatisfactory marriages due to logistical or financial constraints.

2. Specialization and faster resolution :

Family courts specialize in matrimonial issues, use conciliatory mechanisms, and often provide faster hearings. Faster resolution can encourage usage by those seeking clarity and closure. A system that resolves disputes promptly can both increase divorce filings (by making the route viable) and decrease drawn-out conflict by enabling timely settlements.

3. Mediation and counselling as alternatives to litigation :

Well-functioning family courts typically have statutory mandates or procedural frameworks that prioritize mediation and counselling before adjudication. Where these services are accessible and high quality, they can reduce divorce rates by facilitating reconciliation or negotiated separations. Conversely, if mediation is perfunctory, courts may simply be a gateway to divorce.

4. Legal aid and representation :

Access means little without affordable legal representation. Public legal aid, pro bono services, and legal aid clinics linked to family courts determine whether the poorest can use the system. Enhanced access for disadvantaged groups often results in higher filings among those groups but can be seen as rectifying under-access rather than creating new demand.

Conclusion :

The interplay between legal awareness and access to family courts has a significant influence

on divorce rates in India. As legal literacy expands—through education, media, and targeted government initiatives—individuals, especially women, are increasingly empowered to recognize their rights and seek legal remedies when marriages become untenable. Simultaneously, improvements in access to family courts, including the establishment of additional courts, streamlined procedures, and alternative dispute resolution mechanisms, have reduced barriers that once discouraged people from initiating formal separation.

Rising divorce rates in this context should not be interpreted solely as a breakdown of marital institutions but rather as an indicator of social progress. Greater awareness and easier access allow individuals to exit abusive, restrictive, or dysfunctional relationships, contributing to enhanced personal autonomy and gender justice. However, disparities persist across regions, socio-economic classes, and cultural groups, suggesting the need for continued efforts to expand legal literacy, improve procedural efficiency, and ensure equitable access to family courts.

Overall, the effect of legal awareness and access to family courts on divorce rates reflects a broader transformation in Indian society—one that prioritizes individual rights, dignity, and informed decision-making within the realm of family and marriage.

REFERENCES :

- G S, Mahantesh&Rangaswamy, Mamatha& Kumar, Sunil. (2022). Mediation In Matrimonial Disputes: A Judicial Perspective. *Webology*. 19. 9018 - 9027.
- Lee, Yean-Ju. (2006). Risk factors in the rapidly rising incidence of divorce in Korea. *Asian Population Studies*. 2. 113-131. 10.1080/17441730600923091.
- Maiti, Surya. (2023). Gaps in education and marital dissolution: Evidence from India. *International Social Science Journal*. 10.1111/issj.12458.
- Neller, Jen. (2022). Hate Speech Law and Equality: A Cautionary Tale for Advocates of “Stirring up Gender Hatred” Offences. 10.1007/978-3-030-98072-6_8.
- Pautunthang, N.. (2024). Exploring live-in relationships in modern Indian society. *International Journal of Civil Law and Legal Research*. 4. 106-111. 10.22271/civillaw.2024.v4.i1b.68.



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 139-146

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

ROLE OF ULTRASOUND- BASED MUSCLE QUALITY AND ARCHITECTURE IN EARLY IDENTIFICATION OF FRAILTY IN ACUTE HIP FRACTURE

Navas NK, RESEARCH SCHOLER,

Dr. Prateek Sharma, RESEARCH GUIDE,

Dr. Brijesh Sathian, RESEARCH CO-GUIDE,

DEPARTMENT OF MEDICAL SCIENCE

SHRI JAGDISH PRASAD JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY JHUNJHUNU RAJASTHAN

Abstract :

This study explores the role of ultrasound-based measures—such as muscle thickness, pennation angle, and echogenicity—in identifying frailty among patients presenting with acute hip fractures. Findings indicate that patients with poorer muscle quality, reduced muscle mass, and altered architecture are more likely to exhibit frailty, correlating with decreased functional status and slower post-operative recovery. Ultrasound provides a practical, reproducible, and sensitive tool for early frailty assessment, enabling timely interventions to improve clinical outcomes and optimize rehabilitation strategies. These results highlight the potential of integrating muscle ultrasound into routine assessment protocols for older adults with hip fractures.

Keywords : Frailty, Hip Fracture, Muscle Quality, Muscle Architecture, Ultrasound, Sarcopenia, Functional Assessment, Elderly, Rehabilitation, Early Identification

Introduction :

Hip fractures are among the most serious injuries in older adults, representing a significant public health concern due to their high morbidity, mortality, and healthcare costs. Globally, the incidence of hip fractures is increasing as population's age, with estimates projecting that the number of hip fractures may exceed 6 million annually by 2050. Hip fractures are often the culmination of a complex interplay between bone fragility, impaired mobility, and neuromuscular dysfunction. Beyond

the fracture itself, the underlying physiological vulnerability of the patient significantly influences postoperative outcomes, recovery trajectories, and the risk of subsequent complications, including recurrent falls, functional decline, and mortality.

Frailty is a multidimensional syndrome characterized by diminished physiological reserve and increased vulnerability to stressors, commonly manifesting in older adults. Frail individuals are at higher risk of adverse outcomes following acute stress events, such as hip fractures, including prolonged hospitalization, delayed rehabilitation, and higher mortality rates. Frailty is increasingly recognized not just as a geriatric construct but as a clinically actionable predictor of adverse outcomes, enabling targeted interventions to improve prognosis. In the context of acute hip fractures, early identification of frailty is critical because it can guide perioperative management, rehabilitation planning, and individualized care strategies aimed at mitigating postoperative complications.

Traditionally, frailty assessment has relied on clinical scoring systems such as the Fried Frailty Phenotype and the Clinical Frailty Scale. While these tools are useful, they have limitations, including reliance on subjective assessments, time-consuming administration, and potential inter-rater variability. Moreover, these assessments may not capture the underlying biological changes associated with frailty, particularly musculoskeletal alterations, which are central to mobility, functional independence, and recovery potential. Hence, there is a growing interest in identifying objective, non-invasive biomarkers that can quantify frailty and predict adverse outcomes more accurately and efficiently in acute care settings.

Sarcopenia, defined as the age-related loss of skeletal muscle mass, strength, and function, is a key biological substrate of frailty. The presence of sarcopenia significantly compromises mobility, balance, and physical resilience, thereby increasing the risk of falls and fractures. Importantly, sarcopenia is not merely a consequence of chronological aging but is influenced by multiple factors, including malnutrition, chronic inflammation, hormonal changes, and decreased physical activity. In patients with hip fractures, sarcopenia has been shown to correlate with poorer postoperative recovery, higher rates of institutionalization, and increased mortality. As such, assessing muscle mass and quality may provide valuable insight into the patient's frailty status, enabling early risk stratification and personalized management strategies.

Recent advances in musculoskeletal imaging have highlighted the potential of ultrasound-based techniques for assessing muscle quality and architecture. Ultrasound imaging offers a non-invasive, radiation-free, bedside-accessible, and cost-effective tool for evaluating skeletal muscle characteristics, including muscle thickness, cross-sectional area, pennation angle, fascicle length, and echo intensity. Muscle architecture, which refers to the geometric arrangement of muscle fibers

relative to the tendon, is a critical determinant of muscle force-generating capacity and functional performance. Changes in muscle architecture, such as reduced pennation angle and fascicle length, have been associated with diminished muscle strength and functional impairment in older adults. Likewise, increased muscle echo intensity, reflecting fatty infiltration and fibrosis, correlates with reduced muscle quality and poor physical performance.

In the context of hip fractures, ultrasound-based assessment of muscle quality and architecture presents a promising avenue for early frailty detection. Unlike traditional anthropometric or clinical assessments, ultrasound can provide direct visualization of musculoskeletal integrity, capturing subtle changes in muscle composition that may precede overt functional decline. Several studies have demonstrated the utility of ultrasound parameters in predicting adverse outcomes in older adults, including falls, mobility limitations, and postoperative complications. Furthermore, ultrasound enables repeated measurements over time, facilitating dynamic monitoring of muscle recovery and rehabilitation progress. These characteristics make ultrasound a valuable adjunct to conventional frailty assessment, offering both diagnostic and prognostic insights.

Despite the potential benefits, the integration of ultrasound-based muscle evaluation into clinical pathways for hip fracture patients remains limited. Challenges include standardization of imaging protocols, operator dependency, and the need for normative reference values across different populations and age groups. Additionally, while muscle mass and architecture are important determinants of frailty, frailty is a multidimensional construct encompassing physical, cognitive, and psychosocial domains. Therefore, ultrasound assessment should be considered complementary to, rather than a replacement for, comprehensive frailty evaluations. Nevertheless, by providing objective and quantifiable measures of musculoskeletal health, ultrasound can enhance early identification of frail individuals, enabling timely interventions to reduce morbidity and improve functional outcomes.

Early detection of frailty in acute hip fracture patients has significant clinical implications. Frail patients may benefit from tailored perioperative care, including prehabilitation, optimized nutritional support, and targeted physiotherapy, aimed at preserving muscle mass and function. Moreover, early frailty identification can inform surgical decision-making, anesthesia planning, and postoperative management, ultimately reducing complications such as delirium, infections, and prolonged immobilization. From a public health perspective, early recognition of frailty can guide resource allocation, rehabilitation planning, and post-discharge support, thereby mitigating the long-term socioeconomic burden associated with hip fractures in older adults.

Muscle Quality and Architecture :

Muscle quality and architecture are fundamental concepts in understanding muscle function,

strength, and overall performance. These factors extend beyond simple muscle mass, encompassing the structural and functional properties that dictate how effectively a muscle can generate force. Advances in exercise physiology, biomechanics, and medical imaging have shed light on these properties, revealing their significance in health, aging, athletic performance, and rehabilitation.

Muscle Quality :

Muscle quality refers to the functional capability of muscle tissue relative to its size. Essentially, it is an index of how efficiently a muscle can generate force per unit of mass. Two individuals with identical muscle mass may exhibit markedly different strength levels if one has higher muscle quality. Muscle quality is influenced by several factors, including fiber composition, intramuscular fat content, connective tissue, and neuromuscular activation.

- **Fiber Composition** : Skeletal muscles consist of different fiber types—type I (slow-twitch) and type II (fast-twitch). Type I fibers are fatigue-resistant and optimized for endurance activities, whereas type II fibers generate greater force and power but fatigue more quickly. A higher proportion of type II fibers in a muscle often correlates with greater muscle quality in terms of force production.
- **Intramuscular Fat and Connective Tissue** : Excess fat or fibrous tissue within muscles impairs their contractile efficiency. Aging and inactivity often lead to increased intramuscular adipose tissue, reducing muscle quality even if overall mass remains stable. This phenomenon partly explains why elderly individuals may lose strength disproportionately to the loss of muscle mass—a condition known as sarcopenia.
- **Neuromuscular Activation** : Muscle strength is not solely determined by the muscle itself but also by how effectively the nervous system can recruit and coordinate muscle fibers. Efficient motor unit recruitment and synchronization enhance the functional output of a given muscle mass, thus improving muscle quality.
- **Metabolic Factors** : Mitochondrial density and capillarization also contribute indirectly to muscle quality by influencing fatigue resistance and recovery. Muscles with higher oxidative capacity can sustain force production longer, improving functional performance relative to their size.

Muscle Architecture :

Muscle architecture refers to the arrangement of muscle fibers and connective tissue within a muscle, which dictates its mechanical properties and force-generating potential. Several architectural parameters critically influence muscle function, including fiber length, pennation angle, cross-sectional area, and tendon insertion.

- **Fiber Length** : The length of individual muscle fibers determines the range of motion and contraction velocity. Longer fibers allow greater shortening, facilitating larger joint excursions and higher contraction velocities. For instance, muscles designed for rapid, extensive movements (e.g.,

sartorius or hamstrings) often have longer fibers, whereas stabilizing muscles may have shorter fibers optimized for force.

- **Pennation Angle** : Many skeletal muscles exhibit a pennate arrangement, where fibers attach obliquely to the tendon rather than running parallel. The pennation angle affects the packing density of fibers and the direction of force transmission. Greater pennation angles allow more fibers to be packed into a given muscle volume, increasing physiological cross-sectional area (PCSA) and force-generating capacity. However, the effective force transmitted along the tendon is reduced by the cosine of the pennation angle, creating a trade-off between fiber packing and force directionality.
- **Cross-Sectional Area (CSA)** : Muscle CSA, particularly the PCSA, is directly proportional to a muscle's maximal force production. While total muscle size provides an estimate of potential strength, PCSA accounts for fiber orientation and density, offering a more precise predictor of force. For example, the quadriceps have a large PCSA, contributing to their role in powerful knee extension.
- **Tendon Length and Insertion** : The tendon's length and the site of insertion influence muscle leverage and force transmission. Muscles with longer tendons relative to fibers can store elastic energy during stretch, enhancing efficiency in dynamic movements such as running or jumping. Conversely, short-tendon muscles provide more precise, rapid force application but less elastic energy storage.

Research Methodology :

This study was a prospective observational study conducted over 12 months at a tertiary care hospital specializing in orthopedic trauma. The study aimed to evaluate the utility of ultrasound-based assessment of muscle quality and architecture in identifying frailty among patients presenting with acute hip fractures. Ethical approval was obtained from the Institutional Ethics Committee, and written informed consent was obtained from all participants. A total of 120 patients aged ≥ 60 years with acute hip fractures (intertrochanteric or femoral neck fractures) were enrolled.

Results :

Table 1: Demographic and Clinical Characteristics of Study Population

| Characteristic | Non-frail (n=30) | Pre-frail (n=50) | Frail (n=40) | p-value |
|--------------------------|------------------|------------------|----------------|---------|
| Age (years) | 69.2 \pm 5.6 | 73.4 \pm 6.8 | 78.5 \pm 7.2 | <0.001 |
| Female (%) | 16 (53.3) | 30 (60) | 26 (65) | 0.53 |
| BMI (kg/m ²) | 24.6 \pm 3.1 | 23.9 \pm 2.8 | 22.1 \pm 3.0 | 0.02 |
| Albumin (g/dL) | 4.0 \pm 0.3 | 3.6 \pm 0.4 | 3.2 \pm 0.5 | <0.001 |
| Hemoglobin (g/dL) | 13.2 \pm 1.1 | 12.4 \pm 1.3 | 11.5 \pm 1.4 | <0.001 |

Frail patients were significantly older, had lower BMI, albumin, and hemoglobin levels compared to non-frail and pre-frail groups, suggesting poorer nutritional and physiological reserve.

Table 2: Ultrasound-Based Muscle Architecture across Frailty Groups

| Parameter | Non-frail (Mean ± SD) | Pre-frail (Mean ± SD) | Frail (Mean ± SD) | p-value |
|---|--------------------------|--------------------------|-------------------|---------|
| Muscle Thickness (cm) | 2.8 ± 0.3 | 2.4 ± 0.4 | 1.9 ± 0.3 | <0.001 |
| Cross-Sectional Area (cm ²) | 12.5 ± 1.2 | 10.8 ± 1.4 | 8.9 ± 1.3 | <0.001 |
| Pennation Angle (°) | 16.5 ± 2.1 | 14.3 ± 2.0 | 12.1 ± 1.8 | <0.001 |
| Fascicle Length (cm) | 5.8 ± 0.5 | 5.2 ± 0.6 | 4.6 ± 0.5 | <0.001 |
| Echogenicity (0–255) | 75 ± 10 | 95 ± 12 | 120 ± 15 | <0.001 |

Frail patients had thinner muscles, smaller CSA, lower pennation angles, shorter fascicle lengths, and higher echogenicity, indicating muscle atrophy, poor architecture, and increased intramuscular fat.

Table 3 : Correlation between Ultrasound Parameters and Frailty Score

| Parameter | Correlation Coefficient (r) | p-value |
|----------------------|-----------------------------|---------|
| Muscle Thickness | -0.72 | <0.001 |
| Cross-Sectional Area | -0.69 | <0.001 |
| Pennation Angle | -0.64 | <0.001 |
| Fascicle Length | -0.61 | <0.001 |
| Echogenicity | +0.70 | <0.001 |

Negative correlations indicate that lower muscle mass and compromised architecture are associated with higher frailty, while higher echogenicity (more fat infiltration) correlates with

increased frailty.

Table 4 : Multivariate Logistic Regression for Frailty Prediction

| Variable | Odds Ratio (OR) | 95% CI | p-value |
|-----------------------|-----------------|-----------|---------|
| Age (per year) | 1.08 | 1.02–1.15 | 0.01 |
| Muscle Thickness (cm) | 0.52 | 0.37–0.72 | <0.001 |
| Echogenicity | 1.06 | 1.03–1.09 | <0.001 |
| Albumin (g/dL) | 0.63 | 0.45–0.88 | 0.01 |

Thinner muscles and higher echogenicity independently increased the risk of frailty, along with advanced age and lower albumin. This emphasizes the diagnostic value of ultrasound in early frailty detection.

Table 5 : Diagnostic Performance of Ultrasound Parameters for Frailty

| Parameter | Cut-off Value | Sensitivity (%) | Specificity (%) | AUC |
|------------------|---------------|-----------------|-----------------|------|
| Muscle Thickness | <2.1 cm | 85 | 78 | 0.86 |
| Echogenicity | >110 | 82 | 80 | 0.84 |

These cut-offs can be applied in clinical settings to screen acute hip fracture patients for frailty, enabling early interventions like nutritional support, physiotherapy, or multidisciplinary care. This study demonstrates that ultrasound-based assessment of muscle architecture and quality is a valuable tool for early identification of frailty in elderly patients with acute hip fractures. Frailty is a multidimensional syndrome associated with higher morbidity, postoperative complications, prolonged hospital stay, and mortality. Traditional frailty assessments, like Fried criteria, are often time-consuming or challenging in acute settings. Ultrasound offers a non-invasive, rapid, and bedside-compatible alternative.

Our findings indicate that frail patients had significantly lower muscle thickness, CSA, pennation angle, and fascicle length, consistent with sarcopenia and impaired neuromuscular function. Increased echogenicity reflects fat infiltration, fibrosis, and poor muscle quality, which are known contributors to frailty. These results align with previous studies reporting the strong correlation between quadriceps muscle deterioration and functional decline in older adults.

Conclusion :

Ultrasound assessment of muscle quality and architecture offers a reliable, non-invasive tool

for the early identification of frailty in patients with acute hip fractures. Parameters such as muscle thickness, cross-sectional area, pennation angle, and echogenicity provide valuable insights into sarcopenia and functional decline, which are critical components of frailty. Early detection through ultrasound can facilitate timely interventions, including targeted rehabilitation and nutritional support, potentially improving post-fracture recovery, reducing complications, and enhancing overall patient outcomes. Incorporating muscle ultrasound into routine clinical evaluation may thus serve as an effective strategy for stratifying risk and guiding personalized care in this vulnerable population.

REFERENCES :

- Dodds, R., & Sayer, A. A. (2016). Sarcopenia and frailty: new challenges for clinical practice. *Clinical Medicine*, 16(5), 455-458.
- Chen, Y.-L., Liu, P.-T., Chiang, H.-K., et al. (2021). Ultrasound Measurement of Rectus Femoris Muscle Parameters for Discriminating Sarcopenia in Community-Dwelling Adults. *Journal of Ultrasound in Medicine*, 41(13), 2269-2277.
- Yamada, M., Kimura, Y., Ishiyama, D., et al. (2017). Differential Characteristics of Skeletal Muscle in Community-Dwelling Older Adults. *Journal of the American Medical Directors Association*, 18(7), 807.e9-807.e16.
- Rustani, K., Kundisova, L., & Capecchi, P. L. (2019). Ultrasound measurement of rectus femoris muscle thickness as a quick screening test for sarcopenia assessment. *Archives of Gerontology and Geriatrics*, 83, 151-154.
- Ticinesi, A., Meschi, T., Narici, M. V., & Maggio, M. (2017). Muscle Ultrasound and Sarcopenia in Older Individuals: A Clinical Perspective. *Journal of the American Medical Directors Association*, 18(6), 290-300.
- V. P. S., Barbosa, L. M. A., Andrade, A. F. D., & Dantas, D. (2025). Morphofunctional Profile Focusing on Strength and Ultrasound of the Upper Limbs in Female Breast Cancer Survivors: A Comparative Cross-Sectional Study Between Groups with and Without Lymphoedema and Between Ipsilateral and Contralateral Limbs. *Biomedicines*, 13(8)
- Meza-Valderrama, D., Marco, E., Muñoz-Redondo, E., Morgado-Pérez, A (2022). Musculoskeletal Ultrasound Shows Muscle Mass Changes during Post-Acute Care Hospitalization in Older Men: A Prospective Cohort Study. *International Journal of Environmental Research and Public Health*, 19(22), 15150.
- Han, Y., Tong, Q., Deng, M., Yan, L., Yin, Y., Zhang (2022). Application value of two-dimensional ultrasound and shear-wave elastography parameters in evaluating sarcopenia with essential hypertension. *Quantitative Imaging in Medicine and Surgery*, 12(2), 1051-1066.
- Tok, F., Özçakar, L., De Muynck, M., & Vanderstraeten, G. (2012) Musculoskeletal ultrasonography in physical and rehabilitation medicine. *Journal of Rehabilitation Medicine*, 44(4), 310-318.
- Meza-Valderrama, D., Marco, E., Muñoz-Redondo, E., Morgado-Pérez, A. (2022) Musculoskeletal ultrasound shows muscle mass changes during post-acute care hospitalization in older men: A prospective cohort study. *IJERPH*, 19(22), 15150.



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 147-152

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

शारीरिक एवं मानसिक रोगों का योग से समाधान

नीलू, शोधार्थी,

डॉ. पूनम आहूजा, शोध निर्देशिका,

योग विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

शोध आलेख सार -

आधुनिक जीवन-शैली जनित रोग वे रोग है, जो हमारी गलत जीवन शैली के कारण उत्पन्न होते हैं और हमें प्रभावित करते हैं, हमारा आहार और व्यवहार हमारे स्वास्थ्य के स्तर को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित एवं निर्धारित करता है।

प्राचीन काल से ही भारतीय चिंतन परम्परा में मनुष्य को शतायु एवं दीर्घायु होने की प्रेरणा एवं आशीर्वाद प्रदान किया है - "जीवेत शरदः शतम्" अर्थात् हम सौ वर्ष तक जीवित रहें। इसकी प्रेरणा हमें भारतीय चिंतन द्वारा प्राप्त होती है। आयुर्वेद का वैज्ञानिक विधान भी हमें इसी लक्ष्य की ओर बढ़ने का आह्वान करता है। आयुर्वेद अर्थात् आयु को लम्बी रखने वाला ज्ञान। आयुर्वेद के अनुसार स्वस्थ वृत्त का पालन करके हम न केवल स्वयं को स्वस्थ रख सकते हैं, अपितु नाना प्रकार के व्याधियों से बच सकते हैं। आयुर्वेद के दो प्रमुख उद्देश्य हैं स्वस्थ के स्वास्थ्य का परीक्षण तथा आतुर के विकार का प्रशमन। मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए स्वस्थ वृत्त का पालन जरूरी है। स्वस्थ वृत्त के अपालन से नाना प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक विकार उत्पन्न होते रहते हैं और अस्वस्थ पुरुष इहलोक तथा परलोक में उपलब्ध पुरुषोचित भोगों को प्राप्त नहीं कर सकता। तदैव आरोग्य को पुरुषार्थ-चतुष्टय का मूल तथा तीन प्रमुख एषणाओं की पूर्ति का माध्यम माना गया है।

मूल शब्द - आधुनिकता, जीवन शैली एवं व्याधियाँ।

भूमिका -

जीवनशैली से जुड़ी व्याधियाँ आज इतनी विकराल हो चुकी हैं कि व्यक्ति जाने अनजाने किसी न किसी व्याधि के चंगुल में फंस जाता है और आजीवन व्याधिग्रस्त होकर दुःखद जीवन व्यतीत करता है। योगी से भोगी और भोगी से रोगी का जीवन अत्यन्त कष्टप्रद होता है, जबकि रोगी से भोगी और भोगी से योगी का जीवन सर्वश्रेष्ठ होता है। भोगमय जीवन यदि रोग का कारण बने तो वह त्याज्य है, इसी प्रकार जब हमारा भोग हमारी योग साधना में बाधक बने तो भी ग्राह्य नहीं हैं, इसलिए हमें एक योगी की भांति जीवन व्यतीत करना चाहिए और योग के अनुकूलन भोग करते हुए रोग से बचने का उपाय करना चाहिये।

आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियाँ अनियमित दिनचर्या, अवैज्ञानिक दिनचर्या एवं अयुक्तपूर्ण व्यवहार का कूपरिणाम है। अतः हमें जीवन शैली से जुड़ी व्याधियों से मुक्ति प्राप्ति के लिये प्रथमतः अपने जीवनदर्शन,

व्यवहार में तत्काल सुधार करना चाहिये, और साथ ही साथ योग उपचार सहित सहायक चिकित्सा पद्धति की सहायता लेकर आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियों से मुक्त होकर स्वास्थ्यजीवन का आनंद लेना चाहिये तथा दूसरों को भी इसकी संप्रेरणा प्रदान करनी चाहिये।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का यह प्रमुख ध्येय है कि आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियों का निदान करने का उपाय बताकर मानव समाज को व्यष्टि एवं समष्टि स्तर पर अर्थात् व्यक्तिगत एवं सामुहिक स्तर पर अथवा अन्य शब्दों में सामुदायिक स्वास्थ्य के स्तर पर सभी को स्वस्थ एवं निरोग रखा जा सके। आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियों को मानव शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान के अनुसार विभाजित दस अंग-तंत्रों की प्रमुख व्याधियों के संदर्भ में उनका योग एवं अनुसंगी उपचार प्रस्तुत किया गया है। सभी तंत्रों की अपनी-अपनी संरचना एवं कार्यविधि होती है और शरीर को स्वस्थ बनाये रखने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन तंत्रों के अंतर्गत कंकाल तंत्र, मांसपेशियां तंत्र, अध्यावरण तंत्र, पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र, लसिका तंत्र, रक्त परिसंचरण तंत्र, प्रजनन तंत्र, उत्सर्जन तंत्र, स्नायुतंत्र परिगणित किये जाते हैं। मानव को विभिन्न कार्य करने के लिये अपने शरीर को बहुत प्रकार से संचालित करना पड़ता है, कई प्रकार की वस्तुएँ उठानी पड़ती है, जिसमें हमारी हड्डियां सहायता करती हैं। मानव शरीर में कुल 206 अस्थियाँ होती हैं जिसमें सबसे बड़ी अस्थि जांघ में और सबसे छोटी अस्थि कान में पायी जाती है। इन विभिन्न प्रकार के अस्थि के कारण ही मानव शरीर अपना आकार ग्रहण करता है और विभिन्न प्रकार की गति करता है। मानव शरीर में अस्थियाँ विभिन्न शरीर संधियों से जुड़ती हैं और गतिमान होती हैं, कंकाल तंत्र में विभिन्नता के कारण ही मानव शरीर को एक निश्चित आकार प्राप्त होता है, और इसी कारण मानव शरीर सधा हुआ रहता है, अस्थि तंत्र बहुत ही लचीला होता है।

इसी प्रकार से शरीर के विभिन्न अंगों को गति देने के कार्य माँस पेशियां करती हैं। इस तंत्र के अंतर्गत मानव शरीर में उपस्थित सभी माँसपेशियां आती हैं। मानव शरीर के कीमती अंगों और कोष्ठों का निर्माण करने का कार्य मांसपेशियां करती हैं। इस तंत्र के अंतर्गत मानव शरीर में विभिन्न प्रकार के तंत्रिका बंधनों द्वारा हड्डियों को जोड़ने के कार्य मांसपेशियाँ करती हैं।

वैज्ञानिक शोधों से परे योग विज्ञान की विशिष्टता यह है कि, हम योग विज्ञान में मानव शरीर को उसकी समग्रता में जानने समझने का प्रयास करते हैं। आंशिक संरचना की दृष्टि से मानव शरीर में जो विविधता दिखाई देती है उसके मूल में एवं अलौकिक एकता विद्यमान है जो मानव शरीर को एक इकाई का रूप प्रदान करता है। विभिन्न शरीरशास्त्रियों एवं प्राणिक वैज्ञानिकों ने मानव शरीर को जो जानने और समझने का प्रखर पुरुषार्थ किया है वह आज भी सिंधु में बिन्दु के समान है। मानव शरीर की दिव्य संरचना को विज्ञान के सीमित दायरे से नहीं जाना जा सकता है क्योंकि एक ओर वैज्ञानिक गतिविधियां एवं उपलब्धियां अभी नितांत प्रारंभिक दौर में हैं, और दूसरी ओर मानव शरीर के एक-एक कण में असीम और अदभुत रहस्य सामाहित हैं। जब-जब हम वैज्ञानिक दृष्टि से शरीर को जानने का प्रयास करते हैं, तब-तब हमारा पुरुषार्थ एक अपूर्णता के साथ पूर्ण होता है, और हम उस सीमित ज्ञान की परिधि के पार जाने के लिये बाध्य हो जाते हैं।

मानव शरीर रचना अनेक भौतिक, रासायनिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक संयोजन का परिणाम है। इन संयोजनों के आधार पर समग्र मानव शरीर की रचना एवं क्रिया संपादित होती है। प्राणी विज्ञान की दृष्टि से जब हम मानव शरीर की संरचना और क्रिया विधि का अध्ययन करते हैं तो हमें एक अदभुत सामंजस्ययुक्त

अभियांत्रिकी एवं अनुपम सौंदर्ययुक्त संरचना का बोध होता है। मानव शरीर को यदि हम पूर्ण नैसर्गिक, स्वभाविक परिवेश में कार्य करने का अवसर प्रदान करें तो यह श्रेष्ठतम अभियांत्रिकीय संरचना का प्रतिदर्श प्रस्तुत करती है।

योगशास्त्र के अनुसार योग विद्या का संबंध मूलतः अंतःकरण और आत्मा से है किन्तु समग्रता में मानव अस्तित्व को अभिव्यक्त करते समय शरीर, मन और आत्मा को एक इकाई के रूप में परिभाषित किया जाता है, क्योंकि शरीर हमारे अस्तित्व का स्थूल आधार है, जिस पर मन और आत्मा की मानसिक एवं आत्मिक या आध्यात्मिक शक्तियाँ नर्तन करती हैं। इस तरह से शरीर और मन, आत्मा के लिये एक पृष्ठभूमि तैयार करते हैं, यौगिक संकल्पना की दृष्टि से जब शरीर और मन पूर्ण सामंजस्ययुक्त कार्य करते हैं तो योगानुकूल साधना सुगम एवं सफल हो जाती है, इसके विपरीत शरीर एवं मन में किसी प्रकार का विक्षेप होने पर आध्यात्मिक साधना में न केवल बाधा उत्पन्न होता है अपितु आत्मा की स्वभाविक दिव्यता भी प्रभावित होती है। इसलिये आध्यात्मिक साधना को सुगम एवं सफल बनाने के लिये शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को प्रागप्रेक्षा के रूप में स्वीकार किया गया है। इस लिये योगयुक्ति का आश्रय लेकर समाधि को सुगम बनाने का विधान योग शास्त्रों में मिलता है। पतंजलि योग सूत्र में व्याधि को मनोदैहिक विकृति या विक्षेप के रूप में अविहित किया गया है।

योग शब्द साधना एवं सिद्धि अर्थात् समाधि दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है। व्याधि से समाधि कि यात्रा ही योग है, यहां व्याधि विक्षेपयुक्त अवस्था है, जबकि समाधि विक्षेप से मुक्त अवस्था है। इस प्रकार से यद्यपि विभिन्न मनो शारीरिक उपचार से प्रत्यक्षतः संबंधित नहीं है किन्तु परोक्षतः समाधि सिद्धि को सुगम बनाने की दृष्टि से साधन एवं प्रागप्रेक्षा के रूप में योगोपचार को स्वीकृत एवं समाहित किया गया है।

मानव शरीर की यह विशिष्टता है कि यह शरीर में प्रकट होने वाली व्याधियों से स्वतः निकलने का प्रयास करता है, अर्थात् जब कोई व्याधि या विक्षेप शरीर से प्रकट होता है तो शरीर रोग प्रतिरोधक शक्ति के माध्यम से उस व्याधि विशेष से मुक्त होने की चेष्टा करता है, जिसमें सफल होने पर शरीर अपने नैसर्गिक स्वास्थ्य को प्राप्त कर लेता है और किंचित कारणों से असफल होने पर शरीर को अन्य उपचार विधियों की आवश्यकता पड़ती है।

सर्वे भवन्तु सुखिनाः सर्वे सन्तु निरामयः की विश्व मंगल कामना, विश्व मानव संस्कृति में स्वास्थ्य के महत्त्व को रेखांकित करती है। आज भी विश्व स्वास्थ्य संगठन विपुल संसाधनों को खर्च करके भी सबके लिए स्वास्थ्य जैसी मूलभूत आवश्यकता की प्रतिपूर्ति करने में असमर्थ रहा है। नित्य नवीन व्याधियों का आगमन एवं उत्कर्ष, मानव जीवन को असुरक्षित एवं असहाय अवस्था में छोड़ता है। कोविड-19 की विश्वव्यापी महामारी के दौरान सम्पूर्ण विश्व ने इस तथ्य का अनुभव किया कि हम साधनों की प्रचूर्णता से नहीं बल्कि साधना की प्रखरता से ही सुरक्षित रह सकते हैं। आने वाली पीढ़ी के लिए ये अपरिहार्य है कि वे साधना मूलक जीवन अपना कर अपने नैसर्गिक रोग प्रतिरोधक शक्ति का संवर्धन कर स्वास्थ्य एवं जीवन के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का समय अनुकूल समाधान कर सकें। योग आज विकल्प नहीं बल्कि आत्मिक संकल्प का विषय है। करो या मरो की स्थिति में आज पूरी मानव सभ्यता योग की ओर आशा भरी निगाह से देख रही है और योग की मांग कर आमंत्रण और अनुशासन में एक सुरक्षित भविष्य की सम्भावना तलाश रही है। शारीरिक, आध्यात्मिक, मानसिक एवं आत्मिक व्याधियों से घिरा हुआ मानव का अस्तित्व एक समग्र उपचार पद्धति की अपेक्षा करता है।

वस्तुतः योग विज्ञान मानव जीवन को पूर्ण व्यवस्थित, सुनियोजित एवं वैज्ञानिक रीति से जीने की कला

का विज्ञान है। प्रस्तुत शोध अध्ययन इस तथ्य को उद्घाटित करता है कि आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियों का निदान योगोपचार विधि से किस प्रकार संभव है और उसकी रीति नीति क्या है?

महत्व -

अधिकांश व्याधियाँ स्वरूपतः मनोदैहिक होती हैं जिनका सफल उपचार योग से किया जा सकता है। योग साधना की विभिन्न विधियाँ जैसे षट्कर्म, आसन, प्राणायाम, मुद्राबंध एवं नाद अनुसन्धान आदि के माध्यम से न केवल स्वस्थ जीवन की प्राप्ति होती है अपितु नाना प्रकार की आधुनिक जीवनशैली जनित व्याधियाँ जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा, गठिया, अनिद्रा, अवसाद, तनाव आदि का सफल उपचार योग के माध्यम से किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में विभिन्न व्याधियों का योग उपचार विशेषतः आसन एवं प्राणायाम के माध्यम से किया गया है। इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न प्रकार के आसन उपचारात्मक महत्व रखते हैं और प्राणायाम के माध्यम से नाना प्रकार की व्याधियों विशेषतः श्वसन तंत्र की व्याधियों का सफल उपचार किया जा सकता है। सारतः आधुनिक जीवन शैली जनित शारीरिक एवं मानसिक रोगों का सफल उपचार योगोपचार से पूर्ण वैज्ञानिक तरीके से किया जा सकता है।

समकालीन मानव समाज को आरोग्य के आनंद से आनंदित करने हेतु एक सारस्वत प्रयास है। मानव समाज आधुनिक जीवन शैली के अनुरूप जी रहा है फलतः अनेक साध्य व असाध्य व्याधियों का शिकार हो रहा है। अर्थ के आभाव एवं प्रभाव के कारण आज मानव समाज परंपरागत नैसर्गिक जीवनशैली से दूर हटता जा रहा है। प्रकृति में केवल मानव ही ऐसा जीव है जो सबसे ज्यादा कृत्रिम व अप्राकृतिक जीवन जी रहा है। मानव अपने आहार और व्यवहार के माध्यम से निरंतर नियमों की उपेक्षा एवं अवहेलना करते जा रहा है। इस कारण से आज चिकित्सा विज्ञान की विविध उपलब्धियों के बावजूद भी मानव समाज रोगी जीवन व्यतीत कर रहा है।

आधुनिक जीवन शैली के कारण मनुष्य की नैसर्गिक जीवन शैली प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई है। आधुनिक जीवन शैली एवं योग उपचार के इस अध्ययन के माध्यम से नैसर्गिक जीवन शैली के महत्त्व को स्थापित किया जायेगा।

आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियाँ जैसे मोटापा, अपच, गठिया, कब्ज, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अनिद्रा आदि व्याधियों का सरल निदान पारम्परिक नैसर्गिक जीवन शैली में निहित है।

नैसर्गिक जीवन शैली के माध्यम से हम आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियों का निदान सहज ही कर सकते हैं।

उद्देश्य -

1. आधुनिक जीवन शैली जनित शारीरिक व्याधियों का योग उपचार मूलक विवेचन करना।
2. आधुनिक जीवन शैली जनित मानसिक व्याधियों का योग उपचार मूलक विवेचन करना।

परिकल्पनाएँ -

1. योग विज्ञान मानव जीवन को पूर्ण व्यवस्थित, सुनियोजित एवं वैज्ञानिक रीति से जीने की कला का विज्ञान है।
2. आधुनिक जीवन शैली के कारण मनुष्य की नैसर्गिक जीवन शैली प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई है।

शोध विधि :-

प्रस्तुत शोध कार्य मुख्यतः सैद्धांतिक विषय पर आधारित है जिसमें ग्रन्थ विश्लेषण विधि प्रयोग किया जायेगा, जिसके अंतर्गत मूल ग्रंथों, सहायक ग्रंथों प्रकाशित शोध पत्रों, पत्र-पत्रिका आदि की सहायता से उपरोक्त उद्देश्यों को पूरा किया जायेगा।

योग साधना की विभिन्न विधियाँ जैसे षट्कर्म, आसन, प्राणायाम, मुद्राबंध एवं नाद अनुसन्धान आदि के माध्यम से न केवल स्वस्थ जीवन की प्राप्ति होती है अपितु नाना प्रकार की आधुनिक जीवनशैली जनित व्याधियाँ जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा, गठिया, अनिद्रा, अवसाद, तनाव आदि का सफल उपचार योग के माध्यम से किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में विभिन्न व्याधियों का योग उपचार विशेषतः आसन एवं प्राणायाम के माध्यम से किया जायेगा। इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न प्रकार के आसन उपचारात्मक महत्व रखते हैं और प्राणायाम के माध्यम से नाना प्रकार की व्याधियों विशेषतः श्वसन तंत्र की व्याधियों का सफल उपचार किया जा सकता है। सारतः आधुनिक जीवन शैली जनित शारीरिक एवं मानसिक रोगों का सफल उपचार योगोपचार से पूर्ण वैज्ञानिक तरीके से किया जा सकता है।

सारांश -

आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियाँ जब सामुदायिक स्वास्थ्य संबंधी व्याधियों के साथ मिश्रित हो जाती हैं तो उनकी विकरालता और बढ़ जाती है और वे असाध्य व्याधियों का रूप धारण कर लेती हैं। संक्रामक व्याधि से होने वाली अधिकांश मौतों का पृष्ठभूमि में आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियाँ ही रही हैं। उदा. स्वरूप कोरोना व्याधि का संक्रमण पुराने मधुमेह रोगियों, दमा, रोगियों, मोटापा और उपापचय से संबंधित रोगियों कमजोर मनःस्थिति वाले व्यक्तियों जिसका सीधा संबंध कमजोर मन से है। रोग के लिए अधिक घातक सिद्ध हुई है आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियों का सीधा संबंध मनुष्य के शरीर में विद्यमान प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक शक्ति से है। रोग प्रतिरोधक शक्ति का संबंध हमारी जीवन शैली से है। योग उपचार के माध्यम से हम जनसामान्य को यौगिक जीवन शैली में प्रशिक्षित करके उनकी रोग प्रतिरोधक शक्ति को प्रबल करके आधुनिक जीवन शैली जनित व्याधियों के साथ-साथ सामुदायिक पर व्याप्त व्याधियों का भी सफल निदान कर सकते हैं और विश्व जन समुदाय को न्यूनतम संसाधनों में आरोग्य प्रदान कर सकते हैं, जिसके लिए अभी हम अरबों मिलियन प्रतिवर्ष खर्च कर रहे हैं।

योग उपचार पद्धति का विस्तार करने से स्वास्थ्य व्यवस्था का भी सुधार हो जाता है क्योंकि अस्पताल में जाने वाले लोगों की संख्या जाती है और जो लोग अन्य अपरिहार्य कारणों से अस्पताल में भर्ती हैं उन्हें बेहतर सुविधाएं प्राप्त होती हैं। योग उपचार पद्धति के माध्यम से सारा विश्व सामुदाय समान रूप से लाभान्वित होता है चाहे वह संपन्न हो अथवा विपन्न हो। संसाधनों की विषमता एवं विषमता योग उपचार पद्धति के लिए बाधक नहीं है क्योंकि योगोपचार पद्धति साधन मूलक न हो कर के साधना मूलक पद्धति है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. ब्रह्मवर्चस (1998) व्यक्तित्व विकास हेतु उच्च स्तरीय साधनाएँ, वाङ्मय 20, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।

2. गोयन्दका, हरिकृष्णदास (2005) पातंजल योग दर्शन (2/46,48,52), गीताप्रेस गोरखपुर।
3. उपाध्याय, गोविन्द प्रसाद (2000) आयुर्वेदीय मानस रोग चिकित्सा, चौखम्भासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. विप्लव, विनोद (2006) मानसिक रोग कारण व बचाव, प्रभात पेपर बुक्स, नई दिल्ली।
5. सिंह, अरुण कुमार (2002) आधुनिक आसामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
6. श्रीवास्तव, डा अजय कुमार (2008) मनोविकृति विज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
7. गुप्ता, हरि ओम (2009) सूर्य चिकित्सा, डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली।
8. शलभ, शशिभूषण (2011) वैकल्पिक चिकित्सा, राजा पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
9. डॉ. स्वामी कर्मानंद (2008) रोग और योग, योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत।
10. स्वामी सत्यानंद सरस्वती (2004) समस्या पेट की समाधान योग का, योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत।
11. स्वामी सत्यानंद सरस्वती (2001) दमा, मधुमेह और योग, योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार।



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 153-159

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

STRUCTURE OF SRIGANGANAGAR CITY : A STUDY IN URBAN GEOGRAPHY

Dr. Sachin Kumar

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY,

SHRI KHUSHALDAS UNIVERSITY, HANUMANGARH, RAJASTHAN.

ABSTRACT :

This investigation into urban geography used a multi-pronged strategy for the purpose of analyzing the socio-economic and functional structure of Sriganganagar City. The design of the study included both qualitative and quantitative approaches to data collection. The primary data came from things like surveys, interviews, and observations made in the field, while the secondary data came from things like academic literature, government publications, and internet databases that were pertinent to the topic. Tools from a Geographic Information System (GIS) were used to map spatial patterns, and statistical analysis was performed on the data to derive relevant findings.

The purpose of this research is to investigate Sriganganagar City from both a functional and socio-economic perspective. It investigates the geographical distribution of a variety of economic activities inside the metropolitan region, as well as the structure of the labour force, income inequalities, and demographic shifts that have occurred there.

Keywords : structure, Sriganganagar city, urban, geography.

INTRODUCTION :

Urban geography is the study of the development of cities and towns and the people who live in them. In other words, why cities were created, how they are connected, and how they have changed and will continue to change. The urban spaces we live in require coordination, study, and input from dozens of institutions and possibly hundreds of residents. Why? As places experience urbanization, cities must plan and project how people will live and transport, drawing on information and assistance from multiple sources. Therefore, it is essential to understand people's relationship with urban life and the built environment. The relationship between people and the built environment may seem

strange, but we all interact with the spaces in which we live. If you've ever walked down the street or made a left turn in your car, believe it or not, you've done it.

Cities are linked through major patterns of political, economic and social connectivity. Looking deeper, each city has a unique development pattern and is influenced by various factors at the local and international level. City design patterns can be understood through hierarchical levels, with each level requiring a different set of priorities. Urban data, such as census data collected every 10 years, allow planners and politicians to observe changes and project the needs of urban residents. This is especially important as the threat of climate change threatens the quality of life in the city, requiring sustainability projects and approaches to guide next steps.

Although it seems like a lot, these are all connected concepts! For example, one can explain when and why a city was built and its current design and appearance. North American cities formed during the expansion of the automobile, leading to more expansive layouts and suburban growth. European cities, on the other hand, were built before the invention of cars and are therefore denser and more walkable. While European cities may be inherently more sustainable because fewer people own and drive cars, the majority of people in North America do. Cities should therefore invest more in improving their sustainability measures.

Basic Concept in Urban Geography :

It is necessary to investigate a few fundamental ideas in order to get a deeper comprehension of the characteristics of urban geography, which, by the latter part of the twentieth century, had become an extremely intricate and hybrid subject. The next part will go over these topics in further detail.

The approach that Dickinson takes to a city is a natural one to begin with; nevertheless, as time has passed, the natural circumstances of the city have been used by the resources that are accessible, as well as the adaptability of the location and the surrounding area. It is possible for its development and extension to expand to the point where it covers the natural location, which would make it impossible to recognise.

Within the confines of this framework, the creation of genuine urban geography was a remote prospect at best. Due to the constraints of the purpose, it was not feasible to describe the intricate workings of the economy or the social order. In addition to this, it was emphasised that the application of the "site and situation formula" was useless "where there was no historical interest on the site, because the situation was seen in the context of the routes and not the streams of the movement." These cases disproved the common belief that 'site and circumstance' determine everything.

The idea of plant ecology was conceived between the two world wars, a time period that was significant for its effect on geographical developments. Robert Park (1925), in his book titled "The

City," underlined that changes in the biological processes of the city have occurred as a direct result of the rise in population that has occurred in urban areas. The city's urban ecology had an effect not only on the city's ties with the surrounding regions, but also on the people and the environment they lived in. The possibilities and limitations that are presented by the physical environment have been the focus of a number of studies.

In the same time period, the political and economic processes that were engaged in the construction of urban environmental infrastructures also formed an element of urban geography. In recent years, the idea of urban ecosystems has emerged as an essential component of this branch of environmental study. In addition to this, the effect that urban societies have on the progression of sustainable development has also been included into this framework. Concerns of this kind have prompted actions on a more local level.

LITERATURE REVIEW :

Lamprecht, Mariusz (2022) In this article, selected themes from the subject of space syntax are discussed, together with its theoretical assumptions and practical possibilities. The essay pays particular attention to the body of work in the fields of social and economic geography, as well as spatial management. The purpose of this article is to make an effort to showcase Polish works in the subject of space syntax as connected to the broader spectrum of worldwide applications for this topic. There is just a little amount of application of space syntactic theory and research techniques in Poland.

Liu, Yansui (2021) This book makes an effort to include the theory of system science and engineering technology into the geographic research of urban-rural transformation. Additionally, it sheds light on the level-structure-function of urban-rural transformation and encourages further scientific study of the subject. This book investigates the long-term mechanism, innovative model, and scientific way of urban-rural land optimal allocation and spatial reconstruction, and it develops urban-rural transformation geography. The book focuses on the systematic diagnosis of new-type urbanisation, urban-rural land use, industrial structure transformation, and public facility allocation.

Shen, Y. (2017) To be able to evaluate the consequences of urban design and planning ideas in a more effective manner, it is necessary to have a more in-depth grasp of the structural aspects of urban contexts. Through the analysis of a diachronic spatio-functional process and the socio-economic repercussions of such a process, the purpose of this thesis is to shape a new strategy that is more extensive than previous ones in order to discover the structure of cities.

METHODOLOGY :

This investigation into urban geography used a multi-pronged strategy for the purpose of

analysing the socio-economic and functional structure of Sriganganagar City. The design of the study included both qualitative and quantitative approaches to data collection. The primary data came from things like surveys, interviews, and observations made in the field, while the secondary data came from things like academic literature, government publications, and internet databases that were pertinent to the topic. Tools from a Geographic Information System (GIS) were used to map spatial patterns, and statistical analysis was performed on the data in order to derive relevant findings.

LAND UTILIZATION PATTERN & AGRICULTURAL AREA:

A significant amount of influence and control over the agricultural inputs and outputs may be attributed to the availability of land resources and the pattern of their use. Agriculture, together with its ancillary occupations of animal husbandry and dairy farming, serves as the primary foundation of Rajasthan's economy. Although it is rich in minerals, the state's resources have not been explored to their full potential, therefore the state's primary agricultural economy has not been affected. Agriculture is one of the first occupations and continues to be one of the most important now. The majority of the people who live in this district make their living off of farming, just as they do in the rest of the state. The agricultural industry, which is the most important part of the local economy, is responsible for the generation of the vast majority of the district's revenue. It has an enormously significant position in an economy that is mostly based on rural areas, such as the one in India. Not only does it provide a contribution to the food supply, but it also makes a fairly significant contribution to the country's overall gross domestic output. In point of fact, there is not much room for expanding agricultural output via the use of conventional inputs such as land, labour, bullocks, seeds, instruments, manures, and conventional techniques of irrigation, amongst other things.

The developing economy has an urgent need to boost agricultural output in order to satisfy the requirements of a rapidly rising population and to broaden the scope of non-agricultural economic activity. Therefore, it is vital to embrace innovative agricultural practises and the use of new inputs in order to enlarge and broaden the range and field of production possibilities and, as a result, to drastically modify the form that agriculture takes not only in the state but also in the district. In light of this, an effort has been made to highlight the most important characteristics of the contemporary physical inputs, as well as their accessibility and use in the agricultural sector of the Sri Ganganagar District. Fertilisers, water (for irrigation), high yield variety seeds, and modern agricultural equipment are some of the most significant elements of a farm's inputs, and they all play a vital role in the transformation of agriculture.

Most of the the state's areas have soil that is rich in nutrients, but agricultural circumstances are difficult to work with since there is little precipitation and no infrastructure to support irrigation.

If there was access to sufficient quantities of water for irrigation, farmers would be able to practise agriculture on a much larger scale, which would lead to a significant uptick in the region's overall economic activity. Productivity is greater across the board in this area wherever irrigation facilities have been established, such as in Sri Ganganagar, for example. The soil in the area is rich in fertility, and since canal water is readily available, more and more of the land is being brought into agriculture. In comparison to the land use pattern in Rajasthan, Sri Ganganagar district's pattern is more concentrated.

Infrastructural Facilities :

The term "infrastructure" is a catch-all phrase that refers to a broad range of different types of economic operations. Integration of the national economy with other economies across the globe requires, in addition, that suitable infrastructure be in place, as well as that infrastructure's effective operation. It is possible to describe it as national assets such as roads, trains, water supplies, educational institutions, and health services, among other things, which, in the absence of which, investments in agriculture and industry are unable to produce their full potential. Investing in infrastructure often results in a positive net present value for the investor and has a high capital output ratio. The usual understanding of the word "infrastructure" is that there must be some fundamental framework upon which our building may be built; nevertheless, this phrase is currently being used in the sense of critical facilities, without the assistance of which we are unable to even conceive of arranging our plans.

In a broader sense, the word "underlying capital" refers to the capital that is embodied in a society's transport and communication infrastructure, electricity, water, drainage, and other public services. Therefore, facilities pertaining to power, coal, and oil transportation by rail, road, sea, and air, as well as postal services, telegraphs, telephones, and telex will be categorised as infrastructure. The term "social overhead capital" is often used interchangeably with the phrases "health care," "education," and "law and order," among other things.

It is an undeniable fact that financial backing for infrastructure is an essential component of economic growth. The pace of economic expansion is largely determined by the state of an economy's infrastructure as well as the effectiveness of that infrastructure. Any insufficiency or breakdown in infrastructure facilities, especially in the energy and transport sectors, may lead to widespread production losses, shortages of vital items, inflation, loss of government income, and even unemployment by limiting capacity utilisation in a number of different industries. In point of fact, we are now dealing with serious shortages of both energy and transport, both of which have had a significant impact on the functioning of our economy.

The establishment of adequate infrastructural facilities in an area, including but not limited to transport and communication facilities, credit facilities, power, general and technical education, water, and industrial land, are necessary conditions for a region to experience economic growth. These are the exact pillars that the state's whole manufacturing infrastructure rests upon to maintain its standing. This is particularly important considering that in the not too distant future, the regional growth of the state will need the establishment of industrial units in the backward areas: the concept of industrialization cannot be completely realised until these fundamental facilities are accessible.

Even though agriculture is still the district's primary focus, Sri Ganganagar possesses almost all of the key infrastructure amenities that are necessary for the economic and industrial growth of a region. Location is one of the many added benefits that come along with living in this region. It shares a border with an industrially developed state like Punjab, and the capital city of Delhi is also not too far away. This geographical advantage has had a significant impact on the economy of this area, particularly with regard to agriculture but also with regard to industries.

CONCLUSION :

In conclusion, Sri Ganganagar City is an active urban centre that lives on its agricultural history, economic activity, and cultural richness. This is because Sri Ganganagar City is in the state of Rajasthan. Even though it is not one of the most well-known cities in India, it has a one-of-a-kind personality and is an essential component of the state of Rajasthan. The city is not only interesting to visit but also to live in since it combines modernism with heritage, is an important agricultural centre, and has a diverse cultural population.

In conclusion, the principles of urban evolution, which are defined in the Concentric Zone Theory, Sector Theory, and Multiple Nuclei Theory, give essential frameworks for analysing and comprehending the development of towns and cities. These theories include the Multiple Nuclei Theory, Sector Theory, and Multiple Nuclei Theory. When they are applied to the region under investigation, such as Sri Ganganagar City, they may assist urban planners, researchers, and policymakers in gaining insights about the spatial organization of the city, its socio-economic features, and the variables that have impacted its growth and development throughout the course of its history.

REFERENCES :

1. Kourtit, Karima&Nijkamp, Peter &Westlund, Hans. (2019). Urban Economy. 1-13. 10.1002/9781118568446.eurs0362.
2. Sokolowski, Dariusz. (2019). Economic and functional changes in the largest villages in Poland at the end of the 20th and the beginning of the 21st century. Bulletin of Geography. Socio-

- economic Series. 46. 23-39. 10.2478/bog-2019-0032.
3. Khiali-Miab, Amin & van Strien, Maarten & Axhausen, Kay & Grêt-Regamey, Adrienne. (2019). Combining urban scaling and polycentricity to explain socio-economic status of urban regions. PLOS ONE. 14. e0218022. 10.1371/journal.pone.0218022.
 4. Latham, Alan & Layton, Jack. (2019). Social infrastructure and the public life of cities: Studying urban sociality and public spaces. Geography Compass. 13. e12444. 10.1111/gec3.12444.
 5. He, Qingsong & He, Weishan & Song, Yan & Wu, Jiayu & Yin, Chaohui & Mou, Yanchuan. (2018). The impact of urban growth patterns on urban vitality in newly built-up areas based on an association rules analysis using geographical 'big data'. Land Use Policy. 78. 726-738. 10.1016/j.landusepol.2018.07.020.
 6. Runge, Jerzy. (2018). Region - City - social space as key concepts of socio-economic geography. Environmental & Socio-economic Studies. 6. 13-18. 10.2478/enviro-2018-0018.
 7. Xing, Hanfa & Meng, Yuan. (2018). Integrating landscape metrics and socioeconomic features for urban functional region classification. Computers, Environment and Urban Systems. 72. 10.1016/j.compenvurbsys.2018.06.005.
 8. Mierzejewska, Lidia. (2017). Urban structures and substructures. Bulletin of Geography. Socio-economic Series. 36. 10.1515/bog-2017-0019.
 9. Shen, Y. (2017). Understanding functional urban centrality: spatio-functional interaction and its socio-economic impact in central Shanghai.
 10. Heffner, Krystian & Gibas, Piotr. (2016). Functional areas in the regions and their links to scope sub-regional centres impact. Studia Regionalia. 46. 27-39. 10.12657/studreg-46-02.



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 160-165

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

बीकानेर जिले में पर्यावरण जागृति एवं पर्यावरणीय अवबोध का अध्ययन

सुमन चौधरी, शोधार्थी,

डॉ. सचिन कुमार, शोध निर्देशक,

भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

शोध आलेख सार -

पर्यावरण उन दशाओं का योग है जो मानव को किसी निश्चित समय अवधि में नियत स्थान पर आवृत्त किये रहती हैं। यूं तो जीव-विज्ञान में पर्यावरण का अध्ययन प्राणियों अथवा पादपों को केंद्र में रखकर किया जाता है, किन्तु समाज विज्ञान एवं भूगोल में अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मानव स्वयं होता है। मानव के पर्यावरण में प्रकृति की दशाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किन्तु वृहत् रूप से देखने पर पर्यावरण में मानवकृत सांस्कृतिक तत्वों को भी शामिल किया जाता है। पर्यावरण से जुड़े कई विषयों में मानव अथवा उसके समाज को केन्द्र में रखकर पर्यावरणीय अध्ययन किए जाते हैं। इनमें विशेषकर मानवशास्त्र एवं भूगोल में किए जाने वाले अध्ययन मानव पारिस्थितिकी से जुड़े होते हैं।

मूल शब्द - पर्यावरण, जागृति एवं अवबोध।

भूमिका -

बीकानेर जिले के पर्यावरण के विभिन्न पक्ष जैसे वन, वन्य जीव, जल संसाधन के साथ-साथ मानव-पर्यावरण अंतर संबंधों से जुड़ी कृषि अर्थव्यवस्था के विषय में लोगों के दृष्टिकोण एवं समझ को जानने का प्रयास किया गया है। पर्यावरण तथा इसमें परिवर्तन के प्रति लोगों के प्रत्यक्षीकरण के स्वरूप को सांस्कृतिक दृष्टि से समझने के लिए चार समुदायों, अर्थात् सामान्य जातियों, अन्य पिछड़ी जातियों, अनुसूचित जातियों एवं मुस्लिम समुदाय, के अनुसार संमकों को प्रस्तुत करके विश्लेषण भी किया गया है। पर्यावरण के साथ-साथ फसल एवं पशुपालन अर्थव्यवस्था के सापेक्षिक महत्व को सिंचित तथा गैर-सिंचित क्षेत्रों के संदर्भ में भी देखा गया है। बीकानेर जिले के चयनित सिंचित तथा गैर-सिंचित ग्रामीण क्षेत्रों के समुदायों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं; तापमान, वर्षा तथा जलवायु में दीर्घकालिक परिवर्तन के प्रति उनके रवैये जैसे मुद्दों को भी लिया गया है।

वन :

उगता हुआ वृक्ष प्रगतिशील राष्ट्र का प्रतीक है। आर्थिक और पर्यावरण संरक्षण में वनों का योगदान महत्वपूर्ण है। भूगर्भिक प्रमाण के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में वन प्रचुर मात्रा में थे। भूगर्भिक घटनाओं अथवा जलवायु

में परिवर्तनों के कारण यह एक शुष्क क्षेत्र बन गया है। सर्वेक्षित परिवारों ने बताया कि जनाधिक्य के कारण कृषि भूमि का अनियोजित विस्तार तथा लकड़ी प्राप्त करने के लिए वनों की लगातार कटाई, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र में भोजन बनाने के लिए लकड़ी का ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है, वन क्षेत्र घटने के लिए जिम्मेदार हैं। चाहे उज्ज्वला योजना की सुविधा मिल रही हो, गैस चूल्हा लोगों की द्वितीय वरीयता रहती है। भोजन पकाने में तथा आवासीय भूमि की बढ़ती मांग कहीं ना कहीं वनोन्मूलन के लिए जिम्मेदार है।

अध्ययन क्षेत्र के सामान्य, मुस्लिम तथा अन्य पिछड़ा वर्ग समुदायों के गांवों के पचास-पचास प्रतिशत परिवारों के अनुसार उनके ग्रामों में पुरानी वनस्पति कायम रही है। अनुसूचित जाति समुदाय के 39 प्रतिशत; सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा मुस्लिम समुदायों के 50-50 प्रतिशत परिवार इस अवधि में 'नई' वनस्पति के प्रकट होने की बात करते हैं। लेकिन ये नई उन्हें बता रहे हैं जो किन्हीं कारणों से लुप्त हुई पुरानी वनस्पति ही है जो पुनः यहां देखी जा रही है। नई वनस्पतियों में छोटी-छोटी घासनुमा पौध और खरपतवार के साथ खेतों में उगने वाले अन्य छोटे पौधे भी हैं जो खरपतवार हटाने पर साफ कर दिए जाते हैं। पुनः प्रकट हुई उपरोक्त 'नई' वनस्पति वस्तुतः अध्ययन क्षेत्र की स्थानीय वनस्पति ;मृदकमउपबद्ध ही है, जो कि किसी कारण 'लुप्त' हो गई थी। उपरोक्त 'नई' वनस्पति प्रायः असिंचित गांवों में ही रिपोर्ट की गई।

चारागाह :

सर्वेक्षित क्षेत्र में अक्सर सूखा तथा अकाल पड़ता रहता है। लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि के बाद न चाहते हुए भी पशुपालन या डेयरी उद्योग ही है। यहां हजारों की तादाद में पालतू जानवर हैं। 1990 के बाद पशुओं की संख्या में वृद्धि देखी गई है जिसमें बकरी की संख्या अधिक है। वर्तमान समय में विशेषज्ञ बकरियों को पर्यावरण के प्रतिकूल मानते हैं क्योंकि उनके कारण जमीन ज्यादा से ज्यादा खुश्क एवं वनस्पतिहीन होती जाती है। कई देशों के कानून बकरियों की आबादी बढ़ाने के खिलाफ हैं। गांवों के कुछ लोगों ने बताया कि बकरी गरीब की गाय है। इसके बिना हमारे घर का चूल्हा नहीं जलता है, पर्यावरण नुकसान बाद की बात है। दोष इसको नहीं स्वयं को देना चाहिए क्योंकि हम नियोजित तरीकों से खेती-बाड़ी नहीं करते भूमि पर ज्यादा ध्यान नहीं देते, चारागाह भूमि छोड़ते नहीं और उपजाऊपन हेतु मिट्टी की कभी जांच तक नहीं करवाते, कारण जो भी हो सारा नुकसान बकरी जात या जानवरों पर मनुष्य नहीं डाल सकता। मनुष्य कहीं ना कहीं स्वयं जिम्मेदार है। क्षेत्र के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सिंचित क्षेत्र के अन्य पिछड़े वर्ग व मुस्लिम समुदायों के गांवों में चारागाहों में बढ़ोतरी हुई। बाकी संपूर्ण सर्वेक्षित गांवों में चारागाह क्षेत्र की कमी देखी गई, जिसमें निम्नलिखित कारण दिखाई दिए -

1. जनसंख्या व बसावट में वृद्धि।
2. शमशान भूमि विस्तार।
3. नगण्य चारागाह क्षेत्र।
4. बढ़ती महंगाई।

उपरोक्त में से दो-तिहाई लोगों के अनुसार चारागाह जनाधिक्य के कारण कम हुए और होते ही जा रहे हैं। समय रहते इसको पाटा नहीं गया तो पशुओं की संख्या घटते देर ना लगेगी। पशुओं के बलबूते ही खेतों में फसलें खड़ी हैं। मानव को स्वस्थ रखने में, खेती के कार्यों में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। जसरासर गांव

में चरागाह वृद्धि के कारकों में भूजल संसाधनों के दोहन से जल की उपलब्धता में वृद्धि का प्रारूप माना गया। जबकि हिम्मटसर गांव में सरकारी योजनाओं के फलस्वरूप उपलब्ध जल की मात्रा में वृद्धि को इसका कारक माना गया।

वन्यजीव :

वन्य जीवन प्रकृति की अमूल्य निधि है। पर्यावरण को संतुलित रखना वन्यजीवों के बिना असंभव है। नोखा तहसील में विख्यात खेजड़ली बलिदान से जुड़े समुदाय के बिश्नोई लोग रहते हैं। आज भी उनमें वही त्याग की भावना दिखाई पड़ती है। अतः यहां वन व वन्यजीवों का बोलबाला अधिक है। यद्यपि आखेट भी वन्यजीवों की स्थिति अच्छी होने से अधिक होते हैं जिनका इस समुदाय के लोग प्रतिकार भी करते हैं। लेकिन कुल मिलाकर स्थिति तनावपूर्ण लेकिन नियंत्रण में प्रतीत होती है। अतः यह क्षेत्र प्रकृति, पेड़-पौधों व जीव-जंतुओं की जैव-विविधता (Biodiversity) से परिपूर्ण दिखलाई पड़ता है। साधारण मानव के लिए इसे समझना तो दूर, वह इसे पहचान भी नहीं पा रहा है। तभी आए दिन यहां अकाल, सूखा जैसी समस्याएं बनी रहती हैं। ग्रीन हाउस इफेक्ट, ताप वृद्धि, बढ़ते डार्क जोन, केमिकल्स आदि के विस्तार से दुनिया परेशान है।

यहां भी आम जनता से ये चीजें कुछ परे हैं लेकिन अप्रत्यक्षतः वे जुड़ें हुए हैं। अर्द्धशुष्क नोखा तहसील में एक शुभ संकेत केवल मात्र मरे जानवरों के शव (Carcass) को ही अपना भोजन बनाने वाले गिद्ध के संबंध में देखने को मिला। मृत जानवरों का निस्तारण (सफाई) मुश्किल कार्य है लेकिन इनके खुले में सड़ने से कई पर्यावरणीय बीमारियां जन्म ही नहीं लेती बल्कि महामारियां भी फैल सकती हैं। गिद्ध मरे जानवरों को खाकर पर्यावरण की सफाई करता है, परंतु मानव की पर्यावरण-विरोधी गतिविधियों ने उसको भी मार दिया। गिद्ध की Indian Vulture (GYPS Indices) व कई अन्य प्रजातियां लुप्त हो चुकी हैं या कगार पर हैं। लेकिन नोखा के गांवों में यह पर्यावरण का रक्षक जीव जीवित ही नहीं, 19.73 प्रतिशत रखते हुए इस तहसील में विचरण कर रहा है। इस क्षेत्र के वनों में भिन्न-भिन्न प्रकार के वन्य जीव-जन्तु रहते हैं। जिनका आकार, रंग-रूप, जीवन शैली और राहणीमान भिन्न-भिन्न प्रतीत होता है। वन्यजीवों में मात्रात्मक परिवर्तन के सामुदायिक अवबोध का आकलन किया तो पाया कि अन्य पिछड़ा वर्ग के गांवों में शत-प्रतिशत परिवारों ने बढ़ोतरी, अन्य समुदायों में सामान्य वर्ग में शत-प्रतिशत कमी, एस.सी. समुदाय में पचास-पचास प्रतिशत वृद्धि व कमी, वहीं अल्पसंख्यक मुस्लिम समुदाय के परिवारों द्वारा शत-प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज की गई। इससे यह ज्ञात हुआ कि अन्य पिछड़ा वर्ग व मुस्लिम समुदायों के गांवों में, चाहे सिंचित हो या गैर-सिंचित क्षेत्र, वन्यजीवों की संख्या में पहले के मुकाबले बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

जल :

अध्ययन क्षेत्र में लोगों ने असिंचित भागों में परम्परागत तरीकों से क्षेत्र के निवासियों ने अपने क्षेत्र के अनुरूप जल भण्डारण के विभिन्न तरीकों को अपनाया हुआ है जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल में सतत विकास के लिए कारगर साबित हो रहे हैं। जल पृथ्वी पर पाया जाने वाला वह अमूल्य प्राकृतिक संसाधन है जो सभी संसाधनों का आधार माना जाता है। जल की उपस्थिति के कारण अन्य प्राकृतिक संसाधनों का दोहन एवं संरक्षण संभव होता है। यह एक नव्यकरणीय संसाधन है जिसको दुबारा शोधन कर उपयोग लिया जा सकता है। क्षेत्र में जल का सर्वाधिक उपयोग सिंचाई कार्यों मानव व पशुओं के पेयजल में लिया जाता है। जब मानसूनी वर्षा

सही समय एवं मात्रा में नहीं आती तो जल संकट की समस्या पैदा हो जाती है। कई भागों में जल की समस्या नहीं है मगर उसकी गुणवत्ता न्यून है और लगातार जलस्रोतों में गुणवत्ता हास हो रहा है। शिवनगर पूगल तहसील के ग्राम में नहर सिंचाई से उत्पन्न सेम के कारण फ्लोराइड की समस्या देखने को मिल रही है। उपरोक्त समस्या नहरी क्षेत्रों के पास नलकूपों के जल में देखी जा रही है।

अध्ययन क्षेत्र में जल संसाधनों का उपयोग निम्न रूपों में किया जा रहा है :-

- सर्वाधिक उपयोग सिंचाई कार्यों में, चाहे सतही जल हो या भूमिगत जल।
- पशुपालन (डेयरी उद्योग में)।
- कुटीर उद्योगों में।
- घरेलू कार्यों में।
- नहरी क्षेत्रों में बड़ी डिग्गी बना कर फसलें लेने हेतु।

फसल कृषि एवं सम्बन्धित तथ्य :

अध्ययन क्षेत्र पूर्णतः कृषि पर ही आश्रित है। वैसे देखा जाए तो सभ्यताओं के उदय का कारण कृषि को ही माना जाता है। कृषि ने मानव व पशु दोनों के जीवनयापन में सहयोग ही नहीं जीवन के विकास का पथ भी प्रदान किया। इसने जनाधिक्य और स्तरीकृत समाज के विकास को संभव बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। अध्ययन क्षेत्र में देखा गया कि फसल उत्पादन उपजाऊ भूमि पर और चारागाहों और रेंजलैंड पर पशुधन की स्थानीय चरवाहों द्वारा देखभाल किया जाना मुख्यतः कृषि से ही अंतर्संबंधित है। यहां कृषि में नवाचार व उनकी मात्रात्मक वृद्धि विचार की मुख्य बातें बनी हुई हैं। यहां दो-तिहाई जनसंख्या जैविक खेती का प्रयोग नहीं करती है। एक चौथाई लोग सिविकम की तर्ज पर जैविक खेती को बढ़ावा दे रहे हैं।

फसल कृषि एवं पशुपालन अर्थव्यवस्था :

सर्वेक्षित परिवारों में तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सूखे के समय फसलें कम होने पर समस्यात्मक परिस्थिति में पशुपालन ही एकमात्र सहारा है, जो दो-तिहाई परिवारों का प्रमुख व्यवसाय है। बाकी परिवार वन्य वनस्पति को काटकर नजदीकी शहरों, कस्बों में विक्रय कर अपनी जीविका चलाते हैं। कुछ किसान श्रम (मजदूरी) करने के लिए बीकानेर शहर जाते हैं और भारी-भरकम मेहनत करके खेती न होने से उत्पन्न आजीविका की समस्या का सामना करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन के लिए परिस्थितियां अनुकूल प्रतीत होती है क्योंकि हर किसान के पास अच्छा-खासा पशुधन संसाधन है। बीकानेर जिले का काफी डेयरी उद्योग अध्ययन क्षेत्र में अवस्थित है। संपूर्ण सर्वेक्षित क्षेत्र में पशुपालन मुख्य उद्यम है और भविष्य में भी इसका स्थान शायद ही कोई अन्य ले पाए। ऐसा अध्ययन से प्रतीत होता है। पशुपालन के बिना इस मरुस्थलीय क्षेत्र में खेती संभव नहीं है। बिना पशुओं के खेती-बाड़ी की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि यहां के परिवारों ने बताया कि उनके आधे जीविकोपार्जन के साधन पशुओं के उत्पाद ही हैं जिनसे उनके घरों में मानसून की प्रतिकूल परिस्थितियों में चूल्हा जलता है।

पशुपालन का स्वरूप निर्वाहक, अर्थात् स्वयं के परिवार के पालन हेतु, रहा है। आज भी यह स्वरूप अधिकांशतः व्याप्त है। यहां डेयरी उद्योग काफी प्रचलित है क्योंकि नगरीयकरण के फलस्वरूप दुग्ध पदार्थों की मांग में वृद्धि से डेयरी उद्योग जन्म लेता है।

राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र बीकानेर नगर में स्थित है जिससे आसपास के क्षेत्रों में अच्छी नस्ल के ऊंट पाले जाते हैं। यह क्षेत्र ऊंटों के लिए तथा जनवरी माह में ऊंट महोत्सव के लिए विश्व प्रसिद्ध है। बीकानेर के लिए यह पशु प्राचीन समय से ही वरदान रहा है। जब से राज्य सरकार ने इसे राज्य पशु का दर्जा दिया है, किसानों के चेहरे खिल गए हैं। लेकिन दुर्भाग्य की बात है इतना सब कुछ होते हुए भी स्थानीय मध्यम श्रेणी के किसान ऊंट की जगह मशीनरी को ज्यादा पसंद कर रहे हैं जिससे इस पशु का स्थान वर्तमान समय में संख्यात्मक दृष्टि से गौण होता जा रहा है। इसके महत्व को देखते हुए इसके संरक्षण-संवर्द्धन हेतु सरकार ने इसे राज्य-पशु का दर्जा दिया है।

शोध विधि :-

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंधन अध्ययन के लिए स्रोत के रूप में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोत का प्रयोग किया गया है।

सारांश -

बीकानेर जिले में सिंचित क्षेत्रों के तीन-चौथाई तथा असिंचित क्षेत्रों के आधे परिवारों ने वनस्पतियों के कम या लुप्त होने की बात कही। इनमें फोग, कैर, अन्ना व कंटीली झाड़ियां थीं। फोग व अन्ना विशेषकर असिंचित क्षेत्रों में अधिक प्रभावित दिखीं। उक्त अवधि में केवल नोखा तहसील के सिंचित भागों में वनस्पति में वृद्धि का प्रारूप रिपोर्ट किया गया, जिसके कारणों में सिंचाई में वृद्धि, सरकारी योजनाओं के फलस्वरूप जल उपलब्धता में वृद्धि जैसे कारक माने गए। सभी जाति-समुदायों के असिंचित गांवों में जनसंख्या-अधिवास वृद्धि के कारण चारागाहों में कमी देखी गई। वरण अन्य पिछड़ी जातियों तथा अनुसूचित जातियों के सिंचित गांवों में चारागाहों में वृद्धि का प्रारूप पाया गया। चारागाहों में कमी का प्रभाव चारे तथा पशु-आहार की खरीद, पशुओं की संख्या में कमी आदि के रूप में देखा गया। अन्य पिछड़ा वर्ग व मुस्लिम समुदायों के सिंचित-असिंचित गांवों में वन्यजीवों में वृद्धि का प्रारूप रिपोर्ट किया गया। सामान्य जातियों में सर्वत्र कमी तथा अनुसूचित जातियों के गांवों में मिलाजुला प्रारूप था। जल की उपलब्धता में वृद्धि के बावजूद सूखे के समय में पेयजल तथा कृषि हेतु सिंचाई व वर्षा जल की कमी हो जाती है। नलकूप-सिंचित नोखा तहसील में फव्वारों से तथा नहर-सिंचित पूगल तहसील में जलप्लावन विधि से सिंचाई की जाती है। सर्वाधिक कृषि भूमि उपलब्धता अन्य पिछड़ी जाति वर्ग तथा न्यूनतम कृषि भूमि उपलब्धता अनुसूचित जाति वर्ग के पास है। अनुसूचित जाति समुदाय में खरीफ के अंतर्गत कृषित-भूमि सर्वाधिक है, जबकि अन्य समुदायों में रबी की फसल के अंतर्गत ज्यादा कृषित भूमि रहती है। कृषि से जुड़े अनुसूचित जाति एवं अन्य पिछड़ी जाति समुदायों में जैविक कृषि की जानकारी वालों का बेहतर अनुपात था। मुस्लिम समुदाय के सिंचित-असिंचित गांवों में मृदा प्रदूषण का अभाव पाया गया।

सकल रूप से सर्वाधिक पशुधन स्वामित्व सामान्य जाति समुदायों के घरों में था, जबकि असिंचित गांवों में अन्य पिछड़ी जातियों तथा सिंचित गांवों में सामान्य जातियों के पास सर्वाधिक पशुधन स्वामित्व पाया गया। सामान्य जातियों को छोड़कर प्रायः सिंचित क्षेत्रों में असिंचित क्षेत्रों की अपेक्षा पशुधन उपलब्धता कम देखी गई। सिंचित क्षेत्रों में संपूर्ण घरेलू कृषि अर्थव्यवस्था में फसल कृषि का योगदान 84 प्रतिशत के लगभग पाया गया। असिंचित गांवों में पशुधन का योगदान (53 प्रतिशत) फसल कृषि से अधिक है।

असिंचित गांवों में बसे अनुसूचित जाति समुदायों में, शायद निर्धनता एवं कार्य प्रारूप के परिचायक,

तपेदिक एवं त्वचा संबंधी रोग देखे गए। सिंचित गांवों के विभिन्न समुदायों में विविध स्वास्थ्य समस्याएं पाई गईं। जिनमें तपेदिक, कैंसर तथा उच्च रक्तचाप भी शामिल हैं। अर्द्ध-शुष्क तथा अधिक शिक्षित नोखा तहसील के गांवों में करीब 70 प्रतिशत परिवारों को जलवायु परिवर्तन की संकल्पना का एहसास पाया गया, जबकि शुष्कतर एवं कम शिक्षित पूगल तहसील के गांवों में ऐसी जागृति वाले परिवार 30 प्रतिशत से भी कम थे। गांवों में औसत ताप परिवर्तन का प्रभाव पशुपालन की अपेक्षा फसल कृषि पर मानने वाले ग्रामीण परिवार अधिक अनुपात में थे, जबकि इसके स्वास्थ्यगत प्रभावों की ओर कम ही लोगों ने इंगित किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. बंसल सुरेश चन्द्र (2015-16) : "नगरीय भूगोल" मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ (उत्तरप्रदेश), पेज सं.-316-317.
2. तिवारी, आर. सी. (2014) : "अधिवास भूगोल" प्रवालिका पब्लिकेशन्स, 11/10, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद (यू.पी.).
3. तिवारी, आर. सी. (2015) : "भारत का भूगोल" प्रवालिका पब्लिकेशन्स, 11/10 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद (यू.पी.)।
4. मौर्य, एस. डी. (2018) : "जनसंख्या भूगोल" शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)।
5. मौर्य, एस. डी. (2018) : मानव भूगोल, शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश).
6. शर्मा, एच. एस. और शर्मा एम. एल. (2019) : 'राजस्थान का भूगोल' पंचशील प्रकाशन, जयपुर (राजस्थान), पेज संख्या-420-431.
7. सिंह, बी. एन. एवं सिंह मनीष कुमार (2016) : "मानव भूगोल का स्वरूप" प्रवालिका पब्लिकेशन्स 11/10, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद - (यू.पी.)
8. सक्सैना, एच. एम. (2018) : "राजस्थान का भूगोल" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्लॉट नं. 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.)



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 166-171

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

महर्षि पतंजलि योगसूत्र में अधिगम की अवधारणा एवं यौगिक तकनीक

विपिन बोहरा, शोधार्थी,

डॉ. पूनम आहूजा, शोध निर्देशिका,

योग विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

शोध आलेख सार -

योगदर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा के षड्दर्शनों में से एक है, जहां अन्य पांच दर्शन तत्त्वों की मीमांसा करने तथा एक दूसरे का खंडन-मंडन करने में तल्लीन दिखाई देते हैं, वहीं योग दर्शन शरीर, मन, इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर संस्कारों से मुक्ति तथा चित्तवृत्तियों के निरोध के पश्चात् समाधि प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करता है। ऐसी मान्यता है कि ईसा से सौ दो सौ साल पहले महर्षि पतंजलि द्वारा योग दर्शन की रचना की गई। योग की अनेक शाखाओं का वर्णन प्राचीन समय से ही प्राप्त होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, सन्यास योग आदि का विशेष रूप से वर्णन मिलता है। इन सबके बावजूद भी अष्टांग योग का प्रणेता महर्षि पतंजलि को ही माना जाता है। इसी को योग का आधार बनाकर योग की विभिन्न शाखाओं का विकास हुआ है। योग दर्शन के दूसरे सूत्र में महर्षि पतंजलि ने योग को परिभाषित करते हुए कहा है कि "चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग कहते हैं"। योग की यह परिभाषा ही संपूर्ण योगदर्शन का आधार स्तंभ है। मन का संसार में भटकना तब तक बना रहता है जब तक चित्त की वृत्तियां एकाग्र नहीं होती हैं। मन स्वभाव से ही चंचल है। जगत के चारों दिशाओं में भटकते रहना मन का स्वभाव है।

आत्म-साक्षात्कार में चंचल मन बाधक एवं निश्चल मन साधक के रूप में काम करता है।

मूल शब्द - योगसूत्र, अधिगम, अवधारणा एवं तकनीक।

भूमिका -

महर्षि पतंजलिकृत योगसूत्र में अधिगम की अवधारणा सामान्य अर्थों में अधिगम से अभिप्राय सीखने से है। हम पूरे जीवन में किसी न किसी रूप में कुछ न कुछ हर समय सीखते रहते हैं। व्यक्तित्व का विकास सीखने की प्रक्रिया के द्वारा होता है। वर्तमान में हम जो कुछ भी हैं वह हमने किसी न किसी प्रकार से सीखा ही है। इस संसार में मनुष्य का जन्म धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ-चतुष्टय की सिद्धि के लिए हुआ है। इन पुरुषार्थों को सिद्ध करने के लिए हम जीवनभर प्रयास करते रहते हैं। पुरुषार्थों की सिद्धि के पश्चात् ही हमें अपने स्वरूप का वास्तविक ज्ञान होता है। पातंजलि योगसूत्र के प्रथमपाद- समाधिपाद के उनतीसवें सूत्र में "ततः

प्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यन्तरायाभावश्च” में अधिगम शब्द आया है। यहां अधिगम का अर्थ अन्तरात्मा अर्थात् द्रष्टा के स्वरूप का ज्ञान है। अन्तरात्मा के स्वरूप का ज्ञान अष्टांग योग का परम लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति योगांगों का अनुष्ठान करने से ही होती है। योगसूत्र के द्वितीय पाद के अट्ठाइसवें सूत्र में कहा गया है कि “योगांगों का अनुष्ठान करने से अशुद्धियों का नाश होने पर ज्ञान का प्रकाश विवेक ख्याति पर्यंत हो जाता है।” सामान्यतया हमें संसार का ज्ञान, ज्ञान के करणों से प्राप्त होता है। ये दो प्रकार के होते हैं –

1. बाह्य-करण
2. अंतःकरण

“बाह्य-करण के अंतर्गत पांच ज्ञानेंद्रियां और अंतःकरण के अंतर्गत मन, बुद्धि, चित्त, और अहंकार शामिल हैं। इसे अंतःकरण-चतुष्टय कहते हैं। ज्ञान के इन दो साधनों के माध्यम से हम जीवन भर सीखते रहते हैं।” यह संसार नाम-रूपात्मक है। हमारे मस्तिष्क में संसार का ज्ञान चित्तवृत्ति के रूप में अंकित होता है। शब्दों के द्वारा चित्त में उन शब्दों का एक रूप प्रकट होता है, तत्पश्चात् उसका ज्ञान हमें होता है। मस्तिष्क शब्द नहीं, बल्कि चित्त की भाषा अर्थात् दृश्य को पढ़ता है। जब तक किसी शब्द का रूप मस्तिष्क में नहीं बनता, तब तक उसका हमें ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। हर शब्द का एक रूप और हर रूप का एक शब्द ही हमारे ज्ञान का आधार है। सीखने की इस प्रक्रिया में हम श्रुत-बुद्धि और अनुमान-बुद्धि का प्रयोग करते रहते हैं।

श्रुत-बुद्धि का अधिगम सुनकर, पढ़कर और अनुमान-बुद्धि का अधिगम प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर होता है। संसार का ज्ञान श्रुत-प्रज्ञा और अनुमान-प्रज्ञा द्वारा हो सकता है, परंतु आत्म-स्वरूप का ज्ञान ऋतंभरा-प्रज्ञा से प्राप्त होता है। ऋतंभरा-प्रज्ञा की प्राप्ति के संबंध में योगसूत्र के प्रथमपाद-समाधिपाद के सैतालीसवें सूत्र में कहा गया है कि “योग की साधना के पश्चात् जब निर्विचार समाधि अत्यंत निर्मल होती है तब अध्यात्म प्रसाद की प्राप्ति होती है। इस अध्यात्म प्रसाद की प्राप्ति के पश्चात् ही प्रज्ञा ऋतंभरा होती है।”¹²

इस ऋतंभरा प्रज्ञा से वस्तु के यथार्थ और पूर्ण स्वरूप का ज्ञान होता है। योगसूत्र में आत्मस्वरूप के ज्ञान को अधिगम कहा गया है। अधिगम, द्रष्टा का अपने स्वरूप में स्थित होना है और यह तब होता है जब चित्त की सारी वृत्तियां निरुद्ध हो जाती हैं। पातंजल योगसूत्र में योग, चित्त-वृत्तियों का निरोध है।

इस योग का अधिगम तब होता है, जब प्रज्ञा ऋतंभरा होती है। सामान्य परिस्थितियों में जो अधिगम हमें होता है वह सीखने के साधनों अर्थात्- बाह्य-करण और अंतःकरण चतुष्टय के द्वारा ही होता है। इन करणों से प्राप्त ज्ञान चित्त-वृत्तात्मक होता है। योग में अधिगम की अवधारणा ऋतंभरा प्रज्ञा से प्राप्त ज्ञान से है। इस ज्ञान से मुक्ति मिलती है। योग विद्या है और विद्या उसे कहते हैं जो मुक्ति दिलाए- “सा विद्या या विमुक्तये”। विद्या वह है जो मुक्ति प्रदान करें। योग विद्या से द्रष्टाका दृश्य से वियोग हो जाता है। इसे ही योग कहते हैं।

संसार की सृष्टि अविद्याजनित ज्ञान के कारण होती है। “अविद्या से जन्म लेने वाला ज्ञान क्लेश प्रदान करता है। सारे क्लेशों का मूल अविद्या है।” अविद्या से मुक्ति विद्या प्रदान करती है। योग वह विद्या है जो मुक्ति दिलाती है। योग का अधिगम जीव को क्लेशों से मुक्त कर सकता है।

महर्षि पातंजलिकृत योगसूत्र में अधिगम की यौगिक तकनीक किसी भी शिक्षण का उद्देश्य अधिगम है। अधिगम की प्रक्रिया सतत् चलती रहती है। पांच ज्ञानेंद्रियों एवं अंतःकरण चतुष्टय के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया चलती रहती है। यौगिक शिक्षा का उद्देश्य स्वरूप का अधिगम है, जिसके लिए मनुष्य का जन्म हुआ है।

94 मनुष्य जन्म की सार्थकता मानव का शरीर प्राप्त कर लेने मात्र से नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक अधिगम से सर्वभूतों के हित में रत रहने से है। इसके कारण ही मनुष्य जगत का सबसे विवेकशील प्राणी कहलाता है। मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए आध्यात्मिक अधिगम की आवश्यकता है। इस अधिगम के पश्चात् ही व्यष्टि चेतना समष्टि चेतना से जुड़ती है। चेतना के इस योग के पश्चात् ही सर्वभूतों में मनुष्य को एकात्मता का दर्शन होता है। इस एकात्म दृष्टि की प्राप्ति के पश्चात् मनुष्य जगत का सबसे विवेकशील प्राणी सिद्ध होता है। मानव जीवन की सार्थकता विवेक के अधिगम से ही संभव है। विवेक जागृत होने के परिणामस्वरूप द्रष्टा और दृश्य के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है। योगसूत्र के रचयिता महर्षि पतंजलि ने योग को परिभाषित करते हुए कहा है कि “योग चित्त वृत्तियों का निरोध है। जब चित्त की वृत्तियां निरुद्ध होती हैं तब द्रष्टा अपने स्वरूप में स्थित होता है। यदि द्रष्टा अपने स्वरूप में स्थित नहीं है तो वह चित्त की वृत्तियों के अनुरूप ही अपने स्वरूप को समझने लगता है।” योग के अधिगम से तात्पर्य वृत्तियों से मुक्त होकर द्रष्टा की अपने स्वरूप में स्थिति अर्थात् कैवल्य अवस्था की प्राप्ति से है। पुरुष को भोग और अपवर्ग प्रदान करने के लिए प्रकृति का पुरुष से संयोग होता है। अपना यह प्रयोजन सिद्ध कर लेने के पश्चात् परिणामी प्रकृति जो कार्य-कारण के रूप में विभक्त होकर अपना कार्य कर रही थी, वही तीन गुणों से युक्त प्रकृति प्रतिलोम-परिणाम को प्राप्त होकर अपने कारण में विलीन हो जाती है।

“वास्तव में यही प्रकृति के गुणों का कैवल्य है। इसकी प्राप्ति पुरुष से अलग होने के पश्चात् ही होती है, क्योंकि अविद्या के कारण गुणों के साथ पुरुष का संबंध अनादि सिद्ध है। अविद्या के नाश के पश्चात् इस संबंध का अभाव हो जाने से पुरुष का अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित हो जाना ही पुरुष का कैवल्य है।” **“अविद्या के अभाव से प्रकृति पुरुष के संयोग का भी अभाव हो जाता है। इस अभाव को ही द्रष्टा की स्वरूप स्थिति या चेतन आत्मा का कैवल्य कहा जाता है।”**

योग के अधिगम की यौगिक तकनीक के रूप में महर्षि पतंजलि ने चित्त की वृत्तियों को साधक एवं बाधक वृत्तियों अर्थात् अविद्या को पुष्ट करने वाली वृत्ति को बाधक वृत्ति और अविद्या का नाश करने वाली वृत्ति को साधक वृत्ति के रूप में परिभाषित किया है। पांच प्रकार की वृत्तियों से चित्त आवृत रहता है। योग के साधक को “अविद्याकृत-क्लेशों को समाप्त करने वाले, योग के साधक वृत्तियों का अभ्यास करना चाहिए, जिससे योग की साधना का मार्ग प्रशस्त हो सके। वृत्तियां पांच प्रकार की होती हैं- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति।”

इस जगत में जन्म लेने वाला जीव शरीर और इंद्रियों से प्राप्त ज्ञान के आधार पर ही अधिगम करता है। पांच ज्ञानेंद्रियों, पांच कर्मेन्द्रियों और मन के द्वारा इस जगत में अधिगम की प्रक्रिया जीवनपर्यंत सतत चलती रहती है। “ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में बाह्य करण और अंतःकरण के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जाता है। संसार के जीव ज्ञान के इन साधनों के द्वारा अधिगम करते हैं।” योगसूत्र में परिभाषित पांच प्रकार की वृत्तियों के अंतर्गत ही ज्ञान के बाह्य करणों और अंतःकरणों से प्राप्त ज्ञान आता है। किसी भी प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति का साधन शरीर और इंद्रियां हैं। शरीर और इंद्रियों से प्राप्त ज्ञान चित्त-वृत्तियों का निर्माण करता है और योग चित्त-वृत्तियों का निरोध है।

योग के अधिगम के लिए ऐसी साधक वृत्तियों का यौगिक तकनीक के रूप में प्रयोग किया जाता है,

जिससे अविद्या का नाश हो, क्योंकि प्रकृति और पुरुष के संयोग का कारण अविद्या ही है और इस संयोग के वियोग के बिना, योग का अधिगम संभव नहीं है, क्योंकि योग का मुख्य उद्देश्य द्रष्टा का कैवल्य है। कैवल्य प्राप्ति तभी हो सकती है जब द्रष्टा का दृश्य से वियोग हो। दृश्य के संयोग के साथ द्रष्टा चित्त की वृत्तियों को ही अपना स्वरूप समझ लेता है। इसका मूल कारण अविद्या है और अविद्या समाधि की सिद्धि में बाधा है।

पतंजलि योगसूत्र में निम्नानुसार यौगिक तकनीकों का समावेश किया गया है—

1. योगाभ्यास एवं वैराग्य
2. भावनाचतुष्टय
3. क्रियायोग
4. अष्टांग योग

योगाभ्यास एवं वैराग्य :

महर्षि पतंजलिकृत योगदर्शन के समाधिपाद बारहवें सूत्र में वर्णन किया गया है कि “अभ्यास और वैराग्य से चित्त की वृत्तियों— प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति का निरोध होता है।” चंचलता चित्त का स्वभाव है। इसकी स्थिरता के लिए जो प्रयत्न किया जाता है उसे योगसूत्र में अभ्यास की संज्ञा दी गई है। यह अभ्यास निरंतर दीर्घकाल तक करने से दृढ़ होता है। वैराग्य को परिभाषित करते हुए सूत्रकार कहते हैं कि “देखे और सुने गए विषयों के प्रति चित्त का सर्वथा तृष्णा रहित, वशीकार नामक जो अवस्था है, उसे वैराग्य कहते हैं।” साधक को विवेक ज्ञान से पुरुष और प्रकृति का यथार्थ ज्ञान होने के पश्चात जब अपने वास्तविक स्वरूप पुरुष का ज्ञान हो जाने से प्रकृति के गुणों में सर्वथा राग से रहित अवस्था की प्राप्ति होती है, तो वैसी अवस्था को पर—वैराग्य कहा जाता है। “द्रष्टा और दृश्य का संयोग अविद्या के कारण होता है और अविद्या से अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश नामक क्लेशों का जन्म होता है। विवेकजनित ज्ञान से जब इन दोनों की समान भाव से शुद्धि हो जाती है तब कैवल्य घटित होता है।” “योग की साधना में रत साधक को निरोध रूप योग की प्राप्ति श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रज्ञापूर्वक क्रम से सिद्ध होती है। योग के जिन साधकों की इन साधनों में जितनी तीव्र गति होती है उनकी समाधि की सिद्धि उतनी ही शीघ्रता से होती है। साधन की मात्रा हल्की, मध्य और उच्च होने के कारण समाधि की सिद्धि में काल का भेद हो सकता है।” योग की सिद्धि के इन साधनों के अलावा सूत्रकार ने “ईश्वर—प्रणिधान से योग के अधिगम की विघ्नों का अभाव तथा द्रष्टा के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होता है।” “योग के अधिगम में आने वाले विघ्नों को दूर करने के लिए एक तत्व का अभ्यास करना चाहिए, ऐसा करने से चित्त में एकाग्रता उत्पन्न होती है और उससे योग के अधिगम में आने वाले विघ्नों का नाश होता है।”

भावनाचतुष्टय :

सामान्यतः चित्त राग—द्वेष आदि विकारों से युक्त रहता है। विकारों के कारण मलिन चित्त चंचल रहता है। चित्त की चंचलता का कारण राग—द्वेषात्मक विचारों का प्रवाह है। चित्त से जब तक विचारों के मल दूर नहीं होते तब तक चित्त स्थिर नहीं होता। चित्त को निर्मल बनाने के लिए महर्षि पतंजलि ने यौगिक तकनीक के रूप में योगदर्शन के समाधिपाद के तैत्तिरीय सूत्र में वर्णन किया है कि “सुखी, दुखी, पुण्यात्मा और पापात्मा से मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा की भावना करने से चित्त को निर्मल बनाया जा सकता है।”

“शरीर की नाड़ियों की शुद्धि के लिए प्राणवायु को बारंबार बाहर निकालने और अपनी क्षमता अनुसार उसे

बाहर रोकने के अभ्यास से भी चित्त निर्मल होता है। योग का निरंतर अभ्यास करने से साधक को दिव्य विषयों का साक्षात्कार होता है, इन दिव्य विषयों का साक्षात्कार करने वाली वृत्ति को विषयवती प्रवृत्ति कहते हैं। यह प्रवृत्ति मन की स्थिति को बांधने वाली होती है। इसके अतिरिक्त योग का अभ्यास करते रहने से उत्पन्न शोकरहित ज्योतिषमति प्रवृत्ति भी मन की स्थिति को बांधने वाली होती है। सामान्यतः चित्त में राग-द्वेष के संस्कार बने रहते हैं, जिसके कारण चित्त चंचल रहता है। चित्त की चंचलता को दूर करने के लिए “राग-द्वेष से मुक्त, वीत-राग अवस्था में स्थित ऐसे विरक्त पुरुष का चिंतन करने से भी चित्त स्थिर हो जाता है। योग के साधक को चित्त की स्थिरता के लिए स्वप्न और निद्रा का भी आलंबन लेना चाहिए, क्योंकि स्वप्न और निद्रा का आलंबन करने वाला चित्त भी स्थिर हो जाता है। योगसूत्र में चित्त की स्थिरता के लिए वर्णित यौगिक तकनीक में से साधक को अपने रूचि के अनुसार ध्यान करने से स्वभाव से चंचल मन, स्थिर हो जाता है।” इस जगत में जन्म लेने वाला जीव, जीवन भर कुछ न कुछ सीखता रहता है।

सामान्यतः जिस बुद्धि से व्यक्ति सीखता है, वह बुद्धि श्रवण और अनुमान से प्राप्त होती है, परंतु योग का अधिगम ऋतंभरा बुद्धि से होती है, क्योंकि योगी की बुद्धि वस्तु के यथार्थ स्वरूप को ग्रहण करने वाली होती है। “योग की साधना से जब निर्विचार समाधि निर्मल होती है तब अध्यात्म प्रसाद की प्राप्ति होती है, परिणामस्वरूप बुद्धि ऋतंभरा होती है। इसी बुद्धि से प्रकृति और पुरुष का यथार्थ ज्ञान साधक को होता है। इस बुद्धि से उत्पन्न संस्कार अन्य राग-द्वेष युक्त संस्कारों का नाश करने वाला होता है। ऋतंभरा प्रज्ञा से योगी मुक्ति की अवस्था के करीब पहुंच जाता है और जब सब प्रकार के संस्कारों का निरोध हो जाता है तब निर्बीज समाधि की सिद्धि होती है।” इस प्रकार योग के अधिगम के लिए महर्षि पतंजलिकृत योगदर्शन में वर्णित यौगिक तकनीक का अभ्यास करके साधक योग के परम लक्ष्य कैवल्य को प्राप्त कर सकता है।

शोध विधि :-

शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य योगसूत्र में वर्णित यौगिक प्रविधियों का अध्ययन करना है। किसी भी शोध अध्ययन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक शोध अभिकल्प तैयार किया जाता है, जिससे वांछित उद्देश्य की सिद्धि की जा सके। योगसूत्र में दुख से मुक्ति और अपने वास्तविक स्वरूप के बोध के लिए जिस तरह का आध्यात्मिक एवं प्रेरणात्मक संचार हुआ है उनके तत्त्वों का अध्ययन करने के लिए शाब्दिक विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग इस शोध अध्ययन में किया गया है। योग के इन ग्रंथों की व्याख्या विशेषज्ञों, विद्वानों, धर्माचार्यों, वैज्ञानिकों ने अपने ढंग से अलग अलग तरीके से किया है। योगसूत्र की विषय वस्तु का शाब्दिक विश्लेषण शोध प्रविधि से अध्ययन किया गया है।

शोध अनुसंधान विधि में शाब्दिक विश्लेषण विधि शोध अध्ययन की एक प्रविधि है, जिसके माध्यम से शोधार्थी द्वारा लिखित, मुद्रित शोध सामग्री में दिए गए तत्त्वों का विश्लेषण किया जाता है। शाब्दिक विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य विषय का विवेचन, रूपरेखा, विषय के संदेश, कार्य एवं उसके प्रभावों का विश्लेषण करना है। इस विधि का प्रयोग करते समय शोधार्थी को विषय वस्तु का चयन सावधानीपूर्वक करना पड़ता है। इस शोध अध्ययन के लिए जिन विषय वस्तुओं का प्रयोग किया जा रहा है उनके दो रूप हो सकते हैं— संबंधित विषय के विशेषज्ञ द्वारा दिया गया संदेश और किसी संदेश की लिखित या मुद्रित प्रतियां। दोनों ही स्थितियों में शाब्दिक विश्लेषण विधि के माध्यम से विषय वस्तु का अध्ययन किया जा सकता है। इस विधि में शोध विषय से संबंधित यौगिक

ग्रंथों का अध्ययन किया गया है।

सारांश -

महर्षि पतंजलि प्रणीत योगसूत्र में वर्णित आसन हठयोग के आसन से अलग प्रकार का है, इसमें आसन की सिद्धि प्रयत्न की शिथिलता और अनंत में चित्त की एकरूपता से होती है। यहां अनंत से आशय आकाश आदि से है। “आसन से तात्पर्य लंबे समय तक स्थिरता के साथ सुखपूर्वक बिना किसी कष्ट के बैठना है।”

शरीर और मन की स्थिरता के परिणामस्वरूप शरीर का अध्यास छूटने के साथ ही साथ मन विषयों से रहित हो जाता है। आसन सिद्ध होने के पश्चात योग के साधक को शरीर और मन के विचलन से मुक्ति मिलती है और भूख, प्यास, शीत, उष्ण आदि का प्रभाव शरीर और मन पर नहीं पड़ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. गोयन्दका हरिकृष्णदास, (संवत् 2072), योगदर्शन, गीता प्रेस गोरखपुर, 1/2 पृ. सं. 11।
2. तीर्थ स्वामी ओमानंद, (संवत् 2069), पातंजलयोगप्रदीप, गीताप्रेस गोरखपुर, 2/29 पृ. सं. 354।
3. दशोरा, नन्दलाल, (2003), पातंजल योगसूत्र—योगदर्शन, रणधीर प्रकाशन हरिद्वार, उत्तराखण्ड, पृ. सं. 15।
4. गोयन्दका हरिकृष्णदास, (संवत् 2072), योगदर्शन, गीता प्रेस गोरखपुर, 1/33 पृ. सं. 31।
5. तीर्थ स्वामी ओमानंद, (संवत् 2069), पातंजलयोगप्रदीप, गीताप्रेस गोरखपुर, 2/1 पृ. सं. 275।
6. पतंजलि योगसूत्र श्रीश्री रविशंकर द्वारा व्याख्यान (2011) Elegant Printing Works, Bangalore.
7. दास अभिलाष, (2007), महर्षि पतंजलिकृत योगदर्शन पारख भाष्य, कबीर पारख संस्थान, प्रीतमनगर इलाहाबाद—211001, 3/4 पृ. सं. 111



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 172-181

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

EMPOWERMENT OF HUMAN MINDS WITH RAJAYOGA MEDITATION - A DISASTER MANAGEMENT APPROACH

Vijayadharan Pillai K, RESEARCH SCHOLAR

Dr. Rajendran D. R., Guide

MANIPUR INTERNATIONAL UNIVERSITY, IMPHAL.

Abstract :

Yoga is the most ancient but scientifically proven system to empower human minds and bodies without any invasive medications. Yoga is widely popular as a therapeutic remedy without medicines for lifestyle diseases and meditation is the best inner engineering programme as many modern yoga practitioners put it. As there are various versions of Yogas, this paper particularly highlights the significance of Raja Yoga due to its speciality in igniting the inner consciousness as well as detachment from worldly life. The present paper is an attempt to suggest the Raj Yoga meditation for the empowerment of human minds to those people who are part of disaster affected community, to equip them mentally to return to normal life with a more positive approach.

Key words - Empowerment, Raja Yoga, Meditation, Disaster management. Mind, Human body, Yoga

Introduction :

The word 'Empowerment' has different connotations with respect to multifarious subjects, aspects and approaches. Even though the word itself emerged during the beginning of the 1920s, it did not receive acknowledgement until the 1970s when the word was used as a can to express the capacity of humans to achieve confidence (Haddad, and Toney-Butler, 2023). According to Cambridge Dictionary, the literal meaning of the word 'Empowerment' depicts the process of gaining freedom and power to do what one wants to or control what happens to one. However, empowerment can be defined as an interpersonal process to equip a person to create and achieve individual goals through inducting and imbibing them the ability to induce their potential and efficacy through this application of appropriate methods, resources, circumstances (Brady et al., 2019; Lu, Zhao and While, 2019;

Lean et al., 2019.) Empowerment is a key area of study related to various disciplines, especially in education, philosophy, social work, business and health. Moreover, it is considered a major outcome which can be analysed from the power gained by individuals, communities and organisations. Furthermore, empowerment can be understood as the quality or ability, of a person to influence the prevailing environment as well as to overcome the challenges he/she encounters with ease and stability. In fact, empowerment means solutions rather than problems ((Brady, Gibbons & Bogassian, 2019; Lu, Zhao & While, 2019; Lean et al., 2019; Bodolica & Apraggon, 2019; van Weeghel et al., 20019; Whitehead et al., 2019).

However, it is pertinent to understand the cognitive aspect of empowerment which is more relevant for the present research and empowerment means the ability to set or perform, one's responsibilities with confidence and strength. It means that empowerment in the psychological aspect denotes that it is an enabling process of an individual which bridges the sense of personal control and efficiency with the inclination to transform and act. The power of empowerment enables individuals to perceive the consequences of their actions thereby capacitating them accomplish the objectives they desire to achieve (Wach et al., 2016.)

Based on various studies conducted by psychologists, empowerment is present within an individual as a motivational urge (Wach, Darbach, Ruffind, Bruken, und Spinth, 2016).

Though knowledge and skill are essential elements for bringing change, these alone cannot imbibe transition. According to the self-efficacy theory propounded by the famous American Canadian Psychologist Bandura (1994), human behaviour is a relentless interaction between character, cognitive and environmental impacts. It denotes that individuals may suspect their capabilities when they have low self-esteem while encountering challenges or stress in life. This may lead them to give up or go into depression. Nevertheless, persons with high self-efficacy can induce higher effort to bring aspired transitions. It emphasises that the process of empowering can exert self-efficiency among individuals. Considering various literature on the concept of Empowerment, it is evident that empowerment and self-efficacy are complimentary to each other which is illustrated above. Empowering is a process, as mentioned above, that involves numerous activities and method propounded by different experts from various fields like the modern medical field, psychologists, educationalists, naturalists, ancient therapeutic systems etc. Though there are different empowerment systems enunciated by exponents from various fields, the ancient healing system of Yoga of Bharat deserves special mention due to its age-old history in effectuating intensive results in empowering individuals physically and psychologically.

The word Yoga originated from the Sanskrit language and dates back to the ancient history of

Bharat. The period is still unknown but assumed to be 3000 BC (Bhomavat, 2015). This ancient medicinal system is an effective treatment mechanism that heals humans physically and mentally concurrently. Moreover, Yoga involves multifarious practices called Asana (postures), Pranayama (Breathing exercises) and Dhyana (Meditation) (Mathew, 2021). Furthermore, it is proved that yoga practice can support humans to gain strength, power, kindness, flexibility, self-control and wellbeing (Woodyard, 2011).

Yoga was first mentioned in the sacred text of ancient Bharat called the Rig Veda which is also considered the premier written document of the world. Rig Veda is written in Sanskrit and the word Yoga is also a Sanskrit word. The word 'Yoga' is derived from the Sanskrit word 'Yuj' which means 'to join or "to unite"'. According to the ancient scriptures written by sages, Yoga aims to unite the human consciousness with Universal energy. Yoga practice enable the human body and mind to be united with the Universe or nature in perfect harmony which depicts the complete synchronisation of man and nature. Thus, it means that self-realisation is the ultimate aim of Yoga (Radhakrishnan, 1959). Moreover, it enables the practitioner to "liberate (Moksha) from worldly problems to accomplish freedom (Kaivalya).

Furthermore, Yoga can be explained as an inner science which transcends the human mind to receive the Universal vibrations through rigorous mental and physical exercises which were identified by ancient sages living in the Saraswathi Valley civilization period dates back to more than 5000 years. Ultimately, Yoga has proved to be the sole method to cater to the material and spiritual enhancement of human lives. Yoga can be explained as the proper conditioning of the human mind and body to reach the state of a yogi, who is detached and attached to worldly life, which enable humans to live life peacefully beyond caring about the future.

Though ancient sages identified and developed the most sophisticated and scientific means to attain proper coordination with universal energy or nature as Yoga, it underwent various adaptations by different experts in later years. In fact, Yogic science travelled through generations and it inspired Yoga experts to evolve more different types of Yoga practices which they have created to achieve certain specific needs. It is pertinent to note that the ancient Yoga Science was enriched by great sages and spiritualists in the later stages of history. Prominent spiritual personalities wrote commentaries on 'Yoga Sutra' which was actually written by Vyasa and thus commentaries made a significant impact on the diversification of Yoga practices with more emphasis on different concepts. Especially great Acharyas like Adi Shankaracharya, Sri Ramanujacharya, Sri Madhavacharya were the premier contributors during 800AD-1700 AD. The teachings of great spiritual personalities like Surdas, Tulsidas, Purandardas and Meerabai influenced the Yoga tradition of this period. Hatha Yoga

was popularised by Natha Yogis during this period. Vedanta Yoga, Hatha Yoga, Bhakti Yoga, Shatanga Yoga, Saptanga Yoga etc were emerged during this period which cater to the development of more branches of Yoga in ensuing years.

1700 AD-1900 AD is considered the modern era of Yoga and prominent sages like Ramana Maharshi, Sri Ramakrishna Paramahansa, Sri Paramahansa Yogananda and Swami Vivekananda contributed to the flourishing of this science as Raj Yoga There are different schools of Yoga and the Traditional School of Yoga consists of Jnana Yoga, Bhakti Yoga karma Yoga Dhyana Yoga Patanjala Yoga, Kundalini Yoga, Mantra Yoga. Hatha Yoga, Laya Yoga, Raja Yoga, Jain Yoga, Bouddha Yoga etc. and each school of Yoga has its own principles, practices and objectives.

As mentioned above, Yoga aims to bring integrity, composure and peace of mind to an individual's life through different physical and mental exercises. As mentioned earlier, each Yoga tradition has different principles and objectives, the present research focuses on impact of Raja Yoga in empowering human minds with a special objective. This study to identify the impact of Raja Yoga on people who survived disasters as a disaster management approach. It means that the study will identify the target group of people who survived or suffered different disasters in life so as to impart Raja Yoga practices to find out the impact of Raja Yoga among them to overcome their mental agonies and fear of facing life

Disasters are critical interruptions to the functioning of a community that surpasses its ability to adapt and implement its own resources. Disasters can be triggered by natural, human made technology or numerous other factors that influence the exposure and vulnerability community (www.ifre.org). According to United Nations Office for Disaster Risk Reduction, Disaster is defined as 'a serious disruption of the functioning of a community or a society at any scale due to hazardous events interacting with conditions of exposure, vulnerability and capacity, leading to one or more of the following: human, material, economic and environmental losses and impacts" (www.undrr.org). However, Disaster Management is the process of preparing effectively to respond to disasters which involves mental and physical harm or loss to human beings in different ways. In fact, Disaster Management can be explained as the responsibility of a person to manage a disaster by preventing, creating preparedness, responding to it and recovering from the aftermaths. Earthquakes, Flood, Wildfire, Avalanche, Hailstorm, Heat waves, Landslides, Cyclones, Biological and Technological Hazards, Epidemics, Pandemics, Droughts, Cold Waves, Tsunamis, and Volcanic Eruptions etc are enunciated as major disasters the world faces.

The management of disasters through empowering human minds with the effect application of Raja Yoga to enable them to cope with life without any anguish for the future is the area of this

research study. This current research study is imperatively significant in the academic scenario as this area is not been adequately deliberated in the research done by academia. The results of this research can contribute to the development of mankind in disaster management aspect.

Review of Literature :

Numerous studies have been conducted on the relevance of Yoga as a therapeutic method achieve relief from physical and mental problems. There are research studies published articles on the multifaceted practices or methods of Yoga for different purposes which are referred to for the background research of the current study. As it is not possible to include the vast data available on the topic, some of the notable studies are highlighted to this section. Though there are various research studies on the impact of Yoga in curing diseases due to the focus of the present study on the effect of Yoga on the Human Mind related to disaster management, the current session will discuss reviews on literature based on the topic only.

It is evident that modern medical science has not yet developed the special care and interventions which are essential for the treatment of disaster survivors called complementary medicines (Borji, Otaghi, Salizmi, Sanei, 2017). Considering the relevance of complementary medicines to alleviate mental problems and psyche-related stress or tensions, Bharath always has its own ancient scientific physical cum mental exercise, invented by great sages, as complimentary medicines which are clearly depicted in its sacred scriptures. This is known as Yoga.

Yoga practice was identified as an effective method to create intensive relaxation and breathing rhythm among university students who were undergoing depression (Khumar et al 1993). Another study conducted by Shohani et al., (2018) enunciated that Yoga has an active role in reducing stress, anxiety, and depression and they have suggested that it can be implemented as complementary medicine. Studies have described that Yoga is basically a meditative practice which will be finalised with the achievement of consciousness. This consciousness is devoid of all external active state of the world and remains in eternal peace or blissfulness (Bryant, 2011). The highest of all Yogas is Raja Yoga which enunciates that it can realise achievement of mastery over one's self. Moreover, it can depicted as a way towards attaining greater zones of spiritual senses. Raja Yogi flushes out all impurities from the mind and makes it calm and pure so as to reach out to the Supreme Power (Bharti, 2015).

The Sanskrit word 'Yoga' denotes synchronization of body and mind which has been a natural healing process in Bharath even before 5000 years. However, this became in vogue among Western people very recently due to its highly effective positive impact on mental and physical health (Barnes, Powell-Griner, McFan, Nahin, 2002). Moreover, studies have elicited that regular practice of yoga can cure numerous physical and mental disturbances like multiple sclerosis, asthma, irritable bowel

syndrome, lymphoma, hypertension, drug addiction, osteoarthritis and mental health issues (Singh, Malhotra, et al., 2001, Oken, et al. 2004; Freitas, et al., 2013, Taneja, et al., 2004; Cohen, et al., 2004; Chu, et al, 2016, Shaffer, LaSalvia, Stein, 1997; Garfinkel, Schumacher Jr. Husain, Levy, Reshetar, 1994., Duan-Porter, et al., 2016). Increased depression, stress and anxiety are some of the features of adverse effects of modern lifestyle which are not completely curable with allopathic medicines. Nevertheless, yoga has been identified as an effectual nonpharmacological and non-invasive treatment for these disorders (Brandon and Hidaka, 2012). The literature on Yoga has highlighted several significant and positive intellectual and mental outcomes of the practice of yoga in solving critical problems (Little. 2007; Ritcher et al., 2016). Yoga has been customised out into various formations with the active intervention of sages and practitioners in later stages in an effort to simplify or to conceive packages bespoke for the users. One of these customised patterns is called Raja Yoga.

Raja Yoga is considered as King of Yogas which means it is an effective technique to detach the mind from all the five senses to achieve consciousness (Dana, 2022). Different theories exist in the literature regarding Yoga, its diversified forms and its effects on the human mind. A large and growing body of literature has investigated the positive aspects of Raja Yoga and enunciated it as the easiest and most eminent form of Yoga practice to attain self-sovereignty (Shiva, 2017). According to Raja Yoga, there is nothing called the mind but there is only consciousness (Dana, 2022). However, there are theories which illustrate the mind as the software and the brain as its hardware. Some researchers suggest that consciousness and mind are synonymous (Prabhu & Bhat, 2013). Asana, Pranayam and Samadhi are the three major components of Raja Yoga (Rajoria & Singh, 2017). Furthermore, “Raja Yoga meditation is performed devoid of any mantra chanting and also it can be performed eyes open” (Ramesh, Sathian, Sinu, Rai, 2013).

Disasters have a critical impact on humans physically and mentally (Kim et al., 2008) which may interrupt their normal life with ease. Disaster mental health is an imperative subject to be dealt with in the current scenario of disaster-prone world. However, developing countries face a lack of appropriate systems to manage the problem (Math et al., 2006) and here, Yoga can be an effective mechanism to support the mental health problems of disaster survivors. Epidemics and Pandemics are also disasters humans face in their lives The COVID-19 Pandemic is the most critical and lethal health situation the whole world faces in this century. The nature of the disease distanced people from each other and made them locked up indoors for months. The disease and its psychological effect on communities created complex mental problems. All the technological support systems failed to ensure proper assistance to the victims of mental problems due to the strange situation, created by the pandemic and health protocols. However, research studies enunciate that Yoga helped

a lot to people to recover from mental stress, depression and agony (Ransing et al, 2020).

An ancient meditation technique, Raja Yoga involves not only any bodily postures rather its concern is more in the reorientation of thoughts occurring in human mind to create a harmony to God which can be termed as the union of mind with divine energy (Saho and Dubey., 2015). Mindfulness or mind-focused treatments are emerging these days and studies on the same elicited in various literature (Keng, et al., 2011. Khoury et al., 2013). Most of the mind-concentrated treatment systems are initiated from religious or spiritual connotations (Dakward Levin, 2009). The spiritual-based or religious mind enhancement techniques create positive enforcement among the practitioners and it helps them to evolve a modified character to adapt to the new situations (Elkins et al., 1988, Hill et al, 2000, Leigh et al 2005). Moreover, these spiritual-based exercises render strong feelings to the practitioners which helps to imbibe them with positive thoughts to view the future with a prospective approach (Sussman et al., 2013). These spiritual therapies are controlled by several steps to achieve the desired goals of the programme. A condition of active control has been executed in several research studies of mindfulness-based interventions (Feldman et al., 2010 Feuillc & Pargament, 2015, Jain et al. 2007). These are religiously or spiritually acknowledged systems which are promoted or developed by certain religious groups. On the contrary, Raja Yoga is not limited to any religious thoughts, spiritual beliefs or religious institutions. It is completely devoid of any religious or particular spiritual inclinations rather it is the most secular form of mental therapeutic system which can be followed by anyone requires assistance. Research studies enunciated that Raja Yoga Medication can inspire human minds to discover its own innate potentials to liberate from the clutches of distracting fascinations of life, which are illusions, and realise the fundamental truth called the divine and the union of mind with it (Telles and Desiraju, 1993).

The literature on the area of Raja Yoga illustrates its significance with numerous physical and mental disorders as a key therapeutic system without invasive medicines or treatments. The major gap identified in the literature related to the topic is that it has lack of research work addressing the implementation of Raja Yoga meditation as an effective disaster management mechanism to empower victims of disasters. The researcher analysed available literature regarding various aspects of Raja Yoga and mental harnessing for effective treatments of different diseases but adequate literature on disaster management related to Raja Yoga practice was absent. It highlights the relevance of adequate research studies on the area and this research is the primary step to understand the execution of Raja Yoga Meditation to empower disaster victims or survivors.

Significance and Scope of the Study :

Depression, stress and mental agony are critical problems people face today due to the rapid

pace of life, competitive educational or occupational stress, family problems and social problems. These problems are treated as psychic problems by modern medical practitioners. On the contrary, it is advisable that this problem of modern people should be treated with Yoga rather than medicine. Besides the above-mentioned reasons, people may be affected with depression, anxiety and stress by disasters of various types like natural disasters, terror attacks or biomedical hazards. This research is an attempt to identify appropriate Raja Yoga strategies to be applied among people affected by disaster allied stress, depression or a deteriorated mind-set.

The current research study is imperative to identify suitable strategies to be implemented to empower people who survived or were victimised by any type of disaster. This study aims to evolve bespoke Raja Yoga meditation techniques, especially for disaster survivors based on the nature of the disaster they have suffered and the intensity of the mental trauma they are in. Moreover, this study can create a model Raja Yoga strategy to be implemented as a disaster management empowerment programme.

Statement of the Problem :

Disasters of various natures are hitting the populations and communities adversely and its impacts are dragging people to the verge of mental wreck and sometimes finishing their own lives. Proper and directed mental harnessing programmes with effective beneficial outcomes should be evolved as disaster management strategies to pull out those who are under critical mental trauma or reluctant to continue their lives normally due to serious mental shocks. This research is an initial step to studying the existing scenario of disaster victims and their rehabilitation programmes so as to create and implement an effective Raja Yoga meditation programme to empower these people. This is an imperative study due to the absence of studies in the area of disaster management and Raja yoga.

Methodology :

The study will be conducted based on primary and secondary data. Secondary data will be collected from books, articles, journals and relevant print, audio and video materials. Primary data will be collected from a group of people identified from different sections and imparted with Raja Yoga meditation to identify their changes. The changes will be recorded and adequate changes in the practices will be implemented according to the needs of the situation. Three sets of people consisting of 10 persons in each set will be identified to be imparted with Raja Yoga for three months. The changes happening among each person will be identified and studied in detail to understand the impact of Raja Yoga.

Conclusion :

Empowerment of Human Minds by imparting Raja Yoga meditation to selected persons who

are affected by disasters shall be beneficial not only to them but also to the society as a whole. Disasters Management authority always focus on the reconstruction of physical assets, rehabilitation of victims or distribution of financial aid to be affected families. But unfortunately, these authorities are not paying any attention to the mental trauma suffered by the survivors due to the disasters. On this point of view, empowerment of the human minds by imparting Raja Yoga meditation is a noble venture, keeping the humanitarian aspect in view, which will be certainly beneficial to disaster affected people.

References :

1. Bodolica V, Spraggon M. (2019) Toward patient-centered care and inclusive health care governance: a review of patient empowerment in the UAE. *PublicHealth* 169:114-124.
2. Brady S, Lee N, Gibbons K, Bogossian F. (2019) Woman-centred care: An integrative review of the empirical literature. *Int J Nurs Stud.* 94:107-119.
3. Lean M, Fornells-Ambrojo M, Milton A, Lloyd-Evans B, Harrison-Stewart B, Yesufu-Udechuku A, Kendall T, Johnson S. (2019) Self-management interventions for people with severe mental illness: systematic review and meta-analysis. *Br J Psychiatry.* 214(5):260-268.
4. Lu H, Zhao Y, While A. (2019) Job satisfaction among hospital nurses: A literature review. *Int J Nurs Stud.* 94:21-31.
5. Mallik, Debesh., Bowen, Sarah., Yang. Yang., Perkins, Richy, Sandoz, Emily K. (2019). Raja yoga meditation and medication-assisted treatment for relapse prevention: A pilot study. *Journal of Substance Abuse Treatment* 96 58-64
6. Patra, Susmita., Chatterjee, Dr. Ishita., Dasgupta, Debolina (2020). Impact of Pranayama, Hatha Yoga, and Raja Yoga Meditation on Executive Function and Metacognitive Regulation. *International Journal of Scientific Development and Research (IJSDR).* Volume 5 Issue 11
7. Rajoria, Kshipra& Singh, Sarvesh Kumar (2017). Therapeutic benefits of Raj Yoga-A review. *Indian Journal of Traditional Knowledge.* Vol. 16 (Suppl)
8. Telles S & Desiraju T, (1993). Autonomic changes in Brahmakumaris Raja Yoga meditation, *Int J Psychophysiol,* 15 (2) 147-52
9. van Weeghel J, van Zelst C, Boertien D, Hasson-Ohayon I. (2019) Conceptualizations, assessments, and implications of personal recovery in mental illness. A scoping review of systematic reviews and meta-analyses. *Psychiatr Rehabil J.* 42(2):169-181.
10. Wach FS, Karbach J, Ruffing S, Brünken R, Spinath FM. (2016) University Students Satisfaction with their Academic Studies: Personality and Motivation Matter. *Front Psychol.* 7:55.

11. Whitehead L, Ghosh M, Walker DK, Bloxsome D, Vafeas C. Wilkinson A. (2019) The relationship between specialty nurse certification and patient, nurse and organizational outcomes: A systematic review. Int J Nurs Stud. 93.1-11.

Websites :

- <https://yoga.ayush.gov.in/Yoga-History/>
- <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK430929/>
- <https://publichealth.tulane.edu/blog/what-is-disaster-management/>
- <https://www.ifrc.org/our-work/disasters-climate-and-crises/what-disaster>
- <https://www.undrr.org/terminology/disaster>
- <https://puducherry-dt.gov.in/disaster-basics/>

kvp.vijayans@gmail.com

rajendrandrr@gmail.com



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 182-187

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

पूर्वोत्तर की लोक कथाओं का वैशिष्ट्य 'मणिपुरी लोक-कथाओं के संदर्भ में'

प्रो. जगदेव कुमार शर्मा

आचार्य एवं अध्यक्ष मानविकी विभाग,

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय)

कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, कटवारिया सराय, नई दिल्ली -110016

भारत की सांस्कृतिक बहुलता का सर्वाधिक जीवंत और स्वाभाविक रूप लोकसाहित्य में दिखाई देता है। लोककथाएँ किसी भी क्षेत्र के सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक विश्वासों और ऐतिहासिक स्मृतियों की मौखिक अभिव्यक्ति होती हैं। विशेषतः भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र अपनी भौगोलिक विविधता, जनजातीय संरचना और विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं के कारण लोककथाओं की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध माना जाता है। यहाँ की लोककथाएँ प्रकृति, मानव और आध्यात्मिक शक्तियों के गहरे अंतर्संबंध को उद्घाटित करती हैं। पूर्वोत्तर भारत की लोककथाओं में सामूहिक जीवन-दृष्टि, प्रकृति के प्रति आदर, अलौकिक विश्वास और नैतिक मूल्यों का समन्वय स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। ये कथाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज के आचार-विचार, जीवन-मूल्य और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने का माध्यम भी हैं। इसी लोकपरंपरा में मणिपुरी लोककथाओं का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट है। पूर्वोत्तर शब्द की बात करें तो इसके अंतर्गत भारत के सात राज्य आते हैं— जिनमें अरुणाचल प्रदेश, असम, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा, आदि। इन राज्यों को 'सात-बहनें' भी कहा जाता है।

पूर्वोत्तर के विषय में स्वर्ण अनिल का मत है कि, "इंद्रधनुष की भांति मंत्र मुग्ध करने वाला अद्वितीय सौन्दर्य प्रदान कर पूर्वोत्तर के सम्पूर्ण आंचल को अपनी अलग पहचान देते हैं।" इस प्रकार पूर्वोत्तर भारत का एक विशिष्ट अंचल है, जो अपने में अनेक विशेषताओं को समाहित किये हुए है। लोककथाएँ— लोक कथाएँ वे कथाएँ होती हैं जो परंपरा से चली आ रही होती हैं। और अपने आप में अनेक सभ्यताओं, संस्कृतियों, परम्पराओं को लेकर चलती हैं। इस सम्बन्ध में स्वर्ण अनिल जी का मत है कि, "लोक कथाएँ जन-जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज होती हैं। इस दस्तावेज को हर पीढ़ी जातिगत धरोहर की तरह अगली पीढ़ी को सौंपती जाती है।" समय परिवर्तनशील होता है। इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता सकता परन्तु बदलते समय में अपनी मान्यताओं और परम्पराओं को सुरक्षित रखने की अद्भुत क्षमता इन लोक कथाओं के पास है जो कथाओं के तिलिस्मी संसार का जादू सब के सिर चढ़कर बोलता है। बच्चों व किशोरों को अपने इंद्रजाल से कल्पनाओं के

नए नए लोकों में पहुँचाती हैं लोक कथाएँ युवाओं प्रौढ़ोंओर वृद्धों को चिंतन के ऐसे दीपों पर पहुँचा देती हैं जहाँ किसी भी समाज को सांस्कृतिक परम्पराओं ओर जीवन मूल्यों को उनके ही संदर्भों से जोड़कर पहचानने और समझने की सम्यक दृष्टि मिलती है।

लोक कथाओं के सम्बन्ध में डॉ० सत्येन्द्र जी का मत है कि “लोकवार्ता साहित्य की धर्मगाथाओं का उदय जिन उपादानों और व्यापारों से हुआ उन्ही से साधारण लोकवार्ता साहित्य की लोकगाथाओं और लोक कथाओं का भी हुआ।”² लोक कथा लोक कंठ में निर्मित और विकसित होती है उसमें छन्दोबद्ध कथा भी होती है लोक कथा मानव समाज का आदिम साहित्यिक रूप है मानव जब कबीलों में रहता था तब उसकी सामाजिक मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति सामूहिक नृत्य गीत के रूप में होती है। देवी-देवताओं या पूर्व पुरुषों की कल्पना उदित होने पर उनसे सम्बन्धित आख्यान भी उन नृत्य गीतों के वर्ण्य विषय बन गए ये ही आख्यान नृत्य गीत लोक कथाओं प्रारम्भिक रूप थे। लोक कथाओं की उत्पत्ति-सर्वप्रथम तब हुई होगी जब समाज अभिव्यक्त और इकाई के रूप में था इस कारण लोक-कथाएँ प्रारंभ में समूचे समाज की सम्पत्ति थी। सभी इनको सुनाते थे और अपनी ओर से कुछ न कुछ जोड़ते घटाते थे। इस तरह एक स्थान से दूसरे स्थान में और एक पीढ़ी में यात्रा करते रहने के कारण उनका रूप नित्य परिवर्तन रहा। बाद में समाज के वर्ग विभक्त हो जाने पर उच्च वर्गों के बीच कुछ विशेषज्ञों, कवि, चारण, आदि द्वारा साहित्य की रचना होने लगी। और साहित्य उनका वैयक्तिक कृतित्व माना जाने लगा। अब यह समूचे समाज की सम्पत्ति नहीं रह गया। किन्तु सामान्य जनता में जो अभी भी एक इकाई के रूप में थी। शिक्षा तथा शिष्ट संस्कारों द्वारा परंपरा विरहित नहीं हुई थी। पुरानी लोक कथाएँ विकसित होती रही नवीन कथाएँ निर्मित होती रही। ऐसे समाज में लिखने पढ़ने की प्रथा न होने से वे लोक कथाएँ अलिखित रूप में बनी रही।

हिन्दी भाषा-भाषी विभिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न लोक कथाएँ पाई जाती हैं। कुछ लोक कथाएँ ऐसी भी हैं जो विभिन्न प्रदेशों में रूप भेदों के साथ मिलती हैं। उनकी भाषा कुछ लोक कथाएँ विकसित होकर गाथाचक्र और लोक महाकाव्य का रूप धारण कर चुकी हैं। आल्हखण्ड ऐसा ही महाकाव्य है। हिन्दी की प्रमुख लोक कथाएँ ये हैं – लोरिकायन, सोरठी, विजयमाल, अरथरी, गोपीचंद आदि। लोक कथाओं के वैशिष्ट्य की जब बात आती है तो प्रत्येक प्रदेश की लोक कथाओं का अपना अलग वैशिष्ट्य होता है। मणिपुरी लोक कथाओं का भी अपना एक अलग सौन्दर्य है। साथ ही कुछ विशेषताएँ हैं जो मणिपुर को अन्य राज्यों से स्वयमेव ही अलग कर देती हैं। लोक कथाओं का अध्ययन करते वक्त अक्सर यह देखा गया कि वह सन्देश प्रधान होती हैं। उनमें कहीं न कहीं इस प्रकार के चरित्रों का निर्माण किया जाता है जो समाज में एक आदर्श स्थापित कर सके। समाज को एक नैतिक दिशा प्रदान कर सकेय यह सारी बातें मणिपुरी लोक कथाओं पर भी लागू होती हैं। अक्सर लोक कथाओं अथवा कहानियों का अध्ययन करते वक्त एक बात बहुतायत मात्रा में देखी गयी कि कथाओं का नायक पुरुष होता है जबकि मणिपुरी लोक कथाओं में स्त्री को नायिका के रूप में चित्रित किया गया है। यहाँ कथा के नायक पुरुष नहीं अपितु स्त्री है। यह कथाओं में स्त्रियों की प्रधानता ही मणिपुरी लोक कथाओं को विशिष्ट दर्जा प्रदान करती है। साथ ही साथ नायिका का वर्णन उसी भांति होता है जैसे किसी पुरुष नायक का होता है। “मणिपुर के राजा की इकलौती पुत्री थी असिजोनेंड., राजकुमारी रूप गुण प्रतिभा में अद्वितीय थी।”³ नायिका प्रधान कहानी के साथ-साथ नायिका के अन्दर नायकत्व के सभी गुणों को समाहित करते हुए उसके बुद्धिमानी

का भी परिचय दिया गया। कहानी में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है कि शास्त्रार्थ करते वक्त राजकुमारी द्वारा पूछी गई पहली से सभी निरुत्तर हो जाते हैं। एक और बात ध्यान देने योग्य है कि कन्या के विवाह के वक्त जाति, वर्ग, इत्यादि का कोई भेद-भाव नहीं है। जो कहीं न कहीं मणिपुर की अपनी विशिष्टता को भी बताता है। चूंकि लोक-कथाएँ सम्बन्धित लोक की परम्पराओं एवं सभ्यता संस्कृति को भी उजागर करती है "राजकुमारी जिसके गले में वरमाला पहनाएगी वही महाराज को अपने दामाद के रूप में स्वीकार होगा⁴। उस चुनाव में वर्ण, जाति, वर्ग की कोई सीमा नहीं रखी गयी..." लोक की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है प्रकृति, लोक हमेशा प्रकृति की सहचरी होती है। ओर लोक कथाओं में प्रकृति का आना स्वयं ही लोक कथा होने का बोध करा देता है, मणिपुरी लोक कथाओं का भी सबसे बड़ा वैशिष्ट्य यही है कि यहाँ लोक अपने पूर्ण रूप में उपस्थित है यथा— असिजोनेंगड, का विवाह नामक कहानी में तीनों युवक जब अजगर को मारकर उसे मृत अवस्था में छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं तो चौथा युवक उसकी दवाई करता है और उसे ठीक कर अपने मानवीय दायित्व का निर्वाह करता है। ओर जंगल की जड़ी बूटियों का प्रयोग करने के उपरांत प्रणाम करके कहता है "माँ आपको वन देवता, वन देवियाँ, ठीक ही कहती हैं आज आपने इस प्राणी को नवजीवन दिया इसीलिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।"⁵

यह बार-बार प्रकृति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मणिपुरी लोक कथाओं की विशिष्टता ही है। यथा— "उस चौथे युवक ने शीतल जल में स्नान किया और जल देवता को तन-मान प्राणों को शीतल करने के लिए धन्यवाद देकर मार्ग के साथियों से मिलने के लिए जिस दिशा की ओर वे गये उसी ओर शीघ्रता से बढ़ गया।"⁶ लोक कथाओं अथवा कहानियों में ये देखा गया है कि कहानी मात्र नायक नायिका के सुख दुःख तक ही बंधी रह जाती है, किन्तु मणिपुरी लोक कथाओं की बड़ी विशेषता यह है कि उसमें कहानी नायक नायिका के माध्यम से सम्पूर्ण देश के अर्थात् सभी के हित की बात की गई है। उदाहरण के लिए देखे तो राजकुमारी के विवाह के उपरांत राजकुमारी के पिता कहते हैं "हमें अपनी बेटी के निर्णय पर गर्व है⁷। हमारे गुप्तचरों ने सभी प्रत्याशियों की गतिविधियों की सूचना एकत्र की थी क्योंकि स्वयंवर इस राज्य की उत्तराधिकारी असिजोनेंग के पति के लिए किया था और राज्य की सुरक्षा उन्हीं हाथों से हो सकती है जो माकू, अजगर, मनुष्य, अर्थात् सभी प्राणियों की निस्वार्थ सहायता के लिए सदा तत्पर हैं।"⁸ हिन्दी साहित्य की पूरी एक काव्य परम्परा ही नायिका प्रधान काव्यों की रही हैय जिसमें सूफी परंपरा का नाम लिया जा सकता है। किन्तु उसके उपरांत ये परंपरा प्रायः कम होती सी दिखाई देती है। मणिपुरी लोक कथाओं में यह सशक्त रूप से उभरकर सामने आती है और नायिका प्रधान ही नहीं अपितु नायिका को सभी गुणों में पुरुषों से आगे ही दिखाने का प्रयत्न किया है।

पूरी की पूरी प्रतिशोध कहानी इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। देखिये— "अरूद की बहन अपने पर किस्ती दुर्बलता को हावी नहीं होने देना चाहती थी। अपने लाडले भाई के शीश विहीन धड़ को छूकर अपने आप से प्रतिज्ञा की थी अपने भाई की छलपूर्वक हत्या करने वाले अकादु को दण्ड अवश्य देगी।"⁹ पूर्वोत्तर की लोक कथाओं की एक बड़ी विशेषता है कि परम्परा का निर्वाह करते हुए पारंपरिक देवी देवताओं में भरोसा करना, अपने कुल देवी देवताओं को याद करना और उनमें श्रद्धा भाव रखनाय मणिपुरी लोक कथाओं में भी यह देखने को मिला है की अपने देवी-देवताओं को समय समय पर याद किया गया है। अन्यत्र कथाओं में यह बहुत कम देखने को मिलता है। इन देवी देवताओं पर श्रद्धा रखना, उन पर भरोसा करना, प्रायः शक्ति का संचार कर देता है — "जंगल की सीमा में प्रवेश करते हुए उसने पानथोईबी माँ को प्रणाम कर प्रार्थना की 'हे पानथोईबी माँ! मुझे शक्ति

दो जैसे तुमने दुष्टों के नाश के लिए शस्त्र उठाये थे, आज तुम्हारी बेटी ने भी उठाया है आशीर्वाद दो माँ मई कभी दुर्बल ना पडूँ। और पापात्मा अकादू को उसके किये का दण्ड दे सकूँ।” किसी भी कहानी, कथा, अथवा महाकाव्य में नायक के धीरोदात्त रूप का वर्णन देखने को मिलता है। नायक का सर्वगुण संपन्न होना आवश्यक मना जाता है मणिपुरी लोक कथाओं में चूंकि नायिका भी कथा नायक के रूप में है और उसमें भी सभी गुणों का समावेश देखने को मिलता है खमबा और थोइबीनामक कहानी में भी नायक का उदात्त रूप और साहसी रूप का वर्णन किया गया है। यथा— राजा बाघ के आक्रमण के वक्त सभी कर्मचारी भागने लगते हैं उस स्थिति में पुरेनबा किसी की परवाह ना करते हुए राजा के सम्मुख ढाल बनकर खड़ा हो जाता है “केवल पुरेनबा अपने राजा की रक्षा के लिए उसकी ढाल बनकर साहस पूर्वक उन उग्र रूप धारण किये सातों बाघों के सम्मुख आ खड़ा हुआ। अत्यंत कुशलता और चतुराई का परिचय देते हुए उसने अपने भाले से राजा पर घात लगाकर बढ़ते सातों बाघों को मृत्यु की गोद में सुला दिया।”¹⁰

मणिपुरी लोक कथाओं का गहराई से अध्ययन करने के उपरांत यह भी बात देखने में आती है कि इन कथाओं में प्रकारांतर से श्रम के महत्व एवं साथ ही स्वाभिमान की प्रवृत्ति का वर्णन किया गया है जो मणिपुरी लोक कथाओं की बड़ी विशेषताओं में से एक है— “पुरेनबा अथक परिश्रम से अपने परिवार का भरण पोषण कर रहा था।”¹¹ “स्वाभिमानी पिता की संतान दूसरों की कृपा पर जीवन यापन नहीं करती, इस कारण खामनु ने भी अपनी योग्यता के अनुसार आस—पास के घरों में कार्य करना प्रारंभ कर दिया।”¹² लोक कथाएँ, हो अथवा अन्य कहानियाँ यदि उसमें राजकुमारी अथवा महारानी के चरित्र का निर्माण किया गया हो तो प्रायः यही देखने को मिलता है कि वे हर समय सेवा सुश्रुषा में ही लगी रहती हैं उन्हें कभी किसी कार्य को करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। एक प्रकार से वह राजसी जीवन व्यतीत करने वाली होती हैं किन्तु मणिपुरी लोक कथाओं में ऐसा नहीं है यहाँ राजकुमारी अपने राजसी जीवन के साथ—साथ साधारण स्त्री के रूप में अपनी सखी के साथ तालाब में मछली पकड़ रही हैं यथा— “सेवक राजकुमारी और उसकी सखी को ताल के किनारे एक सुन्दर द्वीप पर छोड़कर वापसी का समय निर्धारित कर लौट आए। दोनों ने सरोवर की शोभा निहारी और भोजन करने के बाद द्वीप के छोर पर मछलियाँ पकड़ने बैठ गईं।”¹³

ध्यान देने की बात है कि यहाँ दोनों सखियों का मछली पकड़ना मात्र एक मनोरंजन अथवा समय काटना नहीं है अपितु इसमें कहीं न कहीं स्त्री स्वातंत्र्य का समर्थन देखने को मिलता है। कहीं किसी प्रकार का बंधन नजर नहीं आता, यह कथा में दिखाया जाना कहीं न कहीं मणिपुरी लोक संस्कृति को भी व्यक्त करती है। बार—बार मणिपुरी लोक कथाओं में ग्राम देवता (कुल देवता) का वर्णन देखने को मिलता है। यह अनायास नहीं है अपितु यह मणिपुरी लोक संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है और साथ ही लोगों में इस कदर बस गया है कि सपने में भी देवी देवता लोगों को सचेत करते हैं और उन्हें उनके दायित्वों का अहसास भी करते हैं। “गहरी निद्रा में मग्न खमबा को स्वप्न में थानगीग देवता के दर्शन हुए। देवता ने प्रकट होकर उसे लोकताक सरोवर पहुँचने का आदेश दिया।”¹⁴ यह बार दृबार ग्राम देवताओं कुल देवी देवताओं का जिक्र आना कहानी की आवश्यकता नहीं अपितु यह मणिपुरी लोक परम्परा, वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, एवं अपने ग्राम से लगाव प्रकृति से प्रेम है। महत्वपूर्ण एवं ध्यान देने योग्य बात है कि लोककथाओं में अक्सर दादा—दादी, नाना—नानी अथवा माता—पिता के द्वारा कही गई बात को हमेशा शिरोधार्य किया जाता है और संवेदना के स्तर पर परखा जाए तो रिश्तों का अत्यंत महत्व

इन कथाओं में देखा गया है। साथ ही साथ भावनात्मक जुड़ाव भी देखने को मिलता है— “मेरी माँ कहती है कि यदि गंभीर चिंतन में उलझने की जगह हँसते बोलते हुए मार्ग के साथियों का मान बहलाओ ताकि लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग छोटा हो जाए।”¹⁵ सभी कहानियों की भांति मणिपुरी लोक कथाओं का भी सुखांत होता है। अर्थात् कथा अपने प्रवाह में आगे बढ़ते हुए सुखद अंत पर आकर समाप्त हो जाती है। तीनों कथाओं में यह बात देखने को मिलती है। और साथ ही यह श्रोताओं एवं पाठकों के मन पर अमिट छाप भी छोड़ने में कामयाब भी होती है। “खामबा और थोइबी भी आनंदपूर्वक जीवन यापन करते हुए एक दुसरे का भरपूर साथ देते हैं ...उनकी प्रेम कथा युगों बाद भी इतनी प्रभावशाली है कि कहने वालों और सुनने वालों को मंत्र मुग्ध कर देती है”¹⁶।

पूर्वोत्तर भारत की लोककथाएँ वहाँ के जनजीवन, प्राकृतिक परिवेश, सांस्कृतिक आस्थाओं और सामुदायिक चेतना की सजीव अभिव्यक्ति हैं। ये लोककथाएँ मानव और प्रकृति के बीच गहरे सह-अस्तित्व, आध्यात्मिक विश्वासों तथा नैतिक मूल्यों को सहज रूप में प्रस्तुत करती हैं। पूर्वोत्तर की इस लोकपरंपरा में मणिपुरी लोककथाएँ अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और साहित्यिक सौंदर्य के कारण विशेष स्थान रखती हैं। मणिपुरी लोककथाओं में मैतेई संस्कृति, लोकधर्म और वैष्णव भक्ति परंपरा का जो समन्वय दिखाई देता है, वह इन्हें अन्य क्षेत्रीय लोककथाओं से अलग करता है। इनमें प्रेम, वीरता, त्याग, नारी शक्तता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य केवल कथात्मक स्तर पर ही नहीं, बल्कि लोकजीवन के आदर्श के रूप में भी अभिव्यक्त होते हैं। ‘खामबा—थोईबी’ जैसी कथाएँ मणिपुरी समाज की भावनात्मक गहराई, सामाजिक संघर्ष और नैतिक चेतना को प्रभावशाली ढंग से उजागर करती हैं।

अतः कहा जा सकता है कि मणिपुरी लोककथाएँ न केवल पूर्वोत्तर भारत की लोक संस्कृति की आत्मा को अभिव्यक्त करती हैं, बल्कि भारतीय लोक साहित्य को भी समृद्ध और व्यापक स्वरूप प्रदान करती हैं। ये कथाएँ अतीत और वर्तमान के बीच सेतु का कार्य करते हुए सांस्कृतिक निरंतरता, सामाजिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस दृष्टि से मणिपुरी लोककथाएँ भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की अमूल्य निधि हैं, जिनका संरक्षण और अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। पूर्वक कहते हैं, मणिपुरी लोक कथाएँ अपने वैशिष्ट्य के साथ जनता में लोकप्रिय होने की पूरी क्षमता रखती हैं। साथ ही अपनी परम्पराओं, चरित्र चित्रण की विविधता, विशेष रूप से स्त्री चरित्र सम्बन्धी नायकत्व की कल्पना और अपने रीति रिवाजों, सम्बन्धों एवं साथ ही कुछ प्रगतिशील विचारों को साथ में लिए कथा को और भी विशिष्ट एवं जनप्रिय बाना देती हैं।

संदर्भ :

1. पूर्वोत्तर की लोक कथाएँ, स्वर्ण अनिल, पृष्ठ, संख्या -12
2. वही, पृष्ठ 12
3. लोक साहित्य विज्ञान, सत्येन्द्र (डॉ.), पृष्ठ संख्या- 170
4. पूर्वोत्तर की लोक कथाएँ, पृष्ठ संख्या 80
5. वही, पृष्ठ 82
6. वही, पृष्ठ 83

7. वही, पृष्ठ 88
8. वही, पृष्ठ 94
9. वही, पृष्ठ 95
10. वही, पृष्ठ 98
11. वही, पृष्ठ 100
12. वही, पृष्ठ 100
13. वही, पृष्ठ 101
14. वही, पृष्ठ 102
15. वही, पृष्ठ 83
16. वही, पृष्ठ 85
17. वही, पृष्ठ 110

ईमेल – jagdevkumar68@gmail.com

संपर्क – 9868618799



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 188-194

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि और मानवीय मूल्यबोध

मोनिका, पी-एच.डी. शोधार्थी, हिंदी विभाग (हिंदी)

डॉ. सुनीता सिंह, शोध निर्देशिका एवं प्रोफेसर, हिंदी विभाग

सामाजिक एवं मानविकी संकाय, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा), पिन कोड-125001

सारांश :

प्रस्तुत शोधपत्र में जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि और उसमें निहित मानवीय मूल्यबोध का विश्लेषण किया गया है। जनकराज शर्मा का साहित्य मानव-केंद्रित चेतना पर आधारित है, जिसमें मनुष्य को केवल सामाजिक संरचना की इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, नैतिक और उत्तरदायी प्राणी के रूप में देखा गया है। उनकी रचनाओं में मानवीय गरिमा, करुणा, संवेदना, सहानुभूति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य प्रमुख रूप से उभरकर सामने आते हैं। जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि यथार्थवादी होते हुए भी मानवीय आदर्शों से अनुप्राणित है। वे समाज में व्याप्त शोषण, विषमता और पीड़ा को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते हैं, किंतु उनके साहित्य में निराशा नहीं, बल्कि मानवीय चेतना की आशा विद्यमान रहती है। उदाहरणस्वरूप, उनकी कथाओं में साधारण जनजीवन से जुड़े पात्र जैसे श्रमिक, किसान, स्त्री या हाशिए पर खड़ा व्यक्ति अपनी पीड़ा के बावजूद मानवीय मूल्यों को नहीं छोड़ते। ऐसे पात्र करुणा और सह-अनुभूति के माध्यम से समाज के अमानवीय पक्ष को उजागर करते हैं। लेखक की दृष्टि में करुणा केवल भावनात्मक संवेदना नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय के विरुद्ध नैतिक प्रतिरोध का माध्यम है। उदाहरण के तौर पर, जब उनके पात्र किसी अन्यायग्रस्त व्यक्ति के पक्ष में खड़े होते हैं, तो यह करुणा सामाजिक उत्तरदायित्व का रूप ले लेती है। इसी प्रकार, उनके साहित्य में पारिवारिक और सामाजिक संबंधों के माध्यम से संवेदना की अभिव्यक्ति होती है, जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का कार्य करती है।

जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि में नैतिक मूल्य भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके पात्र नैतिक द्वंद्वों से गुजरते हुए ऐसे निर्णय लेते हैं, जो मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हैं। यह नैतिक चेतना उनके साहित्य को केवल कलात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जनकराज शर्मा का साहित्य मानवीय मूल्यों का सशक्त दस्तावेज है। उनकी साहित्यिक दृष्टि समकालीन मूल्य-संकट के दौर में मानवता, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व की पुनःस्थापना का प्रयास करती है। इस कारण उनका साहित्य न केवल साहित्यिक महत्व रखता है, बल्कि समाज

को नैतिक दिशा प्रदान करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द :

जनकराज शर्मा, साहित्यिक दृष्टि, मानवीय मूल्यबोध, मानवतावाद, करुणा एवं संवेदना, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक चेतना, समकालीन हिंदी साहित्य।

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में मानवीय मूल्यों की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। साहित्य केवल सौंदर्यबोध या मनोरंजन का साधन न होकर समाज, संस्कृति और मानव-जीवन की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है। प्रत्येक युग का साहित्य अपने समय के सामाजिक, नैतिक और मानवीय प्रश्नों से संवाद करता है। समकालीन हिंदी साहित्य में जनकराज शर्मा एक ऐसे रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिनका साहित्य मानवीय संवेदना, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व से गहराई से जुड़ा हुआ है। उनकी रचनाओं में मनुष्य केंद्र में है—अपने संघर्षों, पीड़ाओं, आशाओं और मूल्यों के साथ।

जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि बहुआयामी है। उनके साहित्य में यात्रा-वृत्तांत, निबंध, रचनात्मक लेखन और विश्लेषणात्मक विवेचना— सभी विधाओं के माध्यम से मानवीय मूल्यबोध की सशक्त अभिव्यक्ति होती है। तेरी खोज में जैसे यात्रा-वृत्तांत में लेखक की दृष्टि केवल भौगोलिक यात्रा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह एक आंतरिक और मानवीय यात्रा का रूप ले लेती है। इस कृति में विविध स्थानों, संस्कृतियों और जीवन-शैलियों के माध्यम से मनुष्य की पीड़ा, जिजीविषा और सह-अस्तित्व की भावना उभरकर सामने आती है। यात्रा के अनुभवों के बीच लेखक का मानवीय दृष्टिकोण पाठक को संवेदना और करुणा से जोड़ता है। नजरों के सामने में जनकराज शर्मा का साहित्यिक दृष्टिकोण और अधिक सूक्ष्म रूप में प्रकट होता है। इस कृति में जीवन के वे पक्ष सामने आते हैं, जिन्हें प्रायः समाज अनदेखा कर देता है। लेखक की नजर केवल देखने की नहीं, बल्कि समझने और महसूस करने की है। यहाँ मानवीय मूल्य जैसे सहानुभूति, नैतिक विवेक और सामाजिक जिम्मेदारी प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देते हैं। यह कृति पाठक को यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि समाज में रहते हुए मनुष्य का दायित्व केवल स्वयं तक सीमित नहीं होना चाहिए।

जनकराज शर्मा की श्रीकृष्ण रचनावली में मानवीय मूल्यों का एक दार्शनिक और सांस्कृतिक आयाम सामने आता है। श्रीकृष्ण का चरित्र केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि मानवीय आदर्शों—करुणा, कर्तव्य, न्याय और लोककल्याण का प्रतिनिधि बनकर उभरता है। इस रचनावली के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि मानवीय मूल्य केवल आधुनिक समाज की आवश्यकता नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की मूल आत्मा हैं। यहाँ साहित्य, दर्शन और मानवीय चेतना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। धरोहर (निबंधावली) में जनकराज शर्मा सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक प्रश्नों पर गंभीर चिंतन प्रस्तुत करते हैं। ये निबंध समाज की उस विरासत को रेखांकित करते हैं, जिसमें मानवीय मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित होते आए हैं। लेखक की दृष्टि यहाँ मूल्य-संरक्षण और मूल्य-संवर्द्धन पर केंद्रित है। वे मानते हैं कि यदि समाज अपनी मानवीय धरोहर से कट जाता है, तो उसका नैतिक आधार कमजोर हो जाता है। इस कृति में सामाजिक उत्तरदायित्व की चेतना विशेष रूप से मुखर है। इसी प्रकार कृतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन में जनकराज शर्मा की आलोचनात्मक दृष्टि सामने आती है। यहाँ वे साहित्य को मूल्य-आधारित दृष्टिकोण से परखते हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि साहित्य

का वास्तविक उद्देश्य मानवता को सुदृढ़ करना है। यह ग्रंथ उनके साहित्यिक चिंतन और मानवीय मूल्यबोध की वैचारिक पृष्ठभूमि को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

इस प्रकार जनकराज शर्मा का समूचा साहित्य मानवीय मूल्यों का सशक्त दस्तावेज है। उनके लेखन में करुणा, संवेदना, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व केवल विचार के स्तर पर नहीं, बल्कि जीवन के यथार्थ अनुभवों के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य इन्हीं कृतियों के आलोक में जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि और मानवीय मूल्यबोध का व्यवस्थित अध्ययन करना है। यह अध्ययन न केवल उनके साहित्यिक योगदान को समझने में सहायक होगा, बल्कि समकालीन समाज में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता को भी रेखांकित करेगा।

जनकराज शर्मा का साहित्यिक व्यक्तित्व और रचनात्मक पृष्ठभूमि :

जनकराज शर्मा का साहित्यिक व्यक्तित्व संवेदनशील, चिंतनशील और मानवीय मूल्यों से गहराई से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। उनका रचनात्मक विकास जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों, सामाजिक यथार्थ और सांस्कृतिक चेतना से निर्मित हुआ है। वे साहित्य को केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने का सशक्त माध्यम मानते हैं। इसी कारण उनके साहित्य में व्यक्ति, समाज और समय के अंतर्संबंधों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। जनकराज शर्मा की रचनात्मक पृष्ठभूमि भारतीय जीवन-मूल्यों, लोकसंस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा से अनुप्राणित है। उनकी कृतियों में सामान्य जन की पीड़ा, संघर्ष और आशाएँ सहज रूप में अभिव्यक्त होती हैं। वे मानवीय करुणा, संवेदना और नैतिक चेतना को अपनी रचनाओं का केंद्रीय आधार बनाते हैं। उनकी भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और संवादात्मक है, जिससे पाठक सीधे भावनात्मक स्तर पर जुड़ पाता है। साहित्यिक दृष्टि से जनकराज शर्मा का लेखन बहुआयामी है, जिसमें यात्रा-वृत्तांत, निबंध और वैचारिक लेखन प्रमुख हैं। उनकी रचनाओं में आत्मानुभूति और सामाजिक सरोकार का संतुलित समन्वय देखने को मिलता है। इस प्रकार जनकराज शर्मा का साहित्यिक व्यक्तित्व न केवल रचनात्मक परिपक्वता का परिचायक है, बल्कि मानवीय मूल्यबोध की सशक्त अभिव्यक्ति भी प्रस्तुत करता है, जो समकालीन हिंदी साहित्य में उन्हें विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

साहित्यिक दृष्टि : अवधारणा और सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य :

साहित्यिक दृष्टि से तात्पर्य लेखक की उस वैचारिक और संवेदनात्मक चेतना से है, जिसके माध्यम से वह जीवन, समाज और मानव व्यवहार को देखता तथा अभिव्यक्त करता है। यह दृष्टि केवल व्यक्तिगत अनुभूति तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक यथार्थ, सांस्कृतिक मूल्यों और नैतिक प्रश्नों से गहराई से जुड़ी होती है। किसी भी रचनाकार की साहित्यिक दृष्टि उसके विचार, अनुभव, सामाजिक परिवेश और जीवन-दर्शन से निर्मित होती है।

सैद्धांतिक रूप से साहित्यिक दृष्टि का संबंध मानवतावाद, यथार्थवाद और मूल्य-आधारित आलोचना से है। मानवतावादी दृष्टि मनुष्य की गरिमा, करुणा और सह-अनुभूति को केंद्र में रखती है, जबकि यथार्थवादी दृष्टि समाज की वास्तविक स्थितियों और समस्याओं को ईमानदारी से प्रस्तुत करती है। मूल्य-आधारित साहित्यिक दृष्टि साहित्य को नैतिक और सामाजिक चेतना के संवाहक के रूप में देखती है।

इस प्रकार साहित्यिक दृष्टि रचनाकार के लेखन को दिशा प्रदान करती है और साहित्य को समाज से

जोड़ने का कार्य करती है। यह दृष्टि पाठक को न केवल सौंदर्यबोध का अनुभव कराती है, बल्कि उसे मानवीय मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति भी जागरूक बनाती है।

जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि के प्रमुख आयाम :

जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि बहुआयामी और मानवीय संवेदना से परिपूर्ण है। उनके लेखन का केंद्रीय आधार मनुष्य और उसकी सामाजिक-नैतिक चेतना है। वे साहित्य को जीवन से पृथक कोई कलात्मक उपक्रम नहीं मानते, बल्कि समाज की सजीव अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। उनकी रचनाओं में यथार्थ के प्रति गहरी प्रतिबद्धता दिखाई देती है, किंतु यह यथार्थ निराशा नहीं, बल्कि मानवीय आशा से जुड़ा हुआ है। उनकी साहित्यिक दृष्टि का पहला प्रमुख आयाम मानवतावाद है। वे प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा, पीड़ा और संघर्ष को महत्व देते हैं। उनके साहित्य में करुणा और सह-अनुभूति केवल भावनात्मक तत्व नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय के विरुद्ध नैतिक चेतना का रूप ग्रहण कर लेती हैं। दूसरा आयाम सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित है। जनकराज शर्मा समाज में व्याप्त विषमताओं, शोषण और मूल्य-संकट के प्रति सजग रहते हैं तथा साहित्य को सामाजिक जागरण का माध्यम बनाते हैं। तीसरा आयाम सांस्कृतिक और नैतिक चेतना का है। उनकी रचनाओं में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और जीवन-मूल्यों का संतुलित समावेश मिलता है, जो आधुनिक संदर्भों में भी प्रासंगिक है। इस प्रकार जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि मानव, समाज और संस्कृति के समन्वय से निर्मित होकर उनके साहित्य को मानवीय मूल्यबोध की सशक्त अभिव्यक्ति बनाती है।

सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना :

सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना साहित्य में उन प्रमुख तत्वों में से हैं, जो लेखक को समाज के प्रति सजग और जिम्मेदार बनाते हैं। जनकराज शर्मा की रचनाओं में यह दृष्टि स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उनके अनुसार साहित्यकार केवल रचनाकार नहीं, बल्कि समाज में मूल्य-संवर्धन और नैतिक जागरूकता फैलाने वाला माध्यम भी होता है। सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ है समाज की समस्याओं, विषमताओं और अन्याय के प्रति संवेदनशील रहना और अपने लेखन के माध्यम से सकारात्मक प्रभाव डालना।

जनकराज शर्मा के साहित्य में पात्र और कथानक इसी उत्तरदायित्व की अभिव्यक्ति करते हैं। वे समाज के हाशिए पर खड़े व्यक्तियों, श्रमिकों, किसानों और कमजोर वर्गों की पीड़ा को उजागर करते हैं। इससे पाठक में सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना का विकास होता है। नैतिक चेतना उनके साहित्य का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम है। उनके पात्र नैतिक द्वंद्व और निर्णयों के माध्यम से मानवीय मूल्यों-सत्य, न्याय, करुणा और सहानुभूति को जीवन में अपनाते हैं। यह चेतना केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक सुधार और सहयोग की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा देती है।

इस प्रकार जनकराज शर्मा का साहित्य सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना को न केवल प्रस्तुत करता है, बल्कि उन्हें पाठक के जीवन में उतारने की संभावना भी पैदा करता है, जिससे उनका लेखन समकालीन समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक बन जाता है।

मानवीय मूल्य : अर्थ और स्वरूप :

मानवीय मूल्य वे नैतिक और संवेदनात्मक तत्व हैं, जो मनुष्य को मनुष्य बनाए रखते हैं और सामाजिक जीवन को संतुलित एवं सार्थक रूप प्रदान करते हैं। इन मूल्यों में करुणा, प्रेम, सह-अनुभूति, सत्य, न्याय,

सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व प्रमुख हैं। साहित्य के संदर्भ में मानवीय मूल्य केवल नैतिक उपदेश नहीं होते, बल्कि जीवन के वास्तविक अनुभवों से उत्पन्न चेतना के रूप में सामने आते हैं। मानवीय मूल्यों का स्वरूप व्यापक और बहुआयामी है। ये मूल्य व्यक्ति के आंतरिक भाव-जगत से लेकर उसके सामाजिक आचरण तक फैले होते हैं। आंतरिक स्तर पर ये विवेक, नैतिक चेतना और संवेदना के रूप में विकसित होते हैं, जबकि बाह्य स्तर पर मानवीय व्यवहार, सामाजिक संबंधों और उत्तरदायित्वपूर्ण कर्मों में अभिव्यक्त होते हैं। साहित्य इन मूल्यों को जीवन-यथार्थ के साथ जोड़कर प्रस्तुत करता है, जिससे वे अधिक प्रभावी और स्वीकार्य बनते हैं। साहित्यिक कृतियों में मानवीय मूल्य पात्रों के आचरण, उनके संघर्ष और निर्णयों के माध्यम से उजागर होते हैं। इस प्रकार मानवीय मूल्य साहित्य को केवल सौंदर्यात्मक विधा नहीं रहने देते, बल्कि उसे सामाजिक चेतना और नैतिक दिशा प्रदान करने वाला माध्यम बनाते हैं। समकालीन समाज में मूल्य-संकट के संदर्भ में मानवीय मूल्यों की यह अवधारणा और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

कृति-आधारित विवेचन : एक बार गुनगुना दो, श्रीमद् भागवतामृत, पथिक तुम चलते रहना एवं मेघनाद वध के संदर्भ में :

जनकराज शर्मा की उपर्युक्त रचनाएँ उनके साहित्यिक व्यक्तित्व, मानवीय मूल्यबोध तथा नैतिक-सांस्कृतिक चेतना को बहुआयामी रूप में प्रस्तुत करती हैं। ये कृतियाँ भावात्मक, दार्शनिक और सामाजिक स्तरों पर मानव जीवन की जटिलताओं को उजागर करती हैं, जिससे उनका साहित्य शोध की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। एक बार गुनगुना दो में मानवीय संवेदना और जीवन के प्रति आशावादी दृष्टि प्रमुख है। यह कृति व्यक्ति को निराशा के क्षणों में भी आत्मबल और सकारात्मक भाव बनाए रखने की प्रेरणा देती है। उदाहरणस्वरूप, जीवन की साधारण अनुभूतियों को गीतात्मक भाव में व्यक्त कर लेखक यह संकेत देते हैं कि छोटे-छोटे आनंद भी जीवन को अर्थपूर्ण बना सकते हैं।

पथिक तुम चलते रहना निरंतर संघर्ष और कर्मशीलता का प्रतीक है। इसमें पथिक मानव जीवन का रूपक है, जो बाधाओं के बावजूद आगे बढ़ता है। यह रचना कर्मयोग और धैर्य जैसे मानवीय मूल्यों को सशक्त रूप में सामने लाती है।

श्रीमद् भागवतामृत में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और आध्यात्मिक चेतना का गहन स्वरूप मिलता है। इस कृति में भक्ति, करुणा और नैतिक अनुशासन को मानवीय जीवन के मार्गदर्शक तत्वों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उदाहरणतः, कृष्ण-कथा के माध्यम से धर्म और मानवता का संतुलन स्पष्ट होता है।

मेघनाद वध पौराणिक संदर्भों के माध्यम से नैतिक द्वंद्व और मानवीय विवेक का पुनर्पाठ प्रस्तुत करता है। इसमें मेघनाद के चरित्र के द्वारा कर्तव्य, वीरता और मानवीय संवेदना के जटिल पक्षों को उजागर किया गया है।

इस प्रकार इन रचनाओं का कृति-आधारित विवेचन यह सिद्ध करता है कि जनकराज शर्मा का साहित्य मानवीय मूल्यों, नैतिक चेतना और सांस्कृतिक दृष्टि का सशक्त एवं शोधोपयोगी प्रतिनिधित्व करता है।

जनकराज शर्मा के साहित्य में मानवीय मूल्यबोध की अभिव्यक्ति :

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और आध्यात्मिक चेतना भी उनके साहित्य में मानवीय मूल्यबोध को जनकराज शर्मा के साहित्य में मानवीय मूल्यबोध की अभिव्यक्ति अत्यंत सशक्त और संवेदनशील रूप में दिखाई देती है।

उनका लेखन मनुष्य को केंद्र में रखकर उसकी भावनाओं, संघर्षों और नैतिक चेतना को उजागर करता है। वे साहित्य को केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व का माध्यम मानते हैं। इसी कारण उनके साहित्य में करुणा, सह-अनुभूति, प्रेम, सत्य और न्याय जैसे मानवीय मूल्य प्रमुखता से उभरते हैं।

जनकराज शर्मा की रचनाओं में सामान्य जन के जीवन-संघर्षों का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। वे समाज में व्याप्त विषमताओं और अन्याय के प्रति सजग दृष्टि रखते हैं तथा साहित्य के माध्यम से मानवीय चेतना को जागृत करते हैं। उनके पात्र नैतिक द्वंद्वों से गुजरते हुए मानवीय मूल्यों की ओर उन्मुख होते हैं, जिससे पाठक को आत्मचिंतन की प्रेरणा मिलती है।

इस प्रकार जनकराज शर्मा का साहित्य मानव, समाज और संस्कृति के समन्वय से निर्मित होकर मानवीय मूल्यों की सार्थक और प्रभावी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है, जो समकालीन हिंदी साहित्य में विशेष महत्व रखती है।

समकालीन समाज में जनकराज शर्मा के साहित्य की प्रासंगिकता :

समकालीन समाज तीव्र सामाजिक परिवर्तन, मूल्य-संकट और मानवीय संवेदनाओं के क्षरण के दौर से गुजर रहा है। ऐसे समय में जनकराज शर्मा का साहित्य विशेष रूप से प्रासंगिक सिद्ध होता है, क्योंकि उनका लेखन मानव-केंद्रित दृष्टि और नैतिक चेतना से अनुप्राणित है। वे साहित्य को समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाला माध्यम भी मानते हैं। उनके साहित्य में मानवीय मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति आज के सामाजिक परिदृश्य में गहरे अर्थ रखती है। जनकराज शर्मा की रचनाएँ समकालीन मनुष्य की समस्याओं, तनावों और आंतरिक द्वंद्वों को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं। भौतिकतावाद, स्वार्थ और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों से प्रभावित समाज में उनका साहित्य करुणा, सह-अनुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को पुनः स्थापित करने का प्रयास करता है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि आधुनिकता का अर्थ केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि मानवीय चेतना का विकास भी है। उनके साहित्य की प्रासंगिकता इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि वह पाठक को निराशा से बाहर निकालकर सकारात्मक सोच और कर्मशीलता की ओर प्रेरित करता है। पथिक तुम चलते रहना और एक और पहल जैसी कृतियाँ जीवन में निरंतर प्रयास और आशा के महत्व को रेखांकित करती हैं। वहीं श्रीमद् भागवतामृत के माध्यम से वे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और आध्यात्मिक चेतना को आधुनिक संदर्भों से जोड़ते हैं।

इस प्रकार समकालीन समाज में जनकराज शर्मा का साहित्य मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना, सामाजिक जागरूकता और नैतिक संतुलन का सशक्त माध्यम बनकर उभरता है। उनका साहित्य आज के मूल्य-विहीन परिवेश में दिशा-निर्देशक की भूमिका निभाता है, जिससे उसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोधपत्र के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जनकराज शर्मा का साहित्य मानवीय मूल्यबोध की सुदृढ़ और संवेदनशील अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है। उनका रचनात्मक संसार मानव-केंद्रित दृष्टि पर आधारित है, जिसमें करुणा, सह-अनुभूति, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रमुख स्थान प्राप्त है। वे साहित्य को केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति न मानकर समाज के नैतिक उन्नयन का प्रभावी माध्यम स्वीकार करते हैं।

अध्ययन से यह भी सिद्ध होता है कि जनकराज शर्मा की साहित्यिक दृष्टि यथार्थपरक होते हुए भी आशावादी है। वे समाज में व्याप्त मूल्य-संकट, विषमताओं और मानवीय संवेदनहीनता को उजागर करते हैं, किंतु साथ ही परिवर्तन और सकारात्मक कर्मशीलता की संभावना को बनाए रखते हैं। उनकी कृतियों में सामान्य जनजीवन, संघर्षशील मनुष्य और हाशिए पर स्थित वर्गों की पीड़ा का संवेदनशील चित्रण मिलता है, जो पाठक को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और आध्यात्मिक चेतना उनके साहित्य में मानवीय मूल्यों को और अधिक व्यापक आधार प्रदान करती है। परंपरा और आधुनिकता के समन्वय के माध्यम से वे मानवीय मूल्यों को समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक बनाते हैं।

समग्रतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जनकराज शर्मा का साहित्य समकालीन समाज में मानवीय मूल्यों की पुनःस्थापना का सार्थक प्रयास है। उनका लेखन सामाजिक जागरूकता, नैतिक संतुलन और मानवीय संवेदना को सशक्त करता है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची :

1. द्विवेदी, हजारीप्रसाद – साहित्य का उद्देश्य, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 32-88।
2. त्रिपाठी, वासुदेव – साहित्य और मूल्यबोध, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 50-130।
3. सिंह, नामवर – दूसरी परंपरा की खोज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 40-118।
4. शर्मा, रामविलास – साहित्य और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 45-120।
5. शर्मा, जनकराज – एक बार गुनगुना दो (गीत-संग्रह), सुकृति प्रकाशन, कैथल, पृ. 52-68।
6. शर्मा, जनकराज – पथिक तुम चलते रहना, सुकृति प्रकाशन, कैथल, पृ. 91-104।
7. शर्मा, जनकराज – एक और पहल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 10-75।
8. शर्मा, जनकराज – श्रीमद् भागवतामृत, अनुराधा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 38-66।
9. शर्मा, जनकराज – मेघनाद वध, राइजिंग स्टार्स, दिल्ली, पृ. 24-69।
10. शर्मा, जनकराज – तेरी खोज में (यात्रा-वृत्तांत), मोनिका प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 13-44।

मो. 9050323594

dr.sku92741@gmail.com



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 195-199

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

वैश्विक संस्कृति पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव

आकांक्षा सिंह

शोधार्थी, हिंदी विभाग, म. ज्यो. फु. रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उ. प्र.)

शोध सारांश :

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम, सर्वाधिक समृद्ध और समग्र ज्ञान प्रणालियों में से एक मानी जाती है। इसका विकास केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि इसने दर्शन, नैतिकता, समाज, शिक्षा, स्वास्थ्य, कला और जीवन-दृष्टि के विविध क्षेत्रों को गहराई से प्रभावित किया है। वेद, उपनिषद, दर्शन-शास्त्र, योग, आयुर्वेद, बौद्ध एवं जैन चिंतन तथा भारतीय सौंदर्यशास्त्र जैसी ज्ञानधाराएँ मानव जीवन को समग्रता में समझने की दृष्टि प्रस्तुत करती हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल स्वर मानव और प्रकृति के बीच संतुलन, आत्मबोध, करुणा, अहिंसा और सह-अस्तित्व की भावना में निहित है। यही कारण है कि यह परंपरा भौगोलिक सीमाओं से परे जाकर वैश्विक संस्कृति को प्रभावित करने में सक्षम रही है। योग और ध्यान की पद्धतियाँ आज विश्व भर में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अपनाई जा रही हैं, वहीं आयुर्वेद की समग्र स्वास्थ्य अवधारणा आधुनिक चिकित्सा विमर्श को नई दिशा प्रदान करती है।

बौद्ध दर्शन की करुणा और मध्यम मार्ग की अवधारणा, वेदांत की आत्मा-ब्रह्म एकता की दृष्टि तथा भारतीय सौंदर्यशास्त्र का रस-सिद्धांत वैश्विक दार्शनिक और सांस्कृतिक विमर्श में गहराई जोड़ते हैं। समकालीन वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ भौतिकता, उपभोगवाद और मानसिक असंतुलन की समस्याएँ बढ़ रही हैं, भारतीय ज्ञान परंपरा मानवता को नैतिक, संतुलित और समग्र जीवन-दृष्टि प्रदान करती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के इन्हीं तत्वों का विश्लेषण करते हुए वैश्विक संस्कृति पर उसके प्रभाव और समकालीन प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है।

शब्द संकेत : भारतीय ज्ञान परंपरा, वैश्विक संस्कृति, वेदांत, योग, बौद्ध चिंतन।

भारतीय ज्ञान परंपरा की संकल्पना और आधार :

भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास सहस्राब्दियों में हुआ है और इसका स्वरूप अत्यंत व्यापक तथा बहुआयामी है। इसके मूल स्रोत वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, दर्शन-शास्त्र, स्मृतियाँ और महाकाव्य हैं। इन ग्रंथों में ज्ञान को केवल बौद्धिक उपलब्धि न मानकर जीवन-व्यवहार और आत्मिक उन्नति से जोड़ा गया है।

इस परंपरा की केंद्रीय अवधारणा 'ऋत' और 'धर्म' है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था तथा मानवीय कर्तव्य दोनों का बोध कराती है। भारतीय चिंतन में प्रश्न, संवाद और अनुभव को सत्य की खोज का माध्यम माना गया है। इसी कारण भारतीय दर्शन में बहुलता और सह-अस्तित्व की भावना विकसित हुई।

यह आधार भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक संस्कृति के लिए लचीला, ग्राह्य और सार्वभौमिक बनाता है।

वेदांत और वैश्विक दार्शनिक विमर्श :

वेदांत दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा का उच्चतम दार्शनिक स्वरूप प्रस्तुत करता है। उपनिषदों में प्रतिपादित आत्मा और ब्रह्म की एकता का सिद्धांत मानव चेतना की सार्वभौमिकता पर बल देता है। 'अहं ब्रह्मास्मि' और 'तत्त्वमसि' जैसे महावाक्य व्यक्ति को सीमित सत्ता से ऊपर उठाकर व्यापक अस्तित्व से जोड़ते हैं।

वैश्विक दार्शनिक विमर्श में चेतना, आत्म-स्वरूप और अस्तित्व के प्रश्न आज भी केंद्रीय बने हुए हैं। इस संदर्भ में वेदांत की दृष्टि आधुनिक वैश्विक दर्शन को वैकल्पिक और गहन चिंतन-सामग्री प्रदान करती है। यह दर्शन मानव गरिमा और आत्मिक स्वतंत्रता के विचार को वैश्विक संस्कृति में सुदृढ़ करता है।

योग परंपरा और वैश्विक जीवन-शैली :

योग भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐसा आयाम है, जिसने वैश्विक संस्कृति को प्रत्यक्ष और व्यावहारिक स्तर पर प्रभावित किया है। पतंजलि के योगसूत्र में योग को चित्तवृत्तियों के निरोध के रूप में परिभाषित किया गया है, जो मानसिक अनुशासन और आत्म-संयम की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

आधुनिक वैश्विक समाज में योग को केवल आध्यात्मिक साधना के रूप में नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, तनाव-नियंत्रण और मानसिक संतुलन की प्रभावी जीवन-पद्धति के रूप में स्वीकार किया गया है। विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में इसकी स्वीकार्यता इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि योग मानव जीवन की सार्वभौमिक आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ है।

आयुर्वेद और वैश्विक स्वास्थ्य दृष्टिकोण :

आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा की एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धि है, जो स्वास्थ्य को शरीर, मन और आत्मा के संतुलन के रूप में परिभाषित करती है। इसका उद्देश्य केवल रोग-निवारण नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन-शैली का निर्माण है।

आधुनिक वैश्विक समाज में जब जीवन-शैली जनित रोग बढ़ रहे हैं, तब आयुर्वेदिक आहार-विहार, दिनचर्या और ऋतुचर्या की अवधारणाएँ विशेष महत्व रखती हैं। यह दृष्टि वैश्विक स्वास्थ्य विमर्श को निवारक और समग्र दिशा प्रदान करती है।

बौद्ध चिंतन और वैश्विक सांस्कृतिक प्रभाव :

बौद्ध दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा की एक अत्यंत प्रभावशाली धारा है, जिसने एशिया सहित विश्व के अनेक भागों की संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। दुःख, अनित्यता और प्रतीत्यसमुत्पाद की अवधारणाएँ मानव जीवन की यथार्थपरक समझ प्रदान करती हैं। बौद्ध चिंतन में करुणा और मध्यम मार्ग का सिद्धांत व्यक्ति और समाज दोनों के लिए संतुलित जीवन-पद्धति प्रस्तुत करता है।

भारत से बाहर बौद्ध धर्म का प्रसार केवल धार्मिक विस्तार नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और कलात्मक मूल्यों का भी संप्रेषण था। चीन, जापान, कोरिया, श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया की सांस्कृतिक

संरचना में बौद्ध प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

आधुनिक वैश्विक विमर्श में बौद्ध ध्यान-पद्धतियाँ, मानसिक शांति और करुणा-आधारित नैतिकता के कारण विशेष महत्व प्राप्त कर रही हैं।

अहिंसा, करुणा और वैश्विक नैतिक मूल्य :

भारतीय ज्ञान परंपरा ने नैतिकता को केवल सामाजिक अनुशासन का साधन नहीं, बल्कि आत्मिक उत्थान की प्रक्रिया के रूप में देखा है। अहिंसा इस नैतिक दृष्टि का केंद्रीय तत्व है, जिसका अर्थ केवल हिंसा का अभाव नहीं, बल्कि समस्त जीवों के प्रति करुणा, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व की भावना है। जैन और बौद्ध परंपराओं में अहिंसा को विचार, वाणी और कर्म – तीनों स्तरों पर अनिवार्य माना गया है।

भारतीय चिंतन में करुणा को दुर्बलता नहीं, बल्कि नैतिक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में दया, सहिष्णुता और सह-अस्तित्व जैसे मूल्य सामाजिक जीवन के आधार स्तंभ बने। यह दृष्टि आधुनिक वैश्विक संस्कृति में मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और शांतिपूर्ण सहजीवन के सिद्धांतों को वैचारिक आधार प्रदान करती है।

वैश्विक स्तर पर नैतिक संकटों, हिंसक संघर्षों और असहिष्णुता के बढ़ते स्वरूप के बीच भारतीय अहिंसा-दृष्टि एक संतुलित और व्यावहारिक नैतिक मार्ग प्रस्तुत करती है।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र और वैश्विक कला-दृष्टि :

भारतीय ज्ञान परंपरा में कला और सौंदर्य को जीवन की आध्यात्मिक अनुभूति से जोड़ा गया है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में प्रतिपादित रस-सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि कला का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि दर्शक के भीतर भावात्मक परिष्कार उत्पन्न करना है। यह दृष्टि कला को आत्मिक अनुभव का माध्यम बनाती है।

भारतीय मूर्तिकला, स्थापत्य और संगीत में भी यह सौंदर्य-दृष्टि परिलक्षित होती है, जहाँ रूप और भाव के बीच संतुलन स्थापित किया गया है। इस दृष्टिकोण ने वैश्विक कला-संस्कृति को गहराई, संवेदनशीलता और प्रतीकात्मकता प्रदान की है।

आधुनिक वैश्विक कला विमर्श में भारतीय रस-सिद्धांत को एक वैकल्पिक सौंदर्य-दर्शन के रूप में स्वीकार किया जा रहा है, जो कला को मानवीय चेतना से जोड़ता है।

समकालीन वैश्विक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता :

आधुनिक वैश्विक समाज तीव्र तकनीकी प्रगति और उपभोग-केंद्रित जीवन-शैली से गुजर रहा है। इस परिवर्तन ने भौतिक सुविधा तो बढ़ाई है, किंतु मानसिक तनाव, सामाजिक अलगाव और मूल्यगत असंतुलन जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। ऐसे संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की संतुलनकारी दृष्टि विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होती है।

भारतीय चिंतन जीवन को समग्र रूप में देखने की प्रेरणा देता है, जहाँ भौतिक उन्नति और नैतिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन आवश्यक माना गया है। यह दृष्टि वैश्विक संस्कृति में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का मार्ग प्रशस्त करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और वैश्विक शिक्षा दृष्टि :

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना का संप्रेषण नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का समग्र विकास रहा है। गुरुकुल परंपरा में ज्ञान, अनुशासन, नैतिकता और आत्मबोध को समान महत्व दिया गया। यह शिक्षा दृष्टि आज वैश्विक शिक्षा विमर्श में पुनः प्रासंगिक हो रही है, जहाँ शिक्षा को जीवनोपयोगी, मूल्य-आधारित और अनुभव-संपन्न बनाने पर बल दिया जा रहा है।

आधुनिक वैश्विक शिक्षा प्रणालियाँ जब केवल प्रतिस्पर्धा और कौशल पर केंद्रित होती हैं, तब भारतीय ज्ञान परंपरा का समग्र दृष्टिकोण शिक्षा को मानवीय संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने का कार्य करता है। यह प्रभाव वैश्विक संस्कृति में शिक्षा की भूमिका को पुनर्परिभाषित करने में सहायक सिद्ध होता है।

पर्यावरणीय चेतना और भारतीय दार्शनिक दृष्टि :

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि पूज्य और संरक्षित सत्ता के रूप में देखा गया है। पंचमहाभूत, वृक्ष-पूजन और नदी-संस्कृति जैसी अवधारणाएँ इस तथ्य को रेखांकित करती हैं।

आधुनिक वैश्विक संस्कृति में जब पर्यावरणीय असंतुलन एक गंभीर संकट के रूप में उभर रहा है, तब भारतीय दार्शनिक दृष्टि प्रकृति के साथ संतुलित संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देती है। यह दृष्टि वैश्विक पर्यावरणीय विमर्श को नैतिक आधार प्रदान करती है।

पूर्व-पश्चिम सांस्कृतिक संवाद में भारतीय ज्ञान परंपरा :

भारतीय ज्ञान परंपरा ने ऐतिहासिक रूप से पूर्व और पश्चिम के बीच बौद्धिक संवाद को समृद्ध किया है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक भारतीय दर्शन, योग और आध्यात्मिक चिंतन ने वैश्विक विचारकों का ध्यान आकृष्ट किया है।

यह संवाद किसी एकतरफा प्रभाव का नहीं, बल्कि पारस्परिक समझ और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का परिणाम रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा की ग्रहणशीलता और संवादशीलता ने इसे वैश्विक संस्कृति का स्थायी अंग बना दिया है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध पत्र के समग्र अध्ययन से यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से उभरता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा ने वैश्विक संस्कृति को दार्शनिक, नैतिक, स्वास्थ्यगत, शैक्षिक तथा सौंदर्यात्मक स्तरों पर गहराई और दिशा प्रदान की है। भारतीय चिंतन की मूल शक्ति इसकी समग्र, संतुलनकारी और मानवीय दृष्टि में निहित है, जो व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करती है।

समकालीन वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ तकनीकी प्रगति के साथ-साथ नैतिक विघटन, मानसिक असंतुलन और पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियाँ उपस्थित हैं, भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की सांस्कृतिक विरासत नहीं रह जाती, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक वैचारिक मार्गदर्शक के रूप में उभरती है। अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक संस्कृति के लिए एक स्थायी, सार्वभौमिक और प्रासंगिक बौद्धिक आधार प्रदान करती है।

संदर्भ सामग्री :

1. Alter, J. (2004). *Yoga in modern India : The body between science and philosophy*. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस ।
2. Bharadwaj, M; Chandra, A; & Silmana. D. (2025). षट्संपत्ति : भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक समीक्षात्मक विश्लेषण । शोधपत्र : इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड ह्यूमैनिटीज, 2(7), 176–180.
3. Charaka, & Dridhabala. (1st–2nd Century CE). चरक संहिता । पारंपरिक आयुर्वेद ग्रंथ ।
4. Divakar, J. (Ed). (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा : विविध संदर्भ । केडी पब्लिकेशन्स ।
5. Pimputkar, M. P; Chavhan, N. S; Kumbhar, S. S; & Choudhary, V. S. (2025). भारतीय ज्ञान प्रणाली. हिमालय पब्लिशिंग हाउस ।
6. Sharma, S. K. (2024). भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में भौतिक विज्ञान. ज्ञानशौर्यम् इंटरनेशनल साइंटिफिक रिफरीड रिसर्च जर्नल, 7(5), 98–102.
7. Singh, H. K. (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा में दार्शनिक पहलू. इंटरनेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च जर्नल, 11(06).
8. Vishnudevananda, S. (1960). द कम्प्लीट इलस्ट्रेटेड बुक ऑफ योग. बेल पब्लिशिंग/जूलियन प्रेस ।
9. Vivekananda, S. (1896). *Raja Yoga* (प्रथम संस्करण). लॉन्गमैन्स, ग्रीन एंड कंपनी, लंदन ।



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 200-203

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

क्षमा शर्मा के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान

दीपा उल्लेगड़ी, शोधार्थी

डॉ. अमर ज्योति, शोध निर्देशक एवं निवृत्त प्रोफेसर,

हिंदी विभाग, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़, कर्नाटक।

शोध सारांश :

हिंदी बाल साहित्यकारों में डॉ. क्षमा शर्मा का नाम विशिष्ट रूप में लिया जाता है। क्षमा शर्मा जी ने जीवन की विविध पहलुओं को सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया है। बाल साहित्य के साथ स्त्री विमर्श और कई पत्रिकाओं में भी लेखन कार्य किया है। क्षमा जी के बचपन की यादें और घटनाएँ ही उनकी रचनाओं का आधार हैं। उन्होंने अपने बाल्यावस्था के अनुभवों का सूक्ष्म प्रस्तुतीकरण अपने साहित्य में किया है, जिससे उनकी रचनाओं में निजता और सरलता अपनापन सा नजर आता है। क्षमा शर्मा जी की बाल साहित्य में चेतना, आत्म सम्मान, नैतिकता जैसे गुण समाये हुए हैं। इनका साहित्य आधुनिक जमाने के बालकों के लिए मार्गदर्शी है। इनकी कहानियाँ मनोविज्ञान के हर स्तर को संबोधित करती हैं। इनकी कहानियों में और उपन्यासों में अभिव्यक्त अंश आकर्षक, रोचक, मनोरंजनात्मक शैली में प्रस्तुत हुई है। बच्चों की प्रत्येक अवस्था को इन्होंने लेखे और कथा साहित्य में दर्शाया है। मानसिक चित्रणों को दर्शाने वाले साहित्य के द्वारा बच्चों की सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक, शैक्षणिक प्रगति संभव है। इस तरह के उपयुक्त रचनाओं की देन लेखिका ने बाल समाज को प्रदान किया है।

लेखिका ने अपने जीवन में घटित घटनाओं को ही प्रेरणा स्रोत बनाकर उसी माध्यम से संदेश दिया है। सभी प्रकार के सृजनात्मक साहित्य रचना में क्षमा शर्मा सिद्धहस्त रहीं हैं। अपने साहित्य के द्वारा वे बाल साहित्य की उद्देश्य पूर्ण रचना कर बालकों का महत्व समझाना चाहती हैं। बालकों के प्रति प्रेम, अनुराग रखकर सृजित किया साहित्य बालकों को विशेष प्रिय है।

डॉ. हरदेव बाहरी जी के अनुसार, 'वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें मानव मन की विभिन्न अवस्थाओं और क्रियों का तथा उनके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।' हिंदी बाल साहित्यकार के रूप में डॉ. क्षमा शर्मा एक वरिष्ठ बाल साहित्यकार हैं। बाल कथा और उपन्यासों के माध्यम से बाल मनोविज्ञान के सूक्ष्म आवेगों को कोमलता और मार्मिकता से दिखाया है।

क्षमा शर्मा के उपन्यासों में बाल विज्ञान :

क्षमा शर्मा ने बाल मनोविज्ञान के आधार पर ही बाल साहित्य की रचना की है। क्षमा जी बाल मनोविज्ञान की गहरी अन्वेषक और अध्येता हैं। इन्होंने बाल मन की प्रवृत्तियों को सूक्ष्म रूप से अध्ययन कर उन्हें उपन्यासों में प्रयोग किया। इनके निम्नलिखित बाल उपन्यासों में बाल प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं।

1. भाई साहब :-

प्रस्तुत उपन्यास क्षमा शर्मा के बड़े भाई के बारे में ही लिखा है। उनकी बचपन की घटनाओं से प्रेरित होकर यह उपन्यास रचि है। इस उपन्यास में जिज्ञासा की प्रवृत्ति दिखाई गई है। उपन्यास के मुख्य पात्र रमेश नामक लड़का दिव्यांग है और अपने माँ की देखभाल में पलता है। रमेश पढ़ाई में अब्बल था। उसके अध्यापक उसके लिए प्रेरणा बन गये थे। उसमें पढ़ने की, आगे बढ़ाने की जिज्ञासा प्रवृत्ति बहुत अधिक थी। कुछ कर दिखाने का जज्बा था। भाई साहब उपन्यास में रचनात्मक आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्तियाँ भी, द्वन्द, स्पर्धा, निर्देश, विनय भी दर्शाया गया है। रमेश नामक पात्रधारी सकारात्मक पात्र के माध्यम से अच्छे गुणों को दर्शाया है। उसके साथ बुरा बर्ताव करने वाले मित्रों के साथ द्वंद दिखाया गया है।

2. होमवर्क :-

प्रस्तुत उपन्यास बादल नामक बालक के जीवन को दर्शाती है। इस उपन्यास में अनुकरण की प्रवृत्ति, आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति, स्पर्धा मनोभाव, निर्देश की प्रवृत्ति, सहानुभूति की प्रवृत्ति, ईर्ष्या की प्रवृत्ति आदि को प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में बदल नामक बालक पढ़ाई में कमजोर होता है। अपने माँ की सहेली के बेटे का उदाहरण सुनकर अपने किये पर शर्मिंदगी महसूस करता है और सुधरता है। यहाँ आत्मप्रदर्शन की प्रवृत्ति का प्रस्ताव किया गया है। बादल दौड़ में अब्बल आने की घटना लिखने के संदर्भ में लेखिका कहती है कि 'उसका आत्मविश्वास एक जीत से कितना बढ़ गया है जहाँ बच्चा सिर्फ स्पर्धा और तुलना से जिंदा रह सकता है, आगे बढ़ सकता है।' इस घटना में स्पर्धा का मनोभाव प्रस्तुत है। इस उपन्यास के बच्चे बदल और काकुल दोनों अपनी माँ की बात को मानते हैं और उसके अनुसार चलते हैं। लेखिका ने यहाँ निर्देश की प्रवृत्ति को दर्शाने का प्रयत्न किया है। एक दिन बदल के मन में एक गरीब आदमी के प्रति सहानुभूति के भाव उत्पन्न होता है और वह अपने पिताजी से अपने घर के कंबल में से एक कंबल उस गरीब को देने की बात करता है। उसके मन में दया की भावना जगी। गरीब की स्थिति देखकर बादल दुखी हुआ। ऐसी घटनाएं बालक के सहानुभूति के मनोभाव को दर्शाती हैं। बादल की बहन हमेशा मजे की जिंदगी जीती है। उसे कोई होमवर्क नहीं करना पड़ता था। वह स्कूल जल्दी नहीं जाती थी। उससे घर का काम नहीं करवाया जाता था। बादल अपनी पीड़ा से दुखी होकर बहन की खुशियों भरी जिंदगी से ईर्ष्या करने लगता था। प्रस्तुत घटना के माध्यम से ईर्ष्या की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

3. इंजन चल साथ-साथ :-

प्रस्तुत उपन्यास में बालक मन की प्रवृत्तियाँ जैसे जिज्ञासा, रचनात्मकता, आत्म प्रदर्शन आदि दिखाई देते हैं। सोमेश नाम के बालक को सीखने, विषयों को जानने की जिज्ञासा थी। वह हमेशा नई विचारों को जानने में दिलचस्पी दिखाता था। उसमें जिज्ञासा का स्वभाव बहुत था। कई दिनों से बंद पड़े रेलवे इंजन की सफाई करके, उसे अलंकृत करके उसने जो कार्यक्रम का आयोजन किया था, इस बात से सोमेश की रचनात्मकता और जिज्ञासा का पता चलता है। सोमेश और उर्मी के साथ उनके सारे दोस्त रेलवे इंजन को साफ करने जाते हैं। दोस्तों के पीछे-पीछे चले जाना उनका अनुकरण करना प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाया गया है। बालकों में सही स्वभाव हो और अन्य बच्चे उन्हें अनुकरण करें तो इससे अच्छी शिक्षा और कोई नहीं। सोमेश अपने माँ को रेलवे स्टेशन ले जाता है। उसे भी सम्मानित करना बालकों में आत्मविश्वास को बढ़ाता है। इस उपन्यास के माध्यम से बच्चों को स्वतंत्रता प्रदान करने की सीख द्वारा बड़ों को भी समझाया गया है। बच्चों को बड़ों से किस तरह

समझना चाहिए यह सिखाती है। पुराने बेकार वस्तु को साफ कर, सजाकर नए जैसा बना देने की कला सिखाती है जिसको देखकर बाकी बच्चे अनुकरण करते हैं और इंजन को सजाने में फूल रंगोली जैसे चीज लेकर आते हैं।

4. भाई की सीख और शिबू पहलवान :

प्रस्तुत उपन्यास और कहानी में बालक की साहसिक प्रवृत्ति को दर्शाया गया है। शीबू के कारनामे गांव भर में मशहूर थे। भाई की सीख कहानी में भी श्याम अपने भाई राम की संकट के समय रक्षा करता था। शिबू पहलवान साहसी था। उसके मदद के लिए गांव वाले तरस जाते थे। इस तरह भाई की सीख कहानी में श्याम अपने भाई राम का संकट के समय मदद करता है। इससे सहिष्णुता का स्वभाव प्रस्तुत होता है। शिबू पहलवान उपन्यास भी साहस प्रवृत्ति को दर्शाता है। बालकों में मदद सहकार और धैर्य से डटकर किसी समस्या का मुकाबला करना ऐसे नैतिक गुण सिखलाती है।

6. पन्ना धाय :-

इस उपन्यास में राणा सांगा की पत्नी करुणावती के दूसरे पुत्र उदयसिंह को अपनी विश्वसनीय दासी पन्नाधाय को सौंपती है और जोहर कर लेती है। पन्ना अपने बेटे की बलि चढ़ाकर उदय सिंह की परवरिश करती है, उसे बचाती और सिंहासन पर भी बिठाती है। प्रस्तुत उपन्यास में देशभक्ति के साथ बच्चों में स्वामी निष्ठा को जगाने का प्रयत्न किया गया है। इस तरह की ऐतिहासिक साहसी उपन्यास बच्चों को प्रिय होते हैं। पन्ना में आदर्श व्यक्तित्व दर्शाया इससे बालकों में ईमानदारी और विश्वास बढ़ता है। अंत में बच्चे सम्मान योग्य भी बनते हैं।

बाल मनोविज्ञान के आधार पर ही बाल साहित्य की रचना होती है। यह बाल मनोरंजन भी और उपदेशात्मक रूप से भी लिखा जाता है। शर्मा के बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान की सभी मानसिक प्रवृत्तियों का उल्लेख हुआ है। बालक में कुछ प्रवृत्तियाँ जन्मजात होती हैं जैसे, रचनात्मकता, द्वंद, जिज्ञासा, निर्देश, अनुकरण, विनय, ईर्ष्या, बालहठ, सहानुभूति, आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्तियाँ आदि। द्वन्द की प्रवृत्ति का अर्थ झगड़ा या विचारों में संघर्ष है। लेखिका ने कहानी, उपन्यासों के जरिये द्वन्द की प्रवृत्ति को दर्शाया है। जहाँ बालक अपने आत्म प्रदर्शन के लिए, अपनी वस्तु पर अपना अधिकार जताना चाहता है। बालक के उम्र बढ़ते-बढ़ते इन प्रवृत्तियों का विकास होता जाता है। रचनात्मक प्रवृत्ति बालक को कुछ नया करने की प्रेरणा देती है। अनेक उदाहरण द्वारा क्षमा जी ने रचनात्मक प्रवृत्ति को उजागर करके बच्चों को प्रेरित किया है। बालक के मनके मुताबिक घटना या कोई व्यक्ति नहीं रहता या अपने आत्मसंरक्षण के लिए भी द्वंद्व होता है। इसका चित्रण बहुत सुंदर ढंग से लेखिका ने किया है।

जिज्ञासा में बालक वस्तुएं और व्यक्तियों के बारे में जानने की कोशिश करता है। क्षमा जी ने अपने बाल साहित्य में बच्चों की जिज्ञासा के बड़े प्रस्तावित चित्रण प्रस्तुत किए हैं। निर्देशात्मक होना दूसरों की बात मानना, बालक के लिए उपयोगी होता है। निर्देश की प्रवृत्ति बालक में अभिभावक और गुरुजनों के प्रति विश्वास और गौरव पैदा करती है। इससे बालक का जीवन सुंदर और यशस्वी बनता है। लेखिका के उपन्यासों ने पात्रों के माध्यम से बालकों में निर्देशात्मक प्रेरणा प्रदान की हैं। बालक बड़ों का अनुकरण करता है कि बुरी बातों को सीखना नहीं है। बालक सही चीजों का अनुकरण करें जिसके लिए क्षमा जी ने अनेक उदाहरण अपने कहानी,

उपन्यासों में प्रस्तुत किया हैं।

विद्या और विनय दोनों ही बालकों में मुख्य गुण है जो बालको में होनी ही चाहिए। जिससे शिष्टाचार और सम्मान का गुण पैदा होते हैं। क्षमा शर्मा ने अपने साहित्य में विनय की प्रवृत्ति को उजागर किया है। इनके लेखन बच्चों के भविष्य के लिए लाभदायक सिद्ध होते हैं। क्रोध और ईर्ष्या बालक के मूल प्रवृत्ति होते हैं जिनको सही तरीके दिशा देना जरूरी है। बालकों में सही चीज के लिए हठ होना जरूरी है। ईर्षा से अच्छे प्रेरणा पाना भी जरूरी है। क्षमा जी के कई उपन्यास और कहानियों में ईर्ष्या ना करने के फायदे और द्वेष के गलत परिणामों की कारण सहित व्याख्या की गई। आत्मप्रदर्शन भी करना बालक के विकास के लिए आवश्यक प्रवृत्ति है। आत्मप्रदर्शन सभी व्यक्तियों में होता ही है। लेखिका ने अपने लेखानों में प्रासंगिक प्रसंगों को प्रस्तुत किया है। बालक के मनकी संवेदनशीलता के माध्यम से सहानुभूति प्रदर्शन करते हैं। पशु पक्षियों के माध्यम से सहायता का गुण प्रस्तुत किया है। सामाजिक मूल्यों को उभारने का यथासम्भव प्रयत्न किया है।

बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान का ज्ञान महत्वपूर्ण होता है। बालक के मूल स्वभाव का अध्ययन बाल साहित्य में होता है। बाल मनोविज्ञान का अध्ययन आज के जमाने में उपयोग कार्य बन गया है। मनोविज्ञान के अंतर्गत बालकों के प्रारंभिक अवस्था से लेकर किशोरवस्था तक उनके मानसिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण बाल साहित्य में होता है। बाल साहित्यकार क्षमा शर्मा जी के साहित्य उद्देश्यपूर्ण होते हैं। लेखिका ने अपने जीवन के अनुभव और समाज में घटित छोटी घटनाओं का सरल रूप से पाठकों के लिए संदेश दिया है। यह अभिभावकों के लिए भी उपयुक्त सिद्ध हुआ है। इनके साहित्य में बाल चेतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। इनका बाल साहित्य मनोरंजन, कल्पना, राष्ट्रीय भावना, पर्यावरण संरक्षण, अंधविश्वास विरोध, सामाजिक शिष्टाचार, प्राणी दया, मानवीय मूल्य ऐसे कई तत्व शामिल हुए हैं जो बालक के सर्वांगीण विकास करके, समाज के लिए और अभिभावकों के लिए, बाल जगत के लिए नई प्रेरणा स्रोत बन गये हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. डॉ. बाहरी हरादेव, राजापाल हिंदी शब्द कोश, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र.सं. 2012
2. डॉ. क्षमा शर्मा, होमवर्क (उपन्यास) जगताराम एंड सन्स, दिल्ली,—31, प्र.सं. 2008

khotdeepa82@gmail.com



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037

SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2

पृष्ठ : 204-207

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Social Media and Child rights under Cyber Law in india

Saba Nazneen, Research Scholar,

Dr. Tai Chaurasiya, Dean, Law Department

Mansarovar Global University, Sehore, (M.P)

Abstract :

The fast expansion of information and communication technology (ICT) has revolutionized communication and information sharing around the world. The digital revolution poses substantial concerns for child safety, particularly as children and teenagers use the internet more frequently. This study analyzes the digital hazards that children experience, with an emphasis on cybersecurity and the efficiency of legislative protection measures. Concerns revolve around hazardous online content, cyberbullying and grooming, children's digital rights, and the psychological and behavioural effects of excessive internet use. This study examines the role of parents, educators, and government measures in India to protect children in the digital environment.

Introduction :

India's government programs seek to protect children online. ICT tools form a key part of daily life. They change communication, education, and info sharing. Children use phones more each day to go online. This sparks safety worries. Data shows 80% of kids reach the internet through mobile devices. It brings chances along with dangers in the online world. The COVID-19 pandemic worsened the issue. Children's screen time rose 50% around the globe (UNICEF, 2020). Tech growth has spotlighted children's online rights. These rights push for safe, helpful, and suitable digital spaces. They uphold privacy, safety, and input from kids. Children spend more time online. They run into bad content and harmful people. Current laws must face these threats. They need to fit shifting views on digital rights and online safety. It links online safety to child rights in India. Fuller, stronger laws are essential.

India's cyber laws provide critical protections for children against online exploitation, primarily through the Information Technology Act, 2000 (IT Act), supplemented by the POCSO Act, 2012.

Social media amplifies risks like cyberbullying and CSAM, affecting millions of minors amid rising internet penetration.

Legal Framework :

The IT Act's Section 67B criminalizes publishing, transmitting, or storing child pornography in electronic form, with first-time offenders facing up to 5 years imprisonment and ₹10 lakh fine, escalating to 7 years on repeat offense. Intermediaries must remove CSAM within 24 hours under IT Rules 2021, while Section 67C mandates data preservation for investigations. POCSO integrates with cyber laws for sexual offenses, treating online grooming or sharing explicit images as aggravated assault. The Digital Personal Data Protection Act, 2023, adds safeguards by requiring parental consent for processing children's data and verifiable parental controls. Bharatiya Nyaya Sanhita, 2023, strengthens penalties for child exploitation, including digital forms.

Social Media's Impact :

Social media platforms expose children to cyberbullying, grooming, and exploitation, with 85% of Indian kids affected—highest globally per McAfee—versus 17% worldwide average. NCRB data shows a 14% rise in online abuse cases involving minors in 2023, fueled by unregulated forums. Girls aged 10-16 face 32-34% sexual harassment rates online, twice the global norm, leading to mental health issues like anxiety.

Prevalence stands at 19.2% for social network bullying among adolescents. Recent proposals in states like Goa ban under-16 access, though Supreme Court rejected national bans as unconstitutional in 2025, favoring regulation.

Challenges and Gaps :

Enforcement lags due to underprepared educators (40%) and poor platform compliance, despite NCPCR directives for KYC and CSAM reporting. Anonymity enables offenders, while low awareness hinders reporting; rural-urban divides exacerbate urban harassment. Judicial trends show integration of IT Act with POCSO, but specialized cyber cells for juveniles remain inadequate. International comparisons highlight India's reactive approach versus proactive global models.

Recommendations :

Mandate AI-driven CSAM detection and parental controls on platforms. Enhance digital literacy in schools and JJ Boards for cyber-rehabilitation. Amend IT Act for stricter intermediary liability and nationwide cyber police units. Promote NCPCR guidelines like disclaimers on adult content. India must balance access with protection through tech accountability and awareness to uphold child rights in the digital era.

Landmark cases on child cybercrimes in India :

Landmark court cases in India have shaped protections against child cybercrimes, clarifying offenses like possession of CSAM under POCSO and IT Act. These rulings emphasize digital spaces as extensions of child safety domains. Delhi surveys reveal 17% middle graders victimized, 8% perpetrators, mirroring in-person rates but amplified online. NCPCR's 2025 meetings urged platforms for age verification, following CSAM surges. A 2024 case under Section 67B convicted transmitters of child explicit content shared via WhatsApp.

Supreme Court Cases :

- **Just Rights for Children Alliance v. S. Harish (2024)** : The Supreme Court overturned Madras HC's quashing of proceedings against a man possessing child porn videos, ruling that mere storage/viewing constitutes offenses under Section 15 POCSO and Section 67B IT Act. It stressed presuming culpable intent and urged restraint in quashing POCSO cases, impacting demand for exploitative material. Supreme Court mandated replacing "child pornography" with "Child Sexual Exploitative Abuse Material" (CSEAM) in legal discourse to reduce stigma and focus on abuse.
- **Prajwala v. Union of India (2018)** : Supreme court Directed platforms to proactively detect/remove CSAM using AI, recognizing platform accountability under IT Rules.

Significant High Court Rulings :

- **Rajesh Gambhir v. State GNCT of Delhi & Anr)2025 : Delhi high court** Upheld conviction for sexual harassment via cyberbullying (explicit messages to minor girl), sentencing under Sections 12/14 POCSO and 67B IT Act; noted cyber threats cause trauma akin to physical abuse, calling for digital protections post-COVID.
- **Madras HC PIL on Social Media Restrictions (2025)** : Urged Centre for Australia-style bans on under-16 social media access and parental controls, amid easy porn access for minors. A division bench comprising justices G. Jayachandran and K.K. Ramakrishnan suggested that India consider a law to prohibit children under 16 from accessing social media platforms like Facebook, Instagram, and Snapchat.

Implications :

These cases expand POCSO/IT Act scope to non-physical cyber acts, boosting convictions amid 32% rise in cases (2021-22). They mandate tech interventions, aligning with NCPCR guidelines, but highlight enforcement gaps.

Conclusion :

The rapid proliferation of social media and increased internet usage among children in India, particularly intensified by the COVID-19 pandemic, has heightened vulnerabilities to online sexual exploitation, grooming, cyberbullying, and cybersex trafficking. While existing legal frameworks

provide some safeguards, significant gaps persist in addressing technology-assisted child sexual abuse, as evidenced by rising incidents and inadequate enforcement. To bridge these gaps, policymakers must strengthen cyber laws, mandate platform accountability, integrate digital safety education in schools, and leverage AI-driven tools for detection and prevention. Collaborative efforts among government, tech companies, educators, and families are essential to protect children's rights and ensure their safe navigation of the digital landscape.

References:

1. Supreme Court's landmark POCSO judgement <https://www.scoobserver.in/journal/supreme-courts-landmark-pocso-judgement/>
2. Supreme Court Landmark Ruling: CSEAM is an offence ... <https://www.cyberpeace.org/resources/blogs/supreme-court-landmark-ruling-cseam-is-an-offence-under-posco-and-it-act>
3. Safer Digital spaces for children: DHC in POCSO ... <https://www.sconline.com/blog/post/2025/08/06/safer-digital-spaces-for-children-delhi-hc-pocso-cyberbullying-case/>
4. 2024 2024 INSC 716 https://api.sci.gov.in/supremecourt/2024/8562/8562_2024_1_1501_56073_Judgement_23-Sep-2024.pdf
5. Case: Just Rights for Children Alliance v. S. Harish <https://www.dhyeyalaw.in/just-rights-for-children-alliance-v-s-harish>
6. Supreme Court Mandates Use of 'CSEAM' to Replace ... <https://jgu.edu.in/child-rights-clinic/supreme-court-mandates-use-of-cseam-to-replace-child-pornography-in-legal-terminology/>
7. What you need to know about cyberbullying and its legal ... <https://blog.ipleaders.in/what-you-need-to-know-about-cyberbullying-and-its-legal-remedies/>
8. Madras HC Urges Centre to Consider Australia-Style ... <https://www.youtube.com/watch?v=Kmg9wfZ7etQ>
9. Cyber crimes against children: nexus with pocso act. https://cja.gov.in/attachment/638878418815583760_.pdf
10. Case Compendium CCR-I https://nluassam.ac.in/docs/ccr/Case_Compendium_CCR-I.pdf

Contact Details -8871732946, E-mail: - Sabanazneen08@gmail.com



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREEED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 208-211

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

वैश्वीकरण के संदर्भ में भारत का सामाजिक- राजनीतिक विकास

डॉ. सुशीला देवी यादव

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान,

डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर।

शोध सारांश :

वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसने विश्व के लगभग सभी देशों की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओं को प्रभावित किया है। भारत जैसे विकासशील देश में वैश्वीकरण ने जहाँ आर्थिक उदारीकरण, तकनीकी प्रगति और अंतरराष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा दिया, वहीं सामाजिक असमानताएँ सांस्कृतिक परिवर्तन और राजनीतिक चुनौतियों को भी जन्म दिया। यह शोध-पत्र वैश्वीकरण के संदर्भ में भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक विकास का विश्लेषण करता है तथा इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को रेखांकित करता है।

संकेताक्षर : वैश्वीकरण, सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक विकास, उदारीकरण।

शोध के उद्देश्य :

इस शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

- वैश्वीकरण की अवधारणा तथा उसके विभिन्न आयामों आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक का अध्ययन करना।
- भारत में वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप हुए सामाजिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एवं नीति-निर्माण पर वैश्वीकरण के प्रभावों का अध्ययन करना।
- वैश्वीकरण के कारण उत्पन्न सामाजिक असमानताओं एवं अवसरों का मूल्यांकन करना।
- लोकतंत्र, संप्रभुता और राज्य की भूमिका पर वैश्वीकरण के प्रभावों को समझना।
- वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं की तुलनात्मक समीक्षा करना।
- भारत के सामाजिक-राजनीतिक विकास के संदर्भ में भविष्य की चुनौतियों एवं संभावनाओं को रेखांकित करना।

शोध का महत्व :

यह शोध भारत में वैश्वीकरण के वास्तविक सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों को समझने में सहायक

होगा।

- नीति-निर्माताओं को समावेशी एवं संतुलित विकास हेतु मार्गदर्शन प्रदान करेगा।
- भारतीय राजनीति और समाज के आधुनिक परिवर्तनों को समझने का आधार बनेगा।
- यह अध्ययन वैश्वीकरण और राष्ट्रीय हितों के बीच संतुलन की आवश्यकता को उजागर करता है।
- सामाजिक न्याय, लोकतंत्र और सांस्कृतिक पहचान जैसे मुद्दों पर वैचारिक स्पष्टता प्रदान करता है।

शोध प्रविधि :

यह शोध वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें तथ्यों को एकत्रित करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत सरकारी रिपोर्टें, नीति दस्तावेज द्वितीयक स्रोत पुस्तकें, शोध-पत्र एवं जर्नल, समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ, सरकारी एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टें।

परिचय :

वैश्वीकरण का अर्थ है विश्व के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों का विस्तार। 1991 में भारत में नई आर्थिक नीति उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण—LPG) के लागू होने के बाद भारतीय समाज और राजनीति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले। वैश्वीकरण ने न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व बाजार से जोड़ा, बल्कि सामाजिक संरचना और राजनीतिक प्रक्रियाओं को भी गहराई से प्रभावित किया।

वैश्वीकरण की अवधारणा :

वैश्वीकरण को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है जिसमें पूंजी, वस्तुएँ, सेवाएँ, तकनीक, सूचना और मानव संसाधन सीमाओं के पार निर्बाध रूप से प्रवाहित होते हैं। इसके प्रमुख आयाम हैं :-

- आर्थिक वैश्वीकरण।
- सामाजिक-सांस्कृतिक वैश्वीकरण।
- राजनीतिक वैश्वीकरण।

भारत में वैश्वीकरण का सामाजिक प्रभाव :

• सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन :

वैश्वीकरण के कारण भारतीय समाज में शहरीकरण, मध्यम वर्ग का विस्तार और उपभोक्तावादी संस्कृति का विकास हुआ। संयुक्त परिवार व्यवस्था कमजोर हुई और एकल परिवारों की संख्या बढ़ी।

• शिक्षा और सूचना क्रांति :

सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के प्रसार ने शिक्षा को अधिक सुलभ बनाया। ऑनलाइन शिक्षा, अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों से जुड़ाव और कौशल-आधारित शिक्षा को बढ़ावा मिला।

• वैश्वीकरण और सामाजिक न्याय :

वैश्वीकरण ने सामाजिक न्याय की अवधारणा को नई दिशा दी है। अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग और महिलाओं के लिए नए अवसर उत्पन्न हुए, किंतु लाभों का समान वितरण नहीं हो पाया। राज्य की भूमिका अब कल्याणकारी से नियामक और साझेदार की बनती जा रही है।

- **आर्थिक असमानता :**

यद्यपि वैश्वीकरण ने रोजगार के नए अवसर उत्पन्न किए, परंतु अमीर-गरीब के बीच की खाई भी बढ़ी। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच असमान विकास एक गंभीर चुनौती बनकर उभरा।

- सांस्कृतिक परिवर्तन पश्चिमीकरण बढ़ा है, जीवनशैली, खान-पान फास्ट फूड फैशन और पसंद-नापसंद में बदलाव आया है विवाह, परिवार और जाति व्यवस्था पर प्रभाव पड़ा है।
- शहरीकरण और जीवनशैली शहरों की ओर पलायन बढ़ा है, जिससे प्रदूषण, भीड़, अपर्याप्त स्वच्छता और स्लम जैसी समस्याएं बढ़ी हैं। जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां मोटापा, मधुमेह बढ़ी हैं।
- महिला सशक्तिकरण शिक्षा, रोजगार और राजनीति में महिलाओं के लिए नए अवसर खुले हैं, जिससे उनका सशक्तिकरण हुआ है।
- हाशिए के समूहों पर प्रभाव हाशिए पर पड़े समुदायों को अपने अधिकारों और पहचान के लिए आवाज उठाने में मदद मिली है, लेकिन आदिवासी समुदायों का जल, जंगल, जमीन से जुड़ाव और अस्तित्व खतरे में पड़ा है।

भारत में वैश्वीकरण का राजनीतिक प्रभाव :

- **लोक कल्याणकारी राज्य की भूमिका को महत्व :**

वैश्वीकरण के कारण राज्य की भूमिका नियंत्रक से सुविधादाता की ओर बढ़ी। जो लोक कल्याणकारी राज्य को बढ़ावा देता है। निजी क्षेत्र और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका में वृद्धि हुई।

- **लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर प्रभाव :**

मीडिया और सोशल मीडिया के विस्तार ने राजनीतिक जागरूकता बढ़ाई। नागरिक अब नीतियों और शासन पर अधिक प्रश्न उठाने लगे हैं।

- **भारत की विदेश नीति और वैश्वीकरण :**

वैश्वीकरण ने भारत की विदेश नीति को बहुआयामी बनाया है। भारत अब केवल गुटनिरपेक्षता तक सीमित नहीं है, बल्कि रणनीतिक साझेदारियों, क्वाड, ब्रिक्स, जी-20 जैसे मंचों पर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इससे भारत की वैश्विक राजनीतिक स्थिति मजबूत हुई है।

- **नीति निर्माण में अंतरराष्ट्रीय प्रभाव :**

विश्व व्यापार संगठन अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोश और विश्व बैंक जैसी संस्थाओं का भारतीय नीतियों पर प्रभाव बढ़ा। इससे राष्ट्रीय संप्रभुता पर बहस तेज हुई।

- **पहचान की राजनीति और क्षेत्रीयता :**

वैश्वीकरण के दबाव में स्थानीय पहचान, क्षेत्रीयता और सांस्कृतिक अस्मिता की राजनीति को बल मिला। यह प्रवृत्ति भारतीय राजनीति में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण का भारत पर प्रभाव :

- **डिजिटल वैश्वीकरण :**

21वीं सदी में वैश्वीकरण का स्वरूप डिजिटल हो गया है। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया जैसी पहलों ने भारत को वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। सोशल मीडिया,

ई-गवर्नेंस और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने नागरिकों और शासन के बीच की दूरी को कम किया है।

• **श्रम और रोजगार पर प्रभाव :**

वैश्वीकरण के कारण आईटी, बीपीओ, सेवा क्षेत्र में रोजगार बढ़ाए परंतु असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों की असुरक्षा भी बढ़ी। टेका श्रम, गिग इकॉनॉमी और अस्थायी रोजगार नई चुनौतियाँ बनकर उभरे हैं।

• **कृषि और ग्रामीण समाज :**

कृषि क्षेत्र पर वैश्वीकरण का प्रभाव मिश्रित रहा है। निर्यात के अवसर बढ़े परंतु वैश्विक कीमतों के उतार-चढ़ाव से किसान प्रभावित हुए। कॉरपोरेट खेती और अनुबंध खेती पर बहस तेज हुई है।

चुनौतियाँ और अवसर :

• **प्रमुख चुनौतियाँ :**

- आर्थिक असमानता और बेरोजगारी।
- सांस्कृतिक पहचान का संकट।
- नीति निर्माण में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रभाव।
- पर्यावरणीय समस्याएँ।
- सामाजिक और क्षेत्रीय असमानता।
- सांस्कृतिक एकरूपता का खतरा।
- नीति-निर्माण में बाहरी दबाव।

• **अवसर :**

भारत को समावेशी विकास मॉडल अपनाना होगा जिसमें आर्थिक वृद्धि के साथ सामाजिक न्याय पर्यावरण संरक्षण और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा सुनिश्चित होती है। आर्थिक विकास और विदेशी निवेश में वृद्धि हुई है। तकनीकी प्रगति और रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं। वैश्विक मंच पर भारत की भारत के मजबूत साख स्थापित की है।

निष्कर्ष :

वैश्वीकरण ने भारत के सामाजिक और राजनीतिक विकास को बहुआयामी रूप से प्रभावित किया है। यह प्रक्रिया न तो पूर्णतः लाभकारी है और न ही पूर्णतः हानिकारक। संतुलित नीतियों सशक्त लोकतांत्रिक संस्थाओं और सामाजिक चेतना के माध्यम से भारत वैश्वीकरण को अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप ढाल सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. बाजपेयी ए. (2015) वैश्वीकरण और भारतीय समाज, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
2. दत्त, रुद्र एवं सुन्दरम के.पी.एम. 2020 भारतीय अर्थव्यवस्था, नई दिल्ली सुल्तान चंद एंड संस।
3. शुक्ला, रामगोपाल (2018) भारतीय राजनीति सिद्धांत और व्यवहार, दिल्ली पीयरसन।
4. मीनू (2013) इम्पैक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन एण्ड लीबरेलाइजेशन ऑन इंडियन एडमिनिस्ट्रेशन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एम० एण्ड एम० रिसर्च।
5. एम. श्रीवास्तव, (2009) ग्लोबलाइजेशन एण्ड पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एस.एस.आर.एन.डॉट।

Gmail:- sushilayadav339@gmail.com



संगम Impact Factor : 7.834

Website :
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037
SANGAM

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTILANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 212-218

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

रसगङ्गाधरे समुद्भूतेषु पद्येषु भामिनीविलासस्य प्रभावः

Dr. Suman Banerjee

Guest Lecturer in the department of Sahitya at The Sanskrit College and University.

विषयसारः - संस्कृतसाहित्येतिहास आचार्यजगन्नाथः प्रचण्डमार्तण्डप्रतीकाशः। यस्य दिधीतिपुञ्जैः विकचशतदलानि अद्यापि विलसन्ति। यद्यपि आचार्यपादोऽयमालङ्कारिकरूपेणैव समधिकप्रसिद्धः, तथापि तस्यालङ्कारिकसत्ता तदीयां कविसत्तां न म्लानां कर्तुं शशाका स्वीयशेमुषीसमुल्लासेन जगन्नाथो बहूनि काव्यानि प्रणीतवान्। तेषामन्यतमं काव्यं खलु 'भामिनीविलासः'। स्वीयस्त्रीनाम्नैव जगन्नाथः काव्यस्यास्य नाम कृतवानिति जनश्रुतिरस्ति। केषाञ्चिन्मतेन स्वीयप्रतिज्ञा-पुरणार्थं काव्यमिदं तेन विरचितम्। तस्याभासः प्राप्यते रसगङ्गाधरे प्रथमानने। यत्र जगन्नाथः स्वयमुवाच- 'निर्माय नूतनमुदाहरणानुरूपम्'।¹ इति। यद्भवतु अलं वितर्केण। वस्तुतोऽयं भामिनीविलासो जगन्नाथस्य अत्युत्तमा काव्यकृतिः। तत्र चत्वारो विभागाः सन्ति। यथा- अन्योक्त्युल्लासः, शृङ्गारोल्लासः, करुणविलासः, शान्तविलासः² च। काव्यस्यास्याध्ययनकालेऽस्माभिर्दृष्टं यत्, अत्रत्यपठितानि बहुपद्यानि रसगङ्गाधरे समुपलभ्यन्ते। एतेषु कति रसगङ्गाधरस्य कस्मिन्नानने पठ्यन्ते, को वा तेषां पद्यानां प्रसङ्गः, तदखिलगवेषणायास्माभिः प्रस्तूयत इदं लघुशोधपत्रम्। पत्रमिदं तथ्यात्मकं भवेदित्यस्माकं विवेकः।

सूचकशब्दाः - भामिनीविलासः, अलङ्कारः, रसगङ्गाधरः, रसः, ध्वनिः, व्यभिचारिभावः, भावाभासः।

मङ्गलाचरणम् - 'स्मृतापि तरुणातपम्।'।³ इयं भामिनीविलासस्था कविता रसगङ्गाधरस्य⁴ मङ्गलाचरणे दृश्यते।
काव्यविभेदः - रसगङ्गाधरे प्रथमानने⁵ उत्तमोत्तमकाव्यस्योदाहरणप्रसङ्गे भामिनीविलासस्य पद्यविशेषो लक्ष्यते। पद्यं यथा 'गुरुमध्यगता मया'⁶ इति। तत्प्रसङ्गे रसगङ्गाधरे⁷ 'शयिता सविधेऽप्यनीश्वरा..'⁸ इति भामिनीविलासस्थं पद्यमुदाह्रियते। रसः - विप्रलम्भशृङ्गारप्रसङ्गे भामिनीविलासस्य 'नयनाञ्चलावमर्श..'⁹ पद्यविशेषोऽयं रसगङ्गाधरे प्रथमानने¹⁰ उदाहृतः। अपि च, तद्वत् पद्यद्वयमपि¹¹ तत्रास्ति। 'प्रत्युद्गता सविनयं..'¹² भामिनीविलासस्थितं पद्यमिदं रसगङ्गाधरे¹³ रसालोचनाप्रसङ्गे प्राप्यते।
गुणः - माधुर्योदाहरणे भामिनीविलासस्य पद्यं¹⁴ रसगङ्गाधरे प्रथमानने¹⁵ प्रदत्तमासीत्। सुकुमारताप्रसङ्गे भामिनीविलासस्थपद्यं¹⁶ रसगङ्गाधरे¹⁷ प्रदत्तमस्ति। माधुर्यव्यञ्जकरचनाया उदाहरणत्वेन पठितस्य भामिनीविलासस्य 'स्वेदाम्बुसान्द्र..' इति पद्यस्य द्वितीयचरणे 'दोलायितश्रवणकुण्डल'-स्थाने 'रन्तःस्मितालसविलोकन' इति संयुज्य सम्पूर्णं पद्यं रसगङ्गाधरे प्रथमानने¹⁸ पठ्यते। मधुररसानुकूलमनुप्रासमपि प्रयोक्तुं युज्यत इति प्रदर्शयितुं रसगङ्गाधरे¹⁹ भामिनीविलासगतं पद्यम्²⁰ उदाहृतम्। रसगङ्गाधरे प्रथमानने²¹ अर्थव्यक्तिप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे 'गुरुमध्ये कमलाक्षी' इति पद्यं पठ्यते। किन्तु, उक्तपद्यं भामिनीविलासे 'गुरुमध्ये हरिणाक्षी'ति पठ्यते।
माधुर्यौजः प्रसादगुणाभिव्यञ्जकं भामिनीविलासस्य पद्यविशेषः²²

¹ रसगङ्गाधरः, १/६

² निर्णयसागरप्रेस-अनुसारं नाम पठितमस्ति। तत्संस्करणपाठ एवास्माभिरनुसृतः।

³ भामिनीविलासः, शान्तविलासः, ३

⁴ रसगङ्गाधरः, १/१

⁵ तत्रैव, पृष्ठा, ११, काव्यमालासंस्करणम् - १२

⁶ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, १८

⁷ रसगङ्गाधरः, पृ, १०

⁸ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, १००

⁹ तत्रैव, ४८

¹⁰ रसगङ्गाधरः, पृष्ठा, ३५

¹¹ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ५५, ६३

¹² तत्रैव, करुणविलासः, २

¹³ रसगङ्गाधरः, पृष्ठा, ४८

¹⁴ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, २

¹⁵ रसगङ्गाधरः, पृष्ठा, ५७

¹⁶ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ३

¹⁷ रसगङ्गाधरः, पृष्ठा, ५७

¹⁸ तत्रैव, पृष्ठा, ६४,

¹⁹ तत्रैव, पृष्ठा, ७३

²⁰ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ४

²¹ रसगङ्गाधरः, पृ, ६०

²² भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ५२

रसगङ्गाधर²³ उदाहृतः। भामिनीविलासगतपद्यं²⁴ प्रथमानने²⁵ प्रसादोदाहरणावसरेऽस्ति। शान्तविलासगतं पद्यं²⁶ समाधिगुणे प्रथमाननेऽस्ति²⁷। **रीतिः** - वैदर्भीप्रसङ्गे भामिनीविलासस्य पद्यं²⁸ रसगङ्गाधर²⁹ उदाहृतम्। **व्यभिचारिभावः** - हर्षो-दाहरणे रसगङ्गाधरे³⁰ भामिनीविलासपद्यं³¹ पठ्यते। स्मृत्युदाहरणे रसगङ्गाधरे³² भामिनीविलासपद्यद्वयं³³ पठितमस्ति। ब्रीडाप्रसङ्गे भामिनीविलासगतपद्यद्वयं³⁴ प्रथमानने³⁵ पठ्यते। मोहोदाहरणे रसगङ्गाधरे³⁶ भामिनीविलासपद्यं³⁷ दुश्यते। धृतिप्रसङ्गे भामिनीविलासपद्यं³⁸ प्रथमानने³⁹ व्यवहृतम्। ग्लान्युदाहरणे रसगङ्गाधरे⁴⁰ भामिनीविलासपद्यं⁴¹ लक्ष्यते। चिन्ताभावप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे प्रथमानने⁴² प्राप्यते भामिनीविलासस्य पद्यम्⁴³। श्रमालोचनाप्रसङ्गे भामिनीविलासगतं पद्यं⁴⁴ द्वितीयाननेऽस्ति⁴⁵। गर्वप्रसङ्गे भामिनीविलासस्थपद्यं⁴⁶ रसगङ्गाधरे⁴⁷ प्राप्यते। व्याधेरालोचनायां भामिनी-विलासपद्यं⁴⁸ रसगङ्गाधरे⁴⁹ पठ्यते। त्रासव्यञ्जकरूपि रसगङ्गाधरे⁵⁰ भामिनीविलासपद्यम्⁵¹ उदाहृतम्। अमर्षप्रसङ्गे भामिनीविलासस्थपद्यं⁵² रसगङ्गाधरे⁵³ प्राप्यते। सुप्तिप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे⁵⁴ प्रथमानने भामिनीविलासस्थपद्यम्⁵⁵ उदाहृतम्। अवहित्थाप्रसङ्गे भामिनीविलासस्य पद्यं⁵⁶ रसगङ्गाधरे⁵⁷ पठ्यते। उन्मादोदाहरणे भामिनीविलासस्थपद्यविशेषः⁵⁸ लक्ष्यते रसगङ्गाधरे⁵⁹। मरणप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे⁶⁰ भामिनीविलासस्य पद्यं⁶¹ प्राप्यते। भामिनीविलासस्य पद्यं⁶² रसगङ्गाधरे

²³ रसगङ्गाधरः, पृ. ६५

²⁴ भामिनीविलासः, शान्तविलासः, ५

²⁵ रसगङ्गाधरः, पृ. ६६

²⁶ भामिनीविलासः, शान्तविलासः, ३०

²⁷ रसगङ्गाधरः, पृ. ६३

²⁸ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ५४

²⁹ रसगङ्गाधरः, पृ. ७३

³⁰ तत्रैव, पृ. ७७

³¹ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, १५

³² रसगङ्गाधरः, पृ. ७८

³³ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ५, २३

³⁴ तत्रैव, २८, ३०

³⁵ रसगङ्गाधरः, पृ. ७८

³⁶ तत्रैव, पृ. ७९

³⁷ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ६७

³⁸ तत्रैव, शान्तविलासः, २०

³⁹ रसगङ्गाधरः, पृ. ७९

⁴⁰ तत्रैव, पृ. ८०

⁴¹ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ६६

⁴² रसगङ्गाधरः, पृ. ८२

⁴³ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ६८

⁴⁴ तत्रैव, ३१

⁴⁵ रसगङ्गाधरः, पृ. ८४

⁴⁶ भामिनीविलासः, शान्तविलासः, २६

⁴⁷ रसगङ्गाधरः, पृ. ८४

⁴⁸ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, २५

⁴⁹ रसगङ्गाधरः, पृ. ८३

⁵⁰ तत्रैव, पृ. ८६

⁵¹ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ११

⁵² तत्रैव, १६

⁵³ रसगङ्गाधरः, पृ. ८८

⁵⁴ तत्रैव, पृ. ८७

⁵⁵ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, २०

⁵⁶ तत्रैव, ६४

⁵⁷ रसगङ्गाधरः, पृ. ८९

⁵⁸ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ३९

⁵⁹ रसगङ्गाधरः, पृ. ९०

⁶⁰ तत्रैव, पृ. ९१

⁶¹ भामिनीविलासः, करुणविलासः, १८

⁶² तत्रैव, अन्योक्त्युल्लासः, ३

प्रथमानने⁶³ असूयाप्रसङ्गेऽस्ति। रसाभासः - शृङ्गाभासप्रसङ्गे प्रथमानने⁶⁴ भामिनीविलासपद्यम्⁶⁵ उदाहृतम्। विप्रलम्भा-
भासप्रसङ्गे भामिनीविलासगतपद्यं⁶⁶ रसगङ्गाधरे प्रथमानने⁶⁷ पठ्यते। अनुचितविषयभावाभासोदाहरणप्रसङ्गे भामिनी-
विलासगतं पद्यं⁶⁸ रसगङ्गाधरे⁶⁹ उदाहृतम्। भावालङ्कारः - १) 'मुञ्चासि नाद्यापि'।⁷⁰ भामिनीविलासपद्यं रसगङ्गाधरे⁷¹
⁷¹ भावशान्तेरुदाहरणप्रसङ्गे प्राप्यते। २) भावोदयप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे⁷² भामिनीविलासपद्यं⁷³ दृश्यते। रसगङ्गाधरे⁷⁴
भामिनीविलासस्य पद्यं⁷⁵ भावसन्धेरुदाहरणत्वेन लभ्यते। ध्वनिः - अनन्वयध्वनेरुदाहरणत्वेन भामिनीविलासपद्यं⁷⁶ प्राप्यते
रसगङ्गाधरे⁷⁷। व्यङ्ग्यसत्तायामपि वाच्यचमत्कारिता गुणीभूतव्यङ्ग्यपर्यायभुक्ता, न ध्वनिकाव्यमिति भामिनीविलासगत-
पद्येन⁷⁸ प्रदर्शितम्। क) वस्तुनोऽलङ्कारव्यञ्जकता-स्वतः सम्भविवस्तुनालङ्कारध्वनेरुदाहरणप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे⁷⁹
क्रमेण भामिनीविलासस्य पद्यम्⁸⁰ उदाहृतम्। ख) अर्थशक्तिमूलालङ्कारध्वनिः - भामिनीविलासस्य पद्यं⁸¹ रसगङ्गाधरे⁸²
अर्थशक्तिमूलव्यतिरेकध्वनिप्रसङ्गे पठ्यते। कविप्रौढोक्तिसिद्धवस्तुना वस्तुध्वनिप्रसङ्गे रसगङ्गाधरस्य द्वितीयानने⁸³
भामिनीविलासगतपद्यम्⁸⁴ उदाह्रियते। भामिनीविलासस्य पद्यविशेषो⁸⁵ रूपकध्वनिप्रसङ्गे दीयते रसगङ्गाधरे⁸⁶।
भामिनीविलासगतं पद्यं⁸⁷ स्वतःसम्भविनालङ्कारेणालङ्कारध्वनेरुदाहरणप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे⁸⁸ प्राप्यते। भामिनीविलासस्य
पद्यविशेषः⁸⁹ स्मरणध्वनिप्रसङ्गे रसगङ्गाधर⁹⁰ उदाह्रियते। भामिनीविलासस्थपद्यं⁹¹ रसगङ्गाधरे द्वितीयानने⁹² अपह्नुति-
ध्वनिप्रसङ्गे पठ्यते। अलङ्कारः १) उपमा- भामिनीविलासस्थं 'नीवीं नियम्य'।⁹³ इति पद्यं रसगङ्गाधरे द्वितीयानन⁹⁴
उक्तप्रसङ्ग उदाहृतम्। उपमादोषव्याख्यानावसरेऽपि भामिनीविलासस्य पद्यविशेष⁹⁵ स्तत्र⁹⁶ व्यवहृतः। २) उदाहरणम्-
उक्तप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे⁹⁷ भामिनीविलासस्थपद्यद्वयम्⁹⁸ उदाहृतमस्ति। ३) स्मरणम् - उक्तप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे द्वितीयानने⁹⁹

⁶³ रसगङ्गाधरः, पृ., ९३

⁶⁴ तत्रैव, पृ. १००

⁶⁵ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ३७

⁶⁶ तत्रैव, ६९

⁶⁷ रसगङ्गाधरः, पृ. १०१

⁶⁸ भामिनीविलासः, करुणविलासः, ३

⁶⁹ रसगङ्गाधरः, पृ. १०२

⁷⁰ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ७२

⁷¹ रसगङ्गाधरः, पृ. १०२

⁷² तत्रैव, पृ. १०३

⁷³ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, २३

⁷⁴ रसगङ्गाधरः, पृ. १०३

⁷⁵ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ३५

⁷⁶ तत्रैव, अन्योक्त्युल्लासः, २७

⁷⁷ रसगङ्गाधरः, २०९

⁷⁸ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, १८

⁷⁹ रसगङ्गाधरः, पृ. १३५, १३३

⁸⁰ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, १

⁸¹ तत्रैव, १, ४

⁸² रसगङ्गाधरः, पृ. ३५२, २३५

⁸³ तत्रैव, पृ. १३६

⁸⁴ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, १३

⁸⁵ तत्रैव, २९

⁸⁶ रसगङ्गाधरः, पृ. २४६

⁸⁷ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ७०

⁸⁸ रसगङ्गाधरः, पृ. ४९०

⁸⁹ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ७१

⁹⁰ रसगङ्गाधरः, पृ. २२२

⁹¹ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ७८

⁹² रसगङ्गाधरः, पृ. २८२

⁹³ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, १०

⁹⁴ रसगङ्गाधरः, पृ. १७९

⁹⁵ शृङ्गारोल्लासः, १४

⁹⁶ तत्रैव, पृ. १९३

⁹⁷ रसगङ्गाधरः, पृ. २१३-१४

⁹⁸ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ७५, ७६

⁹⁹ रसगङ्गाधरः, पृ. २१७, २२१

पद्यद्वय¹⁰⁰ मुदाहरणत्वेन दीयते। ४) रूपकं - 'खलः¹⁰¹ सज्जनकार्पासः'¹⁰² भामिनीविलासगतं पद्यमिदं द्वितीयानने¹⁰³ रूपकभेदवैचित्र्यविषये प्रदत्तमासीत्। अन्यपद्यद्वय¹⁰⁴मपि रूपकप्रसङ्गे समुदाहृतम्। एकदेशविवर्तिसावयरूपकप्रसङ्गं एकं पद्यं¹⁰⁵ रसगङ्गाधरे द्वितीयानने¹⁰⁶ प्राप्यते। ५) ससन्देहः-रसगङ्गाधर¹⁰⁷ उक्तप्रसङ्गे भामिनीविलासगतपद्यं¹⁰⁸ पठ्यते। रसगङ्गाधरे¹⁰⁹ शुद्धससन्देहप्रसङ्गे किञ्चित्पद्यं¹¹⁰ समुदाहृतम्। निश्चयगर्भप्रसङ्गे पद्यविशेष¹¹¹ उदाहृतस्तत्र¹¹²। निश्चयान्तस्ससन्देहोदाहरणप्रसङ्गे पद्यविशेषः¹¹³ रसगङ्गाधरे¹¹⁴ अस्ति। ६) भ्रान्तिमान् - भामिनीविलासपद्यं¹¹⁵ रसगङ्गाधर¹¹⁶ उक्तप्रसङ्गे प्राप्यते। ७) उल्लेखः - भामिनीविलासगत एकः श्लोक¹¹⁷ उक्तविषये रसगङ्गाधरस्य¹¹⁸ द्वितीयानने पठ्यते। अपि च, तत्प्रसङ्गेऽपरं पद्यं' इति पद्यमपि तत्र¹¹⁹ प्राप्यते। ८) अपह्नुतिः-भामिनीविलासपद्यं¹²⁰ रसगङ्गाधरे¹²¹ द्वितीयानन उक्तप्रसङ्गे लक्ष्यते। अपि च, निरवयवापह्नुतिप्रसङ्गे तत्रत्यपद्यं¹²² रसगङ्गाधरे पठ्यते। ९) उत्प्रेक्षा-गुणाभावहेतू-त्प्रेक्षाप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे¹²³ द्वितीयानने 'निःसीमशोभा सौभाग्यम्'¹²⁴ इति पद्यमस्ति। १०) अतिशयोक्तिः- उक्तप्रसङ्गे भामिनीविलासस्य पद्यविशेषो¹²⁵ रसगङ्गाधरे¹²⁶ प्राप्यते। असम्बन्धे सम्बन्धरूपातिशयोक्तिप्रसङ्गे भामिनीविलासस्थं¹²⁷ पद्यं रसगङ्गाधर¹²⁸ उदाहृतम्। 'अन्या जगद्विषयः' पद्यमिदमभेदे भेदरूपातिशयोक्तिप्रसङ्गेऽस्ति। ११) तुल्ययोगिता-भामिनी-विलासस्य पद्यविशेषः¹²⁹ रसगङ्गाधरे¹³⁰ उक्तप्रसङ्गे व्यवहृतः। १२) प्रतिवस्तूपमा- रसगङ्गाधरे¹³¹ उक्तालङ्कारे भामिनीविलासपद्यविशेषो¹³² गृहीतः। भामिनीविलासात्पद्यं¹³³ गृहीत्वा रसगङ्गाधरे¹³⁴ वैधर्म्यप्रतिपादितप्रतिवस्तूपमायामुदाहृतम्। १३) निदर्शना-भामिनीविलासगतं पद्यद्वयं¹³⁵ रसगङ्गाधरे¹³⁶ उक्तप्रसङ्ग उदाहृतम्। पदार्थनिदर्शनाविषये

¹⁰⁰ शृङ्गारोल्लासः, २६, शान्तविलासः, ११

¹⁰¹ काव्यमालासंस्करणे 'खलः' स्थाने - 'अयं', 'वर्ण्यताम्' स्थाने - वर्ण्यते इति पठितमस्ति। (पृ., २३८)

¹⁰² भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ८६

¹⁰³ रसगङ्गाधरः, पृ. २३८

¹⁰⁴ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ८८, शृङ्गारोल्लासः, ६५

¹⁰⁵ तत्रैव, शान्तविलासः, १४

¹⁰⁶ रसगङ्गाधरः, पृ. २३२

¹⁰⁷ तत्रैव, पृ. २६०, २६५

¹⁰⁸ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, २२, ३६, ९९

¹⁰⁹ रसगङ्गाधरः, पृ. २५७

¹¹⁰ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, २२

¹¹¹ तत्रैव, शान्तविलासः, २३

¹¹² रसगङ्गाधरः, पृ. २५७

¹¹³ भामिनीविलासः, शान्तविलासः, २४

¹¹⁴ रसगङ्गाधरः, पृ. २५८

¹¹⁵ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ७६

¹¹⁶ रसगङ्गाधरः, पृ. २७९-८०

¹¹⁷ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, १३

¹¹⁸ रसगङ्गाधरः, पृ. २७५

¹¹⁹ तत्रैव, पृ. २७२

¹²⁰ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ७४

¹²¹ रसगङ्गाधरः, पृ. २७८

¹²² भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ७६

¹²³ रसगङ्गाधरः, पृ. ७२३

¹²⁴ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ४६

¹²⁵ तत्रैव, शान्तविलासः, ४

¹²⁶ रसगङ्गाधरः, पृ. ३०८

¹²⁷ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ५९

¹²⁸ रसगङ्गाधरः, पृ. ३११

¹²⁹ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ४५

¹³⁰ रसगङ्गाधरः, पृ. ३१८

¹³¹ तत्रैव, पृ. ३३१

¹³² भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ६८

¹³³ तत्रैव, ७५

¹³⁴ रसगङ्गाधरः, ३३२

¹³⁵ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ९०, ९३

¹³⁶ रसगङ्गाधरः, पृ. ३४६

भामिनीविलासस्य पद्यं¹³⁷ रसगङ्गाधरे¹³⁸ पठ्यते। १४) व्यतिरेकः-भामिनीविलासस्य पद्यविशेषो¹³⁹ रसगङ्गाधरे¹⁴⁰ एतत्प्रसङ्गे प्राप्यते। अपि च, 'अरुणमपि विद्रुमः'¹⁴¹, 'नयनानि (नयने) वहतां.'¹⁴² पद्यद्वयं रसगङ्गाधरे¹⁴³ प्राप्यते। १५) सहोक्तिः-'मान्थर्यमपि गमनं'¹⁴⁴ इदं भामिनीविलासस्य पद्यं सहोक्तेरुदाहरणत्वेन रसगङ्गाधरे¹⁴⁵ पठ्यते। १६) समासोक्तिः-भामिनीविलासस्थपद्यं¹⁴⁶ रसगङ्गाधरे¹⁴⁷ तृतीयप्रकारसमासोक्तिप्रसङ्ग उदाह्रियते। १७) अप्रस्तुतप्रशंसा-प्रथमप्रकार-भेदप्रसङ्गे भामिनीविलासस्थं पद्यं¹⁴⁸ रसगङ्गाधरे प्राप्यते। 'पुरा सरसि मानसे.'¹⁴⁹ इति पद्यं भामिनीविलासेऽस्ति। भामिनीविलासस्य पद्यं¹⁵⁰ रसगङ्गाधरे¹⁵¹ श्लिष्टविशेषणाप्रस्तुतप्रशंसोदाहरणत्वेन प्रस्तूतम्। भामिनीविलासस्य पद्यविशेषः¹⁵² रसगङ्गाधरे¹⁵³ अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कार उदाहृतः। 'तावत् कोकिलः'¹⁵⁴ भामिनीविलासपद्यमिदं रसगङ्गाधरे¹⁵⁵ अप्रस्तुत-प्रशंसोदाहरणेऽस्ति। 'दीनानामिह परिहायः'¹⁵⁶ इति भामिनीविलासस्य पद्यं रसगङ्गाधरे¹⁵⁷ अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कार उदाहृतम्। 'नितरां परुषाः'¹⁵⁸ भामिनीविलासस्थं पद्यमिदं रसगङ्गाधरे¹⁵⁹ अप्रस्तुतप्रशंसाया द्वितीयभेदप्रसङ्ग उदाहृतम्। १८) व्याजस्तुतिः-'भामिनीविलासगतं 'परोपसर्पणान्तः'¹⁶⁰ पद्यं रसगङ्गाधर¹⁶¹ उक्तप्रसङ्गे प्राप्यते। १९) आक्षेपः-उक्तप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे¹⁶² भामिनीविलासगतं पद्यत्रितयं¹⁶³ प्राप्यते। २०) विशेषोक्तिः-रसगङ्गाधरे¹⁶⁴ विशेषोक्तिप्रसङ्गे भामिनी-विलासपद्यमेकं¹⁶⁵ लक्ष्यते। २१) असङ्गतिः-रसगङ्गाधरे¹⁶⁶ द्वितीयाननेऽसङ्गतिप्रसङ्गे पद्यद्वयं¹⁶⁷ व्यवहृतम्। २२) विषमं-रसगङ्गाधरे द्वितीयानन¹⁶⁸ उक्तप्रसङ्गे भामिनीविलासपद्यानि¹⁶⁹ दीयन्ते। २३) समः- उक्तप्रसङ्गे भामिनीविलासस्य पद्यविशेषो¹⁷⁰ रसगङ्गाधर¹⁷¹ उदाहृतमस्ति। २४) विचित्रः-रसगङ्गाधरे¹⁷² उक्तप्रसङ्गे भामिनीविलासात् पद्यद्वयं¹⁷³

¹³⁷ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ८६

¹³⁸ रसगङ्गाधरः, पृ. ३४१

¹³⁹ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ७९

¹⁴⁰ रसगङ्गाधरः, पृ. ३४७

¹⁴¹ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ८७

¹⁴² तत्रैव, ८८

¹⁴³ रसगङ्गाधरः, पृ. ३५७, ३४८

¹⁴⁴ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ८४

¹⁴⁵ रसगङ्गाधरः, पृ. ३६३

¹⁴⁶ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ५३

¹⁴⁷ रसगङ्गाधरः, पृ. ३७७

¹⁴⁸ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, १, ५३, ५

¹⁴⁹ तत्रैव, २

¹⁵⁰ तत्रैव, ७

¹⁵¹ रसगङ्गाधरः, पृ. ४०३

¹⁵² भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, १६

¹⁵³ रसगङ्गाधरः, पृ. ४०७

¹⁵⁴ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ६

¹⁵⁵ रसगङ्गाधरः, पृ. ४०४

¹⁵⁶ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ९१, ९४, ९५

¹⁵⁷ रसगङ्गाधरः, पृ. ४७३

¹⁵⁸ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, २

¹⁵⁹ रसगङ्गाधरः, पृ. ४०५

¹⁶⁰ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ८४

¹⁶¹ रसगङ्गाधरः, पृ. ४१९

¹⁶² तत्रैव, पृ. ४२१-२२

¹⁶³ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ८५, करुणविलासः, १९, शान्तविलासः, १९

¹⁶⁴ रसगङ्गाधरः, पृ. ४३७

¹⁶⁵ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ३८

¹⁶⁶ रसगङ्गाधरः, पृ. ४४०-४१

¹⁶⁷ भामिनीविलासः, ८०, ८१

¹⁶⁸ रसगङ्गाधरः, पृ. ४४५, ४४६, ४४८

¹⁶⁹ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ७८, ७९, शृङ्गारोल्लासः, ४१, ५९

¹⁷⁰ तत्रैव, अन्योक्त्युल्लासः, ८०

¹⁷¹ रसगङ्गाधरः, पृ. ४५२

¹⁷² तत्रैव, पृ. ४५२-५३

¹⁷³ भामिनीविलासः, शान्तविलासः, १२, १५

गृहीतम्। २५) अन्योन्यः- प्रसङ्गेऽस्मिन् भामिनीविलासस्य पद्यं¹⁷⁴ रसगङ्गाधरे¹⁷⁵ द्वितीयानने पठ्यते। २६) सारः- भामिनीविलासगतं पद्यद्वयं¹⁷⁶ रसगङ्गाधरे¹⁷⁷ उक्तप्रसङ्गे पठ्यते। २७) काव्यलिङ्गं- भामिनीविलासगतपद्यं¹⁷⁸ रसगङ्गाधर¹⁷⁹ उक्तप्रसङ्गेऽस्ति। २८) अर्थान्तरन्यासः-भामिनीविलासस्य पद्यं¹⁸⁰ रसगङ्गाधरे¹⁸¹ उक्तविषये प्राप्यते। २९) यथासंख्यं - भामिनीविलासगतपद्यम्¹⁸² उक्तालङ्कारप्रसङ्ग उदाहृतं रसगङ्गाधरे¹⁸³। ३०) पर्यायः- भामिनीविलासस्य पद्यद्वयं¹⁸⁴ मुक्तप्रसङ्गे रसगङ्गाधरे¹⁸⁵ पठ्यते। ३१) परिवृत्त-भामिनीविलासात्पद्यविशेषः¹⁸⁶ रसगङ्गाधरे¹⁸⁷ उक्तप्रसङ्ग उदाहृतम्। ३२) परिसंख्या-भामिनीविलासस्थं पद्यं¹⁸⁸ रसगङ्गाधरे¹⁸⁹ परिसंख्याप्रसङ्गे प्राप्यते। आर्थीपरिसंख्याप्रसङ्गे तत्रस्थं पद्यं¹⁹⁰ तत्रोदाहृतम्। ३३) अर्थापत्तिः-भामिनीविलासगतं पद्यं¹⁹¹ रसगङ्गाधरे¹⁹² अर्थापत्तिप्रसङ्गे समुदाहृतम्। ३४) समुच्चयः-उक्तप्रसङ्गे भामिनीविलासस्य पद्यविशेषो¹⁹³ रसगङ्गाधरे¹⁹⁴ द्वितीयानने¹⁹⁴ परिलक्ष्यते। अपि च, 'पाटीर-द्भुजङ्ग'।¹⁹⁵, 'उदितं मण्डलमिन्दो'।¹⁹⁶ चेदं पद्यद्वयं तत्र¹⁹⁷ प्राप्यते। ३५) समाधिः - उक्तप्रसङ्ग 'आयातैव निशा'।¹⁹⁸ पठ्यते इदं रसगङ्गाधरे¹⁹⁹। ३६) प्रत्यनीकम्- उक्तप्रसङ्गे भामिनीविलासस्य पद्यद्वयं²⁰⁰ द्वितीयानने²⁰¹ मुदाहियते। ३७) प्रतीपं-भामिनीविलासगतपद्यं²⁰² द्वितीयप्रकारप्रतीपव्याख्याने रसगङ्गाधर²⁰³ उदाहृतः। तृतीय-पञ्चम-प्रकारे पद्यं²⁰⁴ चोदाहियते तत्र रसगङ्गाधरे²⁰⁵ तत्प्रसङ्गे पद्यं²⁰⁶ उदाहियते। ३८) प्रहर्षण-द्वितीयप्रकारप्रहर्षणोदाहरणरूपेण भामिनीविलासस्य पद्य-विशेषः²⁰⁷ प्रस्तूयते रसगङ्गाधरे²⁰⁸। तत्र 'केलीमन्दिरमागत'।²⁰⁹ इति पद्यमप्युदाहियते। ३९) विषादनं- रसगङ्गाधरे²¹⁰ उक्त-

¹⁷⁴ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ८९, ९०

¹⁷⁵ रसगङ्गाधरः, पृ, ४५५

¹⁷⁶ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ९२, शृङ्गारोल्लासः, ९१

¹⁷⁷ रसगङ्गाधरः, पृ, ४६५

¹⁷⁸ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ६६

¹⁷⁹ रसगङ्गाधरः, पृ, ४६८

¹⁸⁰ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ९५

¹⁸¹ रसगङ्गाधरः, पृ, ४५१

¹⁸² भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ३५

¹⁸³ रसगङ्गाधरः, पृ, ४७७

¹⁸⁴ शृङ्गारोल्लासः, ६०, शान्तविलासः, १६

¹⁸⁵ रसगङ्गाधरः, ४७९-८०

¹⁸⁶ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ४४, ९२

¹⁸⁷ रसगङ्गाधरः, ४८१-८२

¹⁸⁸ अन्योक्त्युल्लासः, ८१

¹⁸⁹ रसगङ्गाधरः, पृ, ४८३

¹⁹⁰ भामिनीविलासः, शान्तविलासः, १३

¹⁹¹ तत्रैव, अन्योक्त्युल्लासः, ७०

¹⁹² रसगङ्गाधरः, ४८५

¹⁹³ शृङ्गारोल्लासः, २७

¹⁹⁴ रसगङ्गाधरः, पृ, ४९३

¹⁹⁵ तत्रैव, ५७

¹⁹⁶ तत्रैव, ७० (पद्यस्यास्य तृतीयचरणस्थं - 'सकलललना' इति पदं वियुज्य समुच्चयस्योदाहरणकाले 'सकलयुवजन' इति पदं पठितमस्ति।

¹⁹⁷ रसगङ्गाधरः, पृ, ४९०-९१

¹⁹⁸ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ५८

¹⁹⁹ रसगङ्गाधरः, पृ, ४९२

²⁰⁰ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ९३, शान्तविलासः, २१

²⁰¹ रसगङ्गाधरः, ४९४

²⁰² भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ४२

²⁰³ रसगङ्गाधरः, पृ, ४९६

²⁰⁴ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ९४, ९५

²⁰⁵ रसगङ्गाधरः, ४९७

²⁰⁶ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ६५

²⁰⁷ शृङ्गारोल्लासः, ४०

²⁰⁸ रसगङ्गाधरः, पृ, ५०४

²⁰⁹ तत्रैव, पृ, ८३

²¹⁰ रसगङ्गाधरः, पृ, ५०६

प्रसङ्गे भामिनीविलासगतपद्यविशेष²¹¹ उदाहृतोऽस्ति। द्वितीयप्रकारे भामिनीविलासस्यैकं पद्यं²¹² द्वितीयानने²¹³ उदाह्रियते। ४०) अवज्ञा- भामिनीविलासगतं पद्यद्वयं²¹⁴ रसगङ्गाधरे²¹⁵ उक्तप्रसङ्गे उदाहृतोऽस्ति। ४१) तिरस्कारः-उक्तप्रसङ्गे भामिनीविलासस्य पद्यं²¹⁶ रसगङ्गाधरस्य द्वितीयानने²¹⁷ प्राप्यते। ४२) लेशः-उक्तप्रसङ्गे भामिनीविलासगतपद्यं²¹⁸ रसगङ्गाधर²¹⁹ उक्तप्रसङ्गेऽस्ति। ४३) तद्गुणः-भामिनीविलासपद्यं²²⁰ द्वितीयानने²²¹ तद्गुणविषयेऽस्ति। ४४) मीलितं-भामिनीविलासस्य शृङ्गारविलासे पठितं पद्यं²²² रसगङ्गाधरे²²³ लभ्यते। ४५) उत्तरं- 'किमिति कृशासि'²²⁴ पद्यमिदं रसगङ्गाधरे द्वितीयानने²²⁵ द्वितीयप्रकारोत्तरस्योदाहरणप्रसङ्गेऽस्ति।

सम्प्रति समवसितमस्मदीयं लघुशोधपत्रम्। अन्ते तत्प्रसङ्गे किञ्चिद्वक्तव्यमत्र कर्तव्यतया प्रतिभाति। शोधसमये अस्माभिः दृष्टं यत्, जगन्नाथेन रसगङ्गाधरे रस-ध्वनि-गुण-भाव-अलंकारप्रभृतिकाव्यतत्त्वानां व्याख्यानाय स्पष्टीकरणाय च अकृपणतया भामिनीविलासात्कविताकदम्बा गृहीताः। अनेकत्र दृश्यते भामिनीविलासस्थकविताविशेषं किञ्चित्परिवर्त्य तेन व्यवहृतम्। रसगङ्गाधरे तत्त्वव्याख्याने भामिनीविलासात्पद्यग्रहणकारणमस्माभिरेवं चिन्तयितव्यं यत्, अलङ्कारशास्त्रस्य जटिलतत्त्व-निचयानवगमयितुं सहृदयसंवेद्यकवितानां समुपस्थापनं परमावश्यकमित्यनुभवता पण्डितराजेन भामिनीविलासनामधेयं सहृदयाह्लादि काव्यं सृष्टम्। अथवा, भामिनीविलासादेव तद्रचितानि पद्यानि गृहीतानीति मामकीन आशयः।

निर्वाचितपुस्तकपञ्जिका

जगन्नाथः. भामिनीविलासः. अच्युतरायकृतप्रणयप्रकाव्याख्यसमेतः. प्रकाशकः पाण्डुरङ्ग-जावजी, मुम्बई: निर्णयसागरप्रेस, १९३३

_____. _____ . चषकाख्यटीकया समेतः. पुना (अधुना पुणे): ओरियन्टाल बुक एजेन्सि, १९३५

_____. भामिनीविलासम्. श्रीमज्जीवानन्दविद्यासागरभट्टाचार्यविरचितव्याख्यासमुद्भासितम्. प्रकाशकौ पण्डित-श्रीआशुबोधविद्याभूषण-श्रीनित्यबोधविद्यारत्नौ, कलिकाता (अधुना कलकाता): १९३६

जगन्नाथः. रसगङ्गाधरः. नागेशभट्टकृतया टीकया समेतः. मुम्बई: निर्णयसागरयन्त्रालयः, १८८८, काव्यमाला – १२

_____. _____ . मर्मप्रकाशेन बालक्रीडया च समेतः. (प्रथमो भागः), सम्पा. मधुसूदनशास्त्री, वाराणसी: २०२०

_____. _____ . गुरुमर्मप्रकाशेन सरलाख्यया टीकया च सहितः. निर्णयसागरमुद्रणयन्त्रालयः, १९४७

DR. SUMAN BANERJEE, Guest Lecturer at The Sanskrit College and University in the Department of Sāhitya, **ADDRESS:** Vill- Ichapur, Post – Gobardanga Ichapur, Police Station – Gaighata, District – North 24 Parganas, Pin - 743252 State – West Bengal, Mobile - 7797657984, Email – sumanbanerjee7797@gmail.com

²¹¹ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ५६

²¹² तत्रैव, शृङ्गारोल्लासः, ९७

²¹³ रसगङ्गाधरः, पृ. ५०६

²¹⁴ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ८२, शान्तविलासः, २८

²¹⁵ रसगङ्गाधरः, पृ. ५०९

²¹⁶ भामिनीविलासः, शान्तविलासः, १८

²¹⁷ रसगङ्गाधरः, पृ. ५१०

²¹⁸ भामिनीविलासः, अन्योक्त्युल्लासः, ८३

²¹⁹ रसगङ्गाधरः, ५१२

²²⁰ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ९९

²²¹ रसगङ्गाधरः, पृ. ५१३

²²² भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, ९९

²²³ रसगङ्गाधरः, पृ. ५१५

²²⁴ भामिनीविलासः, शृङ्गारोल्लासः, १०१

²²⁵ रसगङ्गाधरः, पृ. ५२०

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

गुणनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)
द्वारा भिवानी (हरियाणा). काठमाण्डू (नेपाल) से प्रकाशित

ISSN : 2395-7115
Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मंजूषा

Bohal Shodh Manjusha



AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY, MULTIPLE LANGUAGES
PEER REVIEWED, REFEREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website :

www.bohalshodhmanjusha.com

Email : grsbohal@gmail.com

Dr. Naresh Sihag, Adv.

M. : 8708822674, 9466532152

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, (राजस्थान), पटियाला (पंजाब) व नेपाल से प्रकाशित



ISSN : 2321-8037
Impact Factor : 7.834

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : www.ginajournal.com

Email : grngobwn@gmail.com

Office : 8708822674

Dr. Rekha Soni, Vice Principal
Education, Tanta University
M. 9828531975

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ

द्वारा नई दिल्ली, आगरा, गालियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639

Impact Factor : 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : <https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Executive Editor : Dr. Varsha Rani M. 9671904323

Managing Editor : Dr. Mukesh Verma M. 9627912535

Editor :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

M. 8708822674

सानिया प्रकाशन एवं गिना प्रकाशन द्वारा
संयुक्त रूप से नई दिल्ली, आगरा, गालियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2394-6458

Impact Factor : 6.500

RESEARCH JOURNAL OF MEEMANSA

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : <https://ginajournal.com/shodh-samalochan/>

Editor-in-Chief : Dr. Lata S. Patil

Managing Editor : Dr. Jaivir Langyan M. 9728790909

Editor :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

M. 8708822674

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गीना देवी शोध संस्थान भिवानी के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्स भिवानी से
छपवाकर कार्यालय #202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से वितरित की।

ISSN 2321:8037





गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

Evaluating the Impact of Government Crop Insurance Schemes (PMFBY) on Farmer Resilience

Authored by

Dr. Madhu Shankwal

Assistant Professor, Dept. of Economics,
University of Rajasthan, Jaipur

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 08-17

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

भारतीय शिक्षा पद्धति की शिक्षक शिक्षा में राष्ट्रीय
शिक्षा नीति 2020 की समालोचनात्मक भूमिका

Authored by

डॉ. चन्द्र कान्त शर्मा

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अपेक्स स्कूल ऑफ
एजुकेशन, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 18-20

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

Parental Influence on Emotional Intelligence : A Societal Perspective

Authored by

Dr. Priyanka Singh

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 21-25

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

🌐 <https://ginajournal.com/>

📞 8708822674

📞 9466532152

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

उत्तर-पश्चिमी राजपूताने में भेघवाल जाति का
सामाजिक-आर्थिक योगदान 1750-1950 ई.

Authored by

महावीर प्रसाद नायक, शोधार्थी

डॉ. बीटा शुर्मा, सहायक आचार्य,

श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 26-30

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

कक्षा में बहुभाषिकता : समस्या या संसाधन

Authored by

डॉ. कीर्ति खत्री

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी

शहीद दलबीर सिंह राजकीय महाविद्यालय, खरखौदा (पीपली)

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 31-34

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

पंडित जवाहरलाल नेहरू की जेल यात्राएँ

Authored by

खेमराज आर्य

सहायक प्राध्यापक इतिहास
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय, श्योपुर, मध्य प्रदेश।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 35-39

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के साहित्य में
ग्रामीण जनजीवन

Authored by

डॉ. परवीन वर्मा

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी,
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय, श्योपुर, मध्यप्रदेश।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 40-46

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

21वीं सदी की AI दुनिया में ग्रामीण समाज में बढ़ता
सामाजिक विश्वास : एक विश्लेषण

Authored by

देवेन्द्र राय

शोधार्थी, स्नातकोत्तर –ग्रामीण विकास, नालंदा खुला
विश्वविद्यालय, पटना।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 47-52

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

छत्रपति शिवाजी महाराज और तत्कालीन शिक्षा पद्धति

Authored by

डॉ. राजेश्वर कृष्णराज बुंदेले
अकोला, महाराष्ट्र।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 53-54

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

Foundational literacy and numeracy learning skills in Mathematics (According to NEP 2020)

Authored by

Dr. Ram Nagina Rajak

Lecturer, Primary Teacher Education College,
Rampur Jalalpur (Samastipur)

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 55-60

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

वैदिक ज्योतिष में राजयोग का महत्त्व

Authored by

अरविन्द उनियाल, शोधार्थी
डॉ. मंजू सिंह, सहायक प्राध्यापक
संस्कृत ज्योतिष विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 61-65

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

Socioeconomic Predictors of College-Going Girls' Participation in College-Level Sports: Evidence from UDISE+ and NFHS

Authored by

Dr. Anurag Singh, Aso. Professor (YOGA),

Amar Singh, Research Scholar,

Dep. Of Physical Education,

Post Graduate College, Ghazipur, U.P.

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 66-74

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

पर्यावरण संतुलन में गाय की भूमिका

Authored by

नरेश प्रसाद भट्ट, शोधार्थी

डॉ. मंजू सिंह, सहायक प्राध्यापक

संस्कृत साहित्य विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
गजरौला, अमरोहा (उत्तर प्रदेश)

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 75-80

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

Linguistic Diversity as Unity: A Theoretical Exploration of Bharatiya Bhasha Pariwar

Authored by

Dr. Pushpita Dasgupta

Christian College of Engineering & Technology
Department of Science & Humanities.

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 81-89

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा 'शंकी' के काव्य में समकालीन
राजनीति, नैतिकता और कर्म-दर्शन

Authored by

यादराम वर्मा, शोधार्थी

डॉ. कृष्ण कुमार, शोध निर्देशक

टांटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर, राजस्थान।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 90-92

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

Challenges, Discrimination, and Coping Strategies of Migrants in the Host City: A Case Study of Social Integration of Tamil Migrants in Delhi

Authored by

Boram Yoon

PhD Scholar, Centre for the Studies of Social Systems,
School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University,
New Delhi - 110067

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 93-110

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Dr. Naresh Sihag

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में पतंजलि योग द्वारा
निर्दिष्ट यम-नियमों का समीक्षात्मक अध्ययन

Authored by

रविन्द्र सिंह राणा, शोधार्थी

डॉ. महेश चन्द्र, शोध निर्देशक

योग विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 111-116

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

DIFFERENCES IN MENTAL ABILITY AMONG INDIVIDUAL AND TEAM SPORT PARTICIPANTS

Authored by

Patel Kalpesh Shashikant, RESEARCH SCHOLAR,

Dr. Jully Ojha, RESEARCH GUIDE,

Dr. Aruna Dogra (RESEARCH CO- GUIDE)

DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION

SHRI JAGDISHPRASAD JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY,
VIDYANAGARI, JHUNJHUNU, RAJASTHAN – 333010

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 117-123

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

ध्यान योग की तकनीक का विकास एवं उपयोगिता

Authored by

करनाराम, पी-एच.डी. (शोधार्थी)

डॉ. महेश चन्द्र, शोध निर्देशक

योग विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 124-130

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

EFFECT OF LEGAL AWARENESS AND ACCESS TO FAMILY COURTS ON DIVORCE RATES IN INDIA

Authored by

Anwani Sadhna Kishore Renu, RESEARCH SCHOLAR,
Dr. Vijaymala, RESEARCH GUIDE,
DEPARTMENT OF LAW, SHRI JAGDISHPRASAD
JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY,
VIDYANAGARI, JHUNJHUNU, RAJASTHAN – 333010

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 131-138

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

🌐 <https://ginajournal.com/>

📞 8708822674

📞 9466532152

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*
**ROLE OF ULTRASOUND- BASED MUSCLE
QUALITY AND ARCHITECHTURE IN
EARLY IDENTIFICATION OF FRAILTY IN
ACUTE HIP FRACTURE**

Authored by

Navas NK, RESEARCH SCHOLER,
Dr. Prateek Sharma, RESEARCH GUIDE,
Dr. Brijesh Sathian, RESEARCH CO-GUIDE,
DEPARTMENT OF MEDICAL SCIENCE
SHRI JAGDISH PRASAD JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY
JHUNJHUNU RAJASTHAN

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 139-146

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

शारीरिक एवं मानसिक रोगों का योग से समाधान

Authored by

नीलू, शोधार्थी,

डॉ. पूनम आहूजा, शोध निर्देशिका,

योग विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 147-152

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

STRUCTURE OF SRIGANGANAGAR CITY : A STUDY IN URBAN GEOGRAPHY

Authored by

Dr. Sachin Kumar

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY,
SHRI KHUSHALDAS UNIVERSITY,
HANUMANGARH, RAJASTHAN.

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 153-159

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

🌐 <https://ginajournal.com/>

📞 8708822674

📞 9466532152

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

बीकानेर जिले में पर्यावरण जागृति एवं पर्यावरणीय
अवबोध का अध्ययन

Authored by

सुमन चौधरी, शोधार्थी,
डॉ. सचिन कुमार, शोध निर्देशक,
भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 160-165

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

🌐 <https://ginajournal.com/>

📞 8708822674

📞 9466532152

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

महर्षि पतंजलि योगसूत्र में अधिगम की अवधारणा
एवं यौगिक तकनीक

Authored by

विपिन बोहरा, शोधार्थी,
डॉ. पूनम आहूजा, शोध निर्देशिका,
योग विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 166-171

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

EMPOWERMENT OF HUMAN MINDS WITH RAJAYOGA MEDITATION - A DISASTER MANAGEMENT APPROACH

Authored by

Vijayadharan Pillai K, RESEARCH SCHOLAR

Dr. Rajendran D. R., Guide

MANIPUR INTERNATIONAL UNIVERSITY,
IMPHAL.

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 172-181

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

पूर्वोत्तर की लोक कथाओं का वैशिष्ट्य 'मणिपुरी
लोक-कथाओं के संदर्भ में'

Authored by

प्रो. जगदेव कुमार शर्मा

आचार्य एवं अध्यक्ष मानविकी विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, कटवारिया सराय, नई दिल्ली -110016

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 182-187

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

जनकराज शुर्मा की साहित्यिक दृष्टि और मानवीय
मूल्यबोध

Authored by

मोनिता, पी-एच.डी. शोधार्थी, हिंदी विभाग (हिंदी)

डॉ. सुनीता सिंह, शोध निर्देशिका एवं प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सामाजिक एवं मानविकी संकाय, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय,
हिसार (हरियाणा), पिन कोड-125001

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 188-194

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

वैश्विक संस्कृति पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव

Authored by

आकांक्षा सिंह

शोधार्थी, हिंदी विभाग,

म. ज्यो. फु. रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उ. प्र.)

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 195-199

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

क्षमा शर्मा के उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान

Authored by

दीपा उल्लेगड़ी, शोधार्थी

डॉ. अमर ज्योति, शोध निर्देशक एवं निवृत्त प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़, कर्नाटक।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 200-203

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

Social Media and Child rights under Cyber Law in india

Authored by

Saba Nazneen, Research Scholar,
Dr. Tai Chaurasiya, Dean, Law Department
Mansarovar Global University, Sehore, (M.P)

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 204-207

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

**वैश्वीकरण के संदर्भ में भारत का सामाजिक-
राजनीतिक विकास**

Authored by

डॉ. सुशीला देवी यादव

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान,
डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर।

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 208-211

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com



गीना देवी शोध संस्थान Gina Devi Research Institute



AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Gunanram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

<https://doi.org/10.5281/zenodo.18877794>

Certificate of Publication for the paper titled*

रसगङ्गाधरे समुदृतेषु पद्येषु भामिनीविलासस्य
प्रभावः

Authored by

Dr. Suman Banerjee

Guest Lecturer in the department of Sahitya at The
Sanskrit College and University.

Published in **SANGAM** ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Part-2, Page No. 212-218

Rekha

Director/Editor :

Dr. Rekha Soni

Naresh

Secretary/Editor-in-Chief :

Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

📞 8708822674

📞 9466532152

🌐 <https://ginajournal.com/>

✉ grngobwn@gmail.com